

मानकृत

राजविलास

संपादक

मोतीलाल मेनारिया



नागरीप्रचारिणी सभा, काशी

प्रकाशक : नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी

मुद्रक : महताबराय, नागरी मुद्रण, वाराणसी

संवत् २०१५ वि०, प्रथम संस्करण, १६०० प्रतियँ

मूल्य

माला का परिचय

नागरीप्रचारिणी सभा ने अपनी हीरक-जयंती के अवसर पर जिन-भिन्न-भिन्न साहित्यिक अनुष्ठानों का श्रीगणेश करना निश्चित किया था उनमें से एक कार्य हिंदी के आकर-ग्रंथों के सुसपादित संस्करणों की पुस्तकमाला प्रकाशित करना भी था। जयंतियों अथवा बड़े-बड़े आयोजनों पर एकमात्र उत्सव आदि न कर स्थायी महत्त्व के ऐसे रचनात्मक कार्य करना सभा की परंपरा रही है जिनसे भाषा और साहित्य की ठोस सेवा हो। इसी दृष्टि से सभा ने हीरक-जयंती के पूर्व एक योजना बनाकर विभिन्न राज्य सरकारों और केंद्रीय सरकार के पास भेजी थी। इस योजना में सभा की वर्तमान विभिन्न प्रवृत्तियों को संपुष्ट करने के अतिरिक्त कतिपय नवीन कार्यों की रूपरेखा देकर आर्थिक संरक्षण के लिए सरकारों से आग्रह किया गया था जिनमें से केंद्रीय सरकार ने हिंदी-शब्दसागर के संशोधन-परिवर्धन तथा आकर-ग्रंथों की एक माला के प्रकाशन में विशेष रुचि दिखलाई और ६-३-५४ को सभा की हीरक-जयंती का उद्घाटन करते हुए राष्ट्रपति देशरत्न डा० राजेंद्रप्रसाद जी ने घोषित किया—‘मैं आपके निश्चयों का, विशेष कर इन दो (शब्दसागर-संशोधन तथा आकर-ग्रंथमाला) का स्वागत करता हूँ। भारत सरकार की ओर से शब्दसागर का नया संस्करण तैयार करने के सहायतार्थ एक लाख रुपए की सहायता, जो पाँच वर्षों में, बीस-बीस हजार करके दिए जायेंगे, देने का निश्चय हुआ है। इसी तरह से मौलिक प्राचीन ग्रंथों के प्रकाशन के लिए पचीस हजार रुपए भी, पाँच वर्षों में पाँच-पाँच हजार करके, सहायता दी जायगी। मैं आशा करता हूँ कि इस सहायता से आपका काम कुछ सुगम हो जायगा और आप इस काम में अग्रसर होंगे।’

केंद्रीय शिक्षामंत्रालय ने ११-५-५४ को एफ ४-३-५४ एच ४ संख्यक एतत्संबंधी राजाज्ञा निकाली। राजाज्ञा की शर्तों के अनुसार इस माला के लिए संपादक-मंडल का संघटन तथा इसमें प्रकाश्य एक सौ उत्तमोत्तम ग्रंथों का निर्धारण कर लिया गया है। संपादक-मंडल तथा ग्रंथ सूची की संपुष्टि भी केंद्रीय शिक्षामंत्रालय ने कर दी है। ज्यों ज्यों ग्रंथ तैयार होते चलेंगे, इस माला में प्रकाशित होते रहेंगे। हिंदी के प्राचीन साहित्य को इस प्रकार उच्च स्तर के विद्यार्थियों, शोधकर्ताओं तथा इतर अभ्येताओं के लिए सुलभ करके केंद्रीय सरकार ने जो स्तुत्य कार्य किया है उसके लिए वह धन्यवादाई है।

संपादकीय

मान कवि के संबंध में हिंदी-कवियों के सुप्रसिद्ध वृत्त-संग्रह 'शवासह सरोज' में यह उल्लेख है—

‘मान कवीश्वर वंदीजन राजपूताने के सं० १७५६ में उ०

ये कवि ब्रजभाषा में महानिपुण थे। राना राजसिंह राठौर मेवाड़ वाले की आज्ञानुसार एक ग्रंथ राजदेवविलास नाम उदयपुर के हालाह में बनाया है। इस ग्रंथ में राना राजसिंह और औरंगजेब बादशाह की लड़ाइयों बहुत कविताई के साथ वर्णन हुई हैं।’

इनके विषय में डाक्टर ग्रियर्सन का कथन है यों है—

‘मान कवीश्वर—राजपूताना के चारण और कवि, १६६० ई० में उपस्थित। मेवाड़ के राना राजसिंह के आदेश से इन्होंने राजदेवविलास लिखा, जिसमें औरंगजेब और राजसिंह के युद्धों का वर्णन है। देखिए, टाइल भाग १, पृष्ठ २१४, ३७४ और आगे तथा ३६१, कलकत्ता संस्करण भाग १, पृष्ठ २३१, ३६६ और आगे, तथा ४१४।’

—‘दि माडर्न वर्नाक्यूलर लिटरेचर आन् हिंदुस्तान’ के ‘हिंदी-अनुवाद ‘हिंदी साहित्य का प्रथम इतिहास’ से उद्धृत।

मिश्रबंधुविनोद (द्वितीय बार, सं० १६८४) का विवरण यह है—

‘नाम—(४१०) मान कवीश्वर राजपूताना के।

ग्रंथ—राजविलास।

रचनाकाल—१७१७।

विवरण—साधारण श्रेणी। इन्होंने महाराणा मानसिंह का वर्णन इस ग्रंथ में किया है। यह नागरीप्रचारिणी ग्रंथमाला में छप रहा है।’

इन उद्धरणों में शिवसिंह ने मान कवीश्वर को वंदीजन कहा है और ग्रियर्सन ने वंदीजन तथा कवि। उनका स्थितिकाल पहले ने सं० १७५६ माना है और दूसरे ने सं० १७१७ (ई० १६६०+५७)। इस स्थितिकाल को मिश्रबंधुविनोद में रचनाकाल लिखा गया है। पहले के दोनों उल्लेखों

मैं ग्रंथ का नाम राजदेवविलास है, मिश्रबंघुओं ने उसे राजविलास लिखा । जिस समय विनोद का प्रथम संस्करण (सं० १६७० में) मुद्रित हुआ उस समय ग्रंथ छप रहा था । इसलिए उन्होंने इसे देखा न होगा इसी से राजविलास में महाराणा मानसिंह का वर्णन है ऐसा उन्होंने अनुमान से ही लिख दिया । पर विनोद का दूसरा संस्करण होने पर भी इसे उन्होंने नहीं देखा । यह सं० १६६६-७० में मुद्रित प्रकाशित हो गया था, विनोद दूसरी बार सं० १६८४ में मुद्रित हुआ ।

इसके रचनाकाल की आति सबसे पहले स्वर्गीय लाला भगवानदीनजी द्वारा संपादित होकर प्रकाशित होने पर दूर हुई । उन्होंने भूमिका में लिखा है—

‘इसे राजपूताना निवासी ‘मान’ कवि ने विक्रमी सं० १७३४ में लिखना आरंभ किया था । मालूम होता है कि यह ग्रंथ कवि ने तीन वर्ष में समाप्त किया है क्योंकि सं० १७३७ तक की घटनाओं का वर्णन इसमें पाया जाता है । इसमें उदयपुराधीश महाराणा राजसिंह के समय का वर्णन है ।’

इसमें मानकवि ने निर्माण आरंभ करने के संवत् का उल्लेख दो स्थानों पर किया है—

१—सुभ संवत दस सात बरस चौतीस बधाई ।

२—संवत सुसत्त दह सतक सार बच्छर चौतीसम धरि बिचार ।

× × × ×

देवी सु आइ बरदान दीन । कवि मान ग्रंथ आरंभ कीन ।

इसका संपादन करते समय लालाजी ने मान कवि को जैन नहीं समझा था । उनसे पूर्व भी किसी ने उन्हें जैन नहीं समझा था । स्वर्गीय रत्नाकरजी ने भी उन्हें जैन नहीं माना । पर उन्होंने बिहारोसतसई के टीकाकार मानसिंह और राजविलास के कर्ता मानकवि को एक ही घोषित किया ।

‘मानसिंह कवि विजयगछ वाले की टीका

कालक्रमानुसार दूसरी टीका, जो हमारे देखने में आई है वह उदयपुर के निकट विजयगछ ग्राम के रहनेवाले मानसिंह नामक कवि की है । इन्हीं कवि का बनाया हुआ एक ग्रंथ राजविलास भी है जो अब नागरीप्रचारिणी सभा के द्वारा प्रकाशित हो गया है । राजविलास में उदयपुराधीश महाराणा राजसिंह के समय का वर्णन है । इसकी रचना सं० १७३४ में आरंभ हुई थी

और इसकी समाप्ति का संवत् यद्यपि इसमें नहीं दिया है तथापि अनुमान से १७३७-३८ प्रतीत होता है। महाराणा राजसिंह सं० १७०८ में गद्दी पर बैठे थे और सं० १७३७ में उनका स्वर्गवास हुआ, जैसा कि राजविलास से विदित होता है। मानसिंह कवि के विषय में सुना गया है कि उन्होंने जयपुर में जाकर बिहारी से साक्षात् किया था और उनसे कुछ पढा भी था। जयपुर से लौटते समय वे बिहारी के कुछ दोहे लिख ले गए थे। उदयपुर में पहुँचकर उन्होंने वे दोहे जहाँ तहाँ सरदारों को सुनाए और होते होते कुछ दोहे महाराणा के कान तक भी पहुँचे। बिहारी के दोहों की ख्याति उदयपुर में पहले ही पहुँच चुकी थी और वहाँ के सामंत, सरदार इत्यादि उनको बंड चाव और प्रसन्नता से पढते-सुनते थे। उन दोहों की उत्तमता पर महाराणा ने प्रसन्न होकर मानसिंह को राजसभा में बुलाया और आज्ञा दी कि जयपुर जाकर तुम सतसई की पुस्तक प्राप्त कर लाओ। जब मानसिंह किसी प्रकार सतसई ले आए तो उसके दोहे बड़े कठिन देख पड़े। अतः महाराणाजी ने मानसिंह को बिहारी का शिष्य समझकर सतसई की टीका करने की आज्ञा दी। मानसिंह ने अपनी बुद्धि के अनुसार यह टीका आज्ञा पर रचकर प्रस्तुत की। यद्यपि टीका तो बहुत ही सामान्य श्रेणी की है तथापि महाराणा ने प्रसन्न होकर मानसिंह को अपनी सभा के कवियों में समाविष्ट कर लिया। फिर मानसिंह ने राजविलास ग्रंथ की रचना आरंभ की। इस टीका में रचनाकाल कुछ नहीं दिया है, पर यदि ऊपर लिखे हुए जनवाद में कुछ सार है तो इस टीका का रचनाकाल सं० १७३४ के पूर्व समझना चाहिए।

‘इस टीका की प्रति जो हमारे पास है वह प्रतापविजय नामक किसी व्यक्ति के द्वारा अजमेर में संवत् १७७२ में लिखी गई थी। इस टीका के अंत में यह लिखा हुआ है—

‘इति श्रीबिहारीदासकृत सतसई दोहराः संपूर्ण सतसहीरा टीका कृतं बिजैगछे कवि मानसिंहजू टीका कीनी उदयपुर मध्ये ग्रंथाग्रंथ ४५०५ इति संख्या संपूर्णः शुभं भवतुः ॥ श्रीश्रीसंवत् १७७२ वर्षे वैशाख बदि कृष्णपक्षे द्वितीयाया लिखतं प्रतापविजय लिपी कृतं ॥ अजमेर मध्येः ॥ श्रीरस्तुः ॥ श्री॥

‘इस बात पर ध्यान देना यहाँ आवश्यक है कि इस टीका के अंत में टीकाकार का नाम मानसिंह लिखा है, पर राजविलास के अंत में उसके कर्ता का नाम मान कवि पाया जाता है। इससे दोनों ग्रंथकारों के एक ही होने में

कुछ संशय उपस्थित हो जाता है। पर यह भिन्नता लेख मात्र की प्रतीति होती है क्योंकि टीका के अंत में उसका उदयपुर में रचा जाना तथा उसकी प्रतिलिपि सं० १७७२ में अजमेर में लिखा जाना स्पष्ट ही कहा है। इस बात पर विचार करने से कि उस समय छापे का प्रचार नहीं था और देश भर में विशेषतः उदयपुर प्रांत में बड़ी अशांति फैली हुई थी, उक्त टीका के उदयपुर से अजमेर तक लिखते लिखाते पहुँचने में ४० वर्ष के अनुमान लग जाना परम संगत तथा स्वाभाविक था। अतः उस टीका का रचनाकाल सं० १७३० तथा १७३४ के बीच में मानना अनुचित नहीं है। यदि यह अनुमान सत्य समझा जाय और उक्त टीका के उदयपुर ही में रचे जाने पर ध्यान दिया जाय और उसी के साथ जनश्रुति भी मिला ली जाय तो दोनों ग्रंथकारों के एक ही होने में संशय नहीं रह जाता। मानसिंह ने अपने विषय में न तो सतसई की टीका ही में कुछ कहा है और न राजविलास में। इस विषय में दोनों ग्रंथकारों की प्रकृति भी एक ही प्रतीत होती है।

रत्नाकरजी को यदि ज्ञात होता कि विजयगच्छ जैनों के विशेष वर्ग का नाम है और मान कवि तथा मानसिंह दोनों ही जैन हैं तो दोनों के एकत्व की स्थापना में उन्हें कदाचित् बहुत बड़ा प्रमाण मिल जाता। बिहारीसतसई के टीकाकार जैन हैं यह पुष्पिका के विजयगच्छ शब्द से ही नहीं उस टीका के सिरनामे से भी प्रकट है। नागरीप्रचारिणी सभा की खोज में उक्त सतसई की टीका का सिरनामा है—

‘श्री जिनाय नमः । अथ सतसै लिख्यते । भगति करुणा अगः । दोहरा ॥ मेरी भव बाधा हरो । राधा नागर सोई । जा तन की भोई परै ॥ स्याम हरित दुति होई ॥’

पुष्पिका में उदयपुर का उल्लेख यथापूर्व है—

‘सतसही टीका कवि श्रीविजैगच्छै कवि श्रीमानसिधजू कीनी श्रीउदैपुर मध्ये ॥ श्रीरोहिठ नगरे लषीता संवत् १८२३ वर्षे फागुण वदि ६ सूर्यवासरे श्रीग्रंथाग्रंथ ४०४५ श्रीपूज्य श्री१०८ श्रीजेसिंहजी तत् शिष्य श्रीभगवानजी वाचनार्थे लिषतु ऋषि उरजा लिपीकृतं ॥ उपरली पोथी माहै वै जु माभीवे ॥’

—(खोज, ०१-७५) ।

सतसई की इस टीका का एक हस्तलेख उदयपुर में संवत् १७७३ का लिखा है (देखिए राजस्थान में हस्तलिखित ग्रंथों की खोज, प्रथम भाग, पृष्ठ ७३)

रत्नाकरजी की उक्त मान्यता का खंडन सबसे प्रथम श्रीमोतीलालजी भेनारिया ने अपने अनुसंधान-प्रबंध राजस्थान का विंगल-साहित्य में किया—

‘बिहारीलाल ने कुल दोहे कितने लिखे थे इसका ठीक ठीक पता नहीं लगता। बिहारीसतसई की जो अनेकानेक हस्तलिखित प्रतियाँ देखने में आती हैं उनमें ७०१ से लेकर ७५३ तक दोहे मिलते हैं। उक्त बीकानेर वाली प्रति में ७२६ और उदयपुर वाली प्रति में ७२१ दोहे हैं। चंद्रमणि उपनाम कोविद कवि, जैन टीकाकार मानसिंह और प्रेम कवि ने बिहारीसतसई के दोहों की संख्या क्रमशः ७००, ७१३, ७५० बतलाई है। स्वर्गीय रत्नाकरजी ने इनमें से मानसिंह की संख्या को ठीक माना है जिसका कारण उन्होंने यह बताया है कि यह टीका सं० १७३४ से पूर्व अर्थात् बिहारी के जीवनकाल में रची गई थी। इसी आधार पर उन्होंने अपने बिहारीरत्नाकर में ७१३ दोहे रखे हैं। परंतु यहाँ उनसे भूल हुई है। इस भूल का कारण यह है कि उन्होंने राजविलास के कर्ता मानसिंह और बिहारी सतसई की टीका के रचयिता मानसिंह इन दोनों को एक व्यक्ति मान लिया है और राजविलास का जो रचनाकाल (सं० १७३४) है लगभग वही बिहारीसतसई की टीका का भी स्थिर किया है। परंतु असल में ये दो भिन्न व्यक्ति हैं जैसा कि मिश्रबन्धु-विनोद से पाया जाता है। इनका रचनाकाल क्रमशः सं० १७३४ और सं० १७७० है।’

रत्नाकरजी ने बिहारी का स्वर्गारोहण काल सं० १७२१ माना है।*

इसलिए मानसिंह की टीका बिहारी के जीवनकाल में रची गई यह रत्नाकरजी का पक्ष नहीं है। मानसिंह की सतसई की टीका सं० १७७० में बनी यह भी कोरा अनुमान ही है। यह अनुमान उन्होंने इस आधार पर लगाया है कि इसके दो हस्तलेख सं० १७७२ और सं० १७७३ के मिलते हैं। इसलिए मानसिंह की टीका का रचनाकाल अनुमान से सं० १७७० है—

‘मिश्रबन्धुओं ने इन दोनों मानसिंहों को दो भिन्न व्यक्ति माना है, परंतु उन्होंने एक दूसरा भ्रम पैदा कर दिया है। वह यह कि बिहारीसतसई के टीकाकार मानसिंह का रचनाकाल सं० १८२३ लिख दिया है जो एक भारी भूल है। क्योंकि बिहारीसतसई की टीका की दो ऐसी हस्तलिखित प्रतियाँ मिली हैं जो सं० १८२३ से बहुत पहले की लिखी हुई हैं। एक की पुष्पिका ऊपर उद्धृत की जा चुकी है। दूसरी उदयपुर के सरस्वतीमंडार में है।

* देखिए ‘कवि बिहारी’, पृष्ठ ३८०—संवत् १७२१ में परमधामे स्थितारे।

उसका लिपिकाल सं० १७७३ है। अतः मिश्रबन्धुओं का बताया हुआ संवत् ठीक नहीं है। अनुमानतः इनका रचनाकाल सं० १७७० है।'

मिश्रबन्धुओं की भूल का कारण स्पष्ट है। उन्होंने इस कवि के विवरण में खोज के विवरण का उल्लेख किया है—

‘नाम—($\frac{६३८}{१}$) मानसिंह जैन ।

ग्रंथ—बिहारीसतसई की टीका ।

रचनाकाल—१८२३ [खोज १६०१] ।

विवरण—विजैगढ़, उदयपुर के निवासी थे ।'

खोज के विवरण में उक्त टीका का लिपिकाल सं० १८२३ है जिसे उन्होंने रचनाकाल मान लिया है। दूसरी भूल यह भी हुई कि ‘विजयगच्छ’ को ‘विजयगढ़’ कर दिया है।

मेनारियाजी ने इतने पर भी दोनों कवियों की पृथक्ता में मिश्रबन्धुओं को प्रमाण माना है। रहा सं० १७७०। उसके संबंध में उनका अनुमान राजविलास के प्रस्तुत संस्करण की भूमिका में और स्पष्ट हुआ है—

‘उल्लिखित बिहारीसतसई की टीका की दो प्राचीन लिखित प्रतियाँ उपलब्ध हुई हैं। इनमें एक सं० १७७२ की और दूसरी सं० १७७३ की लिखी हुई है। इनके आधार पर बिहारीसतसई के टीकाकार मानसिंह का आविर्भावकाल* सं० १७७० के आसपास ठहरता है।’

सं० १७७० को जिस आधार पर मानसिंह का कविताकाल माना गया है वह पुष्ट नहीं है। यदि मानसिंह १७७० में बृद्ध हों तो उनका जन्म-समय १७१०-१५ तक जा सकता है। फिर १७३४ में उनका रचना करना भी संभव हो सकता है। इसलिए यह आधार इतना पुष्ट नहीं है जिसके बल पर रत्नाकरजी के निष्कर्ष को आँच पहुँचे।

जिस अंश पर स्वयम् रत्नाकरजी ने कुछ संदेह किया है उस पर बल दिया जा सकता था अर्थात् यह कहा जा सकता था कि राजविलास के रचयिता हैं मान कवि और बिहारीसतसई के अनुवदयिता हैं मानसिंह। काशी नागरीप्रचारिणी सभा में सुरक्षित राजविलास के हस्तलेख में तीसरे विलास के अतिरिक्त सब विलासों की पुष्पिका में कवि का नाम ‘मान कवि’ ही दिया गया है।

* आविर्भावकाल का प्रयोग यहाँ जन्मकाल के अर्थ में नहीं, कविताकाल या रचनाकाल के अर्थ में है।

॥१॥ श्रीकृष्णतदवडीसत्यमवा॥ श्रीमस्मृत्यन
मः॥॥॥॥ सेवतपुरनरमुनिसकल। अकलअ
नूपअपार। बिबुधमातवागेश्वरी। दिनदिनमुखदा
तार॥॥॥ देवीज्योत्सुकंरिदया। कालिदासकवि
कीन। बरदायिनित्योदेजवर। निर्मलउक्तिनवीन
॥१॥ पद्येवरकविगऊपद। लब्धीदंबितलील। उम
उहैऊगतारनी। सुमतिमंदोगसुमील॥३॥ कोनणि
नैमरुउकनकोधनबुंदकदंत। कोताराअनपरि
कदे। त्यांयुनआदिअनंत॥४॥ ऊपीयहिउमकोड
गडननि। अधिकयंशआरंत। कवितकथामंगल।
करन हरिदरनउमदंत॥५॥ सांपतदेजसरस्वती

[सरस्वती भवन उदयपुर में सुरक्षित राजविलास की सं० १७४६ की
हस्तलिखित प्रति का प्रथम पृष्ठ]

ममझिकीयोसुपहोऊचतवलटंकारत्रवडिबदि
 अवाडबसुमतीदलकिड्योडलधिदिलोरदाउव
 वटगाडथट्टबंधिकंठलवडे ॥ १ ॥ दानरखेनबावउम
 रावउमराववज्जपरअणनसपुजिनपरतावित्रकोट
 डाइवोवदोअतिदिलअंद ॥ २ ॥ तां२४॥ पछोत
 यधरिदिलिपतिपुल्योकोसपंचासागदोडाइवी
 तोरगाटाउपडीडीवनआसा॥ ३॥ इतिश्रीमत्मानक
 विविरदित्थीराडविलाससाखुसुलतांनमुखसंडन
 गोरीदलांडनवसुनिनामः ॥ ४ ॥ दशमविलासः ॥ १३
 ॥ ॥ ॥ ॥ सड्योसुडगाविरोमकैपौरिबुरडपाकास्मा
 रिगोरआरावसुपिअनसुसंविअपार॥ ॥ ॥ कविला

[सरस्वती भवन उदयपुर में सुरक्षित राजविलास की सं. १७५६ की
 हस्तलिखित प्रति के बीच का एक पृष्ठ]

सति कहि मांन राणा के सयों द्वि पनर खं त धिति ॥
 ॥ १०७ ॥ इति श्री मांन कवि विरचिते श्री राज विला
 सत्रास मद्दाराणा श्री ऊय सिंदडी के आरण्ये श्री वि
 क्रमदा पुगेण तिसाद आरासा हिक समानि जादा
 अकवर तडपरित्वा दवर्षन ना म अष्टादस मो विला
 सः १६ इति श्री राज विलास ग्रंथ संपूर्णः ॥ श्रीरघु ॥
 लिखितं कवि श्री मांन सिंदडी श्री महदत्त टाके।
 श्री वित्रक्रमदा धिपतिः ॥ राणा श्री ऊय सिंदडी विज
 य मांन राजे सं ११५६ कार्तिक दीपमालिका बुध
 वासरे आचं जर्क विरं तं द्या दयं ग्रंथः लेखक पाठा
 क आह्वाना श्री दाबरदा तवतु : श्रीः श्रीः श्रीः श्रीः

[सरस्वती भवन उदयपुर में सुरक्षित राजविलास की सं० १७४६ की
 हस्तलिखित प्रति का अंतिम पृष्ठ]

मेनारियाजी द्वारा संपादित प्रस्तुत संस्करण में विलासों की पुष्पिका नहीं दी गई है। उन्होंने जो प्रतिलिपि भेजी है वह वर्तमानकालिक वर्णान्व्यास को छोड़कर उदयपुरवाले हस्तलेख की हूबहू अनुलिपि है। जैसा उनके कथन से पता चलता है। उदयपुरवाले जिस हस्तलेख के आधार पर उन्होंने प्रस्तुत संस्करण का संपादन किया है उसके संबंध में वे भूमिका में लिखते हैं—

‘उदयपुर के सरस्वतीभंडार में राजविलास की एक हस्तलिखित प्रति सुरक्षित है। यह सं० १७४६ की लिखी हुई है और इस ग्रंथ की प्राचीनतम अथवा मूल प्रति है। इसकी पुष्पिका में इस ग्रंथ के रचयिता का नाम मानसिंह दिया हुआ है जिससे विदित होता है कि मानजी का पूरा नाम मानसिंह था और कविता में ये अपना नाम कवि मान लिखा करते थे।’

उदयपुर के सरस्वतीभंडार में सुरक्षित उक्त हस्तलेख सं० १७४६ में लिखा गया, इसलिए वह राजविलास की मूल प्रति कथमपि नहीं हो सकता। मूल प्रति तो राजविलास के निर्माणकाल (सं० १७३४-३७) के आसपास लिखी गई होगी। १७४६ में तो मूल प्रति की या मूल प्रति की अनुलिपि की प्रतिलिपि या अनुलिपि ही हो सकती है। इस आशंका के निवारण के लिए उक्त हस्तलेख के आरंभ, मध्य और अंत के पृष्ठों के फोटोचित्र मंगवाए गए, जो मेनारियाजी के सौजन्य से शीघ्र ही प्राप्त हो गए। वे तीनों इसमें यथा स्थान छापे गए हैं। उनके देखने से स्पष्ट है कि राजविलास के तेरहवें विलास की पुष्पिका (देखिए हस्तलेख-चित्र सं० २) और अठारहवें विलास की पुष्पिका (देखिए हस्तलेख-चित्र सं० ३) में कर्ता का नाम स्पष्ट ‘मान कवि’ दिया हुआ है। इसलिए संभावना है कि अन्य विलासों की पुष्पिका में भी मान कवि नाम ही होगा। हस्तलेख के अंतिम पृष्ठ के चित्र (देखिए हस्तलेख-चित्र सं० ३) में कर्ता ‘मान कवि’ के अनंतर उक्त हस्तलेख के लेखक (लिपिकर्ता) का नाम कवि श्रीमानसिंह दिया हुआ है। राजविलास के कर्ता ‘मान कवि’ और उक्त हस्तलेख के लिपिकर्ता ‘मानसिंह’ दोनों को मेनारियाजी ने एक ही माना है। अंतिम पृष्ठ का वह अंश यहाँ आधुनिक नागरी लिपि में अवलोकनार्थ उद्धृत भी कर दिया जाता है—

‘इति श्रीमन्मानकविविरचिते श्रीराजविलासशास्त्रे महाराणाश्रीजयसिंहजी कुंआरपदे। श्रीचित्रकूटमहादुर्गे पातिसाहस्रैरगसाहस्रस्य साहिजादा अकब्बर तदुपरि रतिवाह वर्णन नाम अष्टादसमोविलासः १८ इति श्रीराजविलास ग्रंथ संपूर्णः ॥ श्रीरस्तु ॥ लिखितं कवि श्रीमानसिंहजी श्रीमद्वृहत्तटाके। श्रीचित्र-

कूटाधिपतिः ॥ राणा श्रीजयसिंहजी विजयमानराज्ये सं० १७४६ कार्तिक दीप-
मालिका बुद्धवासरे आचद्रार्क नद्यादयं ग्रंथः लेखकपाठकश्रोतृणा श्रीदो वरदो
भवतुः श्रीः श्रीः श्रीः श्रीः ।'

इसके अवलोकन से स्पष्ट है कि मान कवि ने जिस समय राजविलास की रचना की उस समय महाराणा श्रीजयसिंहजी 'कुंआरपद' पर थे अर्थात् उस समय वे राजा नहीं हुए थे, युवराज या राजकुमार मात्र थे। पर श्रीमानसिंह ने जब उक्त हस्तलेख लिखा (अर्थात् सं० १७४६ में) तब वे श्रीचित्रकूटाधिपति राणा श्रीजयसिंह थे। उनके 'विजयमान राज्य' में बृहत् तटाक पर लिपिकर्ता ने हस्तलेख का लेखन किया तथा उक्त संवत् की कार्तिक बदी दीपमालिका (दीवाली) को बुध के दिन उसे समाप्त किया।

श्रीराजसिंहजी का देहात सं० १८३७ में कार्तिक सुदी दशमी को हुआ था और श्रीजयसिंह की गद्दीनशीनी पिता के देहात पर कुरज (जिसे राज-प्रशस्ति में कडज लिखा है) गाँव में हुई। वे उस समय उसी गाँव में थे जहाँ उन्हें महाराणा श्रीराजसिंह के देहावसान का समाचार मिला।*

महाराणा श्रीजयसिंह का देहावसान सं० १७५५ में आश्विन बदी चतुर्दशी को हुआ था।†

श्रीमानसिंह के संबंध में उक्त पुष्पिका के आधार पर यह संभावना की जा सकती है कि वे कदाचित् मान कवि द्वारा ग्रंथ समाप्त करने के अवसर पर भौतिक शरीर धारण कर चुके थे और सुबोध भी थे। इसी पुष्पिका में ये 'कवि' नाम से अभिहित हैं और 'श्री' और 'जी' से भी अलंकृत हैं। 'बृहत् तटाक' पर रहते भी थे। इससे इनके जैन होने की संभावना की जा सकती है। इस प्रकार रत्नाकरजी ने जो जनश्रुति दी है उससे यदि इस हस्तलेख के लिखक (लिपिकर्ता) 'कवि श्रीमानसिंहजी' का संबंध हो तो असंभव नहीं।

इस प्रकार राजविलास के कर्ता मान कवि और बिहारीसतसई के टीकाकार मानसिंह भिन्न भिन्न नामों के ही कारण भिन्न भिन्न व्यक्ति प्रतीत होते हैं। दोनों के पार्थक्य में मेनारियाजी की यह स्थापना भी मानी जा सकती है कि राजविलास की व्रजभाषा और बिहारीसतसई की टीका की व्रजभाषा में भी साम्य नहीं है।

* देखिए आगारीशकर हाराचंद्र ओझा कृत 'उदयपुर राज्य का इतिहास', भाग २, पृष्ठ ५८१।

† देखिए वही, पृष्ठ ५९४।

अब मान कवि के अन्य नाम के संबंध में मेनारिया जी की संभावना पर विचार करना है। वे लिखते हैं—

‘परंतु यह मानसिंह नाम भी इनका वास्तविक नाम मालूम नहीं पड़ता। कदाचित् इनका वास्तविक नाम कल्याणशाह था। इस बात का संकेत इन्होंने अपने इस राजविलास ग्रंथ में एक स्थान पर किया है—

‘कलियान साहि कविमान कहि सककर चौकी क्षीर युत।

‘ऐसा लगता है कि इनका असली नाम कल्याणशाह था जिसको दीक्षा के पश्चात् बदलकर मानसिंह कर दिया गया था। इस मानसिंह नाम का लघुरूप मान है जिसके आगे कवि लगाकर इस नाम का प्रयोग इस ग्रंथ में स्थान स्थान पर किया गया है।’

सुविधार्थ जिस छंद में ‘कलियानसाहि’ शब्द प्रयुक्त है उसको यहाँ पूरा उद्धृत कर दिया जाता है—

सु जलेबी हेसमी अकबरी और अमृती।

पुरी तिनेगिनी सौंठि मठी साबुनी निखूती।

फेनी फुनि रेवरी स्वाद घनखंड सँठेली।

मुरकी बरफी पीलसार घनसार सँभेली।

कलियानसाहि कवि मान कहि सककर चौकी क्षीरयुत।

मिश्रान बिबिधि पोषे सुभट जँवत जो जिहँ चित रुचत ॥

—आठवाँ विलास, छंदसं० ६५।

जिस प्रसंग से यह छप्पय संबद्ध है उसमें मिठाइयों का उल्लेख है। इस छप्पय में भी मिठाइयों की नामावली है। यहाँ ‘कलियानसाही’ उसी प्रकार मिठाई का नाम है जिस प्रकार ‘बालूसाही’ और ‘करनसाही’। मिठाई का ऐसा नाम जिसमें उत्तरपद ‘साही’ हो राजविलास में एक और है—

सु अमृति मोदक लाखणसाहि। गिंदौरनि पैरनि गंज सु चाहि।

पतासे हेसमि खंड पॅगेरि। तिनेगनि केसरिपाक सु हेरि ॥

यहाँ ‘लाखणसाहि’ किसी मिठाई का ही नाम जान पड़ता है। मिठाइयों के ऐसे नाम व्यक्तियों के नाम से सबद्ध हैं या कल्याण, लाखण, करन, बालू आदि का कोई अन्य अर्थ है यह अनुसंधान-सापेक्ष है। मोहन-भोग और सोहनहलवा में मोहन और सोहन गुणावाचक विशेषण हैं या नाम, ‘अकबरी’ बडे के अर्थ में है या वह भी किसी ‘अकबर’ नाम से सबद्ध

ऐसी जिज्ञासाएँ होती हैं। जो हो, 'कल्याणशाह' मान कवि का नाम उक्त उद्धरण से सिद्ध नहीं होता। यदि यही माना जाए कि 'मानकवि' का नाम पहले कल्याणशाह था तो यह बात समझ में नहीं आती कि किसी कल्याणशाह का नाम-जैन मत में दीक्षित होने पर 'मानसिंह' क्यों रखा गया। किसी व्यक्ति का नाम मतदीक्षा के पूर्व मानसिंह हो तो जैन मत में प्रविष्ट होने पर उसका वही (मानसिंह) नाम ज्यों का त्यों रह सकता है, कल्याणशाह मानसिंह हो जायें इसमें असंगति ही प्रतीत होती है। इसलिए 'मानसिंह' नामक व्यक्ति 'मान कवि' से पृथक् है। मान कवि को जो भाट, चारण या कवीश्वर कहते रहे हैं वह इसी से कि हिंदीवालों ने उन्हें पहले कभी जैन नहीं समझा था। मान कवि जैन थे यह सूचना सबसे प्रथम श्रीमेनारियाजी ने दी है। राजविलास के दोनों हस्तलेखों का आरंभ 'श्रीऋषभदेवजी सत्यमेव' से होता है इससे यह कहा जा सकता है कि कदाचित् मान कवि ने जैन मत के कारण ही श्रीऋषभदेवजी का आरंभ में स्मरण किया है। अन्यथा राजविलास के मंगलाचरण में सरस्वती की विस्तृत प्रार्थना रचयिता के जैन होने की कल्पना की विरोधिनी है। पुष्पिकाओं में भी 'मान कवि' मात्र लिखा है। विजयगङ्गा आदि किसी वर्ग का भी उल्लेख नहीं है।

अतः राजविलास के उदयपुरवाले हस्तलेख की अंतिम पुष्पिका के 'मानसिंह' चाहे बिहारीसतसई के टीकाकार न हों पर वे 'मान कवि' नहीं हैं। 'मान कवि' का नाम 'मान कवि' ही था, 'मान' उनका मूल नाम और 'कवि' कविता करने के कारण। वे 'जती' (अर्थात् साधु, जैन यति) थे इसका पता श्रीमेनारियाजी ने राजस्थानी बातों से सबसे पहले दिया है।

श्रीमेनारियाजी ने सवत् २०११ में सभा को सूचित किया कि उसने 'राजविलास' नामक जो ग्रंथ प्रकाशित किया है उसका संपादन ठीक ढंग से नहीं किया गया है। उसमें स्थान स्थान पर अनेक भूलें भरी हुई हैं। कहीं एक शब्द को तोड़कर दो तीन टुकड़े कर दिए गए हैं और कहीं दो तीन शब्दों को मिलाकर एक शब्द बना दिया गया है। इसके अलावा इस ग्रंथ में इसके रचयिता मान कवि तथा इसके चरित्रनायक महाराणा राजसिंह के विषय में भी कुछ नहीं लिखा गया है। पुस्तक की भूमिका में जो कुछ लिखा गया है वह भी अत्यंत दोषपूर्ण है। इस ग्रंथ की मूल हस्तलिखित प्रति उदयपुर में सुरक्षित है। यदि कभी इसका नवीन संस्करण निकालने की आवश्यकता हो तो मैं इसका प्रामाणिक संस्करण तैयार कर सकूंगा, जिसमें भूमिका, शब्दकोश आदि सब रहेंगे।'

आकर-ग्रंथमाला की योजना ग्रंथावलियों या रचनावलियों प्रकाशित करने की है। श्रीमेनारियाजी के प्रस्ताव के अनुसार उसमें 'मान-ग्रंथावली' प्रकाशित करने का निश्चय किया गया। पर मान कवि का केवल एक ही ग्रंथ राजविलास प्राप्त है इसलिए मान—राजविलास शीर्षक से यह पुस्तक इस ग्रंथमाला में छापी जा रही है। राजविलास का प्रथम संस्करण 'नागरी प्रचारिणी ग्रंथमाला' के अंतर्गत प्रकाशित हुआ था और उसका संपादन प्राचीन हिंदी-काव्य के परम मर्मज्ञ विद्वान् लाला भगवानदीनजी ने किया था। इस ग्रंथ की भूमिका में उन्होंने ग्रंथ के निर्माणकाल की सीमा का विचार किया है, कुछ राजसिंहजी का परिचय दिया है, प्रत्येक विलास का संक्षेप दिया है और अंत में निश्छल भाव से लिखा है—

‘सभा ने इस पुस्तक का संपादनभार मुझे सौंपा और मैंने सहर्ष स्वीकार किया। मैं युक्त प्रदेश का निवासी हूँ। इस पुस्तक में राजपूताना के शब्दों की भरमार है। मैंने अपनी शक्ति भर तो कसर कोताही नहीं की, परंतु बहुत संभव है कि इसमें अनेक अशुद्धियाँ हो गई हों। इसलिये पाठको से नम्रतापूर्वक निवेदन है कि उन अशुद्धियों के कारण सभा पर दोषारोपण न करे वरन् उसका कारण मेरी अल्पज्ञता ही समझें। यदि सुविज्ञ पाठक इतनी कृपा और करे कि अशुद्धियों से सभा को सूचित कर दे तो मुझे पूर्ण आशा है कि द्वितीय संस्करण में सभा उनपर ध्यान देकर सशोधन कर देगी।’

प्रस्तुत संस्करण में मान कवि के संबन्ध में कोई विशेष जानकारी नहीं दी जा सकी। इस संबंध में इतिहास मौन है। श्रीमेनारियाजी ने अथक परिश्रम किया, पर कोई सामग्री ही नहीं मिली। राजसिंह के संबंध में कुछ अधिक विवरण दिया गया है। विलास का संक्षेप कुछ विस्तृत करके दिया गया है। साथ ही उसकी भाषा, छंद, अलंकार, वर्णनचतुर्थ पर भी विचार किया है। इस संस्करण में श्रीमेनारियाजी ने जो परिष्कार किया है उससे लालाजी की आत्मा को सतोषलाभ होगा, यदि इसका हिंदी-साहित्य में उचित समादर हुआ।

वास्तविकता यह है लालाजी के सामने जो हस्तलेख था वह परवर्ती काल का था। उसके पाठ और उदयपुरवाले हस्तलेख के पाठ में अंतर है। पर अंतर बहुत अधिक नहीं है। लालाजी के संस्करण में कुछ तो हस्तलेख के पाठभेद हैं, कुछ सुदृष्ट की अशुद्धियाँ हैं और कुछ संपादन के कारण अंतर हुआ है। जो शब्द इधर उधर हुए हैं उनमें सुदृष्टदोष अधिक है, कुछ स्थलों

पर हस्तलेख ने धोखा दिया है। लालाजी के समय में बहुत सी स्थितियाँ स्पष्ट नहीं थीं। आज उनमें से कुछ स्पष्ट हो रही हैं। राजस्थान में भूतकालिक ऐसे प्रयोग प्राचीन पिंगल-काव्य में प्रायः देखे जाते हैं जो 'गात' होते हैं। ऐसे प्रयोग पृथ्वीराजरासो में भी हैं—

१—एक सूर सामंत दंत दंती उप्पारिग ।

२—भरहरिग खान खंधार लखि बर बिरुद्ध दाहरतनय ।

३—बहुदल अरितन गंजिकै तिन संधारिग सूर ।

४—जोति जोतिहि संपातिग ।

इस प्रकार के संयुक्तक्रियावाले प्रयोग अवधी की कुछ बोलियाँ में चलते हैं। 'आइ ग, चलि ग, उठि ग, बैठ ग, आदि। 'ग' का ऐसा लघ्वंत प्रयोग पूर्वी भाषा की विशेषता है वह राजस्थान के पिंगल में कैसे घर कर गया, भाषाविज्ञानियों को इसका शोध करना चाहिए।

राजविलास में भी ये 'गात' रूप मिलते हैं—

अति पावस उल्हरिग करिग कठल धुरकाली ।

आसा बंधि असाढ हरष करसणि कर हाली ।

बहुल दल बिथुरिग चारु चपला चमकंतह ।

गज घोष गंभीर मोर गिरि सोर मचंतह ।

आदीत सोम छवि आवरिग घण आयौ घमसारण घण ।

बरसंत बुंद बड़ बड़ बिमल जलधर बल्लभ जगत जण ॥

(१-३६)

साथ ही 'यात' रूप भी मिलते हैं—

बहुल चढंत बजत सुबाइ । उल्हरिय सुपावस समय आइ ॥

(१-४०)

इन दो प्रकार के प्रयोगों में अंतर है। 'करिय' और 'करिग' में स्पष्ट अंतर तो यह है कि पहले में एक क्रिया है दूसरे में दो क्रियाएँ हैं। 'ग' धातु अकर्मक है इसलिए 'करि' सकर्मक के रहते भी संयुक्त रूप अकर्मक हो गया। इसलिए इसका प्रयोग केवल कर्तरि होता है। भूतकाल में अन्यत्र जैसी क्रिया होगी वैसा ही प्रयोग होगा। अर्थात् अकर्मक होने पर 'कर्तरि' और सकर्मक होने पर 'कर्मणि'। इसे खड़ी बोली के उदाहरण से स्पष्ट कर लिया जा सकता है—

१—श्याम ने किया—सकर्मक क्रिया—कर्मणि प्रयोग ।

२—श्याम गया—अकर्मक क्रिया—कर्तरि प्रयोग ।

३—श्याम कर गया—अकर्मक संयुक्त क्रिया—कर्तरि प्रयोग ।

खड़ी बोली में सकर्मक क्रिया का भूतकाल में प्रयोग करने से 'कर्मणि' प्रयोग की स्थिति 'ने' चिह्न से स्पष्ट हो जाती है। कर्ता में यहाँ तृतीया का प्रयोग है कर्मणि प्रयोग होने से। कर्तरि प्रयोग में कर्ता में प्रथमा का प्रयोग होता है। ब्रजी में कर्मणि या कर्तरि प्रयोग होने पर 'ने' चिह्न विकल्प से आता है। प्राचीन कविता में इसका प्रयोग यत्र तत्र ही है। प्रायः 'ने' का प्रयोग नहीं है, पीछे की रचना में कुछ मिलता है—

१—स्याम कियौ—सकर्मक क्रिया—कर्मणि प्रयोग।

२—स्याम ने कियौ— " " ।

३—स्याम गयो—अकर्मक क्रिया—कर्तरि प्रयोग।

४—स्याम करि गयो—(संयुक्त) " " ।

अवधी में 'ने' चिह्न नहीं है, ऐसे कर्मणि प्रयोग भी नहीं हैं। वहाँ कर्तरि प्रयोग ही ऐसी स्थिति में होते हैं। जायसी और तुलसी के ग्रंथों में कर्मणि प्रयोग कहीं कहीं ऐसी स्थिति में मिलते हैं। उसका कारण ब्रजी-काव्य के अध्ययन का पडा हुआ प्रभाव है।

लालाजी के समय में 'करिग' आदि रूपों पर ध्यान नहीं गया था। उन्होंने दोनों रूप देखे तो सामान्यतया उनकी धारणा यही हुई कि हस्तलेख के 'लिखक' ने 'य' के स्थान पर 'ग' लिख दिया है—भूल या भ्रम से। 'ग' और 'य' की लिखावट में भी बहुत थोड़ा अंतर है। बस उन्होंने 'गात' रूपों को 'यात' कर दिया। फिर भी कहीं कहीं ये रूप उनकी दृष्टि से ओभल होकर रह गए हैं। जैसे—

दिन दस करिग मुकाम खगबल रचि षलषंडह ।—(१७-३८)

राजविलास में ही नहीं, पृथ्वीराजरासो में भी उपर्युक्त स्थिति है। उसमें भी 'यात' रूप मिलते हैं—

१—दुहु दिसि बढिय सनेह सब संजोगिय बर कति ।

२—सिंघ संधारघौ पिषिषि पिभिभ सिघन बबकारिय ।

३—कनै लंक दधि मंभ कोह कचन लै आइय ।

ध्यान देने योग्य बात है कि 'गात' रूप 'पिंगल' की रचना में ही मिलते हैं, 'डिंगल' की रचना में नहीं। हाँ, पिंगल की समस्त रचनाओं में ये रूप नहीं आए हैं। इसलिए पिंगल और डिंगल की रचना का एक अंतर यह भी हुआ कि जिसमें 'गात' रूप मिलते हैं वह निश्चित 'पिंगल' की रचना है।

श्रीमेनारियाजी ने इस संस्करण में यथास्थान दोनों रूप ज्यों के त्यों रहने दिए हैं। इनके अर्थ भी 'अभिधान' में ठीक दिए हैं। 'आवरिग' का अर्थ 'फिर गई, छिप गई' और 'उत्तरिग' का अर्थ 'उमड़ आया'। 'उमड़ गया' होता तो मूल के और निकट होता।

प्राचीन हस्तलेखों का ठीक ठीक पढ़ना कठिन समस्या है। हिंदी में अभी इस विषय में विशेष श्रम और शोध अपेक्षित है। कुछ विचारणीय स्थितियों का संकेत मात्र यहाँ पर्याप्त होगा। 'व' और 'ब' का अंतर हस्तलेखों में केवल नीचे बिंदी लगाकर करते थे। जिस 'व' के नीचे बिंदी न हो वह पवर्गीय 'ब' और जहाँ हो (वृ) वह अंतःस्थ 'व' होता है। ऐसे ही 'य' और 'ज' का अंतर भी बहुत केवल बिंदी से करते हैं। जहाँ नीचे बिंदी हो (यृ) वह अंतःस्थ और जहाँ बिंदी न हो वहाँ चवर्गीय 'ज' होता था। 'य' और 'ज' के संबध में विशेष ढिलाई रहती थी। 'राजविलास' में 'द्य' के रूप में दुहरा 'य' भी लिखा गया है। कहीं तो वह 'द्+य' के लिए है और कहीं 'य्य' अर्थात् 'ज्ज' के लिए। उद्यम, द्यौस, खद्योत में पहली स्थिति है। पर लज्ज, रज्ज, कज्ज, भज्ज, गज्ज, बज्ज के 'ज' के लिए भी 'द्य' यही रूप प्रयुक्त है। 'अद्य' (१-१४६) तो संदिग्ध हो सकता है, पर गद्यत (१-२०२) गज्जत है, सद्यन (१०-१०) सज्जन है, उद्यलं (१०-४७) उज्जलं है, कद्यहिँ-सद्यहिँ (१०-१४) कज्जहिँ-सज्जहिँ हैं। इसमें 'ज' स्वतंत्र भी ठीक ठीक लिखा मिलता है। ऐसी ही स्थिति असंयुक्त 'ज' की भी है। युत (१०-७४) को जुत मानने में संदेह हो सकता है पर योति (२-१०३) जोति, निय (१०-७८) निज और यल (१०-११४) जल असंदिग्ध हैं।

'यल' का अर्थ मेनारियाजी ने यों किया है—'यल'=(सं० इला) पृथ्वी' पर जहाँ 'यल' प्रयोग है वहाँ 'पृथ्वी' अर्थ में 'भू' शब्द भी पड़ा है—

जहँ तहँ सु कुंड बर बापिका, बन उपवन सरबर सलित ।

भू नारि सीस जुनु भालि यल, नगर उदयपुर चैन नित ॥

यहाँ कवि जो उत्प्रेक्षा कर रहा है वह यह है—यत्र तत्र सुंदर कुंड, श्रेष्ठ बावड़ी, वन उपवन में सरोवर और नदियाँ ऐसी जान पड़ती हैं मानो भू-नारी के मस्तक (उदयपुर) पर भाल-जल (पेशानी पर पसीने की बूँदें) हों। नगर मे नित्य चैन है।

प्राचीन हस्तलेखों में प्रायः द्वित्व रूप इकहरा ही लिखा मिलता है। महाप्राण वर्ण होने पर कभी कभी पूर्वगामी अल्पप्राणयुक्त भी उसका प्रयोग

मिलता है, 'भूला जश् भूशि' सूत्र को सार्थक करते हुए । कहीं कहीं द्वित्व के पूर्वगामी वर्ण पर एक खड़ी पाई लगी मिलती है या बिंदी लगा देते हैं । लख्ख या लक्ख के लिए 'लख' बहुधा लिखा गया है । प्रस्तुत संस्करण में इसे कहीं कहीं 'लाख' कर दिया गया है (८-१५२) । ऐसे ही पख्खर या पक्खर के बदले प्रायः 'पखर' मिलता है ।

कुछ द्वित्व या अल्पप्राण-महाप्राण के संयुक्त रूप विलक्षण लिखे जाते थे । उनसे भ्रम होना स्वाभाविक है । 'क' का द्वित्व दो प्रकार से लिखा जाता है । कहीं 'क्क' अर्थात् 'क्व'सा लिखा मिलता है और कहीं 'क्क' क ऊपर और नीचे । जहाँ पहला रूप है उसे दीनजी के संस्करण में कहीं कहीं 'क्क' पढ़ लिया गया है । कई संयुक्त वर्णों के दो दो रूप चलते हैं । 'ज्झ' आधुनिक भी लिखा गया है और उसका पुराना रूप 'झ्म' पढ़ लिया जा सकता है । दीनजी ने वैसा कहीं कहीं पढ़ा भी है । इसमें और 'भ' के द्वित्व पुराने रूप में बहुत थोड़ा अंतर है, वह भ्म पढ़ा जा सकता है । यह अपने वर्तमान रूप में भी मिलता है । यही स्थिति 'ञ्छ' की है । इसका परवर्ती वर्तमान रूप से मिलता-जुलता स्वरूप भी है और प्राचीन रूप भी । 'बिभत्सयं' में 'बिभञ्छय' तो ठीक है, पर 'कत्थि' के स्थान पर 'कच्छि' आदि रूप विचारणीय हैं । दो स्थितियाँ हो सकती हैं । या तो पुरानी भाषा में 'ञ्छ' वाले रूप ही चलते रहे होंगे या लिखक के भ्रम से ऐसा हो गया होगा । कहीं कहीं लिखावट से भी भ्रम होता है । 'त्र' को 'त्त' समझ लेना संभव है । यदि चित्र को कोई चिह्न पढ़ ले तो बहुत बड़ा अंतर हो जाए ।

हस्तलेख में एक ही शब्द के कई रूप मिलते हैं । जैसे पुष्प शब्द के लिए पुफ, पुष्फ और पुष्प । तीनों रूप या तो चलित रहे होंगे या लिखने-वाले ने अपने भ्रम से ऐसा कर दिया होगा । अन्य कई शब्दों में इस प्रकार के कई रूप मिलते हैं । इन सबका पाठांतर-संकलन करना अनुपयोगी समझा गया है । हिंदी के हस्तलेखों की हस्तलिपि के विभिन्न स्वरूपों के आधार पर लिपिसंबंधी बहुत कुछ अनुसंधान हो सकता है । इधर अभी हिंदीवालों की अभिरुचि नहीं हुई है । श्रीमेनारियाजी ने राजविलास का संपादन सभा के साहित्यविभाग को ध्यान में रखकर किया था । आकर-ग्रंथमाला में पाठशोध पर विशेष ध्यान रखने का निश्चय है, पाठांतर-संकलन के साथ ही अपेक्षित अभिधान भी मूल के संकेत सहित संयुक्त करने का संकल्प है । श्रीमेनारियाजी ने पाठशोध पर पर्याप्त ध्यान दिया है और उदयपुरवाली

प्रति का पाठ हूबहू देने का प्रयास किया है, फिर भी आकर-विभाग की प्रणाली से कुछ भेद होने से उस सॉचे में उसे ढाल दिया गया है। प्राचीन ग्रंथों के उच्चारण को प्रकट करने के लिए जहाँ तक साध्य हो चंद्रबिंदु का प्रयोग करना उचित है। इसलिए उनके संपादन में इस विभाग के सहायक ने परिश्रमपूर्वक उसकी योजना कर दी है। 'अभिधान' में मूल के संकेत नहीं थे। इसकी योजना भी विशेष प्रयास द्वारा विभाग के सहायक ने की है। राजबिलास में प्रयुक्त छंदों का उल्लेख तो भूमिका में यथास्थान किया गया है, पर उन छंदों का स्वरूपविवेचन नहीं। यह कार्य भी विभाग के सहायक ने अभिनिवेशपूर्वक संपन्न किया है। उनके संपादन में पाठांतरों की योजना का अवकाश ही नहीं था। उन्हें एक ही हस्तलेख मिला था। यह उचित समझा गया कि सभा में जो हस्तलेख है उसके पाठांतर भी इसमें संकलित कर दिए जायें। लालाजी का संपादित मुद्रित संस्करण इस संस्करण के प्रकाशित हो जाने से निष्पन्न हो जाएगा, इसलिए उस संस्करण के पाठ भी पाठांतर में संकलित कर दिए गए हैं।

प्राचीन ग्रंथों के संपादन में मतभेद की स्थिति बहुत नहीं तो यत्र तत्र होती ही है। श्रीमेनारियाजी ने जो कुछ मनोयोगपूर्वक किया है उसमें मतभेद के स्थल हैं। पर कवि राजस्थान का है और श्रीमेनारियाजी भी राजस्थान के हैं। सदेशीयता के नाते इस विषय में उन्हीं का प्रामाण्य अधिक है। उन्होंने जिस लगन के साथ यह कार्य संपन्न किया है उसके लिए वे धन्यवादाह्व हैं। आकर-विभाग के सहायक श्रीरामबली पाडेय एम० ए० ने ग्रंथ में 'उक्तानुक्तदुरुक्तार्थव्यक्तीकरण' के द्वारा जो उसका वार्त्तिक किया उसके लिए वे आशीर्वादाह्व हैं। श्रीरामदास शास्त्री एम० ए०, साहित्यरत्न भी पाठांतर की पूर्ति करके आशीर्वाद के भाजन हैं। मुझे सुख है कि गुरुदेव लाला भगवानदीनजी ने जिस कार्य का अनुष्ठान किया था उसकी पूर्णाहुति में मेरा भी कुछ योग है।

बाणी-वितान भवन,

ब्रह्मनाल, वाराणसी-१

शारदीय नवरात्र, २०१५

विश्वनाथप्रसाद मिश्र

संपादक,

आकर-ग्रंथमाला

निवेदन

जैन कवि मानसिंह-रचित इस राजविलास ग्रंथ का प्रथम संस्करण आज से ठीक ४५ वर्ष पूर्व सन् १९१२ में प्रकाशित हुआ था और उसका संपादन स्वर्गीय लाला भगवानदीनजी ने किया था। यह इस ग्रंथ का द्वितीय संस्करण है।

प्रथम संस्करण का पाठ किस हस्तलिखित प्रति के आधार पर निर्धारित किया गया था, वह प्रति कहाँ से प्राप्त हुई थी, उसका लिपिकाल क्या था इत्यादि बातों का अब कुछ पता नहीं है। परंतु उस अज्ञात प्रति पर आधारित प्रथम संस्करण का जो पाठ मुद्रित रूप में हमारे सामने है उसे देखने से साफ भलकता है कि वह प्रति बहुत अशुद्ध थी, और किसी कुशल लिपिकार के हाथ की लिखी हुई नहीं थी। क्योंकि उसमें (प्रथम संस्करण में) पाठ की बहुत गड़बड़ी देखने में आती है। कहीं पंक्तियों की पंक्तियों गायब हैं, कहीं एक शब्द के दो तीन टुकड़े हो गए हैं, कहीं दो तीन शब्द मिलकर एक शब्द बन गया है और कहीं शब्द के शब्द बदलकर दूसरे रख दिए गए हैं। उदाहरण के लिए निम्नलिखित एक छंद को देखिए। प्रथम संस्करण में यह इस रूप में छपा है—

सगति जो कीजियै तेह केही सती । धन्य कहि यैति के होइ ज्यों धन-
वती ॥ आपणा उभय कुल जेण अजुवालयं । धाइ राखी घणुं दूध धवरा
बियं ॥ बाधए हच्छ हत्येण सो बालय । सुंदराकार तनु गोरस कुमालयं ॥४०॥

—पृष्ठ २१

इसका वास्तविक रूप इस प्रकार है—

सगति जे कीजियै तेह केही सती ।
धन्य कहियै तिके होइ ज्यों धनवती ॥
आपणा उभय कुल जेण अजुवालयं ।
परम पतिव्रता पण एम तिम पालयं ॥१३६॥
कोटि ते भूप नायन कारावियै ।
धाइ राखी घणुं दूध धवरावियै ॥
बाधए हत्थ हत्येण सो बालयं ।
सुंदराकार तनु गोरस कुमालय ॥१४०॥

—द्वि० सं० पृष्ठ १५

इसके अतिरिक्त प्रथम संस्करण में प्रूफ-सशोधन संबंधी त्रुटियों भी बहुत रह गई थीं और इन कतिपय कारणों से उसका कुछ ऐसा रूप बन गया था

कि उसे पढ़कर इस ग्रंथ के ऐतिहासिक एवम् साहित्यिक महत्त्व का ठीक ठीक मूल्यांकन करना कठिन था ।

प्रस्तुत संस्करण राजविलास की एक प्रामाणिक हस्तलिखित प्रति के आधार पर तैयार किया गया है । यह प्रति उदयपुर के राजकीय पुस्तकालय, सरस्वती भवन में सुरक्षित है और इस ग्रंथ की मूल तथा प्राचीनतम प्रति है । इसमें १० × ६ इंच साइज के १६८ पन्ने हैं । इसके प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियाँ और प्रत्येक पंक्ति में २४।२५ अक्षर हैं । इसकी लिखावट सुवाच्य एवम् अक्षर बड़े बड़े लगभग आध इंच आकार के सुंदर रूप में हैं । प्रति सफेद रंग के कागज पर पक्की काली स्याही में लिखी गई है । परंतु प्रत्येक विलास का शीर्षक, प्रत्येक छंद का नाम व उसकी क्रम-संख्या तथा प्रत्येक विलास के नीचे की पुष्पिका लाल स्याही में अंकित हैं । यह प्रति सं० १७४६ में महाराणा जयसिंह के राजत्वकाल में लिपिबद्ध हुई थी । इसकी अंतिम पुष्पिका का लेख यह है—

‘इति श्रीराजविलास ग्रंथसंपूर्णः ॥ श्रीरस्तु ॥ लिखितं कवि श्रीमानसिंहजी श्रीमद्वृहत्तटाके । श्रीचित्रकूटाधिपतिः राणा श्रीजयसिंहजी विजयमान राज्ये सं० १७४६ कार्तिक दीपमालिका बुद्धवासरे आचंद्रार्क चिरंनवाद्यं ग्रथः लेखकपाठकश्रोतृणा श्रीदो वरदो भवतुः श्रीः श्रीः श्रीः श्रीः ।’

उपर्युक्त प्रति के अलावा राजविलास की दूसरी कोई प्रति कहीं से प्राप्त नहीं हुई । अतएव इस संस्करण के लिए मैंने केवल इसी एक प्रति का उपयोग किया है और यह हूबहू इसकी अनुकृति है ।

इसके प्रारंभ में एक भूमिका जोड़ दी गई है जिसमें इस ग्रंथ के रचयिता का इतिवृत्त, इसकी कथावस्तु का सारांश, इसके ऐतिहासिक तथा साहित्यिक महत्त्व आदि विषयों पर प्रकाश डाला गया है । इस ग्रंथ में राजस्थानी शब्दों का प्रचुर प्रयोग हुआ है । अतएव इसमें प्रयुक्त राजस्थानी के कुछ बहुत कठिन शब्दों का एक कोश इसके अंत में लगा दिया गया है । आशा है, इस नवीन रूप में यह संस्करण पाठकों के लिए उपयोगी सिद्ध होगा ।

पुस्तक में कहीं कहीं छापे की भूलें रह गई हैं । अतः एक शुद्धिपत्र इसके अंत में लगा दिया गया है । यदि पाठक इस शुद्धिपत्र के अनुसार पहले इसमें संशोधन कर बाद में इसे पढ़ना प्रारंभ करेंगे तो इससे उनको अपने अध्ययन में सुविधा होगी ।

उदयपुर (राजस्थान)

२६-११-१९५८

विनीत

मोतीलाल मेनारिया

भूमिका

हिंदीसाहित्य के निर्माण में जैन कवियों का भी बहुत हाथ रहा है। अनेक जैन कवियों ने अपनी रचनाओं द्वारा हिंदी के भंडार की श्रीवृद्धि की है। इन जैन कवियों की अधिकांश रचनाओं में जैनधर्म का निरूपण किया मिलता है और साहित्यिक सौंदर्य उनमें कम पाया जाता है। परंतु कुछ ऐसे ग्रंथ भी हैं जो साहित्य एवम् इतिहास की दृष्टि से भी बड़े महत्त्व के हैं। ऐसे ग्रंथों में मान कवि का प्रस्तुत ग्रंथ राजविलास भी है।

हिंदीसाहित्य के इतिहास-ग्रंथों में कवि मान का विशेष इतिवृत्ति नहीं मिलता और थोड़ा बहुत जो मिलता है वह भी संदिग्ध है। मिश्रबन्धु-विनोद में इनका कविताकाल सं० १७१७ बतलाया गया है और कहा गया है कि इन्होंने राजविलास नाम का एक ग्रंथ बनाया जिसमें महाराणा मान-सिंह का वर्णन है^१। परंतु मिश्रबन्धुओं के ये दोनों ही कथन निर्मूल हैं। मेवाड़ में मानसिंह नाम के कोई महाराणा ही नहीं हुए हैं, न राजविलास का रचनाकाल ही सं० १७१७ है। इसका लिखना सं० १७३४ में प्रारंभ हुआ था।

लेकिन इधर राजस्थानीसाहित्य में दो एक स्थानों पर इनका उल्लेख मिलता है जिससे इनके व्यक्तिगत जीवन पर थोड़ा सा प्रकाश पड़ता है। कविराजा बाँकीदास ने एक स्थान पर इनके विषय में लिखा है—

‘मानजी जती राजविलास नाँव रूपक राणा राजसिंह रौ वणायौ^२।

इससे मालूम पड़ता है कि ये कोई जैन कवि थे, न कि चारण या भाट जैसा हिंदी के कुछ विद्वानों ने अनुमान किया है।

उदयपुर के सरस्वती भंडार में राजविलास की एक हस्तलिखित प्रति सुरक्षित है। यह सं० १७४६ की लिखी हुई है और इस ग्रंथ की प्राचीनतम अथवा मूल प्रति है। इसकी पुष्पिका में इस ग्रंथ के रचयिता का नाम ‘मान-

१—दूसरा भाग, पृ० ४६२

२—राजस्थानी बातें, बात-संख्या १११

सिंह' दिया हुआ है जिससे विदित होता है कि मानजी का पूरा नाम मान-सिंह था और कविता में ये अपना नाम कवि मान लिखा करते थे ।

परंतु यह मानसिंह नाम भी इनका वास्तविक नाम मालूम नहीं पड़ता । कदाचित् इनका वास्तविक नाम कल्याणशाह था । इस बात का संकेत इन्होंने अपने इस राजविलास ग्रंथ में एक स्थान पर किया है—

“कलियान साहि कवि मान कहि, सकर चौकी क्षीर युत”

—आठवाँ विलास, पद्य ६५ ।

ऐसा लगता है कि इनका असली नाम कल्याणशाह था जिसको दीक्षा के पश्चात् बदलकर ‘मानसिंह’ कर दिया गया था । इस ‘मानसिंह’ नाम का लघु रूप ‘मान’ है जिसके आगे ‘कवि’ लगाकर इस नाम का प्रयोग इस ग्रंथ में स्थान-स्थान पर किया गया है ।

मानसिंह नाम के एक और जैन कवि मेवाड़ में (?) हो गये हैं जिनकी लिखी ‘बिहारीसतसई की टीका’ प्रसिद्ध है । स्वर्गीय बाबू जगन्नाथ-दास रत्नाकर ने ‘बिहारीसतसई’ के टीकाकार इन मानसिंह और राजविलास के रचयिता मानसिंह दोनों को एक व्यक्ति माना है और अपनी इस कल्पना के आधार पर बिहारीसतसई की टीका का निर्माणकाल स० १७३४ निर्धारित किया है ।^३ परंतु यह उनकी भ्रान्ति है बिहारीसतसई के टीकाकार मानसिंह और राजविलास के कर्ता मानसिंह दोनों एक व्यक्ति नहीं हो सकते । क्योंकि इन दोनों की भाषा-शैली सर्वथा भिन्न है । राजविलास के प्रणेता मानसिंह की भाषा बहुत प्रौढ़ एवम् परिमार्जित है और उसमें सैकड़ों शब्द राजस्थानीभाषा के प्रयुक्त हुए हैं । अर्थात् इनकी भाषा राजस्थानी मिश्रित ब्रजभाषा है, शुद्ध ब्रजभाषा नहीं है । इसके विपरीत ‘बिहारीसतसई’ के टीकाकार मानसिंह की भाषा बहुत शिथिल है, और वह प्रायः शुद्ध ब्रजभाषा है । उसमें एक शब्द भी कहीं राजस्थानीभाषा का देखने में नहीं आता । उदाहरण लीजिए—

कहा लड़ैते द्विग करे, परे लाल बेहाल ।

कहुँ मुरली कहुँ पीत पट, कहुँ मुकुट बनमाल ॥

टीका—श्री ब्रंदावन मैँ सकल सखीन के संग गनगोर पुजवे'कुँ श्री राधा जु फुल पाती लेतुँ है । तिहाँ श्री कनइया जु सकल सखीन के संग ठाढ़े मुरली बजावत है । तिहाँ श्री राधा जु को सरूप देखकै विककै कनइया जु मुरझित होय गिर परै । तब श्री राधा जु सुँ सकल सखी कहै है । कहा० । अहो श्री राधे तुम श्री ऐसे लाइले नैन कीधे । परे० । इनको देखत ही श्री कनइया गिर परै हैं । कहूँ० । कितहुँ मुरली गिरी है । कितहुँ पीतांबर गिर्यो है । कहूँ० । कितहुँ मुगट बै गयो है । अर कितहुँ फुलन की चौसर गिरी है । ४

—बिहारी-सतसई की टीका

राति बोली हुई पुन्व दिसि रचाड़ी ।
 बेगि आवै जिते भूप सू बट्टड़ी ॥
 तितै हारीत रिषि गगनै गति हल्लियौ ।
 बोल बापै तदा आइ इम बुल्लियौ ॥
 अहो जोगिद करि उच्चस्थौ आपणौ ।
 थिर थई नाथजी रजसिरि थापणौ ॥
 रवनि मुनि देव मुनि अप्प ऊभौ रह्यौ ।
 किजियै भूप तुहि मंडि मुख यौ कह्यौ ॥
 मंडियौ मुख तिर्यौ स्वमुख तबोलयं
 नंखियौ हेत करि पीक निर्मोलयं ॥
 देखि उच्छिष्ट निज वयण टाली दियं ।
 लिहिय रिषि मुख तणौ पाय भल्लै लियं ॥
 कहय रिषि एम तैं बाल किछौ किसौ ।
 अमर हुइ देह नित एह हूँतौ इसौ ॥
 नेट तो पाय थी राज जायै नहीं ।
 किछ तू भूप मैँ एह वाचा कही ॥

—राजविलास, पहला विलास, पद्य ५३, ५६

और भी—

सुनत पथिक मुँह माह निस, चलत लुवैँ उहि गाम ।
 बिनु बूझै बिनु ही कहै, जियति बिचारी बाम ॥

टाका—श्री कृष्ण राधा जु सुँ कहै है । राजा नल दमयंती रानी को बन मैँ सोवत छौँड परदेस गए । तब रानी जाग देखै तो राजा नहीं तब सकल बन मैँ फिर फिर देख्यौ । पर राजा पाए नहीं । तब चली चली अपने पीहर आय रही । तब बिरहा अगन तैँ चहौँधौँ लुवैँ चली । जे जे पंथ आय निकरै तिहाँ माह मैँ लुवैँ चलत जाने । सो उहाँ ते कोउ पंथी जीहाँ राजा नल सराह मैँ आय सोएहि । तिहाँ और पथीन के आगे लुवैँ चलन की बात माह मास मैँ सुनी । चल० । वा गॉम लुवैँ चलत हैं ता के पीहर के गॉम को नॉम लियो तब । बिन० । जीय० । पंथी के लुभै बिना कहे बिना ही राजा नल दमयंती कौँ तब जीवती जानी । सुख पायौ । इत्यर्थः^५ ॥

—बिहारी-सतसई की टीका

बरी 'सर्व' बाला, रमा ज्यौँ रसाला ।
मनी मुत्तिमाला, लही लाख लाला ॥
दुरमा दुसाला, हयं हीसवाला ।
सरूवं सिधाला, पुलै ज्यौँ पँखाला ॥
सिंगारे सुंडाला, महा मच्चाला ।
हलते हठाला, मनौँ मेवमाला ॥

—राजविलास, पहला विलास पद्य ७१-७३

उल्लिखित बिहारी-सतसई की टीका की दो प्राचीन लिखित प्रतियाँ उपलब्ध हुई हैं । इनमें एक सं० १७७२ की^६ और दूसरी सं० १७७३ की^७ लिखी हुई है । इनके आधार पर बिहारी-सतसई के टीकाकार मानसिंह का आविर्भावकाल सं० १७७० के आस-पास ठहरता है । मिश्रबधु-विनोद में इनका रचनाकाल सं० १८२३ बताया गया है जो अशुद्ध है ।^८

कहने का अभिप्राय यह है कि मान कवि का लिखा हुआ यह एक ही ग्रंथ राजविलास अभी तक मिला है और इनकी लिखी बिहारी-सतसई की

५—उदयपुर के सरस्वती भंडार की हस्तलिखित प्रति, पृ० ६४

६—उदयपुर के सरस्वती भंडार के हस्तलिखित ग्रंथों की सूची, पृ० २३६

७—नागरीप्रचारिणी-पत्रिका, भाग ६, अंक १, पृ० १०२

८—मिश्रबधु-विनोद, भाग दूसरा, पृ० ७७२

जो टीका बतलाई जाती है वह वास्तव में इनकी लिखी हुई नहीं है। वह इनसे भिन्न मानसिंह नाम के किसी दूसरे कवि की रचना है।

जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है इस राजविलास ग्रंथ का प्रारंभ सं० १७३४ में हुआ था। इस बात का स्पष्ट उल्लेख इस ग्रंथ में दो स्थानों पर हुआ है :—

(१) सुभ संवत दस सात, बरस चौतीस बघाई ।
उत्तम मास असाढ़, दिवस सत्तमि सुखदाई ॥
बिमल पाख बुधवार, सिद्धि बर जोग संपत्तौ ।
हरषकार रिषि हस्त, रासि कन्या ससि रत्तौ ॥

तिन द्यौस मात त्रिपुरा सुतवि, कीनौ ग्रंथ मडान कवि ।
श्री राजसिंघ महाराण कौ, रचियहिँ जस जौँ चद रवि ॥

—प्रथम विलास, पद्य ३८

(२) संवत सु सत्त दह सतक सार,
बन्धुर चौतीसम धरि विचार ।
सब लोक ऊँक निज निज-सबैँन,
आसाढ़ सेत सत्तमी ऐँन ॥
देवी सु आइ बरदान दीन,
कवि मान ग्रंथ आरंभ कीन ।
चीतौर धनी कहियै चरित्र,
पढ़ि छंद विविध रचि जस पवित्र ॥

—प्रथम विलास, पद्य ५८-५९

इसकी समाप्ति कब हुई, इस बात का निर्देश इस ग्रंथ में नहीं है। लेकिन यह भी एक विचारणीय प्रश्न है। इसमें महाराणा राजसिंह के जीवन संबंधी सं० १७३७ तक की घटनाओं का समावेश हुआ है। महाराणा की आज्ञा से उनके पाटवी कुँवर जयसिंह ने औरंगजेब के शाहजादे अकबर के साथ चित्तौड़ में ठहरी हुई शाही सेना पर उक्त संवत् के आषाढ़ माह में आक्रमण किया था और उसे वहाँ से मार भगाया था।^९ इस आक्रमण का पूरा विवरण इस ग्रंथ के अंतिम विलास में मिलता है। इसके चार माह बाद

अथात् कातक महीने में महाराणा की मृत्यु हो गई थी ।^{१०} लेकिन उनकी मृत्यु का उल्लेख इस ग्रंथ में नहीं है । इससे जान पड़ता है कि सं० १७३७ के आषाढ और कार्तिक माह के बीच किसी समय यह ग्रंथ लिखा जा चुका था । क्योंकि यदि यह महाराणा की मृत्यु के बाद समाप्त हुआ होता तो उनकी मृत्यु का उल्लेख इसमें अवश्य किया गया होता । इसके अतिरिक्त इस ग्रंथ के अंतिम विलास में आशीर्वाद के पाँच 'कलस कवित्त' जो दिए गये हैं^{११} उनसे स्पष्ट झलकता है कि उनकी रचना के समय महाराणा राजसिंह विद्यमान थे ।

इस हिसाब से इस ग्रंथ का निर्माणकाल सं० १७३४-३७ ठहरता है ।

राजविलास एक ऐतिहासिक काव्य है । इसमें मेवाड़ के महाराणा राजसिंह (प्रथम) का जीवन चरित वर्णित है । यह अठारह खंडों में विभक्त है जिनको विलास कहा गया है । इनका सारांश यहाँ दिया जाता है —

पहला [विलास—इसमें सरस्वतीवन्दना के पश्चात् मेवाड़ देश और चित्तौड़ के किले का वर्णन किया गया है । तदनंतर महाराणा राजसिंह के पूर्व पुरुष महाबली बापा रावल का इतिवृत्त प्रारंभ होता है । बापा रावल के वृत्तांत में उनके जन्म, बाल्यकाल विवाह आदि विषयक प्रायः सभी महत्वपूर्ण बातों पर प्रकाश डाला गया है । किस प्रकार बापा रावल ने चित्तौड़ के तत्कालीन मौर्यवंशी राजा चित्रंग को हराकर उस पर अपना अधिकार जमाया इसकी भी कहानी इसमें कही गई है ।

दूसरा विलास—इसमें बापा रावल से लेकर राजसिंह के पिता महाराणा जगतसिंह (प्रथम) तक के मेवाड़ के राजाओं की वंशावली दी गई है । वंशावली के बाद इसमें महाराणा जगतसिंह के राज्य-वैभव तथा उदयपुर नगर का चित्र खींचा गया है । इस विलास में महाराणा राजसिंह के जन्म का वृत्तान्त भी दिया गया है । और यहीं से इस काव्य का मुख्य विषय आरंभ होता है ।

तीसरा विलास—इसमें महाराणा राजसिंह के विवाह का वर्णन है ।

१०—ओझा, उदयपुर राज्य का इतिहास, पृ० ८८८

११—पृष्ठ १०३-१०७

इनका प्रथम विवाह बूंदी नरेश राव छत्रसाल की बड़ी कन्या के साथ हुआ था। उनकी छोटी कन्या जोधपुर के महाराजा जसवंतसिंह (प्रथम) के साथ व्याही गई थी। दोनों के विवाह का सुहूर्त एक ही दिन था। दोनों की बराते जब राजद्वार पर पहुँचीं तब वहाँ तोरण बंदाई के सिलसिले में दोनों में कहा-सुनी हो गई। महाराजा जसवंतसिंह ने कहा कि हम हिंदुओं के सिरमौर हैं और पहले हम तोरण बँदाएँगे।^{१२} महाराणा राजसिंह ने कहा कि तोरण बंदाई की रस्म पहले हम पूरी करेंगे।^{१३} तलवारे खिंचने ही की थीं कि इतने में छत्रसाल वहाँ आ पहुँचे और किसी तरह समझा बुझाकर जसवंतसिंह को शांत किया।^{१४} तोरणबंदाई की रस्म पहले राणा राजसिंह ने पूरी की, बाद में जसवंतसिंह ने। बड़ी धूमधाम से दोनों का विवाह-संस्कार संपन्न हुआ। विवाह कर महाराणा राजसिंह जब घर लौटे तब उदयपुर के नर-नारियों ने उनका बड़ा स्वागत किया।^{१५}

चौथा विलास—इसमें उदयपुर के 'सबरितुविलास' नामक बाग का वर्णन है। इस बाग को राणा राजसिंह ने अपने कुँवरपदे के समय बनवाया था। कवि ने इस बाग का २३ पद्यों में अच्छा वर्णन किया है।

पाँचवाँ विलास—महाराणा राजसिंह स० १७०६ में मेवाड़ की गद्दी पर बैठे थे। इस विलास में उनको गद्दीनशीनी और उनके व्यक्तित्व का वर्णन है। यह वर्णन अतिरंजनापूर्ण एवम् कुछ स्थानों पर अस्वाभाविक है। कवि ने महाराणा राजसिंह की राम, कृष्ण, शिव, कल्पवृक्ष आदि से उपमा दी है और एक स्थान पर उनको साक्षात् ब्रह्म ही कह दिया है^{१६}। इस विलास के अंतिम भाग में कवि ने महाराणा राजसिंह के बड़े कुँवर जयसिंह और छोटे कुँवर भीमसिंह के व्यक्तित्व और शौर्य-पराक्रम पर भी थोड़ा सा प्रकाश डाला है^{१७}। यह विलास ६३ पद्यों में समाप्त हुआ है।

१२—पद्य ८७-८८

१३—पद्य ६०

१४—पद्य ६२-६३

१५—पद्य १०३-१०७

१६—पद्य २३-३६

१७—पद्य ५६-६६

छठा विलास—इस विलास में महाराणा राजसिंह द्वारा की गई मालपुरा की लूट का वर्णन है। राजसिंह के समय में मालपुरा एक बहुत समृद्ध नगर और सैनिक दृष्टि से बड़े महत्व का स्थान था। यह उस समय मुगल बादशाहत का एक सुदृढ थाना भी था। सं० १७१५ में महाराणा राजसिंह ने इस पर आक्रमण किया और लूटपाट मचाकर इसे चौपट कर दिया। महाराणा की यह लूटपाट वहाँ पूरे सात दिन तक रही^{१८}। मुगल सिपाही भाग गए और एक बहुत बड़ी धनराशि महाराणा के हाथ लगी।

सातवाँ विलास—इसमें महाराणा राजसिंह का रूपनगर (किशनगढ़) की राजकन्या चारुमती के साथ विवाह का वर्णन है। रूपनगर के राजा रूपसिंह का देहात होने पर उसका पुत्र मानसिंह उसका उत्तराधिकारी हुआ। बादशाह औरंगजेब ने उसकी बहिन चारुमती की सुंदरता का हाल सुनकर उससे विवाह करना चाहा। मानसिंह को भी विवश होकर यह संबंध स्वीकार करना पड़ा। लेकिन चारुमती औरंगजेब के साथ विवाह करना नहीं चाहती थी। इसलिए उसको जब इस बात का पता लगा कि उसका विवाह औरंगजेब के साथ किया जा रहा है तब वह बहुत दुखी हुई और उसने महाराणा राजसिंह की शरण ली। उसने महाराणा को एक पत्र भेजा। इस पत्र में उसने अपनी मनोव्यथा का पूरा हाल लिखते हुए प्रार्थना की कि आप मेरे साथ विवाह कर मेरे धर्म की रक्षा करें^{१९}। इस पर महाराणा राजसिंह एक बड़ी सेना लेकर रूपनगर पहुँचे और चारुमती से विवाह कर उसे अपने यहाँ ले आए।

आठवाँ विलास—इसमें महाराणा राजसिंह की रूपनारायण की यात्रा तथा राजसमुद्र झील का वर्णन है। रूपनारायण का मंदिर उदयपुर से कोई ५३ मील उत्तर दिशा में है। यह यात्रा महाराणा राजसिंह ने सं० १७१७ में की थी। वहाँ से लौटते समय उन्होंने मार्ग में राबनगर के पास गोमती नदी को देखा और वहाँ एक तालाब बनवाने के विषय में अपने सरदार सामंतों से पूछताछ की। इस पर उनके राजपुरोहित ने उनसे कहा कि आपके पूर्वज महाराणा अमरसिंह ने यहाँ तालाब बनवाने का काम आरंभ किया था पर नदी के वेग के कारण तालाब का बाँध टिक न सका।

यदि किसी तरह यहाँ तालाब बनवाया जा सके तो वह समुद्र की बराबरी का होगा और उससे आपका नाम अमर हो जायगा ^{२०} । महाराणा उस समय कुछ न बोले और उदयपुर लौट आए । इसी वर्ष मेवाड़ में भयंकर अकाल पड़ा और मेवाड़ की प्रजा भूख के मारे त्राहि त्राहि करने लगी । तब महाराणा ने अकाल पीड़ितों की सहायता के लिए राजसमुद्र को बँधवाना आरंभ किया । इसका प्रारंभ सं० १७१७ में और इसकी प्रतिष्ठा सं० १७३२ में हुई थी । इसकी प्रतिष्ठा के समय अनेक ब्राह्मण, चारण, भाट आदि राजसमुद्र पर एकत्र हुए थे जिनको महाराणा की ओर से कई हजार घोड़े, कई हजार हाथी, कई गाँव और अतुल्य धन दान में दिया गया था ^{२१} ।

नवों विलास—इसमें कवि ने मेवाड़ से हटकर तत्कालीन मारवाड़ (जोधपुर राज्य) की राजनीतिक स्थिति पर प्रकाश डाला है । उस समय जोधपुर राज्य पर महाराजा जसवंतसिंह का राज्य था । दिल्ली के राज सिंहासन को प्राप्त करने के लिए जब मुगल सम्राट शाहजहाँ के पुत्रों में झगड़ा हुआ तब जसवंतसिंह ने दारा का पक्ष लिया था । इसलिए औरंगजेब इनसे बहुत अप्रसन्न था । परंतु जसवंतसिंह को इसकी कुछ भी परवा न थी । औरंगजेब के बादशाह बन जाने पर भी वे उसके विरुद्ध बने रहे और उसकी नीति का विरोध करते रहे । एक बार जब वे अहमदाबाद में थे तब बादशाह ने उनके लिए एक सिरपाव भेजा और दिल्ली आकर मिलने के लिए लिखा । परंतु जसवंतसिंह ने वह सिरपाव किसी दूसरे को दे दिया और दिल्ली में बादशाह के संमुख उपस्थित होने से इनकार कर दिया । इस तरह जसवंतसिंह और औरंगजेब के बीच वैमनस्य चलता रहा । परंतु वह इनका बिगाड़ कुछ नहीं सका । न तो वह इनको दिल्ली बुला सका, न इनके राज्य पर हाथ डाल सका । सं० १७३५ में महाराजा जसवंतसिंह की काबुल में मृत्यु हो गई । उनके मरते ही औरंगजेब उनके कुटुंबियों से बदला लेने का प्रबंध करने लगा । अपना एक दूत भेजकर उसने जोधपुर के राठौड़ों को कहलाया कि महाराजा जसवंतसिंह का इकट्ठा किया हुआ सब धन मुझे सौंप दो । ऐसा करने से जोधपुर की सारी घरती पर तुम्हारा अधिकार बना रहेगा और बादशाह मेहरबानी फरमा कर कुछ और घरती तुमको

देगा^{२२} । लेकिन राठौड़ों ने इस बात को स्वीकार नहीं किया । इस पर क्रुद्ध होकर औरंगजेब ने एक सेना अपने शाहजादे अकबर की अध्यक्षता में जोधपुर पर भेजी और खुद भी अजमेर में आ बैठा । मुगल सेना का डेरा जोधपुर से पाँच कोस की दूरी पर था^{२३} । राठौड़ों ने एक चालाकी की । उन्होंने शाही फौज के सेनापति को सखि के बहाने से दिन भर बातों में उलझाए रखा और पाँछ सौ साँड़ों के सींगों पर जलती हुई मशालें बाँधकर उनके प्रकाश में आधी रात में मुगल सेना पर हमला किया^{२४} । इस आकस्मिक आक्रमण से मुगल सेना घबड़ा गई और हारकर पैंतीस कोस पीछे हट गई । इसकी सूचना जब अजमेर में औरंगजेब को मिली तब वह सुन्न रह गया । सोचा, इस झगड़े का अंत इस प्रकार नहीं होगा । अतः उसने भी चालाकी का बदला चालाकी से लेने का निश्चय किया । एक दूत भेजकर उसने जोधपुर के राठौड़ों को कहला भेजा कि मेरा इरादा आप लोगों से लड़ने का नहीं है । मैं तो केवल आप लोगों की परीक्षा करना चाहता था ।^{२५} मैंने देख लिया कि आप बड़े वीर और अपनी आन पर डटे रहनेवाले हो । राठौड़ इस लल्लो-चप्पो में आ गए । उन्होंने आगे युद्ध करने का विचार छोड़ दिया और जसवंतसिंह के दोनों पुत्रों को लाकर बादशाह के नजर किया ।^{२६} इसी समय बादशाह ने यह वादा किया कि दिल्ली पहुँचते ही हम जसवंतसिंह के बड़े पुत्र (अजीतसिंह) को जोधपुर का राजा घोषित कर देंगे ।^{२७} फिर वह अजीतसिंह और राठौड़ दुर्गादास आदि सरदारों को अपने साथ लेकर दिल्ली चला गया । परंतु बहुत समय व्यतीत हो जाने पर भी जब इस संबंध की कोई राजाशा नहीं निकली तब राठौड़ों को औरंगजेब की नीयत में संदेह होने लगा । एकदिन अवसर देखकर उन्होंने बादशाह को उसकी प्रतिज्ञा की याद दिलाई । किंतु बादशाह मुकर गया । उसने कहा कि तुम्हारे और मेरे बीच प्रेम कैसे रह संकता है ।

२२—पृष्ठ ७३

२३—पृष्ठ ६६

२४—पृष्ठ १००

२५—पृष्ठ १२३-१२४

२६—पृष्ठ १२७

२७—पृष्ठ १२६

तुम्हारा महाराजा जसवंतसिंह बहुत अभिमानी था। उसके कारण उज्जैन के युद्ध में मेरी सेना की बहुत हानि हुई थी। घोलपुर में जिस तरह उसने मेरे रनवास को लूटा उसकी याद आज भी मुझे दुःख दे रही है।^{२८} फिर भी यदि जसवंतसिंह का सब धन तुम मुझे दे दो तो तुम्हारी इच्छा की पूर्ति की जा सकती है। यह सुनते ही राठौड़ सरदारों की कोपाग्नि भड़क उठी। वे दिल्ली की शाही सेना पर टूट पड़े। उन्होंने जगह जगह आग लगा दी। शाही सेना हार गई और ये लोग अजीतसिंह को दिल्ली से निकालकर जोधपुर में ले आए। इस घटना से बादशाह और भी झुल्ला उठा। उसने एक महती सेना जोधपुर पर भेजी। इस विपत्ति का सामना करने के लिए राठौड़ सरदारों ने महाराणा राजसिंह से सहायता लेना निश्चय किया और एक पत्र भेजकर उनसे सहायता की^{२९} याचना की। महाराणा ने सहायता देना स्वीकार किया। राठौड़ दुर्गादास, सोनिंग आदि सरदार जसवंतसिंह के पुत्र अजीतसिंह को लेकर मेवाड़ में चले आए।^{३०} महाराणा ने अजीतसिंह की बड़ी आभगत की और बारह गाँवों सहित केलवे का पट्टा देकर उनको अपनी शरण में रखा।^{३१}

दसवाँ विलास—इसमें महाराणा राजसिंह पर औरंगजेब की चढ़ाई का वर्णन है। औरंगजेब को जब इस बात की सूचना मिली कि राजसिंह ने अजीतसिंह को अपनी शरण में रखा है तब उसने फरमान भेजकर महाराणा से अजीतसिंह को माँगा।^{३२} परंतु महाराणा ने उसकी माँग को ठुकरा दिया।^{३३} इस पर बादशाह ने उन पर चढ़ाई कर दी। चढ़ाई की सूचना मिलते ही महाराणा ने अपने सरदार सामंतों की एक सभा बुलाई और किस स्थान पर शाही सेना का मुकाबला करना चाहिए इस संबंध में उनकी राय ली। पुरोहित गरीबदास ने निवेदन किया कि बादशाह के पास सेना बहुत है। अतएव उससे बराबरी के तौर पर लड़ना उचित नहीं है।

२८—पृष्ठ १३४

२९—पृष्ठ १८०-१८६

३०—पृष्ठ २०१-२०३

३१—पृष्ठ २०४-२०६

३२—पृष्ठ ६

३३—पृष्ठ ६-२६

महाराणा उदयसिंह और महाराणा प्रतापसिंह सम्राट अकबर की चढ़ाई के समय चित्तौड़ और उदयपुर को छोड़ पहाड़ों में चले गए थे। वे अवसर देखकर दिन अथवा रात में मुगल सेना पर छापा मारते और शाही प्रदेश को बरबाद करते थे। जब शाही सेना से लड़ना होता तब घाटियों में जाकर लड़ते थे। इसलिए सम्राट अकबर तथा उसके सेनापतियों को मेवाड़ में कभी पूरी सफलता नहीं मिली। महाराणा अमरसिंह भी इसी नीति का अनुसरण कर बहोली से लड़ते रहे। इस समय आपको भी इन पहाड़ों का लाभ उठाना चाहिए। आपको इन घाटियों में शत्रु-सैन्य को घेरकर उसे मूर्खों मारना और परास्त करना चाहिए।^{३४} महाराणा को यह राय पसंद आई। वे अपने सामंतों आदि को लेकर पहाड़ों में चल दिए। पहला मुकाम उदयपुर से पाँच कोस दक्षिण में देवी माता के पहाड़ों में हुआ। यहाँ पानड़वा, मेरपुर, जवास, जूड़ा के भोमिए सरदार तथा पचास हजार भील उनकी सहायता के लिए उनसे आ मिले। महाराणा ने उनको आज्ञा दी कि दस-दस हजार के झुंड बनाकर घाटों तथा नाकों पर बादशाह का रास्ता रोको तथा उसकी रसद और खजाना लूटकर हमारे पास पहुँचाओ। वहाँ से महाराणा नैणवाड़ा पहुँचे।^{३५} महाराणा के पहाड़ों में चले जाने की सूचना मिलनेपर बादशाह ने अपने सेनापति को एक बड़ी सेना के साथ उनका पीछा करने के लिए पहाड़ों में भेजा। पर महाराणा के योद्धाओं ने उसे मार भगाया। मुगल सेना की एक टुकड़ी शाहजादे अकबर की अध्यक्षता में उदयपुर नगर में भी पहुँची। परंतु उसने नगर को खाली पाया। बादशाह ने चित्तौड़, मांडल, पुर, वैराट, भैरोगढ़, मंदसौर, नीमच बीरन, जंठाला, कपासन, राजनगर और उदयपुर में अपने याने नियत किए।^{३६} तब महाराणा को रोष आ गया और उन्होंने अपने सरदारों को युद्ध कर शाही थानों को उठा देने का आदेश दिया।

ग्यारहवाँ विलास—इनमें देसरी के घाटे की लड़ाई का वर्णन है। इस घाटे की रक्षा के लिए महाराणा ने रुग्नगर के सोलंकी विक्रम और घाणेश के राठौड़ गोपीनाथ को नियुक्त किया था।^{३७} इन दोनों ने बड़ी

३४—पृष्ठ ७१-८०

३५—पृष्ठ ८६-९८

३६—पृष्ठ ११६

३७—पृष्ठ १

वीरता से युद्ध किया और शाही सेना पर विजय पाई एवम् उसका खजाना लूट लिया ।

बारहवाँ विलास—इसमें उदयपुर की लड़ाई का वर्णन है । इस थाने पर रावत उदयभान^{३८} और अमरसिंह चौहान तैनात थे । इन्होंने बहुत थोड़े घुड़सवारों के साथ इस थाने पर आक्रमण किया और मुगल सिपाहियों को मार भगाया । विशेष कर उदयभान ने इस लड़ाई में बड़ी वीरता प्रदर्शित की । उसकी वीरता से प्रसन्न होकर महाराणा ने उसे एक घोड़ा, सिरपाव, तलवार, रत्नजटित कटार, बीड़ा और बारह गाँव दिए ।^{३९}

तेरहवाँ विलास—इसमें भाड़ोल के पास नैनवाड़ा की लड़ाई का वर्णन है । एक बार शाहजादा अकबर अपने सेनापति हसनअली खाँ के साथ नैनवाड़ा के पहाड़ों में बारह कोस भीतर महाराणा के डेरे तक पहुँच गया । वहाँ उसका रावत महासिंह,^{४०} रावत रतनसिंह^{४१} और राव केसरी सिंह चौहान^{४२} से सामना हुआ । उन्होंने अकबर की सेना को तीन-तेरह कर दिया इस पराजय की खबर लेकर शाहजादा आदि सब के सब बादशाह के पास पहुँचे । वहाँ उन्होंने निवेदन किया कि हिंदू अपने देश में स्थान-स्थान पर झुंड बनाकर संगठित रूप में लड़ते हैं और हमारे लिए ठहरने का कोई उपयुक्त स्थान ही नहीं है । हम पहाड़ों में जहाँ जाते हैं वहाँ वे हमें मारते हैं । इसलिए यहाँ से चिचौड़ चला जाना चाहिए । इस सलाह के अनुसार बादशाह ने सेना सहित चिचौड़ की ओर प्रस्थान किया । वहाँ पहुँचने पर उसे जीवित रहने की आशा हुई ।^{४३}

चौदहवाँ विलास—इसमें चिचौड़ के युद्ध का वर्णन है । चिचौड़ में तोपें आदि लगाकर बादशाह ने अपना मोरचा दृढ़ कर लिया और प्रण किया कि बिना मेवाड़ को जीते दिल्ली नहीं लौटूँगा । परंतु शक्कावत केसरीसिंह के

३८—कोठारिया के रावत रुक्मांगद का पुत्र

३९—पृष्ठ २३

४०—बेगूँवाले कालीमेघ का पौत्र

४१—सल्लूबर के रावत रघुनाथ सिंह चूँडावत का पुत्र

४२—पारसोली का

४३—पृष्ठ २७-३५

पुत्र गंगदास^{४४} ने वहाँ उसे चैन नहीं लेने दिया। एक दिन गंगदास ने चित्तौड़ के पास ठहरी हुई मुगल सेना पर ज़ोरदार आक्रमण कर उसे तितर-बितर कर दिया और उसके ६ हाथी छीनकर महाराणा के नजर किया। इस पराक्रम से महाराणा का चित्त बहुत प्रसन्न हुआ। उन्होंने एक घोड़ा, गाँव और सिरपाव देकर गंगदास की प्रतिष्ठा बढ़ाई।^{४५}

पंद्रहवाँ विलास—इसमें महाराणा राजसिंह के द्वितीय कुँवर भीमसिंह के गुजरात के आक्रमण का वर्णन है। जिस समय शाही सेना चित्तौड़ से इधर-उधर बिखर रही थी उसी समय कुँवर भीमसिंह गुजरात पर पिल पड़े और वहाँ ईंडर को उखाड़कर अहमदाबाद, जूनागढ़, बड़नगर इत्यादि स्थानों में खलबली मचा दी। इस के समाचार जब महाराणा के पास पहुँचे तब वे बहुत हर्षित हुए। परंतु इस समाचार के साथ उनके पास गुजरात की प्रजा की तबाही की खबर भी पहुँची थी। इसलिए उन्होंने कुँवर भीमसिंह को घर लौट आने के लिए एक पत्र लिख भेजा।^{४६} इस से भीमसिंह को बड़ी निराशा हुई। उनकी इच्छा इतनी जल्दी घर लौटने की नहीं थी। परंतु पिता की आज्ञा होने से उन्हें विवश होकर घर लौटना पड़ा।

सोलहवाँ विलास—इसमें राठोड़ सौवलदास^{४७} और मुगल सेनापति रुहिल्ला खाँ की लड़ाई का वर्णन है। रुहिल्ला खाँ बदनोर के थाने पर नियुक्त था। उस के पास बारह हजार अश्वारोहियों की एक बड़ी सेना थी। महाराणा ने अपने सामंत सौवलदास को उस पर चढ़ाई करने का आदेश दिया। रुहिल्ला खाँ सौवलदास के सामने न टिक सका। वह परास्त हुआ और अपना सारा सामान पीछे छोड़ बदनोर से भाग गया। बदनोर पर सौवलदास का अधिकार हो गया।

सत्रहवाँ विलास—इसमें महाराणा राजसिंह के मंत्री दयालदास द्वारा किए गए मालवा के आक्रमण का वर्णन है। दयालदास ने सीधी धार पर

४४—बानसी का

४५—पृष्ठ—३६-४१

४६—पृष्ठ ३६-३८

४७—प्रसिद्ध राव जयमल का वंशधर और बदनोर का स्वामी

हमला किया और मालवा के 'अनेक शाही थानों' में जगह-जगह आग लगा दी। उसके पहले ही धक्के से शाही सेना विभ्रान्त हो उठी और जान बचाकर इधर-उधर भाग निकली। उसके भाग जाने पर दयालदास ने कई स्थानों पर अपने नए थाने स्थापित किए। बादशाह के कई थाने उठा दिए, कइयों को लूट लिया। और लूट में मिली धन-संपत्ति प्रजा में बांटकर उसे निहाल कर दिया।^{४८} इसकी खबर जब औरंगजेब के पास पहुँची तब उसके हृदय को भारी चोट लगी। वह मन ही मन कहने लगा कि मेरे सबधियों ने मुझे महाराणा के साथ न उलझने के लिए बहुत समझाया था। परंतु मैंने उनका कहना नहीं माना। उसका फल भोग रहा हूँ। मेरा सब खजाना खाली हो जायगा, पर महाराणा मेरे सामने नहीं झुकेगा।

अठारहवाँ विलास—यह इस ग्रंथ का अंतिम विलास है। मेवाड़ के सभी थानों से शाही अमल उठ गया था। केवल चित्तौड़ अभी तक महाराणा के हस्तगत नहीं हुआ था। वहाँ शाहजादा अकबर ५०००० सेना डाले पड़ा था जिसमें एक हजार हाथी, अनेक घोड़े, कई बड़ी-बड़ी तोपें रथ आदि थे।^{४९} यह सेना वहाँ की प्रजा को बहुत कष्ट दे रही थी। उसने चित्तौड़ के कई प्राचीन महल-मंदिरों को भी गिरवा दिया था।^{५०} यह दुर्दशा देखकर महाराणा राजसिंह के ज्येष्ठ कुँवर जयसिंह एक बड़ी सेना के साथ एक रात्रि को यकायक उस पर जा टूटे। यह आक्रमण सं० १७३७ के आषाढ़ महीने में हुआ था।^{५१} इस आकस्मिक आक्रमण से मुगल सेना की भारी हानि हुई। उसके अनेक सिपाही हाथी, घोड़े आदि मारे गए। कुँवर जयसिंह के सैनिकों ने शाहजादे अकबर का खजाना लूट लिया, उसके तंबू तोड़ डाले और उसका नक्कारा छीन लिया। स्वयं अकबर ने वहाँ से भागकर बंड़ी कठिनाई से अपनी जान बचाई।^{५२} वह वहाँ से अजमेर चला गया। जिन सरदारों ने इस आक्रमण में भाग लिया था उनको कुँवर जयसिंह ने गाँव और सिरपाव देकर संमानित किया।^{५३}

४८—पृष्ठ ३८

४९—पृष्ठ ६

५०—पृष्ठ ७

५१—पृष्ठ २

५२—पृष्ठ ६६-६७

५३—पृष्ठ १००

ऊपर जो साराश दिया गया है उससे स्पष्ट है कि राजविलास एक चरित्रकाव्य है। इसके अधिक भाग में राणा राजसिंह की कीर्ति-कथा कही गई है और यही इसका मुख्य विषय है। लेकिन कथा-सूत्र को मिलाने के लिए इसके रचयिता ने इसके प्रथम दो विलासों में मेवाड़ के प्राचीन इतिहास पर भी थोड़ा-सा प्रकाश डाला है। उदाहरण के लिए इसके पहले विलास में बापा रावल का जीवन वृत्तांत है और दूसरे विलास में बापा रावल से लेकर राजसिंह के पिता महाराणा जगतसिंह तक के मेवाड़ के राजाओं की वंशावली।

मानजी महाराणा राजसिंह के समसामयिक थे। अतएव महाराणा राजसिंह के विषय की जो भी बातें उन्होंने अपने इस ग्रंथ में बतलाई हैं वे प्रायः ठीक हैं और ठीक होनी भी चाहिए। क्योंकि यह सब कवि का अपनी आँखों देखा हाल है। लेकिन देखना यह है कि महाराणा राजसिंह के पहले का जो वृत्तांत इसमें दिया गया है वह किस हद तक विश्वसनीय है और इतिहास की कसौटी पर कितना खरा उतरता है।

कवि मान ने बापा रावल को वल्लभीपुर (सौराष्ट्र) के राजा गृहादित्य का पुत्र बताया है और लिखा है कि उन्होंने मौर्यवंशी राजा चित्रंग से चिचौड़ का किला छीना था।^{५४} परंतु उनके ए दोनों ही कथन भ्रमात्मक है। इतिहासकारों के मतानुसार बापा रावल महेंद्र (द्वितीय) के पुत्र थे^{५५} और उन्होंने राजा मान मोरी से चिचौड़ का किला लिया था।^{५६} वस्तुतः चित्रंग मोरी बापा रावल के समकालीन ही नहीं थे, वे बापा से कोई ४०० वर्ष पहले हुए थे। राजविलास में दिया हुआ बापा रावल संबंधी सारा वृत्तांत जैन कथाओं तथा किंवदंतियों के आधार पर लिखा गया है और इतिहास की दृष्टि से अत्यंत दोष पूर्ण है।

इसके द्वितीय विलास में दी हुई वंशावली भी बहुत गड़बड़ है। अध्ययन की सुविधा के लिए इस वंशावली को हम निम्नलिखित तीन भागों में विभक्त करते हैं—

५४—प्रथम विलास, पद्य १०६, पद्य १२८-१३१

५५—ओझा; उदयपुर राज्य का इतिहास, पृ० ४०४

५६—वही; पृ० ४०८

(क) बापा से लेकर रणसिंह (कर्णसिंह) तक ।

(ख) रणसिंह (कर्णसिंह) से हंमीर तक ।

(ग) हंमीर से जगतसिंह तक ।

(क) बापा रावल से लेकर रणसिंह (कर्णसिंह) तक मेवाड़ की गद्दी पर २६ राजा हुए हैं । इन राजाओं के नाम प्राचीन शिलालेखों, दान पत्रों आदि में मिलते हैं और इतिहासकारों ने भी इन नामों को स्वीकार किया है । नामावली इस प्रकार है —

१ बापा २ खुँमाण (पहला) ३ मत्तट ४ भर्तृभट ५ सिंह ६ खुँमाण (दूसरा) ७ महायक ८ खुँमाण (तीसरा) ९ भर्तृभट (दूसरा) १० अल्लट ११ नरवाहन १२ शालिवाहन १३ शक्तिकुमार १४ अंबाप्रसाद १५ शुचिवर्मा १६ नरवर्मा १७ कीर्तिवर्मा १८ योगराज १९ वैरट २० हंसपाल २१ वैरिसिंह २२ विजयसिंह २३ अरिसिंह २४ चोड़सिंह २५ विक्रमसिंह और २६ रणसिंह ।^{५७}

लकिन राजविलास में जो वंशावली दी गई है^{५८} वह उक्त वंशावली से बहुत भिन्न है । इसमें कुछ नाम उलट-पुलट रख दिए गए हैं, कुछ छौड़ दिए गए हैं और कुछ नाम कृत्रिम रख दिए गए हैं । राजविलास के अनुसार यह वंशावली इस प्रकार की बनती है—

१ बापा	२ खुँमाण	३ कुवेर
४ त्रिपुरसिंह	५ गोविंद	६ महेंद्र
७ कीर्तिधवल	८ शक्तिकुमार	९ शालिवाहन
१० नर (वाहन)	११ अंबाप्रसाद	१२ नरवर्मा
१३ अल्लू	१४ सिंहराज	१५ जोगराज
१६ गात्रसिंह	१७ हंसराज	१८ भट्टू
१९ वैरिसिंह	२० महणसिंह	२१ करमसिंह
२२ पद्मसिंह	२३ जैत्रसिंह	२४ तेजसिंह
२५ समरसिंह	२६ चौडसिंह	२७ रत्नसेन
२८ धूड़	२९ झूँगरसिंह	३० पुंजाजी
३१ नरपुंज	३२ प्रतापसिंह	३३ रणसिंह

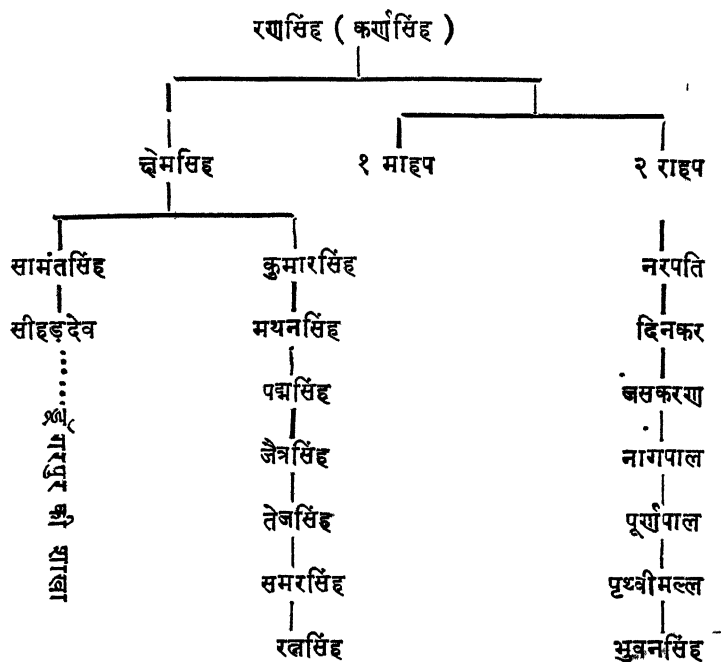
५७—वही, पृ० ५२१-५२२

५८—राजविलास; दूसराविलास, पद्य १-२२

(ख) रणसिंह (कर्णसिंह) से मेवाड़ के राजघराने की दो शाखाएँ फटी थीं—रावलशाखा और राणाशाखा । रावलशाखा वाले मेवाड़ के स्वामी और राणाशाखा वाले सीसोदे के जागीरदार रहे, और सीसोदे में रहने के कारण सीसोदिया कहलाए ।^{५९}

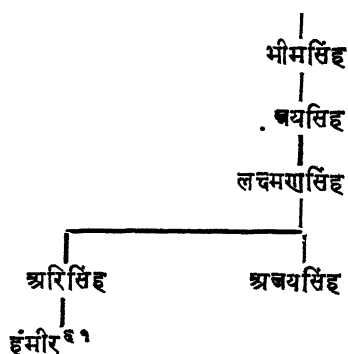
रावलशाखा के अंतिम प्रतिनिधि स्तनसिंह थे । ये रावल समरसिंह के पुत्र थे । इतिहास-प्रसिद्ध राणी पद्मिनी इनकी स्त्री थी । इनके समय में दिल्ली के बादशाह सुल्तान अलाउद्दीन खिलजी ने चित्तौड़ पर आक्रमण किया । स्तनसिंह इस अवसर पर युद्ध में लड़ते हुए मारे गए । उनके साथ रावलशाखा की इतिश्री हो गई और राणाशाखा के लक्ष्मणसिंह सीसोदे से आकर मेवाड़ की गद्दी पर बैठे ।^{६०}

इनसे तीसरी पीढ़ी में हमीर हुए । नीचे के वंशवृक्ष से इन बातों का स्पष्टीकरण हो जायगा—



५९—ओझा, उदयपुर राज्य का इतिहास, पृ० ४४७

६० वही; पृ० ४८३-४८४



रणसिंह से रावल और राणा नामक दो शाखाओं के निकलने की यह घटना मेवाड़ के इतिहास की एक बहुत महत्वपूर्ण घटना है और राजविलास में भी इसका वर्णन मिलता है—

करन पुत्र दुअ कहिय, जिह्वा राहप त्रिभुवन जस ।
 माहव दुतिय महिद, बाघ रिपु करन अण्य बस ॥
 राणा पद राहपहिँ, लीन करि उत्सव लखवह ।
 संवत तेरह सुद्ध, पंच दस बरस प्रतक्खह ॥
 थपि एकादस कुलदेवि थिर, याग भाग बंधिय जुगति ।
 दुहुँ बेर बरस मडे सु दुति, नौमी दिन पूजै नृपति ॥

किंतु राजविलास का यह वर्णन इतिहासविरुद्ध है । इसमें राहप को रणसिंह (कर्णसिंह) का ज्येष्ठ पुत्र तथा माहप को द्वितीय पुत्र बताया गया है और क्षेमसिंह का कहीं जिक्र ही नहीं है ।

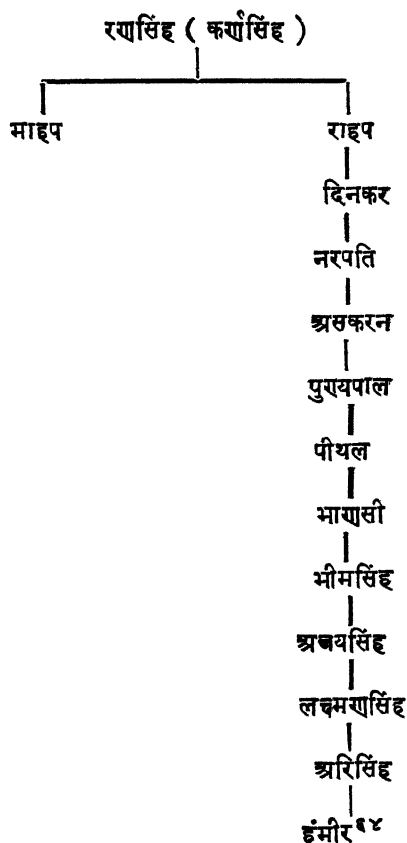
वस्तुतः रणसिंह के तीन बेटे थे—क्षेमसिंह, माहप और राहप । उनकी मृत्यु के बाद उनके ज्येष्ठ पुत्र क्षेमसिंह मेवाड़ के राजसिंहासन पर आसीन हुए और शेष दोनों भाई एक दूसरे के बाद सीसोदे के सामंत रहे^{६३} ।

इसके अतिरिक्त राहप से लेकर हंमीर तक के राणाओं की जो नामावली राजविलास में दी गई है वह भी ठीक नहीं है । शुद्ध नामावली ऊपर दी जा चुकी है । राजविलास में यह इस रूप में पाई जाती है—

६१. ओझा, उदयपुर राज्य का इतिहास, पृ० ५२२

६२. राजविलास, दूसरा विलास, पद्य २३ —

६३. ओझा; उदयपुर राज्य का इतिहास, पृ० ४३७



(ग) हंमीर से राणा जगतसिंह तक के राजाओं की नामावली राज-विलास में शुद्ध रूप में दी गई है और वह इतिहास ग्रंथों में दी हुई वंशावली से पूर्णतः मिलती है ।

राजविलास के द्वितीय प्रकरण में मेवाड़ के प्राचीन इतिहास के सिल-सिले में दो एक घटनाओं के संवत् भी दिए गए हैं । जैसे—

(१) राणा पद राहपहिं, लीन करि उत्सव लखवह ।

संवत् तेरह सुद्ध, पंच दस बरस प्रतखवह ॥

—पद्य २३

(२) रतनसेन रावर वर रजिय,
संवत दस पण तीसहिँ सजिय

—पद्य १५

(३) कुंम राण अखियात कलि,
लख हेम लगाया ।
पनरासै पचरोतरै,
परगट परनाथा ॥

—पद्य ३२

परंतु ये संवत् ठोक नहीं है । ये इतिहास में दिए हुए संवत्तो से मेल नहीं खाते ।

चित्रंग मोरी और बाबा रावल के युद्ध वर्णन में कवि मान ने बारूद, तोप और गोलों का उल्लेख किया है—

(क) गोरा नारि सु सोर घन, सख भृत्य सु बिचार ।
हय गय रथ पायक हसम, भरि अन धन भंडार ॥

—प्रथम विलास, पद्य ६६

(ख) मिलिय बापा वीर मोरिय,
जुरै दुहुँ वर वीर जोरिय ।
सनन सह अवाज सोरिय,
गनन गुंजत बहय गोरिय ॥

—प्रथम विलास, पद्य १०७

यह काल-दोष है । भारतवर्ष में तोपों का प्रयोग पहले पहल बाबर ने इब्राहीम लोदी की लड़ाई में किया था । इससे पूर्व तोपों का प्रयोग यहाँ किसी ने किया हो ऐसा इतिहास से विदित नहीं होता ।

इसी प्रकार बापा रावल की विजय पर विमान से देवताओं का उन पर फूल बरसाने का वर्णन भी कुछ चौंका देनेवाला है —

देव देवि विमान दरसिय,
व्योम हूंत सु कुसुम बरसिय ।
सजल सहज सुगंध सरसिय
चवत मान सुजान सरसिय ॥

—प्रथम विलास, पद्य १२७

‘धार्मिक काव्यों’ में इस तरह का वर्णन क्षम्य हो सकता है। परंतु राजविलास जैसे ऐतिहासिक काव्य में यह बहुत अस्वाभाविक मालूम पड़ता है।

राजविलास की भाषा राजस्थानी मिश्रित ब्रजभाषा है। इसमें राजस्थानी शब्दों का प्रचुर प्रयोग हुआ है और कहीं-कहीं क्रियापद, कारक-चिह्न आदि भी राजस्थानी के देखने में आते हैं। राजस्थानी से प्रभावित इस प्रकार की ब्रजभाषा को राजस्थान में ‘पिंगल’ कहते हैं। कोई शाहजहाँ के समय से इस ढंग की भाषा में काव्यरचना करने का चलन राजस्थान में हुआ है और इस भाषा का पहला ग्रंथ पृथ्वीराज रासौ है। यह सं० १७०० के आस पास लिखा गया था।^{६५} इस के नमूने पर बाद में जसवंतउद्योत (१७०५), शत्रुशासाल रासौ (सं० १७१०), रसन रासौ (सं० १७३२) राणा रासौ (सं० १७३७-५५), केसरीसिंह-समर (सं० १७५४), हंमीर रासौ (सं० १७८५) इत्यादि अनेक चरित्र काव्य यहाँ रचे गए जिनमें से एक यह राजविलास भी है। इसकी भाषा का पृथ्वीराज रासौ की भाषा से बहुत साम्य है। इसमें भी अरबी फारसी के शब्द बहुलता से प्रयुक्त हुए हैं और ये शब्द वही हैं जो पृथ्वीराज रासौ में पाए जाते हैं। जैसे इतमाम, इसम, फुरमान, नबाब, हुजूर, कोतिल, फसब, उजबक, कबिल, नकाब, नेबा, नोबत, मीर, रसूल, बखत, चिराग, चोज, कहर आदि।

रासौ के ये शब्द वीर काव्यों के लिए एक तरह के टैकनिकल शब्द बन गए हैं और हिंदी राजस्थानी के छोटे-बड़े प्रायः सभी वीर-काव्यों में इनका प्रयोग पाया जाता है।

इन शब्दों के अलावा राजविलास में अनेक शब्द ऐसे देखने में आते हैं जो ठेठ मेवाड़ी बोली के हैं और राजस्थानी की अन्य बोलियाँ ने नहीं मिलते। इनमें से कुछ शब्द अब अप्रचलित (Obsolete) भी हो गए हैं। उदाहरण के लिए ‘बोली’ शब्द को लीजिए।

“राति बोली हुई पुब्ब दिशि रत्तड़ी”^{६६}

“मास षट बोलियों रीफियो सो मुनी”^{६७}

“सच दिन बोलियों नंतरे यह समै”^{६८}

६५—देखिए राजस्थान का पिंगल साहित्य, पृ० ४७

६६—राजविलास; प्रथम विलास, पद्य १५३

६७—वही; पद्य १५१

६८—वही, पद्य १५८

‘व्यतीत’ के अर्थ में उक्त शब्द का प्रयोग अब मेवाड़ में कहीं नहीं होता । यह अब बोलचाल की मेवाड़ी तथा साहित्य की मेवाड़ी दोनों से निकल गया है ।

मान जी ने इस ग्रंथ में राजस्थानी भाषा के कुछ शब्दों को तो उनके मूल रूप में रखा है, परंतु कुछ को ब्रजभाषा की प्रकृति के अनुकूल परिवर्तित कर दिया है । अतएव कहीं-कहीं इन शब्दों के मूलरूपों को ढूँढने में बड़ी कठिनाई होती है । यथा—

मूल रूप	परिवर्तित रूप
बाहर	बहरि
नाली	नारि
हेड़	हेट
भड़	भर
गोली	गोरिय

इसके सिवा इसमें राजस्थानी भाषा के कुछ शब्द ऐसे भी देखने में आते हैं जिनको एक नहीं, बल्कि कई तरह से बदला गया है । जैसे ‘सुंडाल’ शब्द को लीजिए । इस शब्द के इस ग्रंथ में ‘सुंडाल’ सुंडार’ ‘साँडाल’ और ‘साँडार’ ये चार रूप मिलते हैं ।

कुछ अन्य शब्दों के साथ भी ऐसा ही हुआ है । जैसे—
रसद-रसित-रस्त-रस्ति

पृथ्वीराज रासौ एक बृहद् ग्रंथ है और यह भी कहा जाता है कि उसके प्रणयन में कई व्यक्तियों का हाथ रहा है । अतएव समूचे रासौ की भाषा एक समान नहीं है । कहीं सरल, कहीं कठिन और कहीं ऊबड़-खाबड़ है । किंतु राजविलास अपेक्षाकृत एक छोटा ग्रंथ है । इसलिए इसकी भाषा में उतार-चढ़ाव प्रायः कम दृष्टि गोचर होता है । आदि से लेकर अंत तक इसकी भाषा सामान्य रूप से प्रौढ़, परिमार्जित एवं विषयानुकूल है ।

यदि राजविलास की भाषा में थोड़ा-सा अटपटापन कहीं है तो उन स्थलों पर जहाँ वस्तुओं की नामावली प्रस्तुत की गई है—

(क) किते बहु मौलिक वस्त्र बजाज,
मंडे जरबाफ सुखंमल साज ।

सज्जर नारीय कुंजर मिश्र,
 सुमै सिकलात दुमास सहश्रु ॥१०६॥
 तनोसुख सप पटोर दर्याइ,
 खीरोदक चैनी पीतांबर ल्हाइ ।
 मनोसुख पामरी साहिबी पाद,
 हीरा गर सैनीय हीर सगाढ ॥११०॥
 भवच्छिद्य भैरव साव सभार,
 सुसी महमुंदी सु सिंदली सार ।
 भूनां टुकरी श्री साप अटाँन,
 सेला पंचतोरिय खासे सुजॉन ॥१११॥
 मलंमल साहि चौतार दुतार,
 उपै इकतार सुधौत अपार ।
 सु सारिय चौरसे रंग रँगील,
 दिखावहिँ आध दलाल असील ॥११२॥

—दूसरा विलास

(ख) ऐराक आरबी अस्व ऐँन,
 सोमंत श्रवन सुंदर सुनैँन ।
 काश्मीर देस काबोज कच्छि,
 पय पथ पौन पथ रूप लच्छि ॥८॥
 बंगाल जाति के बाजि राज,
 काविल सुकेक हय भूप काज ।
 खंधार उतन केहिँ खुरासान,
 बपु ऊँच तेज बर विविध बान ॥९॥
 हय हींस करत के जाति हंस,
 कबिले सु किहाड़े भौर बंस ।
 किरडिए खुरहड़े के सु रत्त,
 पीलडे केक लीले पविच्छ ॥१०॥

—छठा विलास

ऐसे स्थानों पर इसकी भाषा कुछ उलझी हुई, कुछ कर्णकटु और कुछ डुरुह हो गई है ।

छंद

दो एक छंदों को छोड़कर कवि मान ने इस ग्रंथ में उन्हीं छंदों का प्रयोग किया है जिनका प्रयोग पृथ्वीराज रासौ में हुआ है। वे छंद ये हैं—

दोहा, कवित्त (छप्पय), गीतामालती, पद्वरी, हनुफाल, दडमाली, कामुकीबाताण, विराज, दंडक, बिअक्खरी, निसानी, मोतीदाम, मुजंगी, वृद्धिनाराच, उद्धोर, विद्युतमाला, लघुनाराच, मुकदडाभर, चोटक, रसावला, चंद्रायना, हंसचार, त्रिमंगी और गुणावेलि ।

इनमें कुछ छंद मात्रिक और कुछ वर्णिक हैं। इनमें जो छंद मात्रिक हैं उनमें मात्राओं का क्रम प्रायः ठीक देखने में आता है, पर जो छंद वर्णिक हैं उनमें यत्र तत्र छंदोभंग पाया जाता है ।

इन्होंने अपनी रचना में 'मु' 'यु' 'ह' 'ब' आदि वर्णों का प्रयोग भी बहुत किया है। ऐसा पाद-पूर्ति के लिए किया गया है। इससे छंदोभंग नहीं होने पाया है, पर अनेक स्थानों पर एक दूसरा 'निरर्थक दोष' आ गया है ।

अलंकार

राजविलास के अध्ययन से विदित होता है कि कवि मान को अलंकार-शास्त्र का अच्छा ज्ञान था। इस काव्य में इन्होंने स्थान स्थान पर शब्दालंकार और अर्थालंकार दोनों की अच्छी छटा दरसायी है। शब्दालंकारों में इन्होंने अनुप्रास एवम् यमक का और अर्थालंकारों में उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा आदि सादृश्यमूलक अलंकारों का प्रयोग विशेष किया है। इनके अलंकारों में कुछ नवीनता भी दृष्टिगत होती है। हमारे प्राचीन कवि शत्रु-समूह पर झपटते हुए वीर की उपमा कुपित सिंह से, भूखे बाज से, अजेय यमराज से देते आए हैं। परंतु कवि मान ने ऐसे वीर की उपमा आकाश से टूटते हुए तारे से दी है—

(१) तुटैव ज्यौं खहतार, कलि उदय भान कुमार ।^{६९}

मह यवन सेन सुमध्य, योधार मंडिय युद्ध ॥

(२) राजा उत घन रोस रस, तारक रित ज्यौं तुष्टि ।

मालव घर उद्धंसि महि, लच्छि अनत सु लुष्टि ॥१०

यह एक बहुत सुंदर उपमा है । इससे लपकते हुए वीर की गति का पूरा चित्र सामने आ जाता है ।

अलंकारों की दृष्टि से राजविलास की एक और विशेषता उल्लेखनीय है । यह पिंगलभाषा का एक पहला ग्रंथ देखने में आया है जिसमें ङिगल के प्रसिद्ध अलंकार 'वैणसगाई' का भी प्रचुर प्रयोग हुआ है ।

वैणसगाई एक प्रकार का शब्दानुप्रास है । इसके कई भेद-उपभेद हैं । इसका एक साधारण नियम यह है : छंद के किसी चरण के प्रथम शब्द का प्रारंभ जिस वर्ण से हुआ हो उसके अंतिम शब्द का प्रारंभ भी उसी वर्ण से होना चाहिए । जैसे—

अक्रवर समंद अथाह, सुरापण भरियो सजल ।

मेवाड़ो तिण मोंह, पोयण फूल प्रतापसी ॥

वैणसगाई ङिगल का अपना एक खास अलंकार है । इसका निर्वाह कठिन माना गया है, और अनिवार्य भी । परंतु कवि मान ने इसे पिंगल-भाषाकाव्य में भी सफलता पूर्वक ला उतारा है, जिससे उनकी विलक्षण काव्यदक्षता का पता लगता है ।

राजविलास में से वैणसगाई के दो उदाहरण यहाँ दिये जाते हैं—

(१) रावर पद गहि रंग, वीर बापा सु सिद्धि वर ।

बापौती सु बहोरि, धरिय भानेज अन्य घर ॥

पंच लख हय पवर, सहस दस मत्त सु सिंधुर ।

पनर लख पायक, सुसत्त सय सुंदरि सुंदर ॥

नव हत्थ देह सु प्रमान निज, भच्छु सवा मन जास भल ।

पल बावन टोडर इक्क पय, बापा रावर अतुल बल ॥^{७१}

(२) सुनंत राज विप्र सद्द, नेह हिंद नायकं ।

सजी सु चातुरंग, सेन लच्छि ईस लायकं ॥

प्रधान सजि दंति पंति सेन, अग्ग संचला ।

सिंदूर पूर जास सीस, चारु चौर चंचला ॥^{७२}

वर्णन-चातुर्य

वैसे यदि देखा जाय तो यह पूरा का पूरा ग्रंथ साहित्यिक सौंदर्य से परिपूर्ण है । परंतु इसके वे स्थल जहाँ सेना का, समरभूमि का, युद्ध का, वर्णन किया गया है, विशेष रूप से बहुत प्रभावोत्पादक एवं चित्रमय है । उक्त विषयों का वर्णन हमारे और भी अनेक कवियों ने किया है । परंतु उन्होंने ऐसे स्थानों पर संयुक्ताक्षरों, विशेष कर टवर्ग के संयुक्ताक्षरों, का प्रयोग बहुत किया है । इससे उनके वर्णन में कुछ कृत्रिमता आ गई है । परंतु मान जी ने ऐसा प्रायः नहीं किया । बल्कि ऐसे मौकों पर इन्होंने अपनी भाषा को और भी सरल रखा है । इससे इनके ये वर्णन अत्यंत सजीव बन गए हैं । उदाहरण—

(क)

मिलिय बापा वीर मोरिय, जुरै दुहुँ वर वीर जोरिय ।

सनन सद्द अवाज सोरिय, गनन गुंजत बहत गोरिय ॥

छुट्टि बाननि भान छाइय, उमडि मनु घनघोर आइय ।

धींग घसमस करत घाइय, पेलि कायर नर पलाइय ॥

७१—राजविलास, प्रथम विलास, पद्य २४०

७२—वही; तीसरा विलास, पद्य ६७

ठनकि गज घंटा सु ठननन, भनकि मेरि नफेरि भननन ।
 खनकि खगग उनगग खननन, भनकि ज्यौँ भल्लरी भननन ॥
 किलकि कर कट्टै कटारिय, देखिये दीरघ दुधारिय ।
 दुँढि दुँढि सु पिशुन ढारिय, बीर निज निज बल बकारिय ॥
 भाट भर मँडि बजि खग भर, घुमतु घायल घाव घण घट ।
 गिद्ध पीवत श्रोन गट गट, जिंद हूँ दत फिरत सिर जट ॥
 सूर भूभूत सार सारह, भरत सीस सुरंग भारह ।
 धुक्त घर घर लगत धारह, मडि मुख मुख मार मारह ॥
 नृतत वीर कमंध नच्चिय, रोस रस रन रंग रच्चिय ।
 सिंधु सुर सहनाइ सच्चिय, मास रहिर सु पंक मच्चिय ॥
 वित्त आयुष होत लथबथ, रबकि किन चकचूर किय रथ ।
 भिरत भींच सुभार भारथ, प्रगटि मनु दुर्योध पारथ ॥
 सँमुख सजिय सूर सूरह, प्रचलि खोन प्रवाह पूरह ।
 भाक बजत होत भूरह, नयन रत्त सुबीर नूरह ॥
 देत निज निज पति दुहाइय, समरि परमेसर सहाइय ।
 घुरिय घाट त्रिघाट घाइय, भूत प्रेत पिसाच त्राइय ॥
 उड़िय रेनु सुढकि अबर, भूमकि डौँरु नह डबर ।
 तवत गायन देव तुंबर, सुरीय मन रन जानि संबर ॥
 समर हय गय फिरत सूनह, चरन पयदल होत चूनह ।
 लहिय उयेरे साँह लौनह, दपटि गज घट चित्त दूनह ॥
 ढहिय सिंधुर परिय ढेरह, मानु अंजन वर्ण मेरह ।
 धिरिय दुहुँ दल करिय घेरह, जोष इक बहु करत जेरह ॥^३

(ख)

चतुरंग चमू सजि सिंधुर चंचल बंक बिरहद दान बहूँ ।
 अवधूत अजेज तुरंग उतंगह रंगहिँ जे रिपु कटि रहूँ ॥
 अवगाढ़ सु आयुष युद्ध अजीत सु पायक सत्य लिये प्रचुरं ।
 चित्रकोट धनी सजि राजसी राणा यु मारि उजारिय मालपुरं ॥
 अति बद्धिद अवाज भगी दिति उत्तर पथ पुरं पुर रौरि परी ।
 नहकंत सु त्रंबक नूर नहं नह खँग महा खिति बजि खुरी ॥

उड़ि अंबर रेनु बहू दल उम्मडि सोखि नदी दह मगग सरं ।
 चित्रकोट धनी चढि राजसी राण यु मारि उजारिय मालपुर ॥
 करते बहु कूच मुकाम क्रमं क्रमि पत्त सु नागर चालपहू ।
 भहराय भगे धर लोक महा भय सून भए अरि नैर सहू ॥
 असुरेस कै गेह सुबडिद उदगल डुल्लिय दिल्लिय मंजि डरं ।
 चित्रकोट धनी चढि राज सी राण यु मारि उजारिय मालपुरं ॥
 दल बिटिय मालपुरा सु चहौँ दिसि ऊपम चंदन जानि अही ।
 तहँ कीन मुकाम धुरंत सु ब्रंबक सोच परधौ सुलतान सही ॥
 नर नाथ रहे तहँ सत्त अहोनिशि सोवन मोरस धीर धरं ।
 चित्रकोट धनी चढि राजसी राण यु मारि उजारिय मालपुरं ॥
 भर चौकिय देत चहौँ दिसि भूपति सौरभ टक्क आराब सजैँ ।
 हुसियारि कहँ बर जोष हंकारहँ हींसत है गजराज गजैँ ॥
 सु हलाल हजार जरै सब ही निशि घोष सु नौबति नह धुरं ।
 चित्रकोट धनी सजि राजसी राण यु मारि उजारिय मालपुरं ॥
 धक धूनिय घाय सु कोट धकाइय गौरव र पौरि गिराइ दिये ।
 दम ढेर करी हट श्रेणि डुँढोरिय ककर ककर दूरि किये ॥
 पतिसाह सु दड्ढन नैर प्रजारिय अबर पावक झार अरं ।
 चित्रकोट धनी चढि राजसी राण यु मार उजारिय मालपुरं ॥७४

युद्ध-संबंधी वृत्तातों के सिवाय नखसिख, सरोवर, उपवन, अकाल इत्यादि अन्य विषयों के वर्णन भी इसमें मिलते हैं। और ये भी अपने रंग-रंग के अप्रतिम एवं बहुत प्राणवान हैं। उदाहरणार्थ अकाल-पीड़ित लोगों का यह वर्णन देखिए—

बसुमति अन्न बिहीन, दीन दुखित तनु दुबल ।
 ससत निसत सरफरत, कितकु तरफरत ग्रहित गल ॥
 कितकु करुन कुननत, मक्खि भिननंत दसन मुख ।
 कितकु धीर न धरंत, हीय हहरंत दुसह दुख ॥
 टलटलिय बिटल धन टलबलत, गिरत परत अंतक हरत ।
 हट श्रेणि चौक बिक उमग मग, रंक करंकति ररबरत ॥७५

भूख से कराहते हुए दीन-दुखी लोगों का यह शब्द-चित्र कितना वास्तविक है, कितना मार्मिक ।

उपसंहार

महाराणा राजसिंह एक बहुत बड़े हिंदू नेता थे । ए जैसे वीर थे वैसे ही युद्ध-संचालन में भी निपुण थे । प्रसिद्ध इतिहासकार कर्नल टाड इनके विषय में लिखता है—

“समर पटुता और स्वदेशाभिमान की पराकाष्ठा दिखाकर जिस दिन हिंदू-कुल-सूर्य महाराणा प्रताप ने इस लोक से विदा ली उसी दिन से मेवाड़ भूमि विषाद रूपी भयंकर अंधकार से ढँक गई थी । अमरसिंह, कर्णसिंह और जगतसिंह ने उस अंधकार को दूर करने का भरसक प्रयत्न किया पर उनको कोई सफलता नहीं मिली । लेकिन वीर केशरी राजसिंह ने अपने प्रचंड शौर्य और बाज्रवत्यमान स्वदेश प्रेम के बल से उस अंधकार को भली भाँति दूरकर मेवाड़ के विनष्ट गौरव का पुनरुद्धार किया । राणा राजसिंह वीर शिरोमणि राणा प्रतापसिंह के सुयोग्य वंशधर थे । इसी कारण उन्होंने उस भयंकर प्रलय काल में दलित, पीड़ित एवं अभागी भारत-संतान का उद्धार करने के लिए अपने अनुपम पराक्रम से औरंगजेब के विरुद्ध कठोर युद्ध किया था । भारत की उस भयावह दुर्दशा के समय यदि वे उत्पन्न न हुए होते तो हिंदू-संतान और हिंदू-धर्म दोनों का शीघ्र ही लोप हो जाता ।”

“अपने देश की रक्षा के लिए उन्होंने युद्ध-विशारद सेनानी तथा तेजस्वी योद्धा के समान जो अपूर्व रण-कौशल प्रदर्शित किया उसकी यदि स्वयं अनंत देव भी सहस्र मुख से अनंत काल तक प्रशंसा करें तो पार नहीं पा सकते । विशेष कर भारत-संतान के उद्धार के निमित्त उन्होंने जिस असीम वीरता और महानता का परिचय दिया उस वीरता और महानता की उपमा इस संसार में नहीं है ।” ७६

ऐसे महापुरुष का जीवन-चरित्र जिस ढंग से, जिस सहृदयता से जिस निष्ठा और सच्चाई से लिखा जाना चाहिए उसी तरह पर यह राजविलास लिखा गया है । इस दृष्टि से यह काव्य हिंदी-साहित्य को कवि मान की अपनी एक स्थायी देन है, और उनकी अपनी कीर्ति का एक अचल स्मारक भी ।

उदयपुर
२०-४-५६

}

मोतीलाल मेनारिया

अनुक्रमणिका

पहला विलास

[सरस्वती-वंदना, रावल श्रीबापाजी की उत्पत्ति, रावलपद की स्थापना तथा चित्रकोट को राजधानी बनाने का वर्णन] १-२५

दूसरा विलास

[राजसभा का वर्णन] २६-४३

तीसरा विलास

[बूंदी दुर्ग में प्रथम पाणिग्रहण के समय कमधज के साथ युद्ध में राजकुमारजी की विजयप्राप्ति का वर्णन] ४४-५६

चौथा विलास

[सर्वश्रेष्ठविलास बाग का वर्णन] ५७-५८

पाँचवाँ विलास

[राणा श्रीराजसिंहजी का पट्टाभिषेक, विरुदावली प्रभृति का वर्णन] ५९-६७

छठा विलास

[राणा श्रीराजसिंहजी का दिग्विजयवर्णन] ६८-७१

सातवाँ विलास

[रूपनगर में महाराणा राजसिंहजी के पाणिग्रहण का वर्णन] ७२-८१

आठवाँ विलास

[राजसमुद्र का वर्णन] ८२-१०१

नवाँ विलास

[महाराणा श्रीराजसिंहजी के शरणागत विजयपंजर-विरुद का वर्णन, अनेक सुमतिप्रकाश] १०२-१२६

दसवाँ विलास

[महाराणा श्रीराजसिंहजी तथा बादशाह औरंगजेब के समर-संवाद का वर्णन] १२७-१४३

ग्यारहवाँ विलास

[देवसूरी दुर्घाट पर रोमी के साथ प्रथम युद्ध का वर्णन] १४४-१५४

बारहवाँ विलास

[उदयपुर के कुँवर उदयभानुकृत द्वितीय युद्ध का वर्णन] १४६-१४८

तेरहवाँ विलास

[सुलतानमुखभंजन और गोरीदलगंजन का वर्णन] १४९-१५३

चौदहवाँ विलास

[सगतावत गंग कुँवरजी द्वारा बादशाह के हस्तीयूथ के ग्रहण का वर्णन] १५४-१५९

पंद्रहवाँ विलास

[श्रीभीमसेन कुमार द्वारा गुर्जर देश में युद्ध का वर्णन] १६०-१६४

सोलहवाँ विलास

[सौवलदास कमधजकृत युद्ध का वर्णन] १६५-१६८

सत्रहवाँ विलास

[मालपद देश में साह दयालकृत युद्ध का वर्णन] १६९-१७३

अठारहवाँ विलास

[महाराणा श्रीजयसिंहजी का चित्रकोट दुर्ग में बादशाह औरंगजेब के शाहजादा अकबर के ऊपर रतिवाह वर्णन] १७४-१८९

परिशिष्ट

१—प्रतीकानुक्रम १९१-२१६

२—अभिधान २१७-२२६

३—छंद-विमर्श २२७-२३०

४—पठातर-संकलन २३१-२५२

चित्र

१—महाराणा राजसिंह मूल पृष्ठ १ के सामने

२—राजसमुद्र का एक दृश्य मूल पृष्ठ ९६ के सामने

३—उदयपुर के सरस्वती भवन की संवत् १७४६ की हस्तलिखित प्रति के आरंभ, मध्य एवम् अंतिम पृष्ठों के प्रतिचित्र

‘संपादकीय’ के मध्य

राजविलास



महाराणा राजसिंह

जन्म सं० १६८६]

[मृत्यु सं० १७३७

राजविलास

पहला विलास

(दोहा)

सेवत सुर नर मुनि सकल, अकल अनूप अपार ।
बिबुध मात बागेस्वरी, दिन दिन सुखदातार ॥ १ ॥
देवी ज्यों तुम करि दया, कालिदास कवि कीर्त ।
वरदायिनि त्यों देहु बर, निर्मल उक्ति नवीन ॥ २ ॥
पड़्यै बर कविराज पद, लच्छी बंछित लील ।
तुम तुझै जगतारनी, सुमति संयोग सुसील ॥ ३ ॥
कौन गिनै मरु रेतुकम, को घन बुंद कहंत ।
को तारायन परि कहै, त्यों गुन आदि अनंत ॥ ४ ॥
जपियहिं तुमकाँ जग-जननि, अधिक ग्रंथ आरंभ ।
कवित कथा मंगल करन, दूरि हरन दुख दंभ ॥ ५ ॥
सांप्रत देहु सरस्वती, बानी सरस विलास ।
भारति जग पोषनि भरनि, इच्छित पूरन आस ॥ ६ ॥
चित्रकोट पति राज चिर, राजसिंह महाराण ।
सूर्यदेस बर सहस कर, खल-खंडन खूमाण ॥ ७ ॥
गुनत जसु जस छंद गुन, पावत सुख भरपूर ।
सुपसायै तुम सारदा, दुरित प्रनासहिं दूर ॥ ८ ॥
बीणा पुस्तक कर प्रवर, बाहन बिमल मराल ।
सेत बसन भूषण सजै, रीझी देत रसाल ॥ ९ ॥

(कवित्त)

रीझी देत रसाल, रंग रस में सुरायनी ।
गुनवंती गयगमनि, बागदेवी ब्रह्मानी ॥

निसपति मुखि मृगनयनि, कांति कोटिक दिनकरकर ।
सचराचर संचरनि, अगम आगम अपरंपर ॥

भयहरनि भगत जन भगवती, बचन सुधारस बरसती ।
राजेस . रांण गुण संवरत, सुप्रसन्न हौ सरस्वती ॥ १० ॥

(गीतामालती)

सुप्रसन्न सरसुति मात सुमिरत कोटि मंगल कारनी ।
भारती सुभर भँडार भरनी बिकट संकट बारनी ॥
देवी अबोधहिँ बोध दायक सुमति श्रुत संचारनी ।
अद्भुत अनूप मराल आसनि जयति जय जगतारनी ॥ ११ ॥

आई निरंतर हसित आननि महि सुमाननि मोहनी ।
संकरी सकल सिँगार सज्जित रुद्र रिपुदल रोहनी ॥
बपु कनक कांति कुमारि बिधिजा अजर तू ही जारनी ।
अद्भुत अनूप मराल आसनि जयति जय जगतारनी ॥ १२ ॥

पयतल प्रवाल कि लाल पल्लव दुति महावर दीपए ।
अँगुली नख दह विमल उज्जल जोति तारक जीपए ॥
अनवट अनोपम बीछिया अति धुनि मनोहर धारनी ।
अद्भुत अनूप मराल आसनि जयति जय जगतारनी ॥ १३ ॥

भमकंति भंभरि नाद रुणभुण पाय पायल पहिरना ।
कमनीय क्षुद्रावली किंकिनि अवर पय आभूषना ॥
कलधौत कूरम समय मल क्रम पाप पीड़ प्रहारनी ।
अद्भुत अनूप मराल आसनि जयति जय जगतारनी ॥ १४ ॥

कदली सुखंभ अधो कि करिकर जंघ जुग वर जानियै ।
सुचि सुभग सार नितंब प्रस्थल बाध कटि बाखानियै ॥
बाषिका नाभि गँभीर सुवर्णित महा रिपुदल मारनी ।
अद्भुत अनूप मराल आसनि जयति जय जगतारनी ॥ १५ ॥

चरनालि कटि तट लाल चरना पवर अरु पट कूलयं ।
मेषला कंचन रतन मंडित देव दूख दुकूलयं ॥
क्षीपती दुति जनु भानु द्वादस अथ तिमिर अपहारनी ।
अद्भुत अनूप मराल आसनि जयति जय जगतारनी ॥ १६ ॥

तिमि तुल्ल कुखिस मध्य तिवलिय उरज उभय अनोपमां ।
 किधौ नालिकेर कि कनक कुंभ सुकुंभि कुंभ सुऊपमां ॥
 कंचुकी जरकस कसिय कोमल आदि अमिय अहारनी ।
 अद्भुत अनूप मराल आसनि जयति जय जगत्तारनी ॥ १७ ॥

भुज दंड लंब बिसाल श्रीभर कनक भूरि सुकंकनां ।
 पौचीय गजरा बहिरखा प्रिय बाहुबंध सु बंधना ॥
 महिंदीय रंगहिं पानि मंडित बेलि सोभ बधारनी ।
 अद्भुत अनूप मराल आसनि जयति जय जगत्तारनी ॥ १८ ॥

करसाख कमनिय रूप कोमल मुद्रिका बर मंडनं ।
 उपमान मूँगफली सु उत्तम अरुन नखर अखंडनं ॥
 पुस्तकरु बीन सुपानि पल्लव बेद राग बिथारनी ।
 अद्भुत अनूप मराल आसनि जयति जय जगत्तारनी ॥ १९ ॥

कहियै निगोदर हार कंठहिं मुत्ति माल मनोहरं ।
 मखतूल गुन चौकी कनक मनि चारु चंपकली उरं ॥
 तपनीय हंसरु पोति तिलरी कंठश्री सुख कारनी ।
 अद्भुत अनूप मराल आसनि जयति जय जगत्तारनी ॥ २० ॥

बिधु सकल कल संजुत बद्नी चिबुक गाढ़ सु चाहियै ।
 बिद्रुम कि बंधूजीव वर्णो सहज अधर सराहियै ॥
 दुति दसन बीज सु पक्क दारिम भेष जन मनहारनी ।
 अद्भुत अनूप मराल आसनि जयति जय जगत्तारनी ॥ २१ ॥

रसना सुरंगी श्रवति नव रस तालु मृदुतर तासयं ।
 सत पत्र पुष्प समान सुरभित अधिक बदन उसासयं ॥
 कलकंठ बचन बिलास कुहकति अगम निगम उच्चारनी ।
 अद्भुत अनूप मराल आसनि जयति जय जगत्तारनी ॥ २२ ॥

सुकराय चंचु.कि भुवन मनि सिख नासिका बर निरखियै ।
 कलधौत नथ मधि लाल मुत्तिय ऊपमा आकरबियै ॥
 मनु राज दर गुरु सुक मंगल सोह बर संभारनी ।
 अद्भुत अनूप मराल आसनि जयति जय जगत्तारनी ॥ २३ ॥

अरबिद पुष्प कि मीन अक्ष सु प्रचल खंजन पेखियं ।
 सारंग सिसु दृग सरिस सुंदर रेह अंजन रेखियं ॥

संभृत्त जुग जनु सुधा संपुट बिस्व सकल बिहारनी ।
अद्भुत अनूप मराल आसनि जयति जय जगतारनी ॥२४॥

मनु कनक संपुट सुघट मंजुल पिसित पुष्ट कपोल दो ।
दीपंत भुत जनु दोइ रवि ससि लसत कुंडल लोल दो ॥
इन हेत अति उद्योत आनन बिघन सघन बिडारनी ।
अद्भुत अनूप मराल आसनि जयति जय जगतारनी ॥२५॥

क्रोदंड आकृति भृकुटि कुटिलिति मानु भमहिं सुमधुकरं ।
लहि कमल कुसुम सुवास लोयन स्वैर संठिय बपु सरं ॥
कि अवर उपमा कहय लघु कवि सत्रु जय संहारनी ।
अद्भुत अनूप मराल आसनि जयति जय जगतारनी ॥२६॥

सु विसाल भाल कि अष्टमी ससि चरवि केसरि चंदना ।
बिंदुली लाल सिंदूर सुवर्णित वर्ण पुष्प सुबंदना ॥
अनि तिलक जटित जराउ अपित सकल काम सुधारनी ।
अद्भुत अनूप मराल आसनि जयति जय जगतारनी ॥२७॥

सिर भाल संधि सुसीस फूलह सहस किरन समानयं ।
राखड़ी निरखत चित्त रंजति बेणि व्याल बखानयं ॥
मोतिन सुमांग जवादि मंडित अधम लोक उधारनी ।
अद्भुत अनूप मराल आसनि जयति जय जगतारनी ॥२८॥

अंसुक कि इंदु मयूष उज्जल भीन अति दुति भलभलं ।
सुरवरहि निर्मित सरस सुरभित परम पावन पेसलं ॥
मन रंग ऊढ़ति महामाई बिपति कंद बिदारनी ।
अद्भुत अनूप मराल आसनि जयति जय जगतारनी ॥२९॥

चंबेलि जूही जाइ चंपक कुंद करणी केवरा ।
मचकुंद मालति दवन मुगार चारु कंठहि चौसरा ॥
तंबोल मुख महकंत त्रिपुरा ब्रह्मरूप बिचारनी ।
अद्भुत अनूप मराल आसनि जयति जय जगतारनी ॥३०॥

अज अजर अमर अपार अवगत अग अखंड अनंतयं !
ईस्वरी आदि अनादि अव्यय अति अनोप अचितयं ॥
कर जोरि कहि कवि मान किंकर अरजत अवधारनी ।
अद्भुत अनूप मराल आसनि जयति जय जगतारनी ॥३१॥

(५)

(कवित्त)

जय जय जग तारनी, सारदा सुमति सम्पन्न ।
कुमति कुकवित कुभास, कठिन कलिमल दुख कृष्ण ॥
अकल अनोपम अंग, मात पूरन चितित मन ।
सदा तास सुभिरंत, धवल मंगल लहियै धन ॥
श्री राजसिंघ राना सबल, महिपतियो सिर मुकटमनि ।
गावत तास गुरु छंद गुण, धणियांणी दिज्जै स धुनि ॥ ३२ ॥

(दोहा)

धणियांणी दीजै सु धुनि, सरसी वाँणि सुसाल ।
चित्रकोट पति जस चऊँ, रचि रचि छंद रसाल ॥ ३३ ॥
इन परि सुनि कवि कृत अरज, मात होइ सनमुख ।
बोली यो अमृत बचन, सकल समर्पन सुख ॥ ३४ ॥
गावहु गावहु सुकवि गुन, ठिक करि मन इक ठाँऊँ ।
राज राण जस छंद रचि, हौं तुम्ह पूरौं हाँऊँ ॥ ३५ ॥
सुवर दयौ श्री सरस्वती, आई अभिमुख आई ।
सीस चढ़ाय लयौ सुकवि, प्रनमि सुत्रि करन पाइ ॥ ३६ ॥
उद्यम ग्रंथह काज अब, दिवस महा भल देखि ।
कीनौ आलसि दूरि करि, लाभ अनंत सुलेखि ॥ ३७ ॥

(कवित्त)

सुंभ संवत दस सात, बरस चौतीस बघाई ।
उत्तम मास अषाढ़, दिवस सत्तामि सुखदाई ॥
बिमल पाख बुधवार, सिद्धि बर जोग संपत्तौ ।
हरषकार रिषि हस्त, राशि कन्या ससि रत्तौ ॥
तिन द्यौस मात त्रिपुरा सतवि, कीनों ग्रंथ मंडान कवि ।
श्री राजसिंघ महाराण कौ, रचियहिँ जस जाँ चंद रवि ॥ ३८ ॥

अति पावस उल्हरिग, करिग कंठल धुरकाली ।
आसा बंधि असाढ़, हरष करसणि कर हाली ॥

(६)

बहल दल बित्थुरिग, चारु चपला चमकंतह ।
गज्ज घोष गंभीर, मोर गिरि सोर मचंतह ॥
आदीत सोम छवि आवरिग, घण आयौ घमसाण घण ।
बरसंत बुंद बड़ बड़ बिमल, जलधर बल्लभ जगत जण ॥ ३६ ॥

(पद्वरी)

आसाढ़ मास आयौ अनूप, रवि उत्तर कंठल स्याम रूप ।
बहल चढ़ंत बज्जत सु बाइ, उल्हरिय सुपावस समय आइ ॥४०॥
चहुँ ओर जोर चपला चमक्क, फलहलत तेज रवि सम भमक्क ।
धुरहरत घोर घण गुहिर घोष, पावंत सुनिव संसार घोष ॥४१॥
केक्री करंत गिरवर किंगार, सजि पंख छत्र नचंत सार ।
महि मिलिय सयल सिरि मेघमाल, बरसंत बुंद बड़ बड़ बिसाल ॥४२॥
जल बहत जोर खलहलत खाल, पयधार पतत दगगग प्रनाल ।
पप्पीह चीह पिउ पिउ पुकार, भूरूह बिहस्सि अट्टार भार ॥४३॥
धोवंत सिहरि घन धवल धार, पुहवी सु कीन जल थल प्रचार ।
नीलांणी धर बरसंत नीर, चितरंग आनि मनु पहरी चीर ॥४४॥
महियल सुरंग उपजै ममोल, अति अरुन अंग कोमल अमोल ।
बगवति स्याम बहल बिहार, हिय मेव पहरि मनु मुत्ति हार ॥४५॥
सब हलकि चली सलिता सँपूर, बज्जंत बारि लगत बिधूर ।
उल्ललंत छोलै ऊज्जल अपार, पथ थकित पथिक को लहय पार ॥४६॥
निध्यामक बलन न लगंत नाव, तट उपट बहत अति जोर ताव ।
भौरह परंत लागंत भीर, तरुवर उखारिलै चलिय तीर ॥४७॥
निरखंत नीर नीरधि नमाय, छबि चंद सूर राखी सु छायां
हलहलत भरित सरवर हिलौर, रव खमभि परंत न भेक रौर ॥४८॥
डहडहव हरित डंबर डहक्क, कोकिल करंत उपवन कुहक्क ।
मालती कुंद केतकी मूल, फूलै सु वृक्ष चंपक स फूल ॥४९॥
गिरि भेदि शृंग किय गलम गात, निरभरण भरत भरहरनि घात ।
गह्वराय पत्ता गहवर गहक्क, मधुकर सुगुंज तरुवर महक्क ॥५०॥
टपकंत बुंद तरु ब्रज डार्ल, मंडव सु कीन द्रुम वल्लि माल ।
बम उखलै पावस बंडे, दारा सु बकी पतिव्रता दिट्ठ ॥५१॥

झुकि बिटपि सजल मारुत भुकोर, घन उमड़ि घुमड़ि बरसंत घोर ।
 चतुरंग चंग रचि इंद्र चाप, बिरहनि करंत बिह्वल बिलाप ॥५२॥
 यामिनी तमस अति च्यारि याम, करि कोप काय बाधंत काम ।
 धनवंत लोक निज धवल धाम, बरसंत मेघ बिलसंत वाम ॥५३॥
 जगमगति निसा खद्योत जोति, हृत्थे सुहृत्थ नन सुद्धि होति ।
 पर मुग्ध लब्ध पंथक प्रमोद, बेताल करत बन घन बिनोद ॥५४॥
 झर मंडि इंद्र तम रहौ झुक्कि, धाराधर पर बहल सु धुक्कि ।
 हुंकार नाद बन सिंह हुक्कि, ढूंढंत भक्ष निसिचार दुक्कि ॥५५॥
 बोलंत झिल्लि इक साँस बैन, मानिनि बियोग मन मथत मैँन ।
 दीसंत मग्न दामिनि दमक्क, चितचोर मज्झ उपजै चमक्क ॥५६॥
 सारंग करत गायन सुजान, रीझंत जेह सुनि राय राण ।
 मल्हार थटत माचंत मेह, नर नारि चित्त बाधंत नेह ॥५७॥
 संवत सु सत्त दह सतक सार, बच्छर चौतीसम धरि विचार ।
 सब लोक ऊंक निज निज सचैँन, आसाढ़ सेत सत्तामी अँन ॥५८॥
 देवी सु आइ बरदान दीन, कवि मान ग्रंथ आरंभ कीन ।
 चीतौर धनी कहियै चरित्र, पढ़ि छंद बिबिध रचि जस पवित्र ॥५९॥
 सब हिंदवान कुल रवि समान, राजंत राज श्री राजराण ।
 इकलिंग रूप मेवार ईस, याचक जन मन पूरन जगीस ॥६०॥
 लहियै जु नाम तस लच्छि लील, संपजै संग सज्जन सुसील ।
 दारिद्र दुखख नासंत दूरि, हँ रिद्धि सिद्धि संपति हजूरि ॥६१॥

(दोहा)

देस देस फिरि देखते, अति उत्तम; खिति आज ।
 धर्म देस मेवार घर, सब देसाँ सिरताज ॥ ६२ ॥
 जिण घर हरि घर देस जिहि, ग्राम ग्राम प्रति ग्राम ।
 असुरायन धरनी अवर, रटै नहीं जहँ राम ॥ ६३ ॥
 दरसन घट जहँ देखियै, पंडित पढ़त पुरान ।
 बेद च्यारि जहँ बाँचियै, तेज नहीं तुरकान ॥ ६४ ॥
 सकल जहाँ पूजै सुरभि, नव देवल निपजंत ।
 ह अन्याय इक निमिख को, भाषा भल भाषंत ॥ ६५ ॥

(८)

गामं नगर पुर कोट गढ़, बसै बहुत सुख बास ।
 सुंदर नर नारी सकल, बिचवत बर बास ॥ ६६ ॥
 पग पग जल जहँ पाइयै, नदी तलाब निवान ।
 सालि गोधुमा सेलड़ी, सर्पिस सुरभि सुखान ॥ ६७ ॥
 मौठ मसूर मापा मुदग, जौ बहु चना जुवार ।
 धान नीपजै जिहि धरा, अमित अमाप अपार ॥ ६८ ॥

(कवित्त)

हृद न्याय हिंदवान, राण श्री राज सु राजहिं ।
 पिसुन चोर पिल्लियहिं, न्याय करि साधु निवाजहिं ॥
 बसै सकल सुख बास, गाम पुर नगर कोट गढ़ ।
 सुंदर रूप सुजान, सधन नर नारि सुकृत दृढ़ ॥
 तीरथ तलाब तटनी तहाँ, निसि बासर निरभय निगम ।
 सब देस देस देखे सु परि, देस न को मेवार सम ॥ ६९ ॥

(हनुफाल)

मालउ मरु मेवात, मुलतान मरहठ मात ।
 महि मगध मध्य मंडाण, ठिक करिग पेखी ठाण ॥ ७० ॥
 औराक आरब अच्छ, कहि अंग बंगरु कच्छ ।
 कर्णाट फुनि कंबोज, चखु दीठ चित करि चोज ॥ ७१ ॥
 कासी रु दीठ कलिंग, बैराट बब्बर संग ।
 कुरु कासमीर कहाय, देखंत नाँवहि दाय ॥ ७२ ॥
 कौसलरु काँकण किछ, दिल कांवरु दिसि दिछ ।
 धायौ धँधेरा धाट, लिखि लयै लाडरु लाट ॥ ७३ ॥
 रहि दीठ हबसी रूम, मिलवारि भोट सु भूम ।
 खंधार खग खुरसाण, गंधार नै गुँडवाण ॥ ७४ ॥
 पढ़ि गौर गंगा पार, धर भिन्न माल सु धार ।
 देख्यौ यु गुज्जर देस, लच्छिन न जहँ सुभ लेस ॥ ७५ ॥
 विचरति भालावारि, धावत कट्टी धारि ।
 छप्पन रु वागारि डेह, अटि देखि देस अछेह ॥ ७६ ॥

निज निरखि नागर चाल, नर अस्व मुख नेपाल ।
 पंजाब पट्ट पंचाल, बसुधा विदेह बंगाल ॥ ७७ ॥
 पुनि फिरथौ देस फिरंग, रुचि न किय जहँ मन रंग ।
 सोधयौ सिंधु सुबीर, नर नारि मुख नहिँ नीर ॥ ७८ ॥
 सोरठ सिधल साज, रमि रह्यौ धर त्रिय राज ।
 दक्षिन विदरभित देस, भल रूप भासन भेस ॥ ७९ ॥
 दग द्रविड़ देस यु दिठ, चबि चविड़ लोक सु चिठ ।
 रोहिल्ल गक्खर राह, उत्तर दिसा अवगाह ॥ ८० ॥
 बसुमती देस विदेस, भरि रही नव नव भेस ।
 किहिँ देस अति गुरु कान, जहँ सोइ अंसुक जान ॥ ८१ ॥
 किहिँ अस्वमुख नर काय, किहिँ एक जंघ कहाय ।
 किहिँ त्रिया राज करंत, कहुँ स्वेत काक कहंत ॥ ८२ ॥
 कहुँ लंब कुच तिय किछ, पुहवी अनादि प्रसिद्ध ।
 कहुँ जनत कामिनि जात, तब पवन राखत तात ॥ ८३ ॥
 खिति कहुँ जल अति खार, कहिँ देस जल दुख कार ।
 कहुँ कुहुर नीर कदंत, ढिग ढोल तहँ ढमकंत ॥ ८४ ॥
 किहिँ धरा पुरुष कुरूप, सुंदरी सकल सरूप ।
 लव नहीँ किहिँ कण लल्ल, गो बहत किहिँ धर गौण ॥ ८५ ॥
 इत्यादि देस अनेक, अति अधम नर अविवेक ।
 समझै न धर्म सुसार, गरथल अग्यान गमार ॥ ८६ ॥

सब देस में सिरदार, उत्तम जहाँ आचार ।
 महि मेदपाट समान, पुहवी न कोइ प्रधान ॥ ८७ ॥
 धर लोक जहँ धनवंत, बाणी सु मिठ बदंत ।
 धारंत निज निज धर्म, सुंदराकार सुसर्म ॥ ८८ ॥
 अति दत्त चित्त उदार, आदरै पर उपकार ।
 लेवा सुलच्छी लाह, सौभाग धारक साह ॥ ८९ ॥
 जहँ हिंदुपति जयवंत, कवि मान राज करंत ।
 श्री राजसिघ सु राण, बिरुदैत बड़ बाखाण ॥ ९० ॥

(१०)

(दोहा)

मेदपाट महि मंडणह, चित्रकोट गढ़ चारु ।
मानौं मुग्धा माननी, हिय मानिक को हार ॥ ६२ ॥
अति उत्तंग अंबर अचल, अकल अभेद अभीत ।
चित्रकोट पर चक्रतै, आदि अनादि अजीत ॥ ६२ ॥
तुंग बिसाल त्रिकोट तह, कोसीसावलि कंत ।
प्रौढ़ पौरि दुर्घट सु पथ, बज्र कपाट बणंत ॥ ६३ ॥

(कवित्त)

गुरु चौरासी गढ़नि, मही मेवार सु मंडन ।
अकल अभेद अभीत, बिसम पर चक्र बिहंडन ॥
तुंग विशाल त्रिकोट, थिर सु कोसीसा थाटह ।
पौरि बुरज गुरु प्रबल, कठिन अगला कपाटह ॥
बहु कुंड बापि सर जल बिमल, बिबुधालय बसुधा बदित ।
देखे यु दुर्गा सब देस के, चित्रकोट मो बसिय चित ॥ ६४ ॥

(दंडमाली)

गढ़ चित्रकोट सु गाइयै, बसु सुजसु पटह बजाइयै ।
कुंती बहू गढ़ कोटयं, जग नहौं कोइ न जोटयं ॥ ६५ ॥
उत्तंग गिरि सम अंबरा, दिसि च्यारि दुर्गाडंबरा ।
सकुनी न जहँ संचारयं, पहुँचै न जहँ पदधारयं ॥ ६६ ॥
प्राकार तीन प्रचंड हैं, मनु अमर आइसु मंड हैं ।
सुबिसाल गज सँग बीस के, उत्तंग गज इकतीस के ॥ ६७ ॥
कोसीस पंकति कंतए, पढ़ि मोरचा सम पंत ए ।
जहँ नारि गुरु जंबूरयं, छुटत रिपु दल चूरयं ॥ ६८ ॥
गुरु बुरज भिरि सम गात ए, बर पौरि सत्त बिख्यात ए ।
भारी कपाट सु भगला, अति गाढ़ शृंखल अगला ॥ ६९ ॥
कहिँ परधि द्वादस कोस की, अनभंग अंग अदोस की ।
दल देव निर्मित दुर्गाए, अरि दलन गर्व अलगए ॥ १०० ॥
तरहटी सीर तरंगिनी, गंभीर मंग सु संगिनी ।
प्रह्व सज्जियै चतुर्गनी, आवै न किहिँ आसंगिनी ॥ १०१ ॥

गढ़ मध्य बहु गंभीर है, सरकुंड बापि सनीर है ।
निरखै सुसर्ब निवान जू, यहु असिय च्यारि प्रमान जू ॥१०२॥

सुख भीमकुंड सु मानियै, जसु तीर गोमुख जानियै ।
पयधार पतत प्रवाहनी, अवलोक तैं उच्छाहनी ॥१०३॥

उठि प्रात तच्छ अन्हाइयै, गुरु रोग सोग गमाइयै ।
अति एह तीरथ उत्तमं, सु प्रसंसितं पुरुसोत्तमं ॥१०४॥

महि चित्रकोट सु मंडनी, दुर्गायु आसुर दंडनी ।
प्राधानता प्रासादयं, बोलंत नभ सों बादयं ॥१०५॥

कल कीरथंभ सु कोरनी, नर नारि नैन निहोरनी ।
नभ लोक मिलि नव खंडयं, खल चक्रतिन चढ़ि खंडयं ॥१०६॥

मेवार घर सम मेदनी, नन अवर चित्त उमेदनी ।
महि चित्रकोट समानयं, गढ़ कौन आवहिं गानयं ॥१०७॥

रिनथंभ मंडव रेवतं, सुर असुर किनर सेवतं ।
आबू सुगढ़ आसेरयं, अवगाढ़ गढ़ अजमेरयं ॥१०८॥

ग्वालेर अलवर गज्जना, बिक्रमरु बंधुर बज्जना ।
गूगौर नरवर गाहियै, सिवसाहि गढ़ साराहियै ॥१०९॥

मंडोवरं मैदानयं, गढ़ गागरौनि गुमानयं ।
दौलताबाद सुदेख्यौ, पुहवी सु पूना पेख्यौ ॥११०॥

हिंसारगढ़ हरणौरयं, सोवर्ण गिरि सच्चौरयं ।
गढ़ देव ईडर गौरवं, बैराट बंधु बौरवं ॥१११॥

कहि कंगुरा कल्यानियं, टिल्ला पहार सु ठानियं ।
सुनियै सिवाना सारका, महि मध्य मंडल मारका ॥११२॥

तारागनं त्रिकुटाचलं, नासक्य त्र्यंबक कुंडलं ।
यों कोट दुर्गा अनेकयं, बाखानियै सु त्रिवेकयं ॥११३॥

इन चित्रकोट सु उप्पमं, इल दुर्गा कौन अनोपमं ।
इन और कोटहि अंतरं, पति भृत्य जानि पटंतरं ॥११४॥

इन मंड आदि न आवहों, पर्यंत पार न पावहों ।
इह देव अंसी अक्खियै, पढ़ि मान बोल परक्खियै ॥११५॥

(१२)

(दोहा)

चित्रकोट चित्रांगदे, मोरी कुल महिपाल ।
गढ़ मंड्यौ अवलोकि गिरि, देवसी दाढाल ॥११६॥
संगहि लिय सीसौदियै, दुर्गा एहरिषि दान ।
बापा रावर बीरवर, बसुमति जास बखान ॥११७॥
पाट अचल मेवारपति, रघुबंसी राजान ।
बापा रावर बड़ बखत, धिरि चीत्तौर सुथान ॥११८॥
तूठौ क्यों रिषि राय तिहिँ, तसु को जननी तात ।
गह्यौ तिनहिँ किन भंति गढ़, बापा बड़ बिख्यात ॥११९॥
सो प्रबंध रचियै सरस, रंजन मन महरान ।
उत्तम नृप गुन अंखतै, कमला किन्ति कल्यान ॥१२०॥

(कवित्त)

चित्रकोट गढ़ चारु, मंडि चित्रांगद मोरिय ।
रिधू करत तहँ राज, ढाहि अरिजन ढंढोरिय ॥
तीन लक्ख तोषार, सहस त्रय मदभर सिधुर ।
सहस सु रथ भर सस्त्र, प्रबल पायक अपरंपर ॥
घन सेन जानि पावस सु घन, जय करि रिण रिपु जुगवै ।
अति तेज देस दस अट्ट सौँ, भू मेवारहिँ भुगवै ॥१२१॥
मेदपाट मालवौ, सिधु सोबीर सवा लख ।
सोरठ गुज्जर सकल, कच्छ कांबोज गौड़ रुख ॥
बावन घर बैराट, दुंढि बागरि दुंढारह ॥
नरवर नागर चाल, खग छप्पन खैरारह ॥
दाखिँ देस ए अट्ट दस, चित्रांगद मोरी सु चिर ।
मह चित्रकोट तिन मंड्यौ, थप्यौ नाम निज अवनि धिर ॥१२२॥

(कवित्त)

चित्रांगद तँ सत्तमें, पाटँ नृप चित्रंमि ।
राज करै चीत्तौर रिधू, खल दल खग नि धंगि ॥१२३॥

अथ बापा रावल उत्पत्ति

(कवित्त)

पच्छिम दिसा प्रसिद्ध, देस सोरठ धर दीपत ।
 नगर वल्हिका नाथ, जंग करि आसुर जीपत ॥
 राजत श्री रघुवंस, पाट रघुनाथ परंपर ।
 गृहादित्य नृप गरुअ, धरा रछिपाल धर्मधुर ॥
 हय गय सुयान पायक हसम, अंतेउर परिवार अति ।
 नन नंदन तेहि नरिंद नै, गाढ़ी पूरब कर्म गति ॥१२४॥
 सकल देव सेवंत, क्षितिप पूजंत दरस षट ।
 देत नवग्रह दान, हत्थि हय हेम हीर पट ॥
 तीरथ भेषज तंत्र, करत इक अंगज कज्जह ।
 आरतिवंत अतीव, रचै नहिं चित्त सु रज्जह ॥
 सोवंत इक निसि सुख सयन, पत्त सुपन पच्छिम पुहर ।
 ससि भाल सीस मंगासरित, उज्जल वृष आसन सुहर ॥ १२५ ॥

भनहिं ईस सुनि भूप, राज रघुवंसी राजन ।
 सुत है हैं तुअ सकल, सबल जसु बखत सु साजन ॥
 परि तसु आनन पदम, नयन निज तुम न निरखहु ।
 लहियै जो कछु लेख, रंच आरति जिन रक्खहु ॥
 नारी सु नंद काके निलय, राज रिदिध तनु इत रहय ।
 निज कृतब सत्थ चल्लै नृपति, काम दहन सबौ कहय ॥ १२६ ॥

(दोहा)

निरखि सुपन जग्यौ नृपति, ईस बचन उर धारि ।
 आन्यौ चित संतोष अति, आरति सब अपहारि ॥ १२७ ॥
 काहू सौं ही सुपन कथ, न कही आप नरिद ।
 दिन दिन धन धन दिहियै, आहर अति आनंद ॥ १२८ ॥
 मेदपाट महि मंडलै, नागद्रहापुर नाम ।
 सोलंखी संग्राम सी, धनवति सुता सुधाम ॥ १२९ ॥
 निरखि वल्हिका नाथ निज, दिय पुत्री बरदान ।
 राजन बरि आये रमनि, सुंदर सच्ची समान ॥ १३० ॥

(१४)

सोलंखिनी सुलच्छिनी, राजन सरिस रमंत ।
 अन्य बरस कै अंतरे, गरभ धन्यौ गुनवंत ॥ १३१ ॥
 गरभ बालही पितृ गृह, आई अति उच्छाह ।
 पेम मिली माता पिता, बंधु कनिष्ठ सु ब्याह ॥ १३२ ॥
 बंधव बरि आयौ सु बंधु, रति सम सुंदर रंग ।
 धाम आप कै धनवती, चलन कियौ चित चंग ॥ १३३ ॥
 मात पिता बंधुनि मिली, यहै कीन अरदास ।
 रहौ सु बाई रंग रस, चतुरंगौ चौमास ॥ १३४ ॥
 मात पिता बच मानिकै, पावस बरजि पयान ।
 रही तहाँ राजन रवनि, औसर आवनि जानि ॥ १३५ ॥

(कवित्त)

गृहादित्य नृप गरुअ, भीम भारथ रिपु-भंजन ।
 काल राति किय काल, गाढ़ गिरिवर गय गंजन ॥
 हुअ हा हा रव हूक, कहर नृप त्रिय सत किन्नौ ।
 संसकार करि स्नान, दान जल अंजलि दिन्नौ ॥
 संथपि सुता सुत रज्ज सिरि, नव नरपति परधान नव ।
 ऐ ऐ सुपुत्त बिनु अति इल, बीयौ आई भुँजै बिभव ॥ १३६ ॥

सुनिय बत्त संग्राम, सीह परिवार समेतह ।
 धसकि परी धनवती, अवनि मुरभाइ अचेतह ॥
 सखियनि करी सचेत, धवल उट्टी धीरज धरि ।
 सती सत्ता संग्रह्यौ, पिता बरजंत बिबिहि परि ॥
 निज उअर फारि काढ़्यौ गरभ, पावक पिड पइट्यौ ।
 अनि धन्य कहै सुर धनवती, पति सम प्रान परट्यौ ॥ १३७ ॥

(छंद क्यमुकी वांताण)

अट्ट मासं सुयं नंखि आधानयं ।
 परठियं साँइ सत्यै तिनें प्रानयं ॥
 अमार बानी बहूँ धन्य आवासयं ।
 बरसह मेह ज्यौं पुष्प बरसावयं ॥ १३८ ॥

सगति जे कीजियै तेह केही सती ।
 धन्य कहियै तिके होइ ज्यौं धनवती ॥
 आपणाँ उभय कुल जेण अजुवालयं ।
 परम पतिव्रता पण एम तिम पालयं ॥ १३६ ॥
 कोटि ते भूप नायन कारावियै ।
 धाइ राखी घणुं दूध धवरावियै ॥
 बाधर हत्थ हत्थेण सो बालयं ।
 सुंदराकार तनु गोरस कुमालयं ॥ १४० ॥
 पंच धाएण सो आप पोसिज्जए ।
 चित्त चाहंत ते दित तसु चिज्जए ॥
 मज्जण न्हॉण आभूषणें मंडियं ।
 सुभग सुचि अंसुकं अंग सालंकियं ॥ १४१ ॥
 चंद सिय पख बर जेम नित कल चढ़ै ।
 बियौ मासै जितौ एह दिवसैं बढ़ै ॥
 सोम सम बयण जिम लच्छि-संतानयं ।
 बोलियै अधिक किं तास बाखाणयं ॥ १४२ ॥
 नाम बापौ ठव्यौ बज्जि नीसानयं ।
 दिद्धए हेम हय ईहकं दानयं ॥
 निरखि नाना तणै चित्त अति नेहयं ।
 मोर मनि जिमि बसै सजल दल मेहयं ॥ १४३ ॥
 एक दस बरस तिहिं अति क्रम्या अनुक्रमै ।
 साहस धीरवर बीर जोवन समै ॥
 बन्हि क्रीड़ा तणौ बिसन तिहिं नरवरू ।
 पंच सय सत्थ बालेण संपरवरू ॥ १४४ ॥
 एकदिन एक जोगिंद अवलोकियौ ।
 सिद्ध हारीत गिरि कंदरा संठियौ ॥
 थिर तिहाँ रुद्र इकलिंग नौ थानयं ।
 प्रणमिया उभय योगिंद प्राधानयं ॥ १४५ ॥
 पुष्प फल करिय रिषिराय तब पूजियौ ।
 मिठ्ठ बयणै कहै अद्य धनि मोजियौ ॥

देव तुम दरसणै दूरि नठौ दुखं ।
 सकल संपत्ति मिलि अद्य सुहुवै सुखं ॥ १४६ ॥
 सेव दो जॉम लग तॉम तिण साचवी ।
 नयण बयणै मिल्यो प्रीति बाँधी नवी ॥
 चरण रिखि वर तणै अधिक रंज्यौ चितं ।
 हृद लगौ सुयोगिंद बापै हितं ॥ १४७ ॥
 मंगि आदेस आयो तदा मंदिरै ।
 सयन किछां निसा चित्त मुनि मंभरै ॥
 जो हुवै प्रात तो पास तस जाइयै ।
 खीर ने खंड घृत तास खचराइयै ॥ १४८ ॥
 प्रात हूवा पचावै परमान्नयं ।
 मंडकं सरस घृत खंड मिष्टान्नयं ॥
 ऊजलै अंबरे तेह आछादियं ।
 करबि कोदंड कर सिलिमुखं रुंधियं ॥ १४९ ॥
 क्रमि क्रमै पत्त सो तत्थ गिरि कंदरा ।
 बाघ बाराह निवसै तिहाँ बंदरा ॥
 पाय बंदन करी दिद्ध परसादयं ।
 सिद्ध वर किद्ध आहार सुस्वादयं ॥ १५० ॥
 इण परै सरस भोजन सदा आणए ।
 युक्ति योगिदनी भक्ति भल जाणए ॥
 मास षट बोलियो रीभियो सो मुनी ।
 धन्य तू बालका एम बोलै धुनी ॥ १५१ ॥
 अब हम गमन मन प्रात बड़ आवनाँ ।
 सौँपि के रज्ज तो पछ सिद्धावना ॥
 पूरियो अंग तस अधिक उत्सक पणै ।
 आव ए तहति कहि मंदिरै आपणै ॥ १५२ ॥
 राति बोली हुई पुब्ब दिसि रत्तड़ी ।
 बेगि आवै जितै मूप सु बट्टड़ी ॥
 तितै हारीत रिषि गगन गति हल्लियौ ।
 बोल बापै तदा आइ इम बुल्लियौ ॥ १५३ ॥

(१७)

अहो जोगिंद करि उच्चरयौ आपणौ ।
थिर थई नाथ जी रज्ज सिरि थापणौ ॥
रवनि सुनि देव मुनि अप्प ऊभौ रह्यौ ।
किज्जियै भूप तुहि मंडि मुख यों कह्यौ ॥ १५४ ॥

मडियौ मुख तिणै स्वमुख तंबोलयं ।
नंखियौ हेत करि पीक निर्मोलयं ॥
देखि उच्छिष्ट निज बयण टाली दिथं ।
लिहिय रिषि मुख तणौ पाय भल्लैलियं ॥ १५५ ॥

कहय रिषि एम तँ बाल किद्धौ किसौ ।
अमर हुइ देह नित एह हूंतौ इसौ ॥
नेट तो पाय थी राज जायै नहीं ।
किद्ध तँ भूप में एह बाचा कही ॥ १५६ ॥

अप्पि बर एम योगिंद वर अतिक्रम्यौ ।
राग धरि तित्थ अडसठि फरसण रम्यौ ॥
सदन संपत्त बापौ हुवाँ संभए ।
माल्हंतौ हंस गति मोद मन मंभए ॥ १५७ ॥

सत्त दिन बोलियां नंतरै यह समै ।
रंग रस बनह क्रीड़ा भणीबनि रमै ॥
चैत सुदि तीज नौ दीह सौ चारुयं ।
सकल सुहव तिया करिय सिगारुयं ॥ १५८ ॥

नगर नागद्रहा हूंत ते नीसरी ।
केलि करिबा चली बनहिँ हरषै करी ॥
गावए नवनवी भास करि गीतयं ।
रिज्भए मान कवि रसिक तिहि रीतयं ॥ १५९ ॥

(दोहा)

जाति जाति निज मुंड जुत, बाला करत बिनोद ।
रास देइ निज रंग मैं, पतिवति सकल प्रमोद ॥ १६० ॥

(१८)

अकस्मात् तत्र सिंह इक, कोप कियेँ महकाय ।
उतरि सिंहरि आकास तें, अबलनि मध्य सु आय ॥ १६१ ॥
त्रिपुरथौ सो बहु बाउ ज्यौँ बबकि बिलूरै बाल ।
कै भगी भय भीति कै, बनिता केक बिहाल ॥ १६२ ॥
सूर वीर देखै सकल, हल्लि किनहिँ नह नाइ ।
सिंह भग संगहि रह्यौ, बाला अति बिललाय ॥ १६३ ॥

(कवित्त)

सुनि बाषा नृप सोर, अबलगन मध्य सु आवहिँ ।
चापर धनुष चढ़ाय, सहज टंकार सुनावहिँ ॥
उहि छिन सिंह अदिष्ट, होत सब बाला हरषिय ।
प्रबर पुरुष सु प्रधान, नयन धरि नेहा निरखिय ॥
मन कामदेव अवतार मिनि, कितनिक इक्क सुमंत करि ।
बरमाल घल्लि गर तत्र बख्यौ, इक सत अठ उत्तम कुँवरि ॥ १६४ ॥

(दोहा)

पानि ग्रहन कीनों नृपति, इक सौ सुंदरि अट्ट ।
तरु-मंडप सहकार तन, मंजरि मौर सु मिट्ट ॥ १६५ ॥
सहज सिंगारित सुंदरी, त्रिविध सहज बादिता ।
गीत सु सहजै गावहीं, ऐ ऐ अद्भुत चित्ता ॥ १६६ ॥
पुत्री परनित सुन पिता, सकल तत्थ संपत्ता ।
कर छोड़ावनि हरष करि, बहु विधि अप्पिय चित्ता ॥ १६७ ॥
करी सु करहा बहु कनक, हीरा मौक्तिक हार ।
पंच वर्ण जरबाफ पट, आए सधन अपार ॥ १६८ ॥
हय दस किन किन बीसहय, दीन दायजै दान ।
साकति स्वर्ण पलान सब, गिनत सहस्र त्रय मान ॥ १६९ ॥
दासी किन इक किन सु दुइ, सब विधि जान सुजान ।
पुत्री प्रति दीनी पिता, सकल अधिक सनमान ॥ १७० ॥

बरी सव्व बाला, रमा ज्यौँ रसाला ।
 मनी मुक्ति माला, लही लाख लाला ॥ १७१ ॥
 दुरमा दुसाला, हयं हींसवाला ।
 सरुव सिघाला, पुले ज्यौँ पंखाला ॥ १७२ ॥
 सिंगारे सुँडाला, महा मन्तवाला ।
 हलंते हठाला, मनौ मेघमाला ॥ १७३ ॥
 सची सी सहेली, पदैँ जे पहेली ।
 करंती सु केली, दिनेसं दुहेली ॥ १७४ ॥
 सबै लीन सध्यै, अमानै सु अध्यै ।
 महा द्विरद मध्यै, चदैँ चारु पध्यै ॥ १७५ ॥
 घुरंती घमस्सै, निसानं निहस्सै ।
 करी कुंभ कस्सै, जयं जै सु जस्सै ॥ १७६ ॥
 भणै बिरुद्ध भट्टा, घनै घाघरट्टा ।
 थटै बाजि थट्टा, बहै सेनु पट्टा ॥ १७७ ॥
 पुरं सु प्रवेसं, निहारै नरेसं ।
 बहू बालबेसं, बनीता बिसेसं ॥ १७८ ॥
 सु संग्रामसीहं, अमंगं अबीहं ।
 करै हर्ष कोडं, जगानंद जोडं ॥ १७९ ॥
 नियं पुत्ति पुत्तं, सु लोके सपुत्तं ।
 दिए ग्राम दानं, सिसोदा सुथानं ॥ १८० ॥
 बसै तत्थ बासं, उमंगे उल्हासं ।
 रची राजधानी, सिवा सुप्रमानी ॥ १८१ ॥
 प्रगट नाम पायौ, सिसौदा सुहायौ ।
 सबर एह साखा, भनै देवि भाखा ॥ १८२ ॥
 भलौ काम भोगी, स्ववामा संयोगी ।
 रमै रत्ति दीहा, जपै को सुजीहा ॥ १८३ ॥
 किनै चित्रकोटे, सुजंपी सजोटे ।
 बरं ब्याह बित्तं, चित्रंगी सुचित्तं ॥ १८४ ॥

उपन्नौ अचिज्जं, कहै मंत्रि कज्जं ।
 पठायौ सुपत्ता, दियं पुत्ति दत्तां ॥ १८५ ॥
 क्रमै ब्याह किन्नौ, लछी लाह लिन्नौ ।
 नियं पुत्ति नाथं, समप्पै सुसाथं ॥ १८६ ॥
 हयं दो हजारं, सुवणै सिंगारं ।
 दिये मत्ता दंती, खरी आनि खंती ॥ १८७ ॥
 दयौ अद्ध देसो, मिवारं महेसो ।
 दई केई दासी, रची रूप रासी ॥ १८८ ॥
 जरी पाष जामा, समप्पै सकामा ।
 दयो कोटि हेमं, प्रगटि आनि पेमं ॥ १८९ ॥
 सुथाने संपत्तौ, रमै रंग रत्तौ ।
 बनीता बिनोदं, महा चित्त मोदं ॥ १९० ॥
 कितै काल वित्तौ, वदी दूत बत्तौ ।
 चित्रंगी चढ़ाई, करै कच्छ जाई ॥ १९१ ॥
 चलौ चित्रकोटै, इला दुर्गा ओटै ।
 रखौ अप्प राजा, सजौ बेगि साजा ॥ १९२ ॥
 सुने दूत सहं, निसानं सु नहं ।
 भयौ मान भायौ, उमंगे यु आयौ ॥ १९३ ॥

(दोहा)

चित्रकोट आए सुचढ़ि, बापा नृप बर बीर ।
 मोरी चित्रंगी मिलै, साहसवंत सधीर ॥ १९४ ॥
 चित्रंगी तब ही चढ़ै, बंब निसान बजाइ ।
 बापा बीरहिं राखिकै, चित्रकोट चित चाइ ॥ १९५ ॥
 चितिय बापा बीर चित, नृप इन दे निज धीय ।
 बंधन बंधै पेमकै, कीनै अनुग स्वकीय ॥ १९६ ॥
 हम हूँ नृप निज थान है, इह नृप इनके थान ।
 करै न हम पर किंकरी, यो न तजै अभिमान ॥ १९७ ॥
 रह्य कवन उद्योत रवि, सिंह बह्य नहिं सीर ।
 इंद कवन आधीन हुइ, हम राजा अनधीर ॥ १९८ ॥

(२१) ।

चित्रंगी मुक्खि चलयौ, जे जे सुभट जुझार ।
 अवनि गांव तिन दै अधिक, किए सु आज्ञाकार ॥ १९६ ॥
 चित्रंगी कच्छहिं चलिय, पिडिय सु पुच्छिय पंच ।
 बापा बीर महाबलिय, सज्यौ कोट लहि संच ॥ २०० ॥
 गोरा नारि सु सोर घन, सख भृत्य सु विचार ।
 हय गय रथ पायकह सम, भरि अन धन भंडार ॥ २०१ ॥

(कवित्त)

बापा नृप बर बीर, भौन निज दुर्ग भलाइय ।
 चित्रंगी चित चंड, सथ दल सज्जि सवाइय ॥
 चढ़यौ कच्छ पर चूक, धरनि खुरतारहिं धुजिय ।
 खल कुल अति खरभरिय, भग्न अरिभूमि सुतज्जिय ॥
 दीसंत मग्न नन दिसिवि दिस, रवि मंडल छायाँ सु रज ।
 दिसि छंडिभग्नि दिगपालदस, गद्यत गुहिर सु सद गज ॥ २०२ ॥

(दोहा)

जुरथौ जाइ चित्रंग नृप, काल कीट कंकाल ।
 कच्छ बिभच्छ उधंस किय, भरिय रोस भूपाल ॥ २०३ ॥
 परथौ पाइ कच्छाधिपति, दंड मानि रस ठानि ।
 पुत्ति देइ हय गय प्रवर, जंग जोरवर जानि ॥ २०४ ॥

(कवित्त)

कच्छ देस निज करिय, जंग मोरी नृप जित्तिय ।
 कूच कूच प्रति कूच, पुहवि मेवारहिं पत्तिय ॥
 दुर्ग मुक्कि निय दूत, कह्यौ पयसार सुकज्जह ।
 कह्यौ सो करि कोप, सबर सीसोदा सज्जह ॥
 सुनि तप्यौ ताम मोरी ससुर, बुल्लय एह असोचि बच ।
 गढ़ छंडि आउ रिन मंडि गुरु, सबरं तन विधि एह सच ॥ २०५ ॥

निठुर ससुर बच सुनत, तमकि मंगिय तोषारहिं ।
 सज्जि तुरिय सथ परवर, सनाह सिर टोप सुधारहिं ॥
 बिहसि सकति कटि बंधि, तौन बहु सर तरवारिय ।
 चंड चित्त कर चाप, हय सु इक लख हकारिय ॥

(२२)

इक सहस्र दंति मदभर अनड, लख पंच पायक लिय ।
चढ़ि समुख चढ़्यौ चित्रकोट तैं, बापा वीर महाबलिय ॥२०६॥

(दोहा)

सख-यांन भरि इक सहस्र, घुरत निसाननि घोस ।
कायर थरहरि कंपई, सूर नरन संतोस ॥ २०७ ॥
उत तौ मोरी दल अधिक, चित्रंगी चित चंड ।
आयौ गढ़पति ऊपरै, मंडिय दुहुँ रिन मंड ॥ २०८ ॥

(छंद दंडका)

मिलिय बापा वीर मोरिय, जुरै दुहुँ बरवीर जोरिय ।
सनन सह अवाज सोरिय, गनन गुंजत बहत गोरिय ॥२०९॥
छुटि बाननि भान छाइय, उमड़ि मनु घनघोर आइय ।
धौंग धसमस करत धाइय, पेखि कायर नर पलाइय ॥२१०॥
ठनकि गज घंटा सु ठननन, भनकि भेरी नफेरी भननन ।
खनकि खग उनग खननन, भनकि ज्यौ भल्लरी भननन ॥२११॥
किलकि कर कहैं कटारिय, देखिये दीरघ दुधारिय ।
हुंढि हुंढि सुपिसुन डारिय, बीर निज निज बल बकारिय ॥२१२॥
भाट भर मंडि बज्जि खग भट, घुमत घायल घाव घण घट ।
गिद्ध पीवत श्रोन गटगट, जिद हूँढत फिरत सिर जट ॥२१३॥
सूर भूभक्त सार सारह, भरत सीस सुरंग भारह ।
धुकत धर धर लगत धारह, मंडि मुख मुख मार मारह ॥२१४॥
नृतत नीर कमंध नच्चिय, रोस रस रन रंग रच्चिय ।
सिधु सुर सहनाइ सच्चिय, माँस रुहिर सु पंक मच्चिया ॥२१५॥
बिच आयुध होत लथवथ, रवकि किन चकचूर किय रथ ।
भिरत भींब सु भार भारथ, प्रगटि मनु दुर्योध पारथ ॥२१६॥
समुख सज्जिय सूर सूरह, प्रचलि श्रोन प्रवाह पूरह ।
भाक बज्जत होत भूरह, नयन रत सुबीर नूरह ॥२१७॥
देत निज निज पत्नि दुहाइय, समरि परमेसर सहाइय ।
घुरिय घाट त्रिघाट, घाइय, भूत प्रेत पिसाच भाइय ॥२१८॥

उड़िय रेनु सु ठंकि अंबर, भूमकि डोंरु नद डंबर ।
 तवत गायन देव तुंबर, सुरीय मन रन जानि संबर ॥२१६॥
 समर हय गय फिरत सूनह, चरन पय दल होत चूनह ।
 लहिय उयरै साँई लोनह, दपटि गज घट चित्त दूनह ॥२२०॥
 ढहिय सिधुर परिय ढेरह, मानु अंजन वर्ण मेरह ।
 धिरिय दुहुँ दल करिय घेरह, जोध इक बहु करत जेरह २२१॥
 रुंड मुंड रुंडंत रड़बड़, लटकि कंधहिँ सीस लड़बड़ ।
 देत दल बिचि बीर दड़बड़, गगन गुंजत सह गड़बड़ ॥२२२॥
 भल्लकि सेन सु सार भल्लमल, हल्लकि कायर काय हल्लमल ।
 कहर सोर सजोर कलकल, देखिये अनभंग दुहुँ दल ॥२२३॥
 भरत लोह सु छोह भड़भड़, कटकि हड्डु सु जड्डु कड़कड़ ।
 दड़कि अरि सिर परत दड़दड़, हँसिय नारद बीर हड़हड़ ॥२२४॥
 अंत पंतिय पय अलूभूत, ब्रियौ अप्पन को न बूभूत ।
 भूपटि लटि योधार भूभूत, मार मचि तरफरिय भूभूत ॥२२५॥
 बित्त लरत सु सत्त बासर, आहतै मनु अमर आसुर ।
 भरिय रोस असोस भासुर, सह जय जय उच्चरिय सुर ॥२२६॥
 भगग मोरी सेन भगिय, बीर बापा जयति बगिय ।
 लोथि लोथि सु जेट लगिय, जंग इन समथो ब जगिय ॥२२७॥
 योगिनी सुर जपत जयजय, गहियते चित्रकोट हय गय ।
 बीर बापा बलिय लहु बय, जंग प्रथमहि कीन निज जय ॥२२८॥
 देव देवि विमान दरसिय, व्योम हूँत सु कुसुम बरसिय ।
 सजल सहज सुगंध सरसिय, चवत मान सुजान चुरसिय ॥२२९॥

(दोहा)

चित्रकोट गहि चित सुरस, बापा नृप बड़वार ।
 मोरी कच्छहिँ मुंचि वर, करि निज आज्ञाकार ॥ २३० ॥
 देस लियै निज अट्ट दस, मोरौ आनहिँ मेटि ।
 बापा बीर अनंत बल, सत्रव सकल समेटि ॥ २३१ ॥
 आए नृप दुर्गाहिँ अतुल, नोबति बज्जत नाद ।
 मंडय को नृप महियलहिँ, बापा नृप संवाद ॥ २३२ ॥

(२४)

(कवित्त)

जय पत्ते जुरि जंग, महा मोरी दल मोरिय ।
बापा नृप बर बीर, बखत बल रज बहोरिय ॥
करि सुराज चित्रकोट, नाद नोबत्ति निसानह ।
हय गय पय दल हशम, गनक को गिनय सु ज्ञानह ॥
पेखंत सघन उल्लटि प्रजा, बनिता कलस बँधाइ बर ।
चित चूप सिँगारिय सकल गृह, तोरन मंडिय तुंग तर ॥ २३३ ॥

(दोहा)

तोरन मंडप तुंग तर, सोवन रतन सिँगार ।
मुकर पंति पट कूल मय, दीपत राजदुआर ॥ २३४ ॥
राजमहल संपत्त रसु, सोवन तुला सँचिद्ध ।
जज्ञ सुमंडिय जय तिकौ, बाघासनहिँ बइद्ध ॥ २३५ ॥
इंद्रसभा की ऊपमा, थटि हय गय भट थट ।
बंदीजन बुल्लाय बिरुद, भारे चारन भट ॥ २३६ ॥

(कवित्त)

सत्तम दिन निसि समय, प्रहर पछिलय प्रसिद्धह ।
सुपन पत्त श्रीकार, सोइ हारीत सु सिद्धह ॥
अवनी पति प्रति अंखि, बीर बापा सुनि बतह ।
तुमहि सु हम संतुद्ध, दीन चित्रकोट सु दत्तह ॥
पय रज अचल मेवार पति, बचन एह संदेह बिनु ।
अब रावर पद तुम्ह अपियहिँ, सुत संतति सबहँ सुदिन ॥ २३७ ॥

(दोहा)

सिद्धि अपि रावर सुपद, अंगहि धरि निज अंस ।
गय योमिंद सु गगन गति, पढ़ि भूपति सु प्रसंस ॥ २३८ ॥
जगौ बापा बीर जब, उदयौ अरक अभंग ।
राजन अति उत्साह रचि, रावर पद गहि रंग ॥ २३९ ॥

(२५)

(कवित्त)

रावर पद गहि रंग, वीर बापा सु सिद्ध वर ।
बापौती सु बहोरि, धरिय भानेज अन्य धर ॥
पंच लक्ख हय पवर, सहस दस मत्तसु सिंधुर ।
पनर लक्ख पायक्क, सत्त सय सुंदरि सुंदर ॥
नव हत्थ देह सु प्रमान निज, भण्ण सवा मन जास भल ।
पल बावन टोडर इक्व पय, बापा रावर अतुल बल ॥ २४० ॥

द्वितीय विलास

(छंद बिअक्षरी)

बापा रावर पाट बिराजय । रावल श्री गूँमान सुराजय ॥
नगर तिनहिँ थमणौ निपाइय । सिंध मालवपति समर हराइय ॥ १ ॥
रावर श्री कुबेर रयणायर । दान करन तप तेज दिवायर ॥
रावर त्रिपुरसही बहु विक्रम । सत्यवंत हरिचंद भूप सम ॥ २ ॥
गोविंद रावर रिनहिँ धिर सुहर । गट्ट गुमान जानि सुर गिरवर ॥
श्री माहेंद्र नाम महारावर । विभव अनंत सत्य बसुधा वर ॥ ३ ॥
कीरतिधवल धवल कीरतिधर । सकुँतकुमार रावर जनु श्रीवर ॥
सारिवाहन रावर सक बंधिय । सिंह समान सकलधर सद्धिय ॥ ४ ॥
रावर श्री नर लील रढालह । पुहवीपति सु प्रजा प्रतिपालह ॥
अंबपसाउ सु जंग अमंगह । श्री नर ब्रह्म बखानि सु चंगह ॥ ५ ॥
अल्लू रावर राजनीति अति । इंद नरिद एक जनु गति मति ॥
बिरद आघाट साख उतपन्निय । महिमंडल नृप नृप करि मन्निय ॥ ६ ॥
जुद्ध जुड़ण रिपु मलन जसोभ्रम । धारन सिघ राज क्षत्रीभ्रम ॥
जोगराज रावर जयवंतह । साहस सिंह समान सुमंतह ॥ ७ ॥
रावर गात्र गिरुआ जस गज्जय । तीखै अरि तनु तेह सु तज्जय ॥
रावर हंस मदन सम रूपह । भेटहिँ जसु पय बड़ बड़ भूपह ॥ ८ ॥
भट्टू रावर जास महा भट । कृतब ऊँच निज राखन कुलवट ॥
भट्टेरा नृप ताँतै भनियहिँ । अति अवगाढ़ सुभट सिरि गिनियहिँ ॥ ९ ॥
बैरसिंध रावल अतुली बल । देखिय सायर सरिस जास दल ॥
महणसीह रावर महिमागर । नूर जास नित नित नर नागर ॥ १० ॥
करमसीह ऊँच कृत कीनह । पदमसीह रावर सु प्रवीनह ॥
जैतसीह रावर जोधारह । सुनियहिँ तेजसिह सिरदारह ॥ ११ ॥
समरसीह रावर जस सारह । श्री पृथ्वीराज रास सुविचारह ॥
पृथा सोम चहुआन सु पुत्तिय । पानिग्रहन संभरि पुर पत्तिय ॥ १२ ॥

दलिय युद्ध जयचंद पंगदल । समरसीह रावर दल संकुल ॥
 संपत्तो दिल्लीस सहाइय । पृथीराज चहुआन सु पाइय ॥ १३ ॥
 रावर चूँड हिंदु मग राखन । बसुधा नायक वीर बिचक्षण ॥
 घण दाता ग्याता खल घायक । सबल उथप्पन अबल सहायक ॥ १४ ॥
 रतन सेन रावर वर रज्जिय । संबत दस पण तीसहिँ सज्जिय ॥
 पदमनि सिंहलदीपहिँ परनिय । हरि हर बंभ देव मन हरनिय ॥ १५ ॥
 अलावदी आलम चढ़ि आइय । बरस एक रहि पुल बंधाइय ॥
 बनिता देन असुर बहिकाइय । मरदानै तब मारि मचाइय ॥ १६ ॥
 भय मन्निय असपति तबभगिया । जय जय रतनसेन जसजगिया ॥
 धनि जननी जिन उयरहिँ धरियौ । इल अवतार रूप अवतरियौ ॥ १७ ॥
 भूमि चूँड रावर भट भारी । सज्जत सेन दहल धर सारी ॥
 डूंगरसी रावर नन डुल्लय । हरषि समर संमुह ते हल्लय ॥ १८ ॥
 रावर पुंजा रिण रस रंगिय । निज कर करि अरि सेननि खंगिया ॥
 श्री नरपुंज सु दान समप्पय । कवि वर दुख दारिद्रहिँ कपय ॥ १९ ॥
 प्रतापसीह रावर सु प्रतापह । छत्र धारि नृप क्षिर जसु छापह ॥
 करन समान सुकरन कहावहिँ । तिन समान नृप कोइ न आवहिँ ॥ २० ॥
 इत्यादिक रावर अवतारिय । जटा सुकुट ईश्वर अनुहारिय ॥
 राजथान चित्रकोट सु रज्जय । गुरु गहिलौत साख धुर गज्जय ॥ २१ ॥
 सूरवीर दातार सुसीलह । लच्छीपति समजसु जस लीलह ॥
 मंगल कहत एह कवि मानह । बसुधा नायक सरस बखानह ॥ २२ ॥

(कवित्त)

करन पुत्र दुअ कहिय, जिठ राहप त्रिभुवन जस ।
 माहव दुतिय महिंद, बाघ रिपु करन अप्प बस ॥
 राणा पद राहपहिँ, लीन करि उत्सव लक्खह ।
 संबत तेरह सुद्ध, पंचदस बरस प्रतक्खह ॥
 थपि एकादस कुल देवि थिर, याग भाग बंधिय जुगति ।
 दुहुँ बेर बरस मंडै सु दुति, नौमी दिन पूजै नृपति ॥ २३ ॥

(२८)

(दोहा)

राना राहप रंग रस, इच्छित पूरन आस ।
रावर . पद माहप रच्यौ, जूवराज करि जास ॥ २४ ॥

(छंद नीसानी)

राहप रान अजेय रिन, जननी धनि जाया ।
कृतब ऊँच किये जिनहिँ, मह जज्ञ मंडाया ॥
अजा सिंह दुहुँ घाट इक, पानिय तिन प्याया ।
राणा पद लिय रंग सौँ, कुल कलस चढ़ाया ॥ २५ ॥

दिनकर रान दिनेस दुति, सक बंध सवाया ।
राना श्री नरपति रिधू, बिधि अप्प बनाया ॥
जयवंता जसकरन जग, करमेत कहाया ।
सज्जन जनहिँ सुहावना, अपरहिँ असुहाया ॥ २६ ॥

पुन्य पाल राना प्रगट, परमेश्वर पाया ।
मुख देखत रिधि सिधि मिली, मन सोच मिटाया ॥
पीथल राण अडोल पग, पतिसाह बुलाया ।
अनमन बाँए अतुल बल, भल दंड भराया ॥ २७ ॥

भूमि भोग पति भाणसी, राना सु रिभाया ।
दैहँ मुँह मांग्या दरब कुंदन सु कटाया ॥
भीम सरीसे भारथनि, भल भीम भलाया ।
सत्रव कहूँ न रहि सकै, सब जगत सुधाया ॥ २८ ॥

रान अजयसी बीर रस, खल जूह खिलाया ।
नारद तुंबर नच्चिया, गुण ग्रंधव गाया ॥
लखमसीह जस लोभिया, बसु घण बरसाया ।
राजस गुण जुत रति रवन, अवतार उपाया ॥ २९ ॥

अरसी राख महा अनड़, हल्लय न हलाया ।
सिधुर तुरग समप्पनां, दत नाम दिपाया ॥
सीस जास गंगा सलित, सिव रूप सुहाया ।
रज्ज बहोरि हमीर रांग, रिधू बौल रहाया ॥ ३० ॥

खेतल रांण समाहि खग, अरि कटक उड़ाया ।
 पर दुख कातर पुहवि पति, बड़ बिरुद बुलाया ॥
 लाखणसी राणा सु लछि, तनु सोवन ताया ।
 बंस बिभूषन दल बहुल, दिल दत्ता दिदाया ॥ ३१ ॥

मोकल राण उदार मन, निज सुजसनि पाया ।
 बैरी पकरि बिभच्छना, जनु सिंह जगाया ॥
 कुंभ राण अखियात कलि, लख हेम लगाया ।
 पनरासै पचरोतरै, परगट परनाया ॥ ३२ ॥

कुंभलमेर अजीतगढ़, बहु लोक बसाया ।
 महन रंभ आरंभ करि, महि दंद मिटाया ।
 चित्रकोट चित चूप सौ, कमठान कराया ।
 कुंभसामि देवल कलस, धज दंड धराया ॥ ३३ ॥

राणा जाच्या रायमल, लख दान सु ल्याया ।
 संपति जिहिँ पाई सकल, भव दुःख भगाया ॥
 राण संग्राम सुरोस रस, सजि कटक सवाया ।
 नरवर दुर्ग निसान लिय, लछि नगर लुटाया ॥ ३४ ॥

उदयसिंघ राणा अनम, जग नाम जनाया ।
 अलकापुर सम उदयपुर, बर नगर बसाया ।
 राण प्रताप सु रुद्र रस, मह जंग मचाया ।
 अशुल्ला सरिखा असुर, गज सहित गिराया ॥ ३५ ॥

सहस बहुत्तरि दल सकल, खग मारि खिसाया ।
 साहि अकब्बर संकयौ, ए बीर उपाया ॥
 अमरा रांण सदा अमर, गुण गीतहिँ गाया ।
 अरिजन भुज बल आहनिय, घन सुजस घुराया ॥ ३६ ॥

करण राण चढ़ती कला, संसार सुणाया ।
 बसुधा-नायक अति बिभव, गुरु बखत गिणाया ॥
 जगतसिंघ राणा सुजय, जस करि जग छाया ।
 आखत मान निधान ए, भनते मन भाया ॥ ३७ ॥

(३०)

(कवित्त)

जगतसिंघ जोधार, राण हिंदू मग रक्खन ।
अनम अगम अकलंक, वेद व्याकरण विचक्खन ॥
एकलिंग अवतार, आदि नर वर अतुलह बल ।
मुख देखत निधि मिलत, जगत जंपत जस परिमल ॥
सुकृत सुमेर सीसौद नृप, साहसीक सुंदर सुमति ।
श्री करन रान पाटहि प्रवर, पुन्यवंत मेवारपति ॥ ३८ ॥

(छंद हनुफाल)

श्री जगतसिंह सुरान, बिरुदैत बड़ बाखान ।
सु श्रिय सुरेस समान, दाता सु हय गय दान ॥ ३९ ॥
ऐ हिंदु कुल आदीत, अनमह अभंग अजीत ।
रक्खन सु रविकुल रीति, गावै सु कवि जस गीत ॥ ४० ॥
कालंकि जन केदार, सब हिंदु सिर सृंगार ।
दुतिवंत जिन्ह दरबार, दिन दिनहिँ दय दय कार ॥ ४१ ॥
पुहवी प्रजा प्रतिपाल, देख्यौ सु दीनदयाल ।
रिण रंग अंग रढाल, भट जानि भीम भुजाल ॥ ४२ ॥
बसुमती रक्खन बीर, नित नक्ल जिन्ह मुख नीर ।
संग्राम साहस धीर, सौवर्ण वर्ण सरीर ॥ ४३ ॥
नित सिंघ रूप निसंक, बलवंत कट्टन बंक ।
कट्टन सुरोर कलंक, मुख जानि पूर्ण मयंक ॥ ४४ ॥
छाजंत सीसहिँ छत्र, पटि कनक दंड पवित्र ।
चामर दुरंत सुचंग, भल करन रिपु मद भंग ॥ ४५ ॥
चंचल सु रांन चढ़ंत, पर भूमि हलक पड़ंत ।
रिपु नारि बनहिँ रुड़ंत, गह तासु ग्रंथ गड़ंत ॥ ४६ ॥
कर झलि वर करवाल, परठंत पिसुन पयाल ।
रतिरवन रूप रसाल, असुरेस चित नटसाल ॥ ४७ ॥
खनकंत जसु कर खग, लुलि अनम नर पय लग ।
भुवि छंडि के रिपु भग, कर गहत धनु ज्यौ कंग ॥ ४८ ॥

सग सिंधु सरस समाव, अति सबल दल उमराव ।
 दै ना सु पर धर दाव, पहु करन लाख पसाव ॥ ४९ ॥
 खल भक्षि कीजत खून, हय गय सु हाटक हून ।
 दल जानि पावस दून, चलतै सु गिरि हुइ चून ॥ ५० ॥
 अति दत्त चित्त उँदार, इल करन पर उपगार ।
 भरना सु पुन्य भँडार, कवि जपत जय जय कार ॥ ५१ ॥
 जिन मानधाता जाय, करि परम पावन काय ।
 निज खंति तीरथ न्हाय, मन सत्त हेम मँगाय ॥ ५२ ॥
 बर तुला अप्प बइठ, जगतेस रान सु जिठ ।
 बसु कनक जलधर बुठ, दाता न जिन सम दिठ ॥ ५३ ॥
 कुंदनहिँ कुंती कीन, दिल उचित दान सुदीन ।
 नस्नाथ नित्य नवीन, लहि लच्छि लाहा लीन ॥ ५४ ॥
 श्री उदयपुर सृंगार, जमनाथराय जुहार ।
 प्राप्ताद वर प्राकट, जगतेस पुन्य अप्पर ॥ ५५ ॥
 बर कनक बिसवा बीस, ब्रह्मांड रवि इक्कीस ।
 जगतेस राण जगीस, बहु बेर किय बगसीस ॥ ५६ ॥
 अभिनवा बसुमति इंद, द्रुतिवंत जाँनि दिनंद ।
 कटन सुरिपु कुल कंद, श्री करण राँण सुनंद ॥ ५७ ॥
 अवदात सुजस अपार, पभनंत नांवहि पार ।
 यह धर्म नृप अवतार, जगतेस जस जयकार ॥ ५८ ॥
 भुवि दीप सायर भान, सुर सेल चंद समान ।
 महकंत जस कहि मान, जगतेस रान सुजान ॥ ५९ ॥

(दोहा)

तिय बसुमति भालहिँ तिलक, जिगमग जोति जराउ ।
 निपुन सुमति नर निर्मयौ, बहु बिधि बरन बनाउ ॥ ६० ॥
 राजथान महारान कौ, सकल अवनि सृंगार ।
 उदयापुर बर नगर इह, इंद्रलोक अनुहार ॥ ६१ ॥
 प्रवर बिकट पुर चहुँ परधि, पर्वतमय प्राकार ।
 चहुँधौ तै पर चक्र कौ, सपनै नहिँ संचार ॥ ६२ ॥

कोसीसावलि सोह कर, प्रबल बुरज प्राकार ।
 खंभ सु प्रबल कपाट युत, प्रौढ़ पौरि पतिहार ॥ ६३ ॥
 बसति जहाँ बहु विधि बरन, द्वादस कोस बिसाल ।
 थान थान कमठान थिर, ऋतु षट ही सु रसाल ॥ ६४ ॥
 चहुँ दिसि बाग सु बाटिका, जल सारनि कृषि जान ।
 सायर सम सरवर सजल, नदी सु कुंड निवान ॥ ६५ ॥
 पल्ल खचित सम भूमि बहु, प्रबल ऊँच प्रासाद ।
 गोख जारि सोवन कलस, बढत गगन संवाद ॥ ६६ ॥
 राजलोक सुरलोक सम, पात्र सु पात्र नवीन ।
 विविधि वृंद वारांगना, कंचुक पुरुष प्रवीन ॥ ६७ ॥
 राजसभा सिंहासनहिँ, राजत श्री महरान ।
 आतपत्र चामर उभय, सोभ सुरेस समान ॥ ६८ ॥
 बैठे निज निज बैठिकहिँ, सुभट राय साधार ।
 प्रोहित मंत्री सर प्रवर, हुकमदार हुजदार ॥ ६९ ॥
 दलपति गनपति दंडपति, गजपति हयपति सार ।
 रथपति पयदलपति प्रगट हैं, जिन्ह अति अधिकार ॥ ७० ॥
 कोसरु कोठागार पति, साख साख भर भूप ।
 षटभाषा नव खंड कै, नर जह नव नव रूप ॥ ७१ ॥
 सुश्रूषिक पार्श्वग गनक, लेखक लिखन अभूत ।
 महिक संधिक यष्टि धर, अनुग दुबारिग दूत ॥ ७२ ॥
 श्रीपति सेठ सुसार्थपति, सौदागर संगर्व ।
 मागध चारन भट्ट कवि, गायन गन गंधर्व ॥ ७३ ॥
 वादित्रिक मौष्टिक विविध, पायक वैद्य प्रसिद्ध ।
 नट बिट बटुक सु गल्ह नर, सभा संपूरि समृद्धि ॥ ७४ ॥

राजसभा वर्णनम्

सकल सबर कमठान युत, सहसक खंभ सरूप ।
 गजसाला रथसाल गुरु, आयुधसाल अनूप ॥ ७५ ॥

हयसाला बहु बरन हय, कोस सु कोटागार ।
 विविध वस्तु धन धान कै, भरै सु सुभर भंडार ॥ ७६ ॥
 करभसाल उन्नत करभ, वृषभसाल वृष जानि ।
 बेसरिसाल बिसाल बहु, बेसरि बर्ग बखानि ॥ ७७ ॥
 सीह क्रौड़ चित्रक सरभ, सीह घोस कपि रिच्छ ।
 संबर गैडा रोभ मृग, स्वापद साल सु अच्छ ॥ ७८ ॥
 ारावत बहु रंग कै, मैना मोर चकोर ।
 मुक मराल सारस बतक, बिहगसाल बरजोर ॥ ७९ ॥
 जलखंडौ खलि जालियुत, भोजनसाल सुभंत ।
 नौबतिसाल विनोद नित, बहु बादित्र बजंत ॥ ८० ॥
 मंगलीक दरबार सुख, देवालय दीपंत ।
 धजादंड सोवन कलस, व्योमहिं बाद दंत ॥ ८१ ॥
 गृह गृह मंदिर धवल गृह, गृह गृह प्रति जिन गेह ।
 गृह गृह हरिहर गेह गुरु, गृह गृह अर्थ अछेह ॥ ८२ ॥
 गृह गृह भोग बिलास बहु, गृह गृह मंगल माल ।
 गृह गृह हरष बधाउनै, गृह गृह सर्व रसाल ॥ ८३ ॥
 गृह गृह नित पानिग्रहन, गृह गृह पुत्र प्रसूति ।
 गृह गृह न्याति सु न्याति यहिं, गृह गृह अगिनति भूति ॥ ८४ ॥
 जाति गोत बहु वंसयुत, बसत अठारह वर्ण ।
 निय निय कर्म सबै निपुन, सधन सुभास सुवर्ण ॥ ८५ ॥
 असन बसन बसु बासु पसु, जान दान सनमान ।
 ाहन भोग सुरूप भल, भाषा भूषण गान ॥ ८६ ॥

(मोतीदाम)

उदैपुर इंद्रलोक अनुहार, बसै सुखवासहिं वर्ण अठार ।
 गृह गृह मंदिर पौरि पगार, भरै धन कंचन रूप भंडार ॥ ८७ ॥
 बसै तहँ राज कुलीस छतीस, हयदल गयदल पैदल हीस ।
 बहू बिधि न्याति सुविप्रनि बृंद, पैं चहुँ वेद पुरानरु छंद ॥ ८८ ॥

पुरोहित भट्टरु पाठक व्यास, तिवारिय चौबे दुबे सु प्रकास ।
 सुजोइसि पंडित केउ बम्हाइ, कितै श्री पात सुब्रह्म कहाइ ॥ ८६ ॥
 कलाधर भूधर श्रीधर केइ, यशोधर जैधर लखल लहेइ ।
 गजाधर गनधर गोप गुविंद, महीधर गिरिधर बालमुकुंद ॥ ८७ ॥
 बसैं तहँ सेठ सु सारथवाह, बड़े संघनायक श्रावक साह ।
 धरैं जिन सासन जैन सुधर्म, श्रद्धालु कृपालु दयालु सुकर्म ॥ ८८ ॥
 बसैं तहँ कायथ केउ हजार, लिखैं बहु लेख अलेख लिखार ।
 सदा तिन एक सयान सुबुद्धि, रंगै रस रूपहिँ ऋद्धि समृद्धि ॥ ८९ ॥
 बसैं बिरुदाइय भट्टनि राव, लहैं नृप द्वारहिँ लाख पसाव ।
 सु चंडिय नंदन चारन चंग, रहैं नृप संग महा रस रंग ॥ ९० ॥
 कितेइ बसंत सुनार कँसार, सुजी सुत्रधार भराए रँगार ।
 सिलावट जट्ट कुडंभि अहीर, कुलालरु मालिय भोइय भीर ॥ ९१ ॥
 तमोलिय तेलिय बृंद तल्यार, सिलीकर नापित लखल लखार ।
 चितारे लुहारे सु कागदि केज, खरादि जरादि किते रँगरेज ॥ ९२ ॥
 किते सब नीक मनीगर संच, सुधौप कलीलि करानि प्रपंच ।
 डमंकर भाभर भुंजे कलार, बनं कर भीलरु ऊँड़ किरार ॥ ९३ ॥
 नटा बिट मागध बटुक सनूर, सुमोचिय स्लेच्छ मतंग समूर ।
 रैबारिय रट्टिय कट्टि चमार, पनीगर पायक खैंट प्रचार ॥ ९४ ॥
 सुगायन पण्य त्रियानि प्रभृति, बिभौ युत पैनि अनेक बसंति ।
 नियंनिय बासनि नार निनारि, प्रजा जनु अंबुधि नीर अपार ॥ ९५ ॥
 गृहं गृह दंपति भोग सँजोग, गृहं गृह निर्भय नूर निरोग ।
 गृहं गृह संपति लच्छि सुलच्छि, गृहं गृह दासिय दास सुअच्छि ॥ ९६ ॥
 गृहं गृह मंगल गीत उछाह, गृहं गृह पुत्र सु पुत्रिन व्याह ।
 गृहं गृह बादित्र पुत्र प्रसूति, गृहं गृह जानि अनंत प्रभूति ॥ ९७ ॥
 बिराजहिँ केउ बजार प्रबंध, सचौधित गंधित गंध सुगंध ।
 उषै इक सूत अपार सुहृद, भरै बहु संपति थट्ट उपट्ट ॥ ९८ ॥
 कितै तहँ देवल देव सुथान, लगै गुरु खंभ महा कमठान ।
 धर्जा दंड कुंदन कुंभ सु कंत, सिंहासन श्री जिनराज समंत ॥ ९९ ॥

कितै तहँ आवतु हँ नर नारि, कितै प्रभु पूजहिँ अष्ट प्रकार ।
 भनंकति भल्लरि घंट ठनंक, भलंमलि दीपक योति निभंक ॥ १०३ ॥
 कहूँ रघूबीर कहूँक रमेस, कहूँ हरसिद्धि कहूँक महेस ।
 कहूँ इकदंत गजानन आप, पुलै तिन पेखत पाप संताप ॥ १०४ ॥
 कितेइ उपाश्रय चौकिय बंध, चंद्रोपक मुत्तिय पाट प्रबंध ।
 उपै तिन मध्य महा मुनिराय, सु संकुल संघहिँ सेवित पाइ ॥ १०५ ॥
 बदै चहुँ वेद सुधर्म बखान, सिखावहिँ सुवृत श्री गुरु ग्यान ।
 किती भ्रमसाल नैसाल पौसाल, पढ़ै तहँ उतम बाल गोपाल ॥ १०६ ॥
 कितै तहँ जौहरि जौहरवाल, सुमानिक मुत्तिय लाल प्रवाल ।
 पना पुखराजर लीलक पच्च, मँडै नग हीर जिगमिग जच्च ॥ १०७ ॥
 कहूँ कहूँ हट्ट परै टकसाल, सु गारहिँ सोवन रूप सुभाल ।
 सबै बर संचय तोले तुलानि, जितै तित चित्र अनोपम जानि ॥ १०८ ॥
 कितेइ सरापनि हट्ट सुभासि, दिपंत दिनार रूपैयन रासि ।
 सु थैलिय अग धरै बदरानि, सु छेदत भेदत लेत पिछानि ॥ १०९ ॥
 कितै तहँ कुंदन रूप सुनार, सु गारत यंत्रनि कट्टत तार ।
 गढ़ै बहु भूपन भौति बनाउ, जिगमिग हीर जरंत जराउ ॥ ११० ॥
 कितै बहु मौलिक वस्त्र बजाज, मँडै जरबाफ मुखंमल साज ।
 मसज्जर नारिय कुंजर भिश्रु, सुभै सिकलात दुमास सहस्र ॥ १११ ॥
 मनोसुख सूफ पटोर दरघाइ, खीरोदक चेनी पितांबर ल्हाइ ।
 मनोसुख पौमरी साहिबी पाट, हीरागर सेनिय हीर सगाढ़ ॥ ११२ ॥
 भरुछिय भैरव मारु सभार, सुसी महसुँदी सु सिदलि सार ।
 सुनां टुकरी श्री साप अटांन, सेला पंचतोरिय खासे सुजान ॥ ११३ ॥
 मलंमल साहि चौतार दुतार, उपै इकतार सु धौत अपार ।
 सु सारिय चौरस रंग रंगील, दिखावहिँ आव दलाल असील ॥ ११४ ॥
 कितेइ कंठारिय मंडि कठार, प्रधान कृपांण अनंत प्रकार ।
 सु श्रीफर एलचि लोंग सुपारि, सचे घन हिँगरु सार सुधारि ॥ ११५ ॥
 मृगंमद केसरि और कपूर, कालागरु चंदन कंकु सिंदूर ।
 रसंचिस गंधक सं हरतार, हरीत्रि गरु त्रिफलानि सभार ॥ ११६ ॥

सु खारिक दाख मखानै बदाम, घनै पिसता अखरोट सुनाम ।
 चिरोँजिय सक्कर पिंडखजूरि, सिता बहु भाँति सु संचय भूरि ॥ ११७ ॥
 सुमस्तकि लौलि मजोठ अफीम, यवाँनी पंच जायफरु सीम ।
 ठटै बहु ठट्ट सुगंठित ठाइ, कितै इक आनन नाउँ कहाइ ॥ ११८ ॥
 कितेकन हट्टिय हट्ट कनिक, बहु बिधि तंदुल गौहु चनक ।
 मसूरु सुंगरु मौठ सु माख, घनै जव फारिख दारि सभाख ॥ ११९ ॥
 घनै घृत तैलरु ईख अलेख, सबै रस हींग तिजारे बिसेख ।
 सु बेचहिँ सच्च तराजुनि तोल, सबै मुख बोलत अमृत बोल ॥ १२० ॥
 कितैइ कंदोइ निहट्ट इकट्ट, मँडै बहु भंति भिठाइय मिट्ट ।
 जलेबिय घेउर सुत्तयचूर, चिरोँजिय कोहलापाक सँपूर ॥ १२१ ॥
 सु अमृति मोदक लाखणसाहि, गिंदौरनि पैरनि गंज सुचाहि ।
 पतासे हेसमि खंड पंगेरि, तिनं गनि केसरिपाक सुहेरि ॥ १२२ ॥
 साबूनिय रेवरि माठिय सोठ, फबंतिय फैतनि लगगत ओठ ।
 तपै घृत सौरभ मध्य कड़ाह, करै खंड चासनि बास सराह ॥ १२३ ॥
 कितै इत मोरनि हट्ट अमान, प्रबेचहिँ पाके अडागर पान ।
 गटै बहु बीरिय बीटक बुद्ध, सुपारिय क्वाथरु चूरन सुद्ध ॥ १२४ ॥
 कितै तहँ गंध सुगंधिय तेल, जुही करनी मुगरेल चंपेल ।
 सु केतकि केवरा कुंदरु जाइ, गुलाब सु मालति गंध सुहाइ ॥ १२५ ॥
 घनै अतरादिक सोँवे जवादि, कुमकुमा नीर किये कुसुमादि ।
 सु केसरि चंदन चोबनि अग्ग, महं महि थान बजार सुमग्ग ॥ १२६ ॥
 किती तहँ मालनि फूलनि माल, गुहँ कर चौसर फाक भमाज ।
 सु कंचुकि गिंदुक कंकन भंति, बिलोकहिँ बांम करै मन खंति ॥ १२७ ॥
 कितै तहँ गुंड गरीनि के गंज, सिँघारे अनार सियाफल संज ।
 जँभीरिय सेव सदाफल जानि, पकै महु बेर हिमंत बखानि ॥ १२८ ॥
 कितै ऋतु ग्रीष्म राइनि आम, केरा सहतूरु दाख सकाम ।
 पकै खरबूज सु अमृत खान, मँडै घन मेवा कहै कत मान ॥ १२९ ॥
 मँडै ऋतु पावस पावस जात, घनै सरदा सरदादि सुहात ।
 ऋतु ऋतुवंत रसाल विवेक, मँडै तरकारिय भंति अनेक ॥ १३० ॥

कितै पटवानि के हट्ट प्रधान, गठेँ बहु भूषन पाट विज्ञान ।
 कितै करि दंत चढ़ाइ खरादि, उतारहिँ नूटक चंग प्रसाद ॥ १३१ ॥
 कितै तहँ बौहरे आसुर वृंद, करैँ बहु वस्त्र व्यापार समुंद ।
 कराहिय कंटक लोह कुठार, सचै गुजरातिय कम्गर तार ॥ १३२ ॥
 लसैँ कोटवालि सु चौतरे ऊँच, बैठे कोतवाल करैँ खलखंच ।
 निबेरहिँ सत्य असत्य सु न्याउ, बहू चर वृंदनि सेवत पाउ ॥ १३३ ॥
 कहूँ सु जगातिय लेत जगाति, रहैँ रखवारि कितै दिन राति ।
 गहैँ कर पाँचिय इंच सुदान, दियावहिँ श्री महारान सु आन ॥ १३४ ॥
 सुजी भरभूजे कँसार ठँठार, धरैँ सिकलीगर सख सुधारि ।
 कितै रंगरेज रंगै बहु रंग, सु चूनरि पाग कसुंभिय चंग ॥ १३५ ॥
 कितै इक मोचिय बाजि पलांन, रचैँ सु खार सु पाइनि त्रान ।
 जिती जग जाति तितै तिन कर्म, सबैँ सुख लोक बढैँ धन धर्म ॥ १३६ ॥
 कितै मन हट्टिय कंगहि काच, बहू विधि मुँदरी हार सुवाच ।
 पना नग मुत्तिय लाल प्रवाल, करी रद कुंपिय बिदुलि भाल ॥ १३७ ॥
 कितै षटदर्सन आस्रम अँन, साला जल बाग समेत सचैँन ।
 लहैँ बहु दांनरू मान भुगति, सबैँ जग सेवत योग युगति ॥ १३८ ॥
 कहूँ कठियार क्रीणंत कबार, भरैँ कोउ प्रौहिन ईधन भार ।
 अलेखहिँ लादे पसूनि सुचार, करैँ क्रय घासिय घास अपार ॥ १३९ ॥
 कहूँ नट नच्चत जूझत मल्ल, कहूँ कहुँ पिक्खन ख्याल नवल्ल ।
 कहूँ बर पंडित बोलत बाद, कहूँ निपजंत नये सु प्रसाद ॥ १४० ॥
 कहूँ तिय सोहव गावति गीत, बजैँ डफ ढोल मृदंग पुनीत ।
 कहूँ नृप दासि बडारनि मुंड, सजैँ तनु सार सिँगार सु मंड ॥ १४१ ॥
 कितेइ सौदागर अस्व सिँगारि, दिखाउन आँनहि राजदुआरि ।
 बहू रंग चंचल वेग विज्ञान, तत थेइ थेइ सुनच्चत ताँन ॥ १४२ ॥
 कितै उमराव हयगय सैन, कितै बहु सेठ रु साहस चैन ।
 कितै पसु वृंद कितै नर नारि, मचैँ बहु भीर बजार मझार ॥ १४३ ॥

(दोहा)

धान - मढी लोहन - मढी, रुई-मढी सुभ संज ।
 अनछादित सुस्थित अमित, गिरिवर सम बहु गंज ॥ १४४ ॥

बंधि गंठि बहु भंति कन, ढोवत किनै हमाल ।
 कै बारदि केई सकट, सब दिन रहत सुकाल ॥१४५॥
 सुंदर तिय केऊ सहस, सीस सुघट पनिहारि ।
 कोकिल ज्यौ कलरव करहिँ, भरहिँ छानि बर बारि ॥१४६॥
 किनै पखालिय महिष वृष, भरै मसक के नीर ।
 हय गय नर तिय पनघटहिँ, सब दिन रहत समीर ॥१४७॥
 मेदपाट जनपद सु मधि, सहर उदयपुर साज ।
 महारान करनेस सुच, जगतसिंह युवराज ॥१४८॥
 रानि जनादे रूप रति, सत सीता सु विचारि ।
 राजसिंह राना रतन, जाए जिन जयकार ॥१४९॥

(कवित्त)

संवत सोरह सरस, बरस छह असिय बखानह ।
 ससि अमृत ऋतु सरद, धरा निप्पयनिय सु धानह ॥
 मंगल कातिक मास, पदम पख बीय पवित्तह ।
 बलवंतौ बुधवार, निरखि भरनी सु नखित्तह ॥
 निसिनाथ उदित गय पहर निसि, मेप लगन मन्यौ सु मन ।
 जगतेस रान घर सुत जनम, राजसिंह राना रतन ॥१५०॥
 बिकसत हरिहर ब्रह्म, सूर ससि अधिक सुहाइय ।
 इंद ताम उच्छाह, सकल सुर हरष सवाइय ॥
 गावहिँ अपछरि गीत, व्योम दुंदही सु बज्जिय ।
 खल मंदिर खरहरिय, धमकि आसुरि धर धुज्जिय ॥
 गिर परिय ताम तुरकनि गरभ, यवन करत केऊ यतन ।
 जगतेस रान घर सुत जनम, राजसिंह राना रतन ॥१५१॥

(छंद पद्धती)

जगतेस रान घर सुत जनम ।
 धर हरिय असुर धर तबहि धम ॥
 गिर परिय ढरिय यवनेस गेह ।
 खल नगर सीस बरसत खेह ॥ १५२ ॥
 अति इंद्रलोक मंड्यौ उछाह ।
 सुर कहत सह जय जय सराह ॥

गावंत मधुर अच्छरि सु गान ।
बज्जंत देव दुंदुभि बिमान ॥ १५३ ॥

दीनी बधार्ह सु दासि दौरि ।
गय गमनिहसित मुखि जानि गौरि ॥
यहु सुनत ताहि कीनै पसाव ।
भक्तिमिगत अंग भूषन जराव ॥ १५४ ॥

बर त्रिविधि घोस नौबति सु बज्जि ।
गगनहिँ गँभोर प्रति सह गज्जि ॥
गावंत नारि सोहव सु गीत ।
पटकूल पहिर भूषन सु पीत ॥ १५५ ॥

बीती सु निसा प्रगट्यौ बिहान ।
भलहलत तेज उग्यौ जु भान ॥
रस रंग चित्त जगतेस रान ।
दीन्हैँ अनेक हय गय सु दान ॥ १५६ ॥

रूपि जन्म गेह रंभा रसाल ।
बहु लंबझुंघ पत्रहिँ बिसाल ॥
बंधनह मुक्ति तब बंदिवांन ।
हरखै सुलोक सब हिदुथान ॥ १५७ ॥

बंदननिमाल घर घरहिँ बार ।
सब सहर हट्ट पट्टन सिंगार ॥
तोरन सुबंधि प्रति द्वार तुंग ।
रवि मंडि यान देखंत रंग ॥ १५८ ॥

बसुपाल बेगि जोइसि बुलाय ।
आसीस बिप्र दीनी सु आय ॥
रवि रूप चिरं जगतेस रान ।
थिर करहु रज्ज पहु हिदुथान ॥ १५९ ॥

दिनौ समान बैठक दीन ।
पढ़ि लिखत जन्मपत्री प्रवीन ॥

मंड्यौ सुताम धुर लगन मेष ।
बहु वीर्य वित्ताकारक बिसेस ॥ १६० ॥

बपु भुवन लगन अज ससि बइठ ।
बहु ऋद्धि वृद्धिकारक बलिठ ॥
दुतिवंत सहज सुंदर सु देह ।
नर नारि निरखि दृग धरत नेह ॥ १६१ ॥

गिनि मिथुन लगन वर सहज गेह ।
अति उच्च राहु लच्छी अछेह ॥
मन हरख नित्य मंगल महंत ।
बल वित्ताकार पंडित बदंत ॥ १६२ ॥

अरि भवन लगन कन्या उमंग ।
सविता बइठ वर बुद्ध संग ॥
भाखै सुजांन रिपु करन भंग ।
अति तेजवंत जंगहि अभंग ॥ १६३ ॥

कहियै सुलगन कुल गृह कलित्र ।
प्रगटै सु तहाँ भृगु सनि पवित्र ॥
भामिनी भूरि संपजै भोग ।
संपदा सुक्र निज गृह संयोग ॥ १६४ ॥

कृत धर्म भवन धन लगन केत ।
दिल सुद्ध होइ इह दान देत ॥
भल मकर लगन गुरु भवन भाग ।
भूपाल एह निस्चै सभाग ॥ १६५ ॥

वर एह जन्मपत्री विचार ।
कहियै सु नवग्रह सुखकार ॥
रचि जन्म नाम तह मेष राशि ।
पुक्करी योनि नर गन प्रकासि ॥ १६६ ॥

नरनाथ चिरंजी तुम सु नद ।
दुतिवंत देह अभिनव दिनंद ॥

इन आउ दीर्घ ए हम असीस ।
जगदीस सकल पूरहु जगीस ॥ १६७ ॥

सुनि विप्र बचन मन भयौ सुख ।
दीनौ सुद्रव्य नष्टौ यु दुख ।
गुरु मान देइ मुक्कै सुगेह ।
उच्छाह अन्य कीन्है अछेह ॥ १६८ ॥

बर पत्त जाम तीजौ बिहान ।
भनि मंत्र दिखाए सोम भान ॥
जन्म तँ रयनि छट्टी जगाय ।
श्रीफल तमोर दीनै सुभाइ ॥ १६९ ॥

बहु करत क्रोड़ दस दिवस बित्त ।
बकसंत हेम हय गय सु बित्त ॥
सूतक निवारि किय जननि स्नान ।
सुत निरखि निरखि हरषत सुजान ॥ १७० ॥

अनुक्रमें दिवस द्वादसम आइ ।
महाराण सकल परिजन मिलाइ ॥
जेउन सुचित्त वंछित जिवौइ ।
पहिराय बसन भूषन बढ़ाइ ॥ १७१ ॥

बोले सुराण तिन अग्ग बत्त ।
पत्ता सु एह हम पदम पुत्त ॥
श्री राजकुँआर सुनाम संच ।
पभनहु सु तुमहिँ मिलि मान पंच ॥ १७२ ॥

(कवित्त)

राज	राज	सुभ	रखन,	राज	रिपु	राजदवन	रिन ।
राज	रूप	रति	रवन,	राज	दरसन	सु	रसाइन ॥
राज	कनक	तनु	रंग,	राज	सुरपति	चित	रंजन ।
राज	नाउ	युग	रिधू,	राज	कहियै	रिपु	भंजन ॥
अवतार	लयौ	मेटन	असुर,	सीसोदा	त्रिहुँ	जग	सुजस ।
जगतेस	रान	नंदन	जयौ,	राजसिह	बर	बीर	रस ॥ १७३ ॥

(छंद मोतीदाम)

कहै तब नाम सु राजकुंवार, प्रमोदित चित्त सबै परिवार ।
 दियै बर बिप्रनि कंचन दत्त, पहुँ जगतेस महा सुख पत्त ॥१७४॥
 सिंगारिय सिंधुर अस्व सनूर, सुत्रंबल वद्यत नौबति तूर ।
 हलाल संजोति सुगीति सहर्ष, पुजी जलदेविय उज्जल पख ॥१७५॥
 दिन दिन बाढ़त सुंदर देह, निसापति सेतपखे जनु नेह ।
 बियौ नर मास प्रमान बधंत, तितै दिन एकहिँ मज्झ तुलंत ॥१७६॥
 पलं पल प्यावत मा पय पान, बधै जिन कांति महा बलवान ।
 धराधिप राखिय पंच सु धाइ, करावहिँ मज्जन न्हाण सु काइ ॥ १७७ ॥
 अलंकृत कुंदन अंग उपंग, उमंगहिँ राखत धाय उद्वग ।
 भलंमल तेज जरकस भूल, फबै तिन ऊपर बूँदिय फूल ॥ १७८ ॥
 खिलावहिँ मुक्ति सु खेलन अंग, गहै युग हविक सु ढोरिय लग ।
 लिलाटहिँ केसर आइ अनूप, रमै रस रंगहिँ पिखलन रूप ॥ १७९ ॥
 हिंदोलत माइ सुवर्ण हिंदोल, लसै जनु सारंग लोचन लोल ।
 सुगावहिँ संहुल राउर गान, सदा मुख पेखत सुख विहान ॥ १८० ॥
 किलककत माइ निहारि कुंआर, हियै बढिँ हर्ष दुहँ घन प्यार ॥
 हसंत सु आनन अंबुज अप्प, सदा सु प्रसाद बिसाद विलेप ॥ १८१ ॥
 करै महाराण सु नंदन कोइ, हलै किन ओर नरिंदहिँ होइ ।
 तुला प्रतिमासहिँ मुत्तिन तोल, उमेदहिँ देत सु दान अमोल ॥ १८२ ॥
 बिनोदहिँ बत्सर एक व्यतीत, पयंवरु चाल चलै सु पुनीत ।
 चढै कबहूँ हय चंचल चित, दुहँ दिसि हत्थ समाहत दुत्त ॥ १८३ ॥
 सु केलि चढै कबहूँ करि कुंत, उदै युत पिखलत रूप अचंभ ।
 सुखासन बैठत अप्प सुसाज, रिधू जग राण सु नंदन राज ॥ १८४ ॥
 दिन दिन आवहिँ राज दिवान, सबै नृप वर्ग करै सनमान ।
 अति द्युति अंग सु पुन्य अंकूर, सभा मधि उगिय जानि कि सूर ॥ १८५ ॥
 अनुक्रमि वर्ष दुतीय सु आइ, सबै नर नारि सुनंत सुहाइ ।
 बुलै तब राजकुंआर सुबोल, सुधा रस सककर कै सम तोल ॥ १८६ ॥
 तनू सुख पत्त सुवर्ष तृतीय, प्रमोदित भोजन भुंजत प्रीय ।
 भयं करि अप्प जिवावति माइ, अपूरब वीरहिँ बाउ उडाइ ॥ १८७ ॥

रच्यौ बर आसन आङ्गिनि रूप, सँथप्पिय कुंदन थार सरूप ।
 कमोदिय तंदुल जानि कपूर, परोसिय घीउ सु सक्कर पूर ॥ १८८ ॥
 सुभाउत तीउन भूरि सँधान, प्रसंसिय ऊपर तैं पय पान ।
 अघाइ चलू भरि बारि अमोल, तईवर तामल बंग तमोल ॥ १८९ ॥
 चतुर्थ सु पंचम षष्ठम चारु, अतीत सँवत्सर यौ अधिकार ।
 सँपत्तिय वर्ष सु सत्ताम सार, करै बर केलि सु राजकुमार ॥ १९० ॥
 प्रधान सु बंधहि लीलक पाघ, अमोलिक अंसुक जामैं आघ ।
 बिराजत जरकस के कटिबंध, सुकंठहिँ चौसर फूल सुगंध ॥ १९१ ॥
 प्रधान सु धोतैं पटोरे सुहाइ, जिगंमिग मोजरि योति जराइ ।
 सुसोमित कंचन हीर सिंगार, कलाकर रूप कि देवकुमार ॥ १९२ ॥
 बखानिय या बिधि अष्टम वर्ष, हृदै निज आठौहि जांम सुहर्ष ।
 लरावहिँ मल्ल महारस लुद्ध, करी मदमत्ता भरै बर क्रुद्ध ॥ १९३ ॥
 नव नव नाटिक गीत सु नित्त, दिजै दसमैं बहु बंदिन दत्ता ।
 एकादस वर्षहिँ अंग अनंग, रमैं कवि मान सदा रस रंग ॥ १९४ ॥

तृतीय विलास

(दोहा)

पानि ग्रहन बूंदी प्रथम, कीनौ राजकुंआर ।
कवि वर चित्त प्रमोद करि, अरकै सो अधिकार ॥ १ ॥

(कवित्त)

हाड़ा नृप अति हठी, हसम जितन रखन हठ ।
सबर राव छत्रसाल, मारि सब सत्रु किए मठ ॥
राजथॉन रमनीक, बिकट बूंदी गढ़ बिलसत ।
बिबिध बस्त्र बाजार, सकल श्रीयुत जन सोभित ॥
बहु बाग बावि सर जल बहुल, गुरु उत्तंग जिन विष्णु गृह ।
कवि अप्प कहै ऊपम किती, अलकापुर सम सोभ इह ॥ २ ॥

(दोहा)

कन्या दो तिन भूप कै, सुंदर तनु सुकमाल ।
बर प्रापति अवलोकि बर, मंत्र बोलि महिपाल ॥ ३ ॥
कहैं सु मंत्री मंत कहि, बर प्रापति भइ बाल ।
सबर सगपन अटक रहु, बर घर रिद्धि बिसाल ॥ ४ ॥
सगपन कीनौ सबर सौं, बेगि होइ बरदाइ ।
समरसीह रावर सजै, प्रथु दिल्लीस सहाइ ॥ ५ ॥
तिन कारन हो मंत्रि तुम, सगपन सबर सँभारि ।
कन्या दीजै हरषि करि, सुजस लहैं संसारि ॥ ६ ॥

(छंद भुजंगी)

सुनौ सॉइ मंत्री कहै मंत सच्चं, इला नाह जोई जिन बंस उच्चं ।
धुअं जास राजं धरै क्षत्रि धर्म, सबै हिदु शृंगार सारं सु सर्म ॥ ७ ॥
उथपै दलं बहलं आसुरानं, पनं पावनं नीति थपै पुरानं ।
अभंगं अभीतं उत्तंगं अजेजं, असंकं सुकंकं अरीणाम हेजं ॥ ८ ॥

अनेकं अभेदं अनोपं अठिल्लं, अरोगं सुभोगं अरीणाम पिब्लं ।
 अनेकं बलं बुद्धि बिग्यान अंगं, जयं जैत हत्थं महाजोध जंगं ॥ ९ ॥
 सरं सहबेधी बरं सूरवीरं, धकै धींग धुज्जै अरी व्है अधीरं ।
 करै केवि कालं कृपानं करालं, पठावै पिसूनं जनं जे पयालं ॥ १० ॥
 प्रभा कोटि रूपं प्रचंडं प्रतापं, दमै दैत्य देहं सहै कौन दापं ।
 हठालं हियालं गहै आन हहं, सुवर्णाद्रि तुल्लं अडुल्लं सु सहं ॥ ११ ॥
 हलक्कै सुहेरै हरावै हमीरं, उड़ावै अरिं पुंभिका ज्यौं समीरं ।
 बहू आयुधं युद्ध सन्नद्ध बद्धो, बली कौन जा मुख मंडै बिरुद्धौ ॥ १२ ॥
 बसै गेह जाकै महा लच्छिबासं, बलं चातुरंगं सुचंगं विलासं ।
 धनी हिंदुआनं सदा नीतिधारै, महामाइ महिसेस ज्यौं मीर मारै ॥ १३ ॥
 जसं राजसं तामसं जासि जोरै, रसा कौन राजा रिनं ताहि रोरे ।
 खलं खग मगौ करै खंड खंडं, अनत्थान नत्थे सु दंडै अदंडं ॥ १४ ॥
 सदा सात कौमं हयं दंति दत्तं, सदा जा सुरेसं सराहै सु सत्तं ।
 बंद एक जीहा गुनं के बखाना, रजै आज जग मज्जु जगतेस राना ॥ १५ ॥
 प्रभू मोहि जो सच्चि कर मंत पूछै, इला ईस महाराण जगतेस अच्छै ।
 नहाँ बिस्व में और अवनीस ऐसे, तुमै मन्न मन्नै महीपाल तैसे ॥ १६ ॥
 यही हिंदुनाथं यही हिंदुईसं, यही हिंदुपालं महंतं महेसं ।
 यही हिंदु आधार हिंदूनि त्रानं, प्रजापालकं पाल गो-विप्र प्रानं ॥ १७ ॥
 नियं बंस अवतंस तसु पाट नंदं, दुतिं दीपए देह मानौं दिनंदं ।
 तितं अंग बर लछिनं दोइ तीसं, अखै कोटि वर्ष प्रजा दै असीसं ॥ १८ ॥
 नरां रत्न श्री राजकूआर नामं, धराधीस सबौ कला कोटि धामं ।
 बहू धीर गंभीर दातार बित्तं, मन्यौ जास अवतार अवतार भुत्तं ॥ १९ ॥
 पवंगा रहं पेखि बैरी प्रकपै, चमू जोरवर आसुरी सीम चपै ।
 मनौं म्लेच्छ ईसं त्रिनं तूल मातं, गुरुनयन हेमं समं गौर गातं ॥ २० ॥
 मही तैं जिनै खेदि कहुँ मेवासी, बसै बानरं ज्यौं दूरी मध्य बासी ।
 रुरै जास भै काननं म्लेच्छ रामा, ससी आननी नैन सारंग स्यामा ॥ २१ ॥
 बियौ नाहिँ ऐसौ बरं बाल कज्जं, सिवं सुंदरंगं सरुवं सकज्जं ।
 सुधर्मा सुकर्मा सुसंतं सुहाई, जुरै जुद्ध भारी जिनै जैति पाई ॥ २२ ॥

(४६)

बसुद्धाधिपं वीर आजानबाहू, कियै कोटिजा होड़ चलै न काहू ।
धुवं बिरुद ए राजकुँआर धारै, अजेजां उथप्यै सुपखां उधारै ॥ २३ ॥

(कवित्त)

कहियै राजकुँआर, सार अरि उर संचारन ।
सबर स्वकुल सिंगार, अबनि सिर भार उतारन ॥
अति दत्त चित्त उदार, मदन मूरति मनमोहन ।
गोरीसं गज गृहन, रौर रिन घन रिपु रोहन ॥
बर एह बाल कज्जै सुबर, सकल अबनि नृप कुल सिहर ।
किज्जैब यहै मंत्री कछौ, इन सौ नहिँ को अवर बर ॥ २४ ॥

(दोहा)

सत्य बचन अबनीस सुनि, मन्नि सुमन्त्री मंत ।
समझि रान जगतेस सुअ, कन्या योगहिँ कंत ॥ २५ ॥
निस्चै इह आखैं नृपति, कुलमनि राजकुँआर ।
हमहूँ मन याही सुमति, सगपन यह श्रीकार ॥ २६ ॥
आगौ हूँ इन अप्पनै, सगपन सरस संबंध ।
ए आहुट्ट अनंत बल, बंधन मेछहिँ बंध ॥ २७ ॥
रूपवती दुति जानि रति, गुरु पुत्री हम गेह ।
राजकुँआरहिँ रीझिकै, सा हम दई सनेह ॥ २८ ॥
यों कहि सहे अबनिपति, जे बर योतिस जान ।
लिखैं सुपानिगृहन लगन, कारन कोरि कल्यान ॥ २९ ॥
लेख सु तबही नृप लिखै, योग्य रान जगतेस ।
बधै प्रति ता बाँचतै, बायक बिनय बिसेस ॥ ३० ॥

(छंद पद्धरी)

स्वस्ती श्री उदयापुर सुधान, रवि हिंदवान जगतेस रान ।
कार्लकिराय कट्टन कलंक, बंकाधिराय कट्टन सु बंक ॥ ३१ ॥
आजानबाहु अनमी अभंग, आचारिराय रविकुल उत्तंग ।
मेवासिराय भंजन मेवास, तुरकेस बंधि दीजै यु त्रास ॥ ३२ ॥

आहुट्टराय दल बल असंख, भूभारराय रिपु करन भंख ।
 अजेजराय नत्थै अनत्थ, सामंतराय सेना समत्थ ॥ ३३ ॥
 छत्रपतिराय सिर एक छत्र, श्री सबरराय साधंत सत्रु ।
 ध्रुवदेव धराधर सरिस धीर, बसुधाधिराय बल बिकट बीर ॥ ३४ ॥
 प्रचलंत यवनपति जा पयान, भरि गैन रेनु धुंधरिग भान ।
 दिगपाल दसौं भज्जै दहकि, किलकै यु बीर उट्टै कुहकि ॥ ३५ ॥
 बैताल फाल मंडै बिनोद, मिलि चलै मुंड चौसट्टि मोद ।
 हरषै यु रुद्र करि अट्टहास, सुर कहत सह जयजय सभास ॥ ३६ ॥
 सलसलत सेस कलमलत कच्छ, भलभलत उदधि रलहलत मच्छ ।
 खरभरत चित्त खल दल अधीर, चलचलत चक्र चहुँ डुलत मीर ॥ ३७ ॥
 धसमसत धरनि गिरिवर धसकि, सर सरित कलित इह सलिल मुक्कि ।
 मचि सोर जोर परि अमग मग, जनु लंक लेन रघुबीर जग ॥ ३८ ॥
 संजनि चित्र सुरराय संक, बीराधिबीर अरि हरन बंक ।
 भय जास भीम पर धर भजंत, तिय पुत्र भ्रात परिजन तजंत ॥ ३९ ॥
 अरि बांस बाल बन गिरि अटंत, फलफूल खाइ अह निसि कटंत ।
 सुख सेज मुक्कि कै सत्रु नारि, नट्टी सु निसा औसर निहारि ॥ ४० ॥
 अखंत खग बल जसु अपार, जगत्तेस रान जग जैतवार ।
 सोभंत सोभ सुरपति समान, नरनाह भव्य ऊपम निधान ॥ ४१ ॥
 लिखितं सु बुंदिगढ़ तैं यु लेख, बर छत्रसाल रावह बिसेस ।
 पय कमल सत्त बेरहिँ प्रणाम, संदेस एह बीनवैं स्याम ॥ ४२ ॥
 सुख सकल अत्र प्रभु तुम सुदृष्टि, आरोग्य लाभ संयोग इष्ट ।
 इच्छै यु तुम्ह उत्तम उदंत, बंधंत चित्त ज्यौं पिक बसंत ॥ ४३ ॥
 निय धर्म धरन तुम गुरु नरिद, दीपंत तेज हिंदू दिनेद ।
 भूपाल तुम सु हौं परम भृत्य, निस्चै यु एह बर रीति नित्य ॥ ४४ ॥
 गुरु पुत्ति अछि बर हम सु गेह, रति रंभ सरिस गति रूप देह ।
 श्री राजकुँअर बर लहइ सोइ, हम हृदय हरष तब सिद्धि होइ ॥ ४५ ॥
 किज्जेब एह हम चित्त कोड़, जुगती सु जानि जग एह जोड़ ।
 लच्छीस योग ज्यौं तीय लच्छि, संयोग सची सुरराय स्वच्छि ॥ ४६ ॥

श्री राम जोग ज्यौँ जानि सीय, पढ़ि नल नरिंद दमयंति प्रीय ।
 त्यों युगत एह मनौत हत्ति, सगपन संबंध किजैव सत्ति ॥ ४७ ॥
 इहि भंति लिख्यौ कग्गद अनूप, भल दीन भिती सिर नाँउ भूप ।
 हरषंत राव दिय अनुग हत्थ, सदै यु ताम प्रोहित समत्थ ॥ ४८ ॥
 बोलै नरिंद सुनु राज बिप्र, हम काम उदयपुर नगर क्षिप्र ।
 थिर रिद्धि मान तहँ हिंदुथॉन, श्री जगतसिंह राना सुजॉन ॥ ४९ ॥
 तिन पाट पुत्र निय राज रूप, भल राजकुँआरहिँ नवत भूप ।
 सो इच्छ सेन चतुरंग सज्जु, कन्या सु जिठ हम बरन कज्जु ॥ ५० ॥
 ल्याबहु सु बेगि इन लगनलील, ढलकंति ढाल मम करहु ढील ।
 आगम सु तास हम सुख अनंत, मनौँ सु सच्च सब एह मंत ॥ ५१ ॥

(दोहा)

मन हरषंत सु पट्टवैँ, नालिकेर नर राव ।
 तपनिय साकति बर तुरग, भूगन कनक सुभाव ॥ ५२ ॥
 जरकस के बहु योतियुत, प्रवर भंति सिरपाउ ।
 मुक्ताफल माला समनि, जरित कटार जराउ ॥ ५३ ॥
 मेवा खादिम बहु मधुर, अरु कहि बहु अरदास ।
 पठ्यौ प्रोहित उदयपुर, अपि सु दल उल्हास ॥ ५४ ॥

(कवित्त)

सुमति राव छत्रसाल, दुतिय लहु पुत्रि अप्प दिय ।
 गजसिंह सु नृप गेह, पुत्र जसवंतसिंह प्रिय ॥
 मारुवारि महिपाल, रनहिँ रठौर रढालह ।
 निपुन बुद्धि बर न्याउ, प्रवर स्व प्रजा प्रतिपालह ॥
 इक दिनहिँ दोइ पठए अनुग, सदल सज्ज श्रीफल सुकर ।
 इक पत्र उदयपुर बर उमगि, पत्तौ इक्व सु योधपुर ॥ ५५ ॥

(दोहा)

प्रोहित भेटे हिंदुपति, जगतसिंह बरजोर ।
 राण तखत राजै रिधू, उभय चौर दुहुँ ओर ॥ ५६ ॥
 बैठे निज निज बैठकहिँ, सुभट राय साधार ।
 हय गज रथ पायक हसम, पिरवत नाँवहिँ पार ॥ ५७ ॥

(४६)

अखिय बिप्र असीस इह, जयतु राँण जगतेस ।
चिस्जीबहु चीत्तौरपति, बंझित फलहु बिसेस ॥ ५८ ॥

(कवित्त)

पुच्छै यों महिपाल, राँण जगपति जग रक्खन ।
कहौ बिप्र तुम कहाँ, बास बर नगर बिअक्खन ॥
किन भूपति संदेस, कौन कज्जै इत आए ।
अखहु सकल उदंत, पास हम किन सु पठाए ॥
कहि बिप्र बास हम बुँदिगढ़, हाड़ा रावहिँ मुक्कलिय ।
तिन पुत्रि दई प्रभु कुँअर प्रति, रंग रसाल सु मन रलिय ॥ ५९ ॥

(दोहा)

सुनि हरखै जगपति श्रवन, सगपन जानि सुमंत ।
भली मंडि प्रोहित भगति, आदर करिग अनंत ॥ ६० ॥
नालिकेर अप्यौ नृपति, सदल सजाई सत्थ ।
प्रोहित राजकुँआर के, तिलक कटि निय हत्थ ॥ ६१ ॥
जैवंता दंपति युगल, हौ तुम पूरन हाम ।
होस हमारे हृदय की, कीजै देव सकास ॥ ६२ ॥
प्रोहित ए आसीस पढ़ि, उत्सव मंडि अमोल ।
घन ज्यौ घन व्रंभक घुरत, बोले निस्चल बोल ॥ ६३ ॥

(कवित्त)

प्रोहित सत्थ प्रसन्न, राँन जगपति जग रूपह ।
दीन अनगल दान, अस्व सिरपाव अनूपह ॥
कनक रजत पटकूल, बसन भूसन बहु बित्तह ।
आदर भाव अनंत, प्रेम पोखंत पवित्तह ॥
आयौ सु निकट तब लगन अह, प्रोहित अरिक नहिँ प्रति ।
श्री करख राँख पाटहिँ सधर, प्रतपै राना जगत्पति ॥ ६४ ॥

(दोहा)

अतथौ राना जगत्पति, एहौ सुन अरदास ।
आयौ निकट सुलभन अह, अब हम पूरहु आस ॥ ६५ ॥
सत्थ सेन चतुरंग सजि, राजकुँआर बर रूप ।
प्रभु बुँदिगढ़ पाठवहु, अबला बरन अबूष ॥ ६६ ॥

(छंद वृद्धि नाराच)

सुनंत राज बिप्र सह, नेह हिंदु नायकं ।
 सजी सु चातुरंग सेन, लच्छि ईस लायकं ॥
 प्रधौन सज्जि दंति पंति, सैन अग्न संचला ।
 सिदूर पूर जास सीस, चारु चौर चंचला ॥ ६७ ॥

सु मुत्तिमाल बिंटे कुंभ, सोहए सु सिंधुरा ।
 ठनं ठनंकि घंट घोख, धं धमंकि घुंघरा ॥
 मदनोमत धत्त धत्त, पीलवान पट्टयं ।
 चरखिदार कुक्कए, गयंद जोर गट्टयं ॥ ६८ ॥

सुबास दान गच्छ सुच्छ, गुंजए मधूपयं ।
 सुंडाल माल केवि काल, उद्धतं अनूपयं ॥
 मनौ महंत मेघमाल, हल्लई हँरै हँरै ।
 बहंत के बिरुह बंदि, भूमि पाइ [जै भँरै] ॥ ६९ ॥

भिलंति रंग रंग भूल, पट्टकूल पेसलं ।
 ढलक्कई सु पुडि ढाल, ठंकि बास उज्जलं ॥
 पताक लील रत्त पीत, सोहई स चिन्हयं ।
 सु दढु दंत कंति सेत, काय सैल किन्हयं ॥ ७० ॥

हयं सुबंस जाति हंस, कासमीर कच्छि कै ॥
 कबिल्ल कै कंबोज केवि, कौकनी सुलच्छि कै ॥
 उत्तंग अंग आरबी, औराक कै उवन्नयं ।
 सु पौन पानि पंथ कै यु, पाइ ज्यौ पवन्नयं ॥ ७१ ॥

बंगाल देस कै सु बेस साजि बाजि सोचनं ।
 कुरंग फाल उच्च खंध, लोल लोल लोचनं ॥
 नृतत्त थेइ थेइ नृत्य, नट्ट ज्यौ सु नच्चई ।
 दिनेद जास रूव देखि, रथ्य काम रच्चई ॥ ७२ ॥

चलंत बेग चंचलं, उत्तंग दुर्गा आरुहँ ।
 खुरी प्रहार बज्जि खोनि, सैल खुंद नास हँ ॥
 मुजंत हींस सोर श्रौन, सत्रु चित्त संकई ।
 उच्चैश्रवा अनोप रूप, बोलि कंध बंकई ॥ ७३ ॥

प्रऊढ़ गूढ़ पक्ष राज, पुच्छ चौर पिखिखए ।
 भले भले चढ़े यु भूप, तेजि भौर तिखिखए ॥

प्रचंड रूप पयदलं, जुवान दिग्घ जंघ कै ।
 उडंत लोह वार पार, सार धार सिघ कै ॥ ७४ ॥
 भुजा प्रलंब रूप भीम, साहसीक सूर जू ।
 युद्धंत युद्ध योग जानि, सायुधेस नूर जू ॥
 मरोर तेसु पानि मुंछ, गाढ़ कै गयंद से ।
 अरोह कोहलल अखिख, ज्यौँ मसंद मल्ल से ॥ ७५ ॥
 बहंत ते बिरुद बंक, सह बेधि सायकं ।
 कठोर जोर पानि कंक, घेरि मिच्छ घायकं ॥
 धरंत पाय धापतें, धरातलं धमक्कई ।
 हठाल बीर जैत हत्थ, रुद सेन रुक्कई ॥ ७६ ॥
 भरै सु यॉन भति भंति, रासि हेम रूप सौँ ।
 पटंबरं बिसाल पाल, पामरी रु सूप सौँ ॥
 सु खग तौन चाप सेल, कत्ति के कटारयं ।
 सनाह टोप आदि सज्ज, भूप योग भारयं ॥ ७७ ॥
 असंख यौ चमू उमंडि, भंति मेघ भदयं ।
 दिसा दिसान पूरि भूरि, ज्यौँ जलं समुदयं ॥
 घुरंत दंति पुट्टि घोष, नौबती निसान जू ।
 सु गधि व्योम जास सह, खोनि खोभ मान जू ॥ ७८ ॥
 चढ़ै तुरंग चंचलं, कुँआर राज काम से ।
 सु सेहरा बिराजि सीस, ईस साभिराम से ॥
 दुरंत चौर दिग्घ चारु, बारिधार बर्णयं ।
 उत्तंग रूप आतपत्र, दंड जा सुवर्णयं ॥ ७९ ॥
 अनेक राय जूथ सत्थ, पत्थ से समत्थ हैं ।
 बहै बिरुद बंक बीर, हेम दैन हत्थ हैं ॥
 दिनेस कंति दिग्घ देह, दुड सेन दाबटै ।
 अडोल बोल अखखनै, अनंत ते असी भटै ॥ ८० ॥
 सलक्कि सेस सेन भार, कुम्म संक सकई ।
 प्रकंपि मेरु पब्बयं, धरातलं धसकई ॥
 भलक्कि सिंधु नीर जग्गि, ईस जोग आसनं ।
 रविंद बिंब ठंकि रेतु, संकि पाकसासनं ॥ ८१ ॥
 उमग मग सैल भग्ग, भग्गि भूमि आसुरी ।
 बजै मुखोनि बाजि बेग, बिद्य ज्यौँ खिवै खुरी ॥



(५२)

मिवास थाँन मुक्कि सिच्छ, भग्नि मंति तंभयं ।
 सरोवरं सलित्त सुक्कि, भिंधु नीर सोसयं ॥ ८२ ॥
 महंत सेन यों उमंडि, ज्यौं पयोद पावसं ।
 न बुझियै स्व आँन मॉन, है दलं चहौं दिसं ॥
 क्रसंक्रमै करंत कूच, मंडि कै सुकामयं ।
 संपत्त राज बिद सूर, बुँदियं सु ठामयं ॥ ८३ ॥

(कवित्त)

संपत्तै सजि सेन, कुँमर श्री राजकुमारह ।
 बुँदी बढिय अवाज, हरषि हाड़ा परवारह ॥
 छत्रसाल महाराव, सेन चतुरंगनि सज्जिय ।
 हय गय पयदल हसम, राज बर सनमुख रज्जिय ॥
 संपत्त तबहिँ फुनि रटुवर, जसा कुँवर गजसिंह सुअ ।
 बर पानिगृहन कजैँ बिहसि, धीर बीर रिनधर सु धुअ ॥ ८४ ॥

(दोहा)

उभय राज बर लगन इक, कन्या उभय सु कज्ज ।
 पत्तै निय निय दल प्रचुर, कैलपुरा कमधज्ज ॥ ८५ ॥

(कवित्त)

उभय राज बर अनस, उभय रिनधीर अनमाल ।
 उभय जोर अहंकार, उभय अति रोस महदल ॥
 उभय व्याह इह प्रथम, उभय हठवंत हठालह ।
 उभय अगंज अभंग, उभय बायक प्रतिपालह ॥
 इकमिक्कि भयै बुँदी उभय, हाड़ा दरबारहिँ हरषि ।
 श्री राजकुआर महा सबर, नाहर ज्यौं कमधज निरखि ॥ ८६ ॥

(दोहा)

नाहर ज्यौं नाहर निरखि, कोपहिँ होत कराल ।
 ल्यौं दुहुँ आपस में सु तकि, लोयन करिय सु लाल ॥ ८७ ॥

(कवित्त)

लोयन करिय सु लाल, कही कमधज कहाबिय ।
 हम नरनाह अनादि, हह रकखन हिदवानिय ॥

(५३)

हम से कोई न हठी, होड़ हम किन प हल्लय ।
संभ्रामहिँ हम सूर, दुठ दानव पय डुल्लय ॥
बंदिहुँ प्रथम तोरन बिहसि, न तरकि कलहंतन करौँ ।
अति तुंग सिखर धर बर अचल, पूरब तैं पछिम धरौँ ॥ ८८ ॥

(दोहा)

पूरब गिरि पच्छिम धरौँ, हौँ कमधज्ज हठाल ।
बंदहु तोरन अप्प बर, कहा कियैँ भिड़ साल ॥ ८९ ॥
कथन एह कमधज्ज कै, सुनि श्री राजकुँआर ।
हुँकरि थपि स्वकंध हय, बोले यों बबकार ॥ ९० ॥

(कवित्त)

कब कै तुम नरनाह, कहौ कमधज्ज कहानिय ।
जीति कहाँ तुम जंग, हइ राखी हिंदवानिय ॥
तुम आसुर आधीन, धीय दै धरनि सु रक्खहु ।
इन करमी हम अग, ऊँच मुँह करि करि अक्खहु ॥
पच्छै यु पाउ धरने नहौँ, अग आउ चौगान महिँ ।
पुरुषात्तन अद्य परेखियेँ, कुपि सु राजकुँमार कहि ॥ ९१ ॥

(दोहा)

कुपिय राजकुँआर रिन, अभिनव ग्रीवम अग्नि ।
कदुक रूप कमधज्ज कै, बचनहिँ बचन बिलगि ॥ ९२ ॥

(कवित्त)

बचनहिँ बचन बिलगि, सूर निय निय संमाहिय ।
बज्जि सिंधु सहनाइ, ईस युगानि उम्माहिय ॥
छुटि करी मदल्लक, हक बज्जी चाव दिसि ।
कंपत कायर काय, मिलिय दुहुँ सेन कढ़ि असि ॥
तब बीच कीन हाड़ा नृपति, छत्रसाल रावहिँ अजब ।
संगुहिय बाहु कमधज्ज कै, समझावैँ विधि अक्खि सब ॥ ९३ ॥
हो कमधज्ज कुँआर, मार इनसौँ नन मंडहु ।
कैलपुरा ए क्रूर, भूलि मम अप्पन भंडहु ॥
इन सौँ सरभर कहा, यही युग युग हिंदूपति ।
अप्पन अनुग समान, मिच्छि आधीन प्रजामति ॥

आदित्य अपर ग्रह अंतरा, अंतर त्यों इन अप्पनहिँ ।
इन सौँ यु टेक किजै नहीँ, ए असुरेस उथप्पनहिँ ॥ ६४ ॥

(दोहा)

सुनि समभ्यौ कमधज्ज सुत, जग जसवंत सु आप ।
राजकुँअर घन रोस रस, पेखै प्रबल प्रताप ॥ ६५ ॥
तोरन तब बंदिय प्रथम, राजकुँअर रढाल ।
सिंह रूप सीसोद सौँ, अरि को मंडय आल ॥ ६६ ॥

(कवित्त)

अरि को मंडय आल, देव दानव दिगपालह ।
मानव कितीक मात, प्रेत दीजै सायालह ॥
जिन केहरि किय जेर, गिनै नहिँ सो बर गडुर ।
पीवहि-जेह पयोधि, कहा तिन अग गाँउ सर ॥
जगतेस राँण सुअजंग जहँ, डुलय तहाँ असुरेस दल ।
श्रीराजकुँअर सु सनमुखहिँ, बपु कमधज्ज कितौक बल ॥ ६७ ॥
रढनिय इहिँ परि रक्खि, बंदि तोरन बर बीरहि ।
श्रीवर राजकुँअर, सरिस सोभा सुसरीरहि ॥
घन ज्यौँ त्रंबक घुरत, बिरुद बंदी बहु बुल्लत ।
हय गय रथ बर थट्ट, परज पिखत बहु अद्भुत ॥
लखिए न बैर तिहिँ अप्प पर, मनु नर सायर उल्लटिय ।
गावंत गीत गौरी गहकि, तौन मौन नव नव थटिय ॥ ६८ ॥

(दोहा)

ता पाछै कमधज्ज नैँ, बंदिय तोरण बार ।
उभय राज बर इंद ज्यौँ, बरसै कंचन धार ॥ ६९ ॥

(कवित्त)

बरसै कंचन धार, गज्जि घन ज्यौँ बुँदीगढ़ ।
परनि प्रिया पदमनी, रिधू राखी सु अप्प रढ़ ॥
राजकुली छत्तीस, मज्झ नायक मुल्लालह ।
सीसोदा बर सूर, कुँअर राजेस रढालह ॥
जसवंत परनि कमधज्ज कुल, नायक नृप गजसिंह सुत ।
हाड़ा नरिंद मंड्यौ, हरफ संतोषै षटवरन युत ॥ १०० ॥

(५५)

(दोहा)

बर संतोषै षट्बरन, हृदय सु पूरिय हॉम ।
छत्रसाल बर राव छिलि, देत दाइजै दाँम ॥१०१॥

(कवित्त)

देत दाइजै दाँम, हस्थि हय हेम सज्ज सजि ।
सज्जि सार सुखपाल, सेज बाले सु वृषभ रजि ॥
दासी सुंदर देह, सकल त्रीकला सुलक्खन ।
मुक्ताफल मनि मढै, अंग कंचन आभूखन ॥
दिनै यु गाँव हथलेव दत, कसब पटंबर बिबिधि भति ।
श्री राजकुँआर सु सनमुखहिँ, धरिय भेट हाडा नृपति ॥१०२॥

(दोहा)

धरिय भेट हाडा धनी, हय गय दासी हेम ।
अधिक रठुवर अगग लैं, पोखिय प्रवर सुप्रेम ॥१०३॥

(कवित्त)

पोखिय प्रवर सुप्रेम, व्याह किन्नौ यु वेद विधि ।
सुर नर करहिँ सराह, राखि रस रीति महा रिधि ॥
जलधर ज्यौँ याचकनि, देइ धन कंचन दत्तह ।
अनुक्रमि आए गेह, उभय बर राज उमत्तह ॥
जगतेस राँण सुअ करि सु जय, पत्तै इहिँ विधि उदयपुर ।
प्रज मिलिय राज बर पिक्खनहिँ, अति दलमलियत उरहिँ उर ॥१०४॥

(दोहा)

अति दलमलियत उरहिँ उर, मिलिय सघन नर नारि ।
पिखहिँ राजकुँआर प्रति, अनमिख नैन निहारि ॥१०५॥

(कवित्त)

अनमिख नैन निहारि, चित्त चितहिँ मृगनेनिय ।
गौरी गज-गामिनी, सकल कल बिधु बर बैनिय ॥
एसु इंद आकार, कुँआर श्री राजकुँआरह ।
इन जननी सु प्रमान, कहिय करमेत अपारह ॥
धनि धनि सु इनहिँ घर गेहनिय, हरषै जिन पूज्यौ सुहर ।
जो देइ देव तो दिज्जिए, भव भव इनहिँ समान बर ॥१०६॥

(५६)

(दोहा)

बर बामा मिलि मिलि बदै, भव भव हम भरतार ।
देव दया कर दीजिए, इहिँ बर कै अधिकार ॥१०७॥

(कवित्त)

इहिँ बर कै अधिकार, नहीं कौ अवर नरिदह ।
इंद चंद अनुहार, देह दुति जाँनिँ दिनंदह ॥
बहु नर वर बिटियौ, गिनति कौ करै हयगय ।
पायक कौ नहिँ पार, जपत बंदी सु जयजय ॥

श्री राज रॉण जगतेस सुव बुँदीगढ़ सुंदरिं बरिय ।
निज महल आइ जननी सु नमि, सकल मनोवांछित सरिय ॥१०८॥

चतुर्थ विलास

(कवित्त)

राजसिंह महाराँण, पुहविपति अप्प कुँवरपन ।
बिपुल लगायौ बाग, बियौ बसुधा नंदन-वन ॥
प्रबर कोटि तिन परधि, मुंड सतपत्र कनक भर ।
वृद्धि तहाँ बापिका, कही सनमुख दक्षन कर ॥
निज नगर उदयपुर निकट हैं, अगिनकोन धाँ अक्खियै ।
सबरितुविलास तसु नाम सति, नयन सु महल निरीखियै ॥ १ ॥

(छंद विद्यु-माला)

त्रिविध सघन वृक्ष, लुंभकुंभ केउ लक्ष ।
बाग सो बहू विस्साल, रिनु षट हूँ रसाल ॥ २ ॥
जुजुई सकल जाति, बेलि गुल्ल कै बिभाति ।
भरित अठारह भार, परधि बन्यौ प्राकार ॥ ३ ॥
सारनी बहत सार, वृक्ष वृक्ष मूल वार ।
गिनियै सदा गंभीर, सुरभि चलै समीर ॥ ४ ॥
अंबर बिलगि अंब, करनी बहु कदंब ।
आंबिली तरु असोक, थट्टै सु अजान थोक ॥ ५ ॥
आंवरी अगच्छि अँन, चंपकई दोष चैन ।
अति अखरोट अखि, चारु चार जीह चखि ॥ ६ ॥
कटल बढल कुंद, मालती रु मचकुंद ।
करना कनैर केलि, राइनि सु राइबेलि ॥ ७ ॥
केतकी रु कचनार, केवरा प्रमोद कार ।
खारिक पिडखजूर, भाखियै अगर भूरि ॥ ८ ॥
गिनती कहा गुलाब, जंभीरी जुही जबाब ।
जासूल जंबू सु जाइ, नारंगी निबौ निन्याइ ॥ ९ ॥
ज्याँ जातूत नालिकेर, गुलतरु गिरि मेर ।
चंदन महक चारु, दारिम सु देवदारु ॥ १० ॥

तजरु तार तमाल, मोगरा मधूप माल ।
 दमन पतंग दाख, पिसिता यु एक पाख ॥ ११ ॥
 फत्रै तरु फरास, पारस पीपर पास ।
 पांडल बहू प्रसंस, बेतस विदाम बंस ॥ १२ ॥
 वटबौर सिरीबौर, जानियै सुवर्ण जोर ।
 सुपारी सरोस सेव, सिंदूरी सदा सुटेव ॥ १३ ॥
 संगर सरस दल, सुरुभना सदाफल ।
 बाग में गिनै विवेक, इत्यादि तरु अनेक ॥ १४ ॥
 करत बिहंग केल, मिथुन मिथुन मेल ।
 मैन सारि सुआ मोर, चंचल बहू चकोर ॥ १५ ॥
 सुनियै सबद सारु, हरप कुही हजार ।
 कोकिल करै कुहक, मंजरी भैँ महक ॥ १६ ॥
 काबरि कपोत कोरि, तूती फरु लेत तोरि ।
 लावारु तीतर लख, चंचु चारु मेवा चख ॥ १७ ॥
 बटेर बाज बखान, सगग उडै सिचान ।
 जोरावर जहाँ जंत, अखतैँ न आवै अंत ॥ १८ ॥
 महल तहाँ महंत, कनक कलस कंत ।
 रायगन बहु रूप, भले भले बैठे भूप ॥ १९ ॥
 चहबचा पिखै चारु, छुटत नल हजार ।
 दंतीनि कै सुंडा दंड, उदक धारा अखंड ॥ २० ॥
 बंगले बने विवेक, आछी कोरनी अनेक ।
 सजल तहाँ सुसर, कमल कनक भर ॥ २१ ॥
 रच्यौ राणा सीह, अनम सदा अवीह ।
 सरबरितुबिलास, जगीचा सदा सुवास ॥ २२ ॥
 कुअरपनै सु केलि, बहू विधि वृक्ष बेलि ।
 गिनत न आवै गान, कहत कविद मान ॥ २३ ॥

पंचम विलास

(दोहा)

पालिय प्रवर कुँआरपद, बरस तेइस बखान ।
पाट बइटै पुहवीपति, राजसिंह महारान ॥ १ ॥

(छंद लघु नाराच)

श्री राजसिंह रान जू, प्रभूत पुन्य प्रान जू ।
पइष्टियेँ यु पाटकाँ, थटै यु भूप थाट कौ ॥ २ ॥
अनूप हेम आसनं, सुचिट्टिकै सुखासनं ।
महक्कि चारु मज्जनं, सुमज्जहु दुसज्जनं ॥ ३ ॥
कलं कनक्क कुंभ सौँ, अनाइ गंग अंभ सौँ ।
सरीर कीन स्नानयं, बिराजि अंग बानयं ॥ ४ ॥
सुकोमलं सुरंगयं, अंगुच्छि चीर अंगयं ।
सुधौतकं सुवासयं, रवीरोदकं यु खासयं ॥ ५ ॥
ध्रुवं जनेउ धारए, कही सुवंस कारए ।
प्रधान बंधि पाधयं, सुवर्ण सूत साधयं ॥ ६ ॥
जरीस जोति जामयं, दिपंत कंठ दामयं ।
प्रसंसि पाइ सोजरी, जराउ हेम संजुरी ॥ ७ ॥
करं गृहँ कृपानयं, बियौ सु पंचवानयं ।
चढ़ै तुरंग चंचलं, दहक्कि आसुरी दलं ॥ ८ ॥
जमाति भूप जुत्तयं, सभा बहाँ सँपत्तयं ।
बजैँ अनेक बज्जनं, गंभीर गैन गज्जनं ॥ ९ ॥
ढमक्कि जंगि ढोलयं, रचै सुरंग रोलयं ।
निहस्सियं निसानयं, मृदंग मेघ मानयं ॥ १० ॥
बजंत संख बीनयं, नफेरियं नवीनयं ।
तुटंत तान तालयं, सुघंट घोष सालयं ॥ ११ ॥
सहनाइयं सुहावई, भनंकि भेरि भावई ।
भ्राणं भ्राणंकि भल्लरी, द्रमंकियं दुरड्बरी ॥ १२ ॥

हुड़कि जंत्र हृदयं, सारंगि चंग सदयं ।
 गोरीस गीत गावई, प्रमोद चित्त पॉवई ॥ १३ ॥
 बदंत बिप्र वेदयं, अनेकसं उमेदयं ।
 धखंत ज्वाल धोमयं, हवी प्रभृत्ति होमयं ॥ १४ ॥
 भनै विरुह भट्टयं, सु बोलि बंदि थट्टयं ।
 तिलक कट्टि तामयं, सु प्रोहितं सकामयं ॥ १५ ॥
 उच्छारि मुत्ति अखण, यहै आसीस अखण ।
 रिधू नरिद राजयं, करौ स्वचित्त काजयं ॥ १६ ॥
 समप्पितं सुगामयं, दए सु लख्ख दामयं ।
 उत्तंग अस्व अंबरं, कनक चारु कुंजरं ॥ १७ ॥
 दियौ सुअन्न दानयं, गिनै यु कौन गानयं ।
 पयोद जानि पूरयं, दरिह कीन दूरयं ॥ १८ ॥
 छजंत सीस छत्रयं, संमिट्टि सर्व सत्रयं ।
 दुरंत चौर उज्जलं, दिपै हयं गयं दलं ॥ १९ ॥
 अभंग जास सासनं, मनौ सुरेस आसनं ।
 रजंत राज रानजू, कहै कवीद मानजू ॥ २० ॥

(कवित्त)

पुष्कर गंग प्रयाग, तिथि अभिराम त्रिवैनिय ।
 जगन्नाथ जालिपा, देवि सुख संपत्ति देनिय ॥
 कासी बर केदार, द्वारिका नाथ सु देखिय ।
 गोदावरि गुनगेह, बैजनाथह सु बिसेखिय ॥
 इकलिग ईस अवलोकिअत, दुख दोहग दूरहिं टरै ।
 राजेस राँण निरखत नयन, मान मनोबांछित फरै ॥ २१ ॥
 रस कूपिका रसाल, कलपतरु अज्ज चढ़ै कर ।
 पारस रस पौरसा, वेलि चित्रा सुदेव वर ॥
 हय गय हाटक हीर, प्रबर सनमान पटंबर ।
 संपत्ता सुर रयण अद्य, दुभयौ मनु अंबर ॥
 तुम दरस सोई तेजन तुरी, सकल लच्छि सुख संबैरै ।
 राजेस राँण निरखत नयन, मान मनोबांछित फरै ॥ २२ ॥

(छंद भुजंगी)

तुही राम रूपं रवी बंस राजा, बजै जास तितैं लोक में सु बाजा ।
 तुही लच्छि ईसं लहैं लच्छि लाहं, निराबाध तूही सदा हिंदु नाहं ॥२३॥
 तुही संकरं एकलिंगं सरूपं, भनौ आदि बंसै तुही हिंदु भूपं ।
 तुही ब्रह्म गोपाल ब्रह्मा बिराजै, नवै निद्धि अप्पै पहतं निवाजै ॥२४॥
 इला इंद तूही दलै आसुरानं, करै बज्र रूपं बिराजै कृपानं ।
 तुही हिंदुआ भान अरि तेजहारी, मधूसूदनं तुहि दरसै मुरारी ॥२५॥
 तुही चारु मुखं मनौ पूर्ण चंदं, श्रवै अमृतं बैन लहरी समुदं ।
 तुही नाग नृथै तुही देत नागं, तुही पुष्करं तित्थ तूही प्रभागं ॥२६॥
 रजै रूप तूही जगन्नाथ रायं, सदाचार रक्खै सुभृत्यं सहायं ।
 तुही गंग गोदाबरी तित्थ गाजै, तुही कीन केदार कालंकि काजै ॥२७॥
 धरा मध्य तूही बियौ मानधाता, तुही छत्रधारी बहू भूमि त्राता ।
 तुही कासिका बिबुध जनपाल कहियै, सदा सैलराजांसिरै तंस लहियै ॥२८॥
 तुही द्वारिकानाथ निज जैन दिठौ, मनौ अमृतै बरसयौ मेघ मिठौ ।
 तुही कंसहर्ता कह्यै सृष्टिकर्ता, भटौ कोदि सेवै पदं भूमि भर्ता ॥२९॥
 तुही जोगमाया महाजंग जितै, मधू सुंभ निसुंभ महिसेष हतै ।
 तुही जोतिज्वालामुखी रूप जागै, मही छंडितो अग्न खल जूह भागै ॥३०॥
 जितै विरुद धारंति जालंधरानी, कही देव तैसी तुम्हारी कहानी ।
 तुही कंटकं मेढनै कौलकूटं, तुही अप्पई हेम माया अट्टं ॥३१॥
 तुही विश्वनेता तुही कल्पवृक्षं, तुही पारसं पौरसं ज्यौं प्रत्यक्षं ।
 तुही वीर धीरं तुही चित्रबेली, करै खल्ल खंडं रिनं रंग केली ॥३२॥
 महादान अप्पै तुही मेघमाला, सु दै हत्थि हेमं दुरंदा दुसाला ।
 तुहो नाथ सुर रत्न तूही निधानं, तुही सर्व रस कुंभिका कै समानं ॥३३॥
 सदा तं रिधू राण श्री राजसींहं, अजेजं अनंमी अभंगं अवीहं ।
 लिये तंसु भुज अप्पनै हिंदु लाजं, रसा एक तूही सु राजाधिराजं ॥३४॥
 तुही धर्मराजा धरा धर्म धारै, तुही आपदा खंडि कै के उधारै ।
 निबेरै बहू भंति तं हइ न्यावौ, यहू सं करै लखल लखलौ पसावौ ॥३५॥
 तुही ईहको वृंद पूरंत आसा, तुही अप्पई दान चितैं उल्हासा ।
 लसै साइ तो राज लीला हजाहं, कहौ कौन लोपै तुम्हारी सु कारं ॥३६॥
 भरै दंड तुम अग्न भारी भुवाला, बर बारणं बाजि बृंदं बिसाला ।
 तुही कामिनी बल्लहं रूप कामं, नऊ निद्धि पावै लिखै तं सुनामं ॥३७॥

निपावंत देवालये तं नवीनैँ, पढ़ैँ वेद तो अगग ब्रह्मा प्रवीनैँ ।
 तुही एक दातार पुहवी अनूपो, रसा रखवना राजतं राज रूपो ॥३८॥
 त्रिहौँ लोक धाराधरासं त्रिबेनी, दिसा व्योम तो लोँ सिवा सौख्य देनी ।
 गिरा मान तौ लोँ नईँ कित्ति गाजैँ, रिधूँ राजसी राण मेवार राजैँ ॥३९॥

(कवित्त)

राजसिह महाराण, बंधु बर बीर महाबल ।
 महाराज अरिसिह, मौज अप्पै हय मैँगल ॥
 सुरही विप्र सहाय, अनम अरि जूह उथप्पन ।
 मृग रिपु कुल मृगराज, क्रूर दुख दोहग कप्पन ॥
 सुलतान गहन मोखन सगति, टेकवंत रिन नन टरैँ ।
 संसार सरन महाराज कैँ, आवैँ ते नर उगारैँ ॥ ४० ॥

(छंद वृद्धि नाराच)

श्री राजसिह रान के रिधूँ सुबंधु रज्जए ।
 गिरा नरिंद कित्ति गाज गंग जानि गज्जए ॥
 लिए सु सत्थ लक्ष लील लच्छि इंद लज्जए ।
 तपंत जास खग्ग तेज तिख्ख मिच्छि तज्जए ॥ ४१ ॥
 बहूँ बिबेक बुद्धि बीर बिस्व मैँ बखानियैँ ।
 प्रताप पुंज पुन्य पाज प्राक्रमी पिछानियैँ ॥
 परोपगारवंत पूज्य पावनं प्रमानियैँ ।
 यु जातरूप रूप तैँ अनूप रूप जानियैँ ॥ ४२ ॥
 अजेज गाढ़ आगरे इला धनी अभंगयं ।
 जुरैँ सु जूह सत्थ जोध जीतईँ सु जंगयं ॥
 प्रधान दान देत प्रेम पुष्करी पवंगयं ।
 पयोद ज्यौँ प्रसंसिए चवंत भास चंगयं ॥ ४३ ॥

उदार चित अक्खियैँ अहोनिंसं उल्हासकं ।
 सुजान सर्व ग्रंथसार सिखवैँ सहासकं ॥
 विचित्र वित्त वाम बाजि बारनं बिलासकं ।
 बिसाल कित्ति चंदवान सा प्रथी प्रकासकं ॥ ४४ ॥
 करंत केलि कोरि कंत कंति जानि काम जू ।
 विसिष्ट वान बाल बैस बिंठियौँ सु वाम जू ॥

नचंत पात्र नायका गृहंति राग ग्राम जू ।
 सदैव सौख्य सागरं सु मान ईस धाम जू ॥ ४५ ॥
 सहाय साधु स्याम सेव सत्यता सुहावई ।
 पुरान वेद पाठ कै पढ़ै प्रमोद पावई ॥
 सु देत लक्खुलक्खु दानदुःख कौ दुरावई ।
 महींद महाराज कौ गुनी सु बोल गावई ॥ ४६ ॥

कृपान पानि दुइ काल क्रूर युद्ध कारइ ।
 धसक्किमिच्छि जास धाक धुज्जि भीति धारई ॥
 सुकज्ज सज्ज साहसीक संवर सुधारई ।
 वजंत सिधु बघनं महंत सित्रु मारई ॥ ४७ ॥

तनू उत्तंग तत्त तेज तीर बेग से तुरी ।
 खिवंत जानि बिद्यु पाय खैग संकरै खुरी ॥
 मदोनमत्त रूप मेहकाय से लसै करी ।
 करै सु दत्त किति काजसार सार जासिरी ॥ ४८ ॥

छकपकंति मिच्छि धारि धरा जास धक्क हैं ।
 सुसह बेधि अंग संभु हह सीह हक्क हैं ॥
 चढ़ंत पुट्टि चंचलं चमक्क च्यारि चक्क हैं ।
 गिरिद गाढ़ मैँन गात संगि राग हक्क हैं ॥ ४९ ॥

नऊँ निधान लच्छिनाथ न्याउ सं नरिंद जू ।
 दिपंति कंति देह रूप देखते दिनेद जू ॥
 पवित्त सीस आतपत्र चारु चौर चंचलं ।
 सुरद्य जास देस संधि सित्त को न संचलं ॥ ५० ॥

नराधि रूप नाहरं निरंतरं निसंकयं ।
 करी खलौँ बिभच्छि कुंभ क्रूर नंख कंकयं ॥
 बलिठ्ठ मुट्ठि वीर सो बहै बिरुद्ध बंकयं ।
 अनाथ नाथ बिस्व ऊँट आन भल्लि अकयं ॥ ५१ ॥

तिधार तिक्ख तेग तिम्म तेज ताप तोरई ।
 छत्तीस सत्थ धार छोह छीनि बंधि छोरेई ॥
 मजेज जंग मंडलौँ मसंद मीर मोरेई ।
 जयं जयं जपै कवींद जास किति जोरेई ॥ ५२ ॥

निहृस्सई निसान नाद नेज नूर नायकं ।
 लसै करी तुरंग लच्छि लक्ष लील लायकं ॥
 सनातनं सधर्म साहु सज्जनं सहायकं ।
 दबट्टई दरिद दोस दंति मत्त दायकं ॥ ५३ ॥
 मृज्जाद मेर महाराज मही सीस मंडनं ।
 बदै सु बोल जास बिस्व बैहितं बिहंडनं ॥
 खलौ दलौ सु सज्जि खैंग खग्ग बेग खंडनं ।
 दयाल देव दूबरै नि दुट्ट सट्ट दंडनं ॥ ५४ ॥
 सुरेंद चंद सूर तै सरीर तास रूप हूँ ।
 अनेक जूथ सत्थ भूप भेटई सु भूप हूँ ॥
 समप्पई सु पत्त सिद्धि सोबनं सु सूप हूँ ।
 धाराल सुद्ध जा दुधार धारि हत्थ धूप हूँ ॥ ५५ ॥
 डहकि मिच्छि जास डिभ डिभ वाम संभरै ।
 जिहान आन कौन जोध जंग आइ सौ जुरै ॥
 भुजाल भीच भारथौ भयंक भीम ज्यौ भिरै ।
 अरसि महाराज कौ गुनी सु बोल उच्चरै ॥ ५६ ॥
 अतैव अस अक्खियै इला अभंग आन जू ।
 दिनं दिनं सु मान देत राजसिंह रान जू ॥
 तवंत देवि त्रैपुरा त्रिलोक ऊँक त्रान जू ।
 सु सदैव सुधा समं कहै कविंद मान जू ॥ ५७ ॥

(कविता)

राजसींह महाराण, कुँअर करमेत कुलोद्धर ।
 जयवंता जग जोध, जंग जीतत जोरावर ॥
 अरि उलूक आदित्य, घाउ मोरै पर गज घट ।
 देत सुकवि कर दत्त, प्रवर करि अस्व कनक पट ॥
 कुँजर सु मिच्छि कुंभहि कलन, कहिय कंधाला केहरी ।
 जयसींह कुँअर दिन दिन जयौ, उमगि गहन धर आसुरी ॥ ५८ ॥

(छंद उद्धार)

जय जय कुँअर श्री जयसींह । अति अवगाह अंग अवीह ॥

उत्तम सुख सुख अंग प्रवर सु पुत्रि साँभ असंस ॥ ५९ ॥

कट्टन दरिद्र दुख कलंक । मुख दुति जानि सकल मयंक ॥
 अप्पय लच्छि चित्त उदार । सच्चा सूर कुल शृगार ॥६०॥
 कमनीय काय अप्प कुँआर । अभिनव मदन कौ अवतार ॥
 उंपित सहज पर उपगार । हरखत देत द्रव्य हजार ॥६१॥
 अंकुस सरिस जो अरि दूभ । गाहत आसुरी धर गम्भ ॥
 धुज्जत असुर बर तस धाक । हक्क तव सीह बन घन हाक ॥६२॥
 ऐ अयतार रूप अनूप । भेटहिँ जास बड़ बड़ भूप ॥
 राजकुँआर राजस रीति । उथपि जिनिहिँ सकल अनीति ॥६३॥
 भलकत मज्झ नर वर मुंड । प्रकट कि तरनि तेज प्रचंड ॥
 महिमा मेरु सबर मृजाद । वसुमति कौन मंडय बाद ॥६४॥
 महितल सकल मान महंत । आनहिँ कुँआर अरि कुल अंत ॥
 सुरही बिप्र करन सहाय । गीपति सरिस जसु जस गाय ॥६५॥
 गिनियहिँ मेरु गिरिवर गाढ़ । डंकहिँ पिसुन नर असि डाढ़ ॥
 घन तै अधिक दृढ़ घन घाउ । दिसि दिसि देत पर घर दाउ ॥६६॥
 सिंधुर तुरग श्री श्रीकार । अखिय अबल जन आधार ॥
 सागर तोल चित्त समाव । परतक्ष करन लख पसाव ॥६७॥
 बामा सथ बैरिन बंधि । आनहि जेह अप्पन संधि ॥
 निहिसित सत्थ नह निसान । उदधि सु नीर दल असमान ॥६८॥
 दुज्जन भरत हय गय दंड । अधिक प्रताप आन अखंड ॥
 बिलसत बिबिधि बाम बिलास । मनु रतिनाथ द्वादस मास ॥६९॥
 रीभत देत रीभ रसाल । मैंगल मत्त मोतिन माल ॥
 सूरति सहस किरन समान । अरि तम हरण इन उनमान ॥७०॥
 सख छतीस धार सुजान । पीरन प्रबल दुज्जन प्रान ॥
 नाहर ज्यौ सदैव निसंक । क्रूर सु कठिन जसु नष कंक ॥७१॥
 पिल्लहिँ पिसुन ईष प्रबंध । सहजउ स्वास मरुत सुगंध ॥
 वसुमति बिभव बिलसन बीर । निरमल सुजस सुरसरि नीर ॥७२॥
 प्रबर सुमग्ग धरन प्रवीन । खग बल करत खल दल खीन ॥
 मंथर गति सु राज मराल । पशठत अहित जनहिँ पयाल ॥७३॥
 सोवन सरिस कंति सरीर । सुंदर सबल साहस धीर ॥
 लच्छिन चारु तसु तनु लच्छि । पर उपगारवंत प्रतच्छि ॥७४॥

ससि रवि सुर सुरेस्वर संभु । उदधि सुमेरु सुरसरि अंभु ॥
अविचल ज्यौं लुँ ए अवदात । बोलहिँ मान त्रिजग बिख्यात ॥७५॥

(कवित्त)

बसुमति रखखन बीर, बिमल मति धरन क्षत्रीबट ।
सीसौदा कुल सोभ, झारि नखै अरि खग भट ॥
लीलापति बहु लच्छि, सुगुन गाहक दृढ़ सायक ।
न्यायवंत गुरु नयन, दत्त हय गय धनदायक ॥
भारथ समत्थ भुवि सुजस भर, भागवंत सु अभंग भर ।
श्री राजसिंह महाराण कौ, भीमसिंह कूबर सबर ॥७६॥

(छंद दंडक)

भीमसिंह कुँआर मह भट । झूरि नखहि अरिन खग भट ॥
घाउ घल्लन सीह गज घट । बिरुदवंत सुमंत कुलवट ॥७७॥
बिभव तेज सदैव बढुँ । कुंति तैं कंटकनि कढुँ ॥
गिरि समान गुमान गढुँ । चढ़त हय रिपु चाक चढुँ ॥७८॥
दुज्जनौं सिर करत दंडह । अत्थि हय गय बल अखंडह ॥
खग बल खल खेत खंडह । अकल अप्प सदा अदंडह ॥७९॥
जंग जीतन जोध जग जस । रपटि रिपु रलतलहिँ रिन रस ॥
गौर गात सु गोध गुरु गस । बसुमती जिन कीन निज बस ॥८०॥
बंधि आनत सित्रु बामहिँ । गाहि धर गढ़ कोट गामहिँ ॥
जानि ऋतुपति अट्ट जामहिँ । धूपटै धन राज धामहिँ ॥८१॥
सरस सुर संगीत सच्चइ । नृतत पातुर नारि नच्चइ ॥
राग रंग सु तान रच्चइ । मधुर धुनि सुनि मोद मच्चइ ॥८२॥
सुरहि सज्जन जन सहायक । लच्छिपति सम लील लायक ॥
प्रचुर हय गय सेन पायक । नर प्रधान नराधिनायक ॥८३॥
भीम भय गढ़ कोट भज्जइ । धसकि आसुरि धरनि धुज्जइ ॥
राजराण सुपुत्त रज्जइ । तिक्ख अरि तनु तेह तज्जइ ॥८४॥
सकल रज्ज धुरा समत्थह । पिसुन पटकहि ज्यौं सु पत्थह ॥
सबल दल जिन चढ़त सत्थह । हेम हय गय देत हत्थह ॥८५॥
मत्त मीर मजेज मोरन । तुंग तर मैवास तोरन ॥
बीर बर गन धन बहोरन । जगत जय जस बाद जोरन ॥८६॥

क्रर जसु कर कठिन कंकह । झाक बज्जत धुनि भनंकह ॥
 नित्य नाहर ज्याँ निसंकह । बिरुद मरद सु बहय बंकह ॥८७॥
 गहकि आसुरि सेन गाहत । दुंढि दुंढि सु सत्रु ढाहत ॥
 बज्र सम करबाल बाहत । सज्जि दल सुलतान साहत ॥८८॥
 नूर नर नागर निरोगिय । अभय मन अहनिसि असोगिय ॥
 भोगवैँ बहु भूमि भोगिय । स्वामि ज्यौँ सुंदरि संयोगिय ॥८९॥
 स्वर्ण रंग सरीर सुंदर । प्रगट मनु पुहवी पुरंदर ॥
 केवि जिन डर दुरत कंदर । मानईँ खट ऋतु सु मंदिर ॥९०॥
 निसुनि चढ़त निसान नहह । रंक रिपु कुल होत रहह ॥
 भीम दल जनु मेघ भहह । सुकवि बोलत तसु सु सद्धह ॥९१॥
 राज राण सुनंद रंगह । भीम रिपु दल करन भंगह ॥
 गाजईँ जस जानि गंगह । चंद पूरन मास चंगह ॥९२॥
 चिरंजीवि प्रताप जसु चिर । थान हय गय हौ बहू थिर ॥
 सृष्टि तब लौँ अचर सुरगिर । गहकि बोलत मान जसु गिर ॥९३॥

षष्ठम विलास

(कवित्त)

चढ़ै सेन चतुरंग, राण रवि सम राजेसर ।
मनौ महोदधि पूर, बारि चहुँओर सु विस्तर ॥
गयबर गुंजत गुहिर, अंग अभिनव ऐरावत ।
हयबर घन हौंसंत, धरनि खुरतार धसकत ॥
सलसलिय सेस दल भार सिर, कमठ पीठि उठि कलकलिय ।
हलहलिय असुर धर परि हलक, रवनि सहित रिपु रलतलिय ॥१॥

(छंद पद्धरी)

संबत प्रसिद्ध दह सत्त भास । बत्सर सु पंच दस जिठु मास ॥
सजि सेन राण श्री राजसीह । असुरेस धरा सद्धन अबीह ॥ २ ॥
निघोस घुरिय नीसान नह । सहनाइ भेरि जंगी सुसह ॥
अति बदन बदन बढी अवाज । सब मिलै भूप सजि अप्प साज ॥ ३ ॥
क्रिय सेन अग करि सैल काय । पिखंत रूप पर दल पुलाय ॥
गुंजंत मधुप मद भरत गच्छ । चरखी चलंत तिन अग पच्छ ॥ ४ ॥
सोभंत चौर सिदूर सीस । रस रंग चंग अति भरियरीस ॥
सौडाल घटा मनु मेघ स्याम । ठनकंत घंट तिन कंठ ठाम ॥ ५ ॥
उनमत्त करत अगगग् अग्राज । बहु बेग जान पावै न बाज ॥
ढलकंत पुट्टि उज्जल स ढाल । बर बिबिध वर्ण नेजा बिसाल ॥ ६ ॥
बोलंत चलत बंदी बिरुह । दीपंत धवल रुचि सुचि द्विरह ॥
गुरु गाढ़ गैह गिरिवर गुमान । पढ़ि धत्त धत्त मुख पीलवान ॥ ७ ॥
ऐराक आरबी अस्व ऐन । सोभंत सवन सुंदर सुनैन ॥
कास्मीर देस कांबोज कच्छि । पय पंथ पौन पथ रूप लच्छि ॥ ८ ॥
बंगाल जात के बाजिराज । काबिल सु केक हय भूप काज ॥
खंधार उतन केहि खुरासान । बपु ऊँच तेज बर बिबिध बान ॥ ९ ॥
हय हीस करत के जाति हंस । कबिले सु किहाड़े भौर बंस ॥
किरिडि खुरहड़े के सुरत्त । पीलड़े केक लीले पवित्त ॥१०॥

चंचल सुवेग रहवाल चाल । थेइ थेइ तान नचवंत थाल ॥
 गुंथिय सुजान करके सबाल । बनि कंध बक्र सोभा बिसाल ॥११॥
 साकति सुवर्ण साजै समुख । लीनै सु सत्थ हय एक लख ॥
 रवि रथ तुरंग सम ते सरूप । भनि बिपुल पुट्टि तिन चढ़ै भूप ॥१२॥
 पयदल सुसज्जि पौरष प्रधान । जंघालु जंग जीतन जवान ॥
 भट बिकट भीम भारत भुजाल । साधर्मि सूर निज सनुसाल ॥१३॥
 निलवट सनूर रत्तौ सु नैन । गय थाट घाट अप घट गिनैन ॥
 धमकंति धरनि चञ्जत धमक । धरहरत कोट जिन सबर धक ॥१४॥
 बंकी सु पाष बर भृकुटि बंक । निर्भय निरोग नाहर निसंक ॥
 सिर टोप सज्जि तनु त्रान संच । प्रगटे सु बंधि हथियार पंच ॥१५॥
 कटि कसै कटारी अरु कृपान । बंदूक ढाल कोदंड बान ॥
 कमनीय कुंत कर तौन पुट्टि । मारंत सह सुनि सबल मुट्टि ॥१६॥
 गल्हार करत गज्जंत गैन । बोलंत बंदि बहु बिरुद बैन ॥
 मुररंत मुँछ गुरुभरिय मान । गिनि कौन कहै पायक सु गान ॥१७॥
 बहु भूप थट्ट दल मध्य बीर । सुरपति समान सोभा सरীর ॥
 श्री राजसिंह राणा सरूप । गजराज ढाल आसन अनूप ॥१८॥
 सीसै सुछत्र छार्जंत सारु । चामर ढलंत उज्जल सुचारु ॥
 घन सजल सरिस दल घाघरट्ट । भाषंत बिरुद बर बंदि भट्ट ॥१९॥
 कालंकिराय केदार कथ । असकति राय थप्पन समथ ॥
 हिंदू सु राय रखवन सु हद । मुगलानराय मोरन मरद ॥२०॥
 कविलानराय कठुन सु कंद । दुतिवंतराय हिंदू दिनेंद ॥
 अरि बिकटराय जाड़ा उपाड़ । बलवंतराय बैरी त्रिभाड़ ॥२१॥
 अनपुट्टिराय पुट्टिय पलान । भलहलत रूप मभ्यान भान ॥
 रायाधिराय राजेस रान । जगतेस नंद जय जय सु जान ॥२२॥
 बाजोनि चरन खुरतार बग । मह अनड कट्टि कीजंत मग ॥
 भक्तभलियउद्धिसलसलियसेस । कलकलियपिट्टि कच्छप असेस ॥२३॥
 रजथॉन सजल जलथान रैनू । धुंधरिग भान रज चढ़िग गैनू ॥
 अति देस देस सु बढ़ी अवाज । नडै सु यवन करते निवाज ॥२४॥
 हलहलिय असुर धर परि हलक । खलभलिय नैर पर पुर खलक ॥
 थरहरै दुर्ग मेवास थान । रवि सेन सबल राजेस रान ॥२५॥

सुलतान मान मन्त्री ससंक । बलवंत हिंदुपति वीर बंक ॥
 आयौ सु लेन अवनी अभंग । आलम सुभयौ सुनि गात भंग ॥ २६ ॥

(कविच)

ऊचलि गय अमारौ, दंद मच्यौ अति दिक्षिय ।
 हाजीपुर परि हक, डहकि लाहौर सु डुल्लिय ॥
 थरस लयौ रिनथंभ, धसकि अजमेर सु धुल्लिय ।
 सूनौ भयौ सिरौज, भगग भैलसा सु भज्जिय ॥
 अहमदाबाद उज्जैनि जन, थाल मूंग ज्यौ थरहरिय ॥
 राजेस राण सु पयान सुनि, पिसुन नगर खरभर परिय ॥ २७ ॥

(छंद मुकुंद डामर)

चतुरंग चमू सजि सिंधुर चंचल बंक बिरुदरु दान बहैं ।
 अवधूत अजेज तुरंग उत्तंगह रंगहिं जे रिपु कटि रहैं ॥
 अवगाढ़ सु आयुध युद्ध अजीत सु पायक सत्थ लियै प्रचुरं ।
 चित्रकोट धनी सजि राजसी राण यु मारि उजारिय मालपुरं ॥ २८ ॥
 अति बढि अवाज भगी दिसि उत्तर पंथ पुरंपुर रौरि परी ।
 ब्रह्मकंत सु ब्रंबक नूर ब्रह्मब्रह्म खैंग महा खिति बज्जि खुरी ॥
 उडि अंबर रेनु बहू दल उम्मड़ि सोखि नदी दह मग सरं ।
 चित्रकोट धनी चढ़ि राजसी राण यु मारि उजारिय मालपुरं ॥ २९ ॥
 करतें बहु कूच मुकाम क्रमं क्रमि पत्त सु नागर चाल पहू ।
 भहराय भगै धर लोक महाभय सून भयै अरि नैर सहू ॥
 असुरेस कै गेह सुबद्धिउ दंगल डुल्लिय दिक्षिय मन्नि डरं ।
 चित्रकोट धनी चढ़ि राजसी राण यु मारि उजारिय मालपुरं ॥ ३० ॥
 दल बिंठिय मालपुरा सु चहौं दिसि ऊपम चंदन जानि अही ।
 तहँ कौन मुकाम घुरंत सु ब्रंबक सोच पखौ सुलतान सही ॥
 नरनाथ रहै तहँ सत्त अहोनिमि सोवन मोरस धीर धरं ।
 चित्रकोट धनी चढ़ि राजसी राण यु मारि उजारिय मालपुरं ॥ ३१ ॥
 भर चौकिय देत चहौं दिसि भूपति सौरभ टक आराब सजै ।
 हुसियारि कहैं बर जोध हँकारहिं हौंसत है गजराज गजै ॥
 सु हलाल हजार जरै सब ही निसि घोष सु नौबति नह घुरं ।
 चित्रकोट धनी सजि राजसी राण यु मारि उजारिय मालपुरं ॥ ३२ ॥

धक धूँनिय धाम सु कोट धकाइय गौखरु पौरि गिराइ दियै ।
 दम ढेर करी हट श्रेणि हुँढोरिय कंकर कंकर दूरि कियै ॥
 पतिसाह सु दम्भन नैर प्रजारिय अंबर पावक भार अरं ।
 चित्रकोट धनी चढ़ि राजसी राण यु मार उजारिय मालपुरं ॥३३॥
 तहाँ श्रीफर पुंगिय लौंग तमारह हिँगुल केसरि जायफलं ।
 घनसार मृगमद लीलि अफीमि अंबर जरंत सु भारभलं ॥
 उड़ि अग्नि दमगा सु ढिल्लिय उप्पर जाय परै सु डरै असुरं ।
 चित्रकोट धनी चढ़ि राजसी राण यु मारि उजारिय मालपुरं ॥३४॥
 घर पूरिय धोम घराघर धुँधरि धाम भरै धन धान धषै ।
 रवि बिंब तिहौं दिन गोप रख्यौ लुटि लच्छि अनंत सुकौन लखै ॥
 सिकलात पटंबर सूफ सु अंबर ईधन ज्यौं प्रजरै अगारं ।
 चित्रकोट धनी चढ़ि राजसी राण यु मारि उजारिय मालपुरं ॥३५॥
 अति रोसहिँ कीन इला तर उप्पर कंचन रूप निधान कढ़ै ।
 भरि इभम खजान सु खचर सू भर बित्तिहि भृत्य अनेक बढै ॥
 जस बाद भयौ गिरि मेरु जितौ हरषै सुर आसुर नूर हरं ।
 चित्रकोट धनी चढ़ि राजसी राण यु मारि उजारिय मालपुरं ॥३६॥
 जय हिंदु धनी यवनेसहिँ जीतन मारन तूही यु म्लेच्छ मही ।
 अवतार तुही इल भार उतारन ते कर खग प्रमान कही ॥
 जगतेस सु नंद जयौ जगनायक बंस बिभूषन बीर बरं ।
 चित्रकोट धनी चढ़ि राजसी राण यु मारि उजारिय मालपुरं ॥३७॥
 निज जीति करी रिपु गाढ़ नसाइय आए देत निसान खरै ।
 पयसार सु कीन सिंगारि उदयपुर आइ अनेक उछाह करै ॥
 कवि मान दिए हय हस्थिय कंचन बुड्डिय जानि कि बारिधरं ।
 चित्रकोट धनी चढ़ि राजसी राण यु मारि उजारिय मालपुरं ॥३८॥

(कविच)

मालपुरहिँ मार यौं, कनक कामिनि घर घर किय ।
 गारिय आसुर सुबंस निय ॥
 इन कुल नीति सु एह, गढ़ आलम गहि मोखन ।
 अनमी अनड़ अभंग, नित्य निर्मल निरदूषन ॥
 अज सिंह पियै जल घाट इक, खग तेज लीयै सु खिति ।
 राजेस राण जगतेस सुत, पुन्यवंत मेवारपति ॥ ३९ ॥

सप्तम विलास

(दोहा)

मारुबारि महिमंडले, रूपनगर बहु रूपा
राज करै तहँ रटुवर, मानसिह मह भूप ॥ १ ॥
सो नृप औरंगसाहि कौ, अतुली बल उमराव ।
सूर बीर सच्चौ सुभट, दैन पर धरहिँ दाव ॥ २ ॥
भगिनी तस घर एक भल, सुभ लच्छिनी सयान ।
बेष बाल घोरस बरस, नख-सिख रूप निधान ॥ ३ ॥
रमा रूप कै रंभ रति, गौरी सै गुन ग्राम ।
रूपसिह राठौर की, सुता सु लक्षन धाम ॥ ४ ॥

(कवित्त)

धरनि प्रगट मरूधरा, बसै तहँ रूपनगर बर ।
मानसिह तह महिप, रज्ज रज्जंत रटुवर ॥
बहनि तास गृह प्रबर, रमा रूपै कि रंभ रति ।
रूपसिह पुत्ती सरूप, गात कंचन गयंद गति ॥
बोलंत मधुर धुनि पिक बयन, निसिपति आनन मृग नयन ।
चउसट्ट कला कुंवरी चतुर, मनमोहन मंदिर मयन ॥ ५ ॥

(छंद गुणावेलि)

कहियै श्री राजकुँआरी, अचछी अचछरी अनुहारी ।
बपु सोभा कंचन बरनी, हरि हर ब्रह्मा मनहरनी ॥ ६ ॥
सुचि सुरभि सकोमल सारी, कब्बरि मनु नागिनि कारी ।
सिर मोती मांग सु साजै, राषरी कनकमय राजै ॥ ७ ॥
लखि सीस फूल रवि लोपै, अष्टमि ससि भाल सु ओपै ।
विंदुली जराच बखानी, अलि भृकुटि ओपमा आनी ॥ ८ ॥
छवि अंजन दृग मृगद्वौना, तपनिय श्रुति जरित तरौना ।
नकबेसरि सोहति नासा, पयनिधि सुत लाल प्रकासा ॥ ९ ॥

पल उपचित गच्छ प्रधानं, अति अरुन अधर उपमानं ।
 रद दारिम बीज रसाला, पढ़ियै मनु बिंब प्रवाला ॥ १० ॥
 कलकंठ सु-रसना कुहकै, मुख स्वास कुसुम बर महकै ।
 चित चुभी चिबुक चतुराई, ससि पूरन बदन सुहांई ॥ ११ ॥
 मनु कामलता इह मौरी, नीकी गर पोति निबौरी ।
 कंठसिरी तिलरी कहियै, चंपकली हंस सु चहियै ॥ १२ ॥
 मयंगल मोतिन की माला, मनि मंडित भ्राक भ्रमाला ।
 चौकी चामीकर चंगी, रतनाली छवि बहु रंगी ॥ १३ ॥
 अष्टादस सर अभिरामं, नवसर षटसर किहू नामं ।
 हारावलि मंडित हेमं, पहिरी बर कंठहिं पेमं ॥ १४ ॥
 उर उरज उभय अधिकाई, श्रीफल उपमा सम भाई ॥
 लीलक कंचुकी निहारी, भुजदंड प्रलंब सभारी ॥ १५ ॥
 बर करन कनकमय बंधं, बिलसत दुति बाजू बंधं ।
 चूसै कंकन सौं चहियै, गजरा पौंचिय गुन गहियै ॥ १६ ॥
 मुद्रिय अंगुरी मन मानी, कंचन नग जरित कहानी ।
 महदीमय बेलि सु मंडी, तिन पानि सोभ बहु तंडी ॥ १७ ॥
 मच्छोदरि तिवलिय मज्जै, बापी सम नाभि सु बुज्जै ।
 कटि मेखल मनि कुंदन की, तरनिय सी सोभा तिनकी ॥ १८ ॥
 चरना रंगित बहु चोलं, पहिरन बर पीत पटोलं ।
 बर समर गेह सुचि बिंबं, नीकै गुरु युगल नितंब ॥ १९ ॥
 करि कर जंघा, युग कंतं, भ्रंभरि पय धुनि भ्रमकंतं ।
 पाइल क्षुद्रावलि रंगं, आभूषन और उपंगं ॥ २० ॥
 रुचि सहज पाइ तल रतै, जावक बर सोभ सु जितै ।
 गौरी सी सा गय-गवनी, रंभा रति केहरि रवनी ॥ २१ ॥
 जसु रूप अधिक इक जीहा, लहियै क्यों पार सु लीहा ।
 कवि मान कहै सुखकारी, नन ता सम वो बर नारी ॥ २२ ॥

(कवित्त)

इक दिन आलम अंखि, बचन बिपरीति रज्ज बल ।
 सुनि राठौर सुजानि, मान मृगराज राजकुल ॥
 हमहिं देहु चित हरषि, बहिनि तुम सुनिय रूप बर ।
 देहु तुमहि धर देस, गोंड हय गय समान गुर ॥

रट्टौर ताम आधीन रख, तुरक बचन किन्नौ तहति ।
कलियुग प्रमान कवि मान कहि, कमधज कछवाहा कुमति ॥२३॥

(दोहा)

मानसिह नृप सोचि मन, तुरक बिचारिस तप्प ।
कन्या तब ब्याहन कही, औरंजेबहि अप्प ॥ २४ ॥

(छंद त्रोटक)

सुनि बत्त सु रूप सुता श्रवनं, बिलखाइ बदन भई भिमनं ।
तिहिं सोचहि अन्न रु पान तजै, भहराइ परी नन धीर भजै ॥२५॥
करुना कर तैं इह रीति करी, अब आसुर गेह तिया अमरी ।
गुरु संकट तैं मुहिं कान गहैं, कुननंति सखी जन मंझ कहैं ॥२६॥
गिरि सृंग उतंगनि तैं यु गिरौ, कुल कज्ज हलाहल पान करौ ।
जरतैं भर पावत कुंड जरौ, बरिहो सुर आसुर हौं न बरौ ॥२७॥
जिन आननरूप लेंगूर जिसौ, पल सर्व भखैं सुर सौं यग सौं ।
जिन नाम मलेछ पिसाच जनों, सुर ही रिपु हौं नन स्याम मनौ ॥२८॥
मन सोचति ही उपज्यौ सु मतौ, छिति छत्रपती बर हिंदु छतौ ।
श्री राजसि राण खूंमान सदा, अब ओट गहाँ तिनकी सु मुदा ॥२९॥
पुहवी नन ता सम छत्रपती, रवि बंस विभूषन भाल रती ।
घर आसुरि मारन हिंदु धनी, सरनै मो रक्खन सोइ धनी ॥३०॥
लहि औसरि सुंदरि पत्र लिखैं, चित्रकोट धनी अबरुं यु रखैं ।
हरि ज्यौं सु रुकंमनिलाज रखी, अबला यौं राखहु आस मुखी ॥३१॥
गजराज तजै खर कौन गहैं, सुरबृक्ष छतैं कुन आक चहैं ।
पय पान तजै विष कौन पियैं, लहि पाचरु काचहिं कौन लियैं ॥३२॥

बग हंसनि क्यौं घर वास बसैं, न रहैं फुनि कोकिल कमर सैं ।
सस सिंहनि ज्यौं नन देखि सकैं, बिन बुद्धिय आसुर बादि बकैं ॥ ३३ ॥
नरनायक तो सम और नहीं, सरणागत बत्सल तूँज सही ।
प्रभु कै सु लुलि लुलि पाय परौ, कर जोरि इती अरदास करौ ॥ ३४ ॥
सजि सेन सु आवहु नाहं इत, अबला सु छुड़ावहु आसुर तैं ।
सु लई ज्यौं राघव सीत सती, हठकारक रावन राय हती ॥ ३५ ॥
करि भीर प्रभू निज कामिनि की, बलि जाउँ सदा तुम जामिनि की ।
इब कज्जहिं लखैं तूँज इला, कुल नीर चढ़ाउन देव कला ॥ ३६ ॥

लिखि लेख समै द्विज सहि लियौ, कहि भेद सु कगद हृत्थ दियौ ।
 मुख बैन दिढ़ाइरु सीख करी, धर पत्त बहू सु उमंग धरी ॥ ३७ ॥
 पहुँच्यौ सु उदयपुर मॉझ पही, महाराणहिँ भेटि असीस कही ।
 जय हिंदु धनी जगतेस सुतं, श्रीराजसि राण जगत जितं ॥ ३८ ॥
 गुदराइय लेख कुमारि गिरं, अति हर्ष भयौ नरनाह उरं ।
 करुनाकरि विप्र समान कियौ, दिल उत्सक उंचित दान दियौ ॥ ३९ ॥
 महिमॉनिनि जानि दसारु मिलेँ, घर आवत लच्छिय कौन ठिलेँ ।
 इह चित्तहिँ ठानि कै बीरु बली, रति पाइ महारस रंगरली ॥ ४० ॥
 घन नौबति नह निसान धुरै, अवनीस अनेक उछाह करै ।
 चढ़ि चंचल बाम मिलाप चहैँ, कवि नायक यौँ कवि मान कहैँ ॥ ४१ ॥

(कवित्त)

अबलाकृत अरदास, विप्र मुख व सुनिरु बियक्खन ।
 चित्रकोट पति चढ़ै, रूप कुँअरी पति रक्खन ॥
 घुरत निसाननि घमस, गुहिर घन ज्यौँ गय गज्जत ।
 सुभ बंदी जन सह, बाजि खुरतार सु बज्जत ॥
 हय हंस चढ़ै चामर ढलत, धवल छत्र सीसहिँ धरिय ।
 सोवन जराउ युत सेहरौ, सुंदरि ब्याहन संचरिय ॥ ४२ ॥

(दोहा)

देन बधाई सोइ द्विज, रूप सुता प्रति रंग ।
 आयौ सेना अग तैँ, उद्यमवंत अभंग ॥ ४३ ॥
 अखिय आइ बधाइ इह, बारी तो बड़ भाग ।
 राण राजसी राज बर, आए धरि अनुराग ॥ ४४ ॥
 सुनि सु बधाई नृप सुता, उपज्यौ उर उल्हास ।
 कनक रजत पटकूल करि, पूरन किय द्विज आस ॥ ४५ ॥
 रूपनगर महाराण की, अधिक बढ़ी सु अवाज ।
 मानसिंह नृप हरषि मन, सजैँ ब्याह बर साज ॥ ४६ ॥
 बंधै तोरन रतनमय, थपि रजत युग थंभ ।
 कनक कलस मंडित मुकुर, देखत होत अचंभ ॥ ४७ ॥
 चौरिय मंडिय चित चुरस, कनक भंड बहु आँनि ।
 मंडप खंभ सु कनकमय, गूडर जरकस तौनि ॥ ४८ ॥

राण राजेसरं, बीर हिंदू बरं ।
 ऊँच तनु अंबरं, सुरति साडंबरं ॥ ४६ ॥
 हंस हय सुंदरं, स्वर्ण साकति धरं ।
 प्रगट गति पातुरं, आरुहै आतुरं ॥ ४७ ॥
 सीस बर सेहरं, जरित हेमं जरं ।
 खग्ग कटि खंडरं, सेत छत्रं सिरं ॥ ४८ ॥
 चारु दो चामरं, कनक दंडं करं ।
 बिँभए दो नरं, रूप रातंबरं ॥ ४९ ॥
 भीर मत्ती पुरं, नैन नारी नरं ।
 निरखए नरवरं, उल्हसं तै उरं ॥ ५० ॥
 बाजि घन घुम्भरं, भूरि चढ़ै भरं ।
 सेन बहु सिंधुरं, प्रचुर पायक चरं ॥ ५१ ॥
 घोष नौबति घुरं, सोर बंदी सुरं ।
 धरनि रज धुंधरं, ढंकिंयं दिनयरं ॥ ५२ ॥
 सोखि सलिता सरं, थान रिपु थरहरं ।
 अमग मगं परं, पत्त पहु मुरधरं ॥ ५३ ॥
 राग रमनी रसं, नाह अद्धी निसं ।
 पत्त पुर गोयरं, तूर त्रंबक घुरं ॥ ५४ ॥
 पोल सो तै जरै पार को उच्चरै ।
 हिसई हैवरं, गज्ज घन गैवरं ॥ ५५ ॥
 सरल सहनाइयं, गायनं गाइयं ।
 राग खंभा इती, श्रवन संभा इती ॥ ५६ ॥
 सोर सग गट्टयं, भौचपा छुट्टयं ।
 बिरुद बंदी बदै, सरस जै जै सदै ॥ ५७ ॥
 रूपनैरं रली, गौरि घन ऊलली ।
 सेन सिंगारयं, सज्जि पैसारयं ॥ ५८ ॥
 बज्जनं बज्जई, गन घन गज्जई ।
 गावहीँ गीतयं, बाम रस रीतयं ॥ ५९ ॥
 कीन निबछावरी, सूहवं सुंदरी ।
 स्वर्ण साखंकरि, मुत्ति थारं भरी ॥ ६० ॥

उच्छरै दामयं रूप अभिरामयं ।
 इदं ज्यौ वर्षयं, बंदि बहु हर्षयं ॥ ६४ ॥
 मान रठौर कै, द्वार कुल मोर कै ।
 तोरनं बदियं, अधिक आनंदियं ॥ ६५ ॥
 राजसी रान जु, प्रबल खग प्रान जु ।
 रठुवरि व्याहई, सद्धि पतिसाहई ॥ ६६ ॥

(कवित्त)

व्याह बेर वपु प्रवर, रूप पुत्ती सिंगार रवि ।
 नखसिख रूप निधान, सोभ पाई सरूप सचि ॥
 सिर सेहरौ सतेज, स्वर्ण मणि जरित कांति कल ।
 सखि चहुँ ओर समूह, गीत गावंत सु मंगल ॥
 रठु लीन भली तैं रठु वरि, परमेसर रखी सु पति ।
 श्री राज राण जगतेस कौ, पति पायौ सब हिंदु पति ॥ ६७ ॥
 राजसिंह महाराण, सरस कर गृहन समय लहि ।
 सजि अमोल सृंगार, कांति सुरपति समान कहि ॥
 सोहत सिर सेहरौ, कनक नग लाल जरित सुभ ।
 कटि सुंदर करबाल, हंस हय चढ़ै थट्ट इभ ॥
 बहु भूप सेन बिचि बीर बर, हय गय मय गय ताम हुअ ।
 घन त्रंबक बर नौबति घुरहिँ, जोति हलाल अपार हुअ ॥ ६८ ॥

(दोहा)

बहु सेना बिचि बीर बर, अस्व हंस आरोह ।
 सीस छत्र बर सेहरौ, चामर ढलत सु सोह ॥ ६९ ॥

(चद्रायन)

चामर ढलत सु सोह उबारत द्रव्य अति ।
 बंदी बोलत बिरुद चिरं चीतौरपति ॥
 पिखत प्रजा असंखन बुझहिँ अप्प पर ।
 रंग मंडप रस रंग प्रपत्ते ईस बर ॥ ७० ॥

(दोहा)

रंग मंडप बहु रंग रस, प्रवर दुलीच बिछाय ।
 रूप सुता रस रंग मै, सकल सखी समुदाय ॥ ७१ ॥

(७८)

(चंद्रायन)

सकल सखी समुदाय सुहाइय सुंदरिय ।
मंडप मध्य सु आइ अभिनव अच्छरिय ॥
बिप्र पढ़त बहु बेद हवन करि करि हवी ।
सूर चंद सुर साखि सज्जन संठवी ॥ ७२ ॥

(दोहा)

सूर चंद सुर साखि सब, बर गँठजोरा बंधि ।
बँधी मनु हित गंठि दृढ़, दंपति उभय संबंधि ॥ ७३ ॥

(चंद्रायन)

दंपति उभय संबंध कंत कर गृहन क्रिय ।
सुरपति सची समान सकल गुन रूप श्रिय ॥
कै रति युत रतिकंत एह उनमानियै ।
निस्चल दुहुँ जन नेह युगं युग जानियै ॥ ७४ ॥

(दोहा)

युग युग नेह सु उभय जन, सुरपति सची समान ।
रूप पुति बर रटुवरि, राजसिंह महारान ॥ ७५ ॥

(चंद्रायन)

राजसिंह महारान संपत्तै चौरि सजि ।
बज्जै बज्जन वृंद गगन प्रति सहि गजि ॥
गावति सूरहृष गीत किति कलकंठ करि ।
सज्जन मिलै समूह कोटि उत्साह करि ॥ ७६ ॥

(दोहा)

सज्जन आइ मिलै सकल, मान कमधज गेह ।
चौरै मंडप चूप चित, नरनायक बहु नेह ॥ ७७ ॥
बरतायै मंगल सकल, लिए सु फेरा लच्छि ।
हौंस मनाई हीय की, अच्छि संपतिय अच्छि ॥ ७८ ॥
संतोसे नेमी सकल, दयै धनै धन दान ।
चौरै कमधज्जी चढ़ै, राजसिंह महारान ॥ ७९ ॥

(७६)

(कवित्त)

राजसिंह महारान, प्रिया रठौर सु परनिय ।
रूप पुत्ति जनु रंभ, उभय कुल लज्ज सुधरनिय ॥ .
धनि हिंदूपति धीर, प्रबर क्षत्रीपन पालन ।
गो ब्राह्मन तिय गनहिँ, टेक गृहि संकट टालन ॥
हिँदवान हृद रखन हठी, बल असुरेस बिडार कहँ ।
जगतेस राँण सुत जग जयौ, कलह केलि जयकार कहँ ॥ ८० ॥

(दोहा)

कलह केलि जहँ तहँ करत, ऐ असुरेस अनिट्ट ।
जनम्यौ एह कलंकि जनु, दिल्लीपति अति डिट्ट ॥ ८१ ॥

(कवित्त)

दिल्लीपति अति डिट्ट, साहि औरंग प्रेत सम ।
अति दलबल असुरेस, अवनि सद्धत करि उद्धम ॥
देस देस पति दमत, गृहत पर भूमि नगर गढ़ ।
बृद्धि करत निज बंस, दुट्ट दीदार मंत दढ़ ॥
आधीन कियै जिन अवनि पति, कमधज कछवाहा प्रभृति ।
श्री राज राँण जगतेस कै, गिन्यौ साहि अकतूल गति ॥ ८२ ॥

(दोहा)

राज राँण जगतेस कै, मंडिय आलम मान ।
रूपसिंह रठौर धिय, परनी प्रिया प्रधान ॥ ८३ ॥

(कवित्त)

परनि रठवरि प्रिया, घोष नौबति घुरंतह ।
कर मुकलावनि करत, होत उच्छाह अनंतह ॥
गावत सूहव गीत, नारि बहु मिलि मृगनै नित्य ।
हरषित चित्त हसंति, परस्पर करत सु सैनिय ॥
उछरंत मुति कंचन अधिक, धन जाचक जन घर भरिय ।
श्री राजसिंह राना सबल, बिस्व सकल जस बिस्तरिय ॥ ८४ ॥

बित्थुरिय सयल संसार बत्त, ऐ राजसिंह राना उमत्त ।
 मिम्भयौ सु जिनहिँ पतिसाह मॉनि, परनी यु रूप पुत्ती प्रधान ॥८५॥
 दाइजा ताम रठौर देत, सचि मानसिंह राजा सहेत ।
 बारुन सु छहाँ ऋतु मद बहंत, पिखंत रूप पर दल पुलंत ॥८६॥
 मंडै न औरि करि आइ मुख्ख, भूलियहिँ पेखि जिन प्यास भूख ।
 सुंडाल किधौ अंजन सुमेर, ढाहन सु बंक गढ़ करन ढेर ॥८७॥
 सुभ दरस जास सेना सिंगार, हरषंत युद्ध मन्नै न हार ।
 ठनकंत कनक घंटा ठनक्क, धमकंत चरन धुंघरू धमक्क ॥८८॥
 सृंखला लोह लंगर सभार, आनै न चित्त अंकुस प्रहार ।
 सिंदूर चेंबर बर सीस सोह, पटबूल भूल पूठहिँ प्ररोह ॥८९॥
 औराक अस्व आरब उतंग, चंचल सचाल जिन रूप चंग ।
 कांबोज कच्छि हय कासमीर, ततै तुषार जनु छुट्टि तीर ॥९०॥
 पढ़ि पानि पंथ अर पवन पंथ, गिनि कनक तोल मोलह सु ग्रंथ ।
 बंगाल बाजि बर बिबिध बान, खंधारि खैंग खिति खुरासान ॥९१॥
 साकति सुवर्ण बर सकल साजि, बनि रवि तुरंग ऊपम सु बाजि ।
 धमकंत धरनि जिन पय धमक्क, फिलती सु भूल मुखमल भलक्क ॥९२॥
 खिजमति सु दार दीनी खवासि, रंभा समान तनु रूप रासि ।
 दासी सुजान नव रूप देह, जानंत मंत पर चित्त जेह ॥९३॥
 भूषन सु हेम नग जरित भव्य, दीनै अपार कंचन सु द्रव्य ।
 मुक्ताफल गुरु बहु मोल माल, भल भेट करै कमधज भुआल ॥९४॥
 मृदु फास कनक सोलह महंत, जरबाफ बसन दुति जिगमिगंत ।
 पटकूल और कहतै न पार, सुखपाल सेज वारै सु सार ॥९५॥
 दाइजा एह नृप मान दीन, पहिराय सकल भूपति प्रवीन ।
 मृगमद कपूर केसरि महक्क, दिसि पूरि सुरभि डंबरू डहक्क ॥९६॥
 अर्चैयषि कर्म सकल अंग, रस रीति राखि रठौर रंक ।
 भल भाव भक्ति भोजन सुभष्य, पूरी यु षंति नव नव प्रत्यक्ष ॥९७॥
 महाराण दाने जनु मेघमंड, उँनयौ कनक धारा अखंड ।
 याचकनि चित्त पूरी जगीस अभिनवा इंद मेवार ईस ॥९८॥
 चतुरंग चंग सेना संजुत्त, राजेस राण जगतेस पुत्त ।
 रठौरि रानि ब्याही सुरंग, आयै यु उदबपुर बर उमंग ॥९९॥

सिँगारि नगर किन्नौँ सुरूप, प्रतिद्वार तुंग तोरन अनूप ।
 दरसंत कंति मधि घौसफार, हीरा प्रबाल मनि मुत्तिहार ॥१००॥
 जरबाफ बसन बहु मुकर जोति, किरनाल किरन तिन इक्क होति ।
 महमहति सुरभि बर पुष्पमाल, बहु भौर भवत सोभा बिसाल ॥१०१॥
 बाजार चित्र कीनै विचित्र, पटकूल जरी मुखमल पवित्र ।
 सिँगारि हट्ट पट्टन सुचंग, अति सोह साज तोरन उमंग ॥१०२॥
 नागरिय नारि बहु बरन नेह, सृंगार सकल सजि सजि सुगेह ।
 गावंत धवल मंगल सुगीत, रमनीक कंठ कलकंठ रीति ॥१०३॥
 उतमांग पूर्ण कुंभह अनूप, भल सौन बँदावहिँ सँमुख भूप ॥
 प्रभु धरत मध्य सोवन पुनीत, ऐ राजसिंह राना अजीत ॥१०४॥
 अति मिलिय प्रजा मनु दधि उलट्ट, पिखंत चित्र नर नारि थट्ट ।
 गौरी अनेक चढ़ि गौख गौख, पेखै नरींद पावंत पोख ॥१०५॥
 यौँ हिदुनाह निय महल आइ, घुरतैँ अनेक बाजित्र घाइ ।
 कुलदेवि मान पूजा सुकीन निति, नित्य सुख बिलसैँ नवीन ॥१०६॥

(कवित्त)

निबि निंति सुख नवीन, राँण बिलसैँ राजेसर ।
 लच्छि लाह यौँ लेत, लेत ज्यौँ लाह लच्छि बर ।
 देत अस्व बहु दान, सूर उगम सोवन सज ।
 पाटंबर सिरपाव गिरुय, गज्जंत देत गज ॥
 मोतीनि माल सोवन महुर, मौज देत महाराण महि ।
 इन होड़ करैँ को नृप अवर, कथन एह कविमान कहि ॥१०७॥

अष्टम विलास

(दोहा)

मेदपाट फुनि मुरधरा, अंतर अचल अपारु ।
तहँ तीरथ सलिता सु तट, रूप चतुर्भुज चारु ॥ १ ॥
देवासुर मानवरु मुनि, आवत जात अनेक ।
बंछित दायक लच्छि बर, बंदत तवत बिबेक ॥ २ ॥
बसत एक थल बैर बिनु, मृग मृगपति अहि मोर ।
मिलत देव दानव सु मन, यदुपति महिमा जोर ॥ ३ ॥
ता तीरथ भेटन सु हरि, उपज्यौ हर्ष अपार ।
राजसिंह महाराण तब, सजि दल बल श्रीकार ॥ ४ ॥
बढ़ी अवाज सु सकल वसु, बजत निसाननि वंभ ।
सजै सूर सामंत नृपु, आनंदित अविलंब ॥ ५ ॥

(छंद पद्धती)

अविलंब सज्जि दलबल अभंग, चढ़ि चित्रकोटपति चातुरंग ।
पटकूल विविधि उन्नत पताक, नौबति निसाँन बज्जत ऐराक ॥ ६ ॥
सिंधुर कपोल पट मद स्रवंत, निर्भरन जानि गिरवर भरंत ।
गुमगुमत भौर गन परि सुभीर, गरजंत सजल जनु धन गुहीर ॥ ७ ॥
सतंग चंग धर संलगंत, सिंदूर तेल सीसहिं सुभंत ।
संदुरत चौर सिर स्रव सु सेत, मह सुंड दंड सोभा समेत ॥ ८ ॥
दुति बिमल युगल दृढ दिग्ध दंत, धरहरत कोट जिन जोर दित ।
ठननंकि नह बहु बीर घंट, उनमूरि विटपि नंघत उभंट ॥ ९ ॥
नूपुर सु पाइ घुँघरू निनाद, रुनमुनत चलत जनु बहत बाद ।
जंजरित भार संकर जँजीर, सचलत चाल चंचल समीर ॥ १० ॥
लहलहत मरुत युत लंब केतु, बैरख सुढाल ढलकंत सेतु ।
पभनंत धत धत पीलवान, तपनीय करांकुस तरित जाँन ॥ ११ ॥

चरखी अगारु चहुँघाँ चलंत, पय भरत इक्क बिरुदनि बढंत ।
 बनि पिट्ट डोल नौबति निसान, सुंडाल सकल सुरपति समान ॥ १२ ॥
 अरबी ऐराक आरब उपन्न, कास्मीर कच्छि कौँकनि सु कन्न ।
 कांबोज जात काबिल कलिग, सैंधवि सुबीर सिहलि सुअंग ॥ १३ ॥
 पय पंथ पौन पथ के प्रधान, बंगाल चाल बर विविधि बान ।
 मंजन सुरंग लाखी सु मोर, गंगा तरंग गुलरंग गोर ॥ १४ ॥
 हरियाल हरित हीर हरि हंस, किरडै कुमैत चंपक सुवंस ।
 सुक पक्ष चास चंचल सलील, अलि रोम रंग अंबरस असील ॥ १५ ॥
 किलकिले कातिले हय कंधाल, तुरकी रु ताजि गरु रंग साल ।
 संजाब बोर मुसकी सतेज, हेखनि सहेख हेखत सहेज ॥ १६ ॥
 सिंगार सार साकति सुवर्ण, जिगमगति जोति नग अधिक अर्ण ।
 गुंथिय सुबेनि खंधहि सुमंत, ततथेइ तौन नट ज्यौ नचंत ॥ १७ ॥
 पखुरिय सजर पखुर सभार, पहुँचै न पंखि पाइनि प्रचार ।
 आरुहै तिनहिँ भट नृप अनेक, सामंत मत्त साधर्म टेक ॥ १८ ॥
 बिरुदैत बीर आजानबाहु, सज सिलह कवच सुंदर सनाहु ।
 संग्राम काम जिन अचल सीम, भारथ समत्थ जनु अंग भीम ॥ १९ ॥
 चौधंट चक्र चौरथ सुचंग, जिन जुत्त धुरा चचल तुरंग ।
 चकडोल चारु कंचन सु कुंभ, संभरिय हेम धन रूप रंभ ॥ २० ॥
 उत्तंग चक्र गंत्री अनूप, सोरठिय सेत जोए सरूप ।
 घननंकि ग्रीव धुंघरनि माल, भ्रूणनंकि चरण भंभर सु साल ॥ २१ ॥
 बिन हंक संक गति गंधवाह, क्षुर शृंग जरित सोवन सराह ।
 बैठे सुषंध बर बहिल बान, पंचांग बास सुंदर सयान ॥ २२ ॥
 पयदल पयोद दल ज्यौँ अपार, उन्नत सु अंग जंगहिँ जुधार ।
 करवाल कुंत कोदंड चंड, सिप्पर सु तौन धर रन वितड ॥ २३ ॥
 धसमसत धपत धर तोब धार, बेधंत पत्र गोरी प्रहार ।
 पति भक्त सक्ति सायुध सु जोध, कल हान थान केहरि सक्रोध ॥ २४ ॥
 दल प्रबल मध्य दीपै दिवान, रवि बिंब रूप राजेस रान ।
 ऐराकि अस्व आरोह जोह, नग हेम जरित साकति सुसोह ॥ २५ ॥

सिरि छत्र सहस दिनकर समान, चामर ढलंत गोखीर बान ।
 बिरुदैत बिरुद बोलत सु बोल, जय हिंदु नाह सासन अडोल ॥ २६ ।
 केदारराय . कट्टन कलंक, पापिन प्रयाग हर पाप पंक ।
 महुवानराय गंगा समान, असुरानराय उत्थपन थान ॥ २७ ।
 उनमत्तराय अंकुस प्रहार, सामंतराय बर सिर सिंगार ।
 असमत्थराय उद्धरन धीर, बंकाधिराय बंधन सु बीर ॥ २८ ।
 दातारराय जलधर सु दान, तप तेजराय भलहलत भान ।
 उत्तंगराय सिरि छत्र एक, इहि भंति बदत बंदी अनेक ॥ २९ ।
 खुरतार मार धरहरिय क्षोनि, झलझलिय जलधि जग्गीय योनि ।
 खल गृहनि परिय खलभल सँपूर, उडि रेनु गैनु अरबरिय सूर ॥ ३० ।
 कीजंत राह मह सैल कट्टि, क्षितिरुह सु क्षीन बन सघन खुट्टि ।
 थल बहत नीर थल नीर ठाह, उरमै कुरंग केहरि बराह ॥ ३१ ।
 आवंत पेसकस प्रति दिसान, बहु नाल बंध नृप भरत आन ।
 पर नृपति कितै बंधन परंत, धन रासि जास कोसहिँ धरंत ॥ ३२ ।
 हय हेख हेख गजराज गाज, करभनि कराह नर वर समाज ।
 कह कह बिसाल कलख सु सोर, बंबरिय बहरि दिसि बिदिसि ओर ॥ ३३ ।
 डगमगति दुर्ग खरहरति खंड, बन गहन दुरत दुज्जन बितंड ।
 राजेस रान सु पयान साल, थरहरति दिक्षि जनु मूंग थाल ॥ ३४ ।

(कवित्त)

थरहरि आसुर थान, खान सुलतान ससंकिय ।
 भू मियानि भामिनी, हीय हहरति हरिलंकिय ॥
 दुरति सु फिरति दरीनि, बाल निज रुदत विमुक्कति ।
 हार डोर सुह मेल, तुटत भूषन बन तक्कति ॥

पर भूमि नगर पुर उजरि प्रज, दिसि दिसि बढिय सु दंद अति ।
 बिन बुद्धि विकल अरि कुल सकल, चढ़त निमुनि चित्रकोट पति ॥ ३५ ॥

सिधुर अस्व सिंगारि, लच्छि नग हेम लेइ लख ।
 कन्या बर करबाल, माल सुगताफल सनमुख ॥
 आवत भेंट अनेक, अनम लुलि लुलि पय लग्गति ।
 गति भति तजत गइंद, जब सु कंठीरव जग्गति ॥

(८५)

भय छाँहगीर बंकै सुभर, चलत चंड चित चँर गहि ।
राजेस राण सु पयान सुनि, मिलत अभिल रखन सु महि ॥३६॥

गहिल गात गुजरात, सीत चढ़ि सोरठ संकत ।
मालव जन मुख मुरझि, खान धर होत सु खंडित ॥
पूरब जनपद प्रचलि, बढ़िय बंगाल उदंगल ।
कासमीर सु कलिग, कूह फुट्टी कुरु-जंगल ॥
पजाब पंच पथ बिचलि प्रज, गौर सिधु धर गिरत गढ़ ।
राजेस राण सु पयान सुनि, दिगाजहू न रहत दृढ़ ॥ ३७ ॥

(दोहा)

कहि पयान महारान कौ, को बरनै कवि इंद ।
कुम्भ पिठि तहँ कसमसत, फन संकुरति फुनिंद ॥ ३८ ॥
गज्जतु घोष गजादि रव, तुरगति तरल तरग ।
दिसि पूरित महाराण दल, सागर ज्यौँ महि संग ॥ ३९ ॥
इहिँ परि घन आडंबरहिँ, कूच मुकाम करंत ।
पतै तीरथ पास पहु, हृदय सु हरष धरंत ॥ ४० ॥
कनक कुंभ धज दंड युत, सोभति सिषर उतंग ।
मंडप बहु मतवारनै, सहसक खंभ सुचंग ॥ ४१ ॥
देवालय देखंत दृग, ठरै सुधा जन साज ।
मुक्ताफल अक्षत समुख, सु बधाए बृजराज ॥ ४२ ॥

(कवित्त)

सु बधाए बृजराज, दृग सु देवालय देखत ।
कनक रजत कर कुसुम, अमल मुक्ताफल अक्षत ॥
कर अंजलि कर कमल, विनमि किन्नौ सिर सावृत ।
भगति भाव भर हृदय, जयतु जदुपति मुख जंपत ॥
डेरा उतंग दिय दिसि विदिसि, राजद्वार हय गय हसम ।
बाजार चौक त्रिक वस्तु बहु, सोह सकल श्री नगर सम ॥ ४३ ॥

प्रभु पद पूजन प्रथम, स्नान किन्नौ सु अंग सुचि ।
बिमल बसन पहिरीय, विचित्र रवि सरिस रूप रुचि ॥

कस्तूरीरु केसरि, कपूर हिँगलु मलयागिरि ।
 घनयक्ष कर्दम घोल, भार कुंदन कचोल भरि ॥
 एक सौ आठ वर रूप कै, भरै कुंभ गगादि जल ।
 कुमकुमा कुसुम केसरि मलय, मधि कपूर मृगमद सकल ॥ ४४ ॥

दधि मधु घृत गोखीर, खंड तंदुल पंचामृत ।
 वर मंडक पकवान, विविध तीवन छतीस कृत ॥
 अमृत फल सरदा अनार, सहकार सदाफल ।
 केला कमरख कलित, सेव राइनि सीताफल ॥
 श्रीफल बिदाम न्यौँजा सरस, पिडखजूरि चिरौँ जि युत ।
 अखरोट दाख पिसिता प्रमुख, को मेवा कहि बरनवत ॥ ४५ ॥

अगररु तगरु अनाइ, प्रचुर पुंगीनि गज किय ।
 तज पत्रज रु तमाल, जायफल लोंग एलचिय ॥
 नागबेलि दल सदल, चारु चोबा अत्रीर अति ।
 अतर जवादि गुलाल, कुसुम चौसर अनेक भति ॥
 बादित्र गीत नाटिक बिबिध, आरति मंगल दीप दुति ।
 धज छत्र चोरें आहूत विधि, सकल सज्ज किय हिंदुपति ॥ ४६ ॥

श्रीपति गृह सिगार, खंभ जरबाफ पटंबर ।
 बंधै व चंद्रोपक, भिचित्र मुक्ता मनि सुंदर ॥
 बंधि द्वार तोरन, सुथार पटकूल मुकुर मय ।
 बिबिध कुसुम मंडप, बनाय रचि तहँ रंभालय ॥
 तिन मध्य सिंहासन कनक कौ, कमलापति बैठन सु किय ।
 स्वस्तिक सँवारि पंचधान कै, दीप धूप फलफूल श्रिय ॥ ४७ ॥

(दोहा)

दीप धूप फल फूल श्रिय, परसति सुरति समीर ।
 गीत नृत्य वादित्र धुनि, गरजत गगन गंभीर ॥ ४८ ॥
 इत्यादिक अविलंब तै, मंगल सकल मिलाय ।
 हरषै हिंदूपति सु हिय, पूजन श्रीपति पाइ ॥ ४९ ॥
 सकल सेन सामंत युत, अस्व हंस आरोह ।
 घन निसान नौबति घुरत, चामर ढलत सु सोह ॥ ५० ॥

बोलत बहु कविवर बिरुद, हिंदूपति हरषंत ।
 प्रति दिसि दुब्बल दीन प्रति, बरषा धन बरषंत ॥ ५१ ॥
 अनुक्रमि हरि गृह आइकै, देखि प्रभू दीदार ।
 रोमांचित चित अंग रुचि, जंपत जय जयकार ॥ ५२ ॥

(कवित्त)

जय जदुपति जगनाथ, जगतरक्षक जगजीवन ।
 जग हितकर जगजनक, निखिल जग दैत्य निकंदन ॥
 केसव श्रीपति कृष्ण, मदनमोहन मधुसूदन ।
 माधव महित मुरारि, मान हरिबंस सु मंडन ॥
 गिरिधर मुकुंद गोविंद गनि, गोवर्द्धनधर गरुरध्वज ।
 गोपाल गदाधर संखधर, चक्रपानि चौबाहु ब्रज ॥ ५३ ॥

वासुदेव विधु बिष्णु, बेप बावन बलि बंधन ।
 वीठल कुंजबिहारि, सु ब्रज बृंदावन भूषण ॥
 बंसीधर विख्यात, बिस्व रूपक बिस्वंबर ।
 वनमाली बैकुंठ, नाथ वसुपाल बेद बर ॥
 बाराह बृषा कपि बिस्व बल, बिहित त्रिविक्रम बिमल मति ।
 वसुदेव नंद बारिद बरन, बारन बर बारुण बिपति ॥ ५४ ॥

पुरुषोत्तम सु पुरान, पुरुष पारग परमेसर ।
 पद्मनाभ पूरन, प्रताप पावन पीतांबर ॥
 पुंडरीक लोचन, प्रमान पावक मुख पीवन ।
 श्रीबल्ल लंछन सौरि, स्याम सुंदर रू स्याम घन ॥
 अहिसेन अधोक्षज अच्युत अज, अघ बक बच्छ अरिष्ट अरि ।
 मह उद्धि मथनरु अनंत मति, हत कैटभ रिषिकेस हरि ॥ ५५ ॥

कमल नयन कंसारि, केसिभंजन कमलापति ।
 कुंजर सानिधिकार, दुष्ट दल मलन दलन दिति ॥
 सारंगपानि सभाग, नाग नत्थन नारायन ।
 सिधु सयन कर सुखद, पुन्य तीरथ पारायन ॥
 दामोदर द्वारावति धनी, यज्ञ मर्त्य संकलित यस ।
 जय जय सु जनार्दन जगत गुरु, राधाबल्लभ रास रस ॥ ५६ ॥

(८८)

जयतु यस्मोमति नंद, नंदनंदन नरकांतक
गोपी प्रिय दधि ग्रहन, कालयवनहिँ उपसांतक ॥
मधु मुर मईन दुअन, हमसि लघुपन माखन हर ।
चकचूरन चाणूर, सबल सिसुपाल क्षयंकर ॥
देवकीनंद रवि कोटि दुति, जरासिधु सम जंग जय ।
दुर्योधन करन दुसासनह, क्षिति अनेक खल कौन खय ॥ ५७ ॥

करिकै ब्रज पर कोप, मुसुलधारनि घन मंडिय ।
बहल बसुमति ब्योम, एक करि अधिक उमंडिय ॥
उदक चढ़त आकास, गोप गोपी सब गइयनि ।
गोवर्द्धन गिरि गह्यौ, भीर पत्ती निज भइयनि ॥
बैराट रूप रचि बिष्णु तब, कर अंगुरि पर धरि अचल ।
बरसंत सत्त अह्निसि अवधि, सो संकट टाख्यौ सकल ॥ ५८ ॥

ध्रुव कौँ ध्रुव करि धख्यौ, पैज प्रहलाद संपूरिय ।
द्रूपदसुता दुकूल, वृद्धि करि कीचक चूरिय ॥
अंबरीस उद्धख्यौ, सघन किन्नौँ सु सुदामा ।
दृष्टि त्रिलोचन दीन, रखि पन रुखमनि रामा ॥
भभ भभरथ पारथ सारथिय, रखि लयै टिट्ठिभिय सुत ।
उद्धरिय अहल्या आप हरि, गज रख्यौ गाहनि गृहत ॥ ५९ ॥

अज्ज सफल अवतार, अज्ज अमृत घन बुढ्यौ ।
अज्ज भयौ आनंद, अज्ज परमेसर तुढ्यौ ॥
अज्ज अमर तरु फल्यौ, अज्ज सुरमनि संपत्तौ ।
फरी मनोरथ माल, अज्ज अंग अंग रंग रत्तौ ॥
सुरधेनु अद्य मिलि सुर सुघट, राज रिद्धि पतै सुरस ।
प्रगतै निधान मह सुख कै, देखत ही यदुपति दरस ॥ ६० ॥

(दोहा)

इहिँ परि करि हरि जस अधिक, प्रनुमि प्रभू कै पाइ ।
अब अनंत अर्चत सुमति, ललित सहित लय लाइ ॥ ६१ ॥
सिंहासन हरि सनमुखहिँ, राजत हिंदू राय ।
बैठे बड़ बड़ भूप तहँ, इंद सभा मनु आइ ॥ ६२ ॥

दीपति अति दुति दीपकनि, घृत घनसार समेत ।
 घसि मृगमद केसरि मलय, द्वारनि करतल देत ॥ ६३ ॥
 गावत बहु गंधर्व गन, बहु बादित्र बजंत ।
 सजि सिंगार बहु सुंदरी, नव नव नृत्य नचंत ॥ ६४ ॥
 बिप्र बेद धुनि उच्चरत, हवि मेवा मधु होम ।
 जव तिल वृहि पटकूलयुत, बिलसि ज्वाल बिन धोम ॥ ६५ ॥
 कलस रजत के उदक भृत, अष्टोत्तर सत आनि ।
 पूजक पावन द्विज करत, स्नान सु सारंग पानि ॥ ६६ ॥

(छंद पद्धरिय)

करतै सु स्नान श्रीकंत काय, बहु गीत नृत्य बादित्र बाइ ।
 ढमकै सु ताम गुह्र जंगि ढोल, निहसै निसान करिकै निमोल ॥ ६७ ॥
 मधु मेघनाद बजै मृदंग, वीणा सु बंस डफ चंग संग ।
 भरहरिय भेरि भरि भूरि नाद, सुनियै न सवन तिन सुनत साद ॥ ६८ ॥
 सु नफेरि संख ऊंकार सार, सहनाइ सरल सुर सौख्यकार ।
 घंटाल ताल कंसाल तूर, झल्लरि झनंकि सुर सोभ मूर ॥ ६९ ॥
 सारंगि पुंगि सुनियै रसाल, द्रम द्रमकि द्रहकि दुरवरि दुभाल ।
 रुण झुणकि जंत्र तिन मधुर तंति, बज्जत पिनाक रीझत सुमंति ॥ ७० ॥
 घन भंति भंति बादित्र घोष, प्रति साद गैँन गज्जत सरोख ।
 खग मृगरु धेनु सुनि नाद सोइ, हत बुद्धि रहै जनु चित्र सोइ ॥ ७१ ॥
 बनिता विचित्र बहु बाल बृद्धि, तजि लाज काज पिखवन बिलुद्धि ।
 रस सरस रीति रचि रंग रोलि, यदुनाथ सीस जल कलस ढोलि ॥ ७२ ॥
 सुकुमार सुरभित तुसित सुचंग, सुचि बास संग अंगोछि अंग ।
 कलधौत धौत पट बिमल कंति, सिर पाग स्वर्ण मनि गन सुभंति ॥ ७३ ॥
 जामा जरीनि कटि पट सजोति, किरनाल किरनि तिन इक्क होति ।
 अद्भुत उतरा संग पीतवान, पंचांग वास पहिरै प्रधान ॥ ७४ ॥
 नग लाल स्वर्ण अवतंस सीस, कुंडल जराउ युग श्रव जगीस ।
 कमनीय कनक नग कंठ माल, बर मुति माल मौक्तिक बिसाल ॥ ७५ ॥

उरबसी हेम मानिक अनूप, पन्ना प्रवाल पुखराज जूप ।
 वहिरखा बाहु युग बाजुबंध, सुश्री करत सोवन संबंध ॥ ७६ ॥
 बरबीर बलय बेढिम सुवर्ण, जिगमिगतिज्योति नग अधिक अर्ण ।
 मुद्रिका पाति पल्लव प्रधान, नवरंग रत्न नव ग्रह समान ॥ ७७ ॥
 सुरली प्रवाल कर अधर मध्य, सु प्रत्यक्ष जानि हरि राग सध्य ।
 मेखला स्वर्ण कटि रत्नसार, पदकरी पाइ बहु धन प्रकार ॥ ७८ ॥
 इहि भंति अलंकरि सकल अंग, सजि रूब छत्र सिरवर सुवंग ।
 कस्तूरि मलय केसरि कपूर, कुंदन कचोल भरि भरि सँपूर ॥ ७९ ॥
 भल चरन जानु कर अंस भाल, उर उदर कंठ भुज स्रवन साल ।
 हरि अरवि अतर चोबा जवादि, अरगजा गंधि सु अबीर आदि ॥ ८० ॥
 चंपक गुलाब जूही चमेलि, सेवन्ति सुरभि रुचि रायबेलि ।
 केवरा करणि केतकी कुंद, मालती माल मचकुंद वृंद ॥ ८१ ॥
 सतपत्र दमन सुगर सुवास, गुमगुमत भौर गन गंध आस ।
 डहडहति स्रवति रस पुष्प दाम, ठहराय ठवत हरि कंठ ठाम ॥ ८२ ॥
 लोवान अगर चंदन अबीर, महमहिय धूप धोमहिँ समीर ।
 सुरलोक सुरभि संपत्त सोइ, सुरनाथ सकल सुर हरष होइ ॥ ८३ ॥
 बर कनक थाल सु बिसाल माहिँ, सँजोइ दीप सह सक सप्राहि ।
 जिगमिगति योति तम छोति हारि, यों सोइ सँमुख आरति उतारि ॥ ८४ ॥

(कवित्त)

आरति दीप उतारि, जपत जयकार नृपति जन ।
 अब सुमोग हरि जोग, बिग्र होवन्त बियक्खन ॥
 कंचन थाल कचोल, कनक शृंगार गंग जल ।
 मेवा बहु मिष्ठान, तप्त सुरही घृत तंदुल ॥
 पूषिका सघृत तीवन प्रचुर, सक्कर अमृत दधि सहित ।
 सु अघाइ कीन मुख हत्थ सुचि, तदनुसार तंबोल घृत ॥ ८५ ॥
 सकल सूर सामंत, अंग चरचै यषि कर्दम ।
 घसि केसरि घनसार, मलय मृगमद सौंधे सम ॥
 अतर जवादि अबीर, चारु चोबा फुलेल बर ।
 कुसुम माल तिन कंठ, सुरभि पसरत साडंबर ॥

अंबर सुरंग तरुवर सधर, उड़त सु लाल गुलाल अति ।
बढ़ि रंग बिलास प्रहास मनु, संध्या राग समान थिति ॥ ८६ ॥

(दोहा)

बंटिय मोहन भोग बर, मेवा घन मिष्टान ।
चरनोदक तुलसी सु दल, सकल लेत सनमान ॥ ८७ ॥
स्वर्ण कुंभ भरि स्वर्ण धन, रजत कुंभ भरि रूप ।
करि कृष्णार्पण हरि सु कजि, भरि भंडार सु भूप ॥ ८८ ॥
मौक्तिक स्वस्तिक लाल मधि, लीलक पट अभिराम ।
घंट कनक धज दंड सौँ, धजबंधी हरिधाम ॥ ८९ ॥
बैठे सायुध सुत सहित, रूप तुला महारान ।
जलधर ज्यौँ जग याचकनि, देत सु बंछित दान ॥ ९० ॥
इहिँ पर सेव अनंत की, प्रभु करि विविध प्रकार ।
हौस मनाई हीय की, सफल कर्यौ अवतार ॥ ९१ ॥
निज डेरा आए नृपति, सकल सेन घन संग ।
दिसि दिसि प्रति महाराण दल, मनौँ महोदधि गंग ॥ ९२ ॥
भल भल भोजन भगति भल, पंचामृत रस पोष ।
पोषै निज प्रति भट प्रभृति, सुनत होत संतोष ॥ ९३ ॥

(कवित्त)

घेवर मुत्तियचूर, खंड चनका रु पतासा ।
गिदोरा दहिबरा, दोवठा खाजा खासा ॥
पैरा खुरमा प्रगट, खेलना गुंफा खसखस ।
कलाकंद कंसार, सरस सीरै सुनिये रस ॥
गुलगुला सकरपारा सबल, देखि दमी दादर भसत ।
इंद्रसा पान ओला प्रमुख, पुरुष नाउँ पंडित पढ़त ॥ ९४ ॥

सु जलेबी हेसमी, अकबरी और अमृती ।
पुरी तिनंगिनी सोंठि, मठी साबुनी निखूती ॥
फैनी फुनि रेवरी, स्वाद घन खंड सँठेली ।
मरकी बरफी पील, सार घनसार सँभेली ॥

कलियान साहि कवि मान कहि, सकर चौकी क्षीर युत ।
मिष्टान विविध पोषै सुभट, जैवत जो जिहि चित रुचत ॥ ६५ ॥

(दोहा)

सत्त अहोनिशि एक सज, प्रतिदिन चढ़त प्रमोद ।
सेवा चढ़ती साँई की, बरतै सघन बिनोद ॥ ६६ ॥

करि सुजात हरि भगति करि, करि निज बंछित काज ।
उदयापुर कौं ऊमहै, राजराण ध्रुव राज ॥ ६७ ॥

घुरि निसानि सु बिहान घन, बनि पताक गन तुंग ।
सजि सिधुर मदभर सबर, ताते तरल तुरंग ॥ ६८ ॥

सजै सकल सामंत नृप, दिनकर दुति दीपंत ।
तिन अगौं तम तुरक दल, प्रति दिसि दूरि पुलंत ॥ ६९ ॥

सेभवाल सुखपाल रथ, बेसरि करम अपार ।
सुधन सलीता तंबु कसि, भरै बिबिधि बहु भार ॥ १०० ॥

कनक तोल ऐराकि हय, चढ़ै राण चतुरंग ।
रज रंजित धरि गगन रवि, उरभूत दलहि कुरंग ॥ १०१ ॥

प्राण पौन प्रेरित प्रबल, गाज गुहिर गति लोल ।
प्रति दिसि पूरित पेखियहिँ, दलज्यौं जलधि कलोल ॥ १०२ ॥

ससकि सेस कूरमि कसकि, मसकि महीधर मेर ।
भलभलि जलनिधि जल भलकि, कंपिय बरुन कुबेर ॥ १०३ ॥

सुखही सुख सौं संचरत, लहु लहु करत मुकाम ।
पिक्खत पुहवि पहार पथ, सजि सजि सहल सकाम ॥ १०४ ॥

अदभुत थानिक पिक्खि इक, सलिता सलिल समेत ।
निकरी ग्रावा फारि नग, दिसि दिसि सोभा देत ॥ १०५ ॥

थपि मुकाम तिन थान कहि, सहल चढ़ै सु सनेह ।
केहरि क्रोड़ कुरंग कपि, गिरिवर पसु अनिगेह ॥ १०६ ॥

नग बिचि जहँ निकरी नदी, देखत तहँ दीवान ।
नीम मात्र तिम नीर मधि, सरवर कौं सहिनान ॥ १०७ ॥

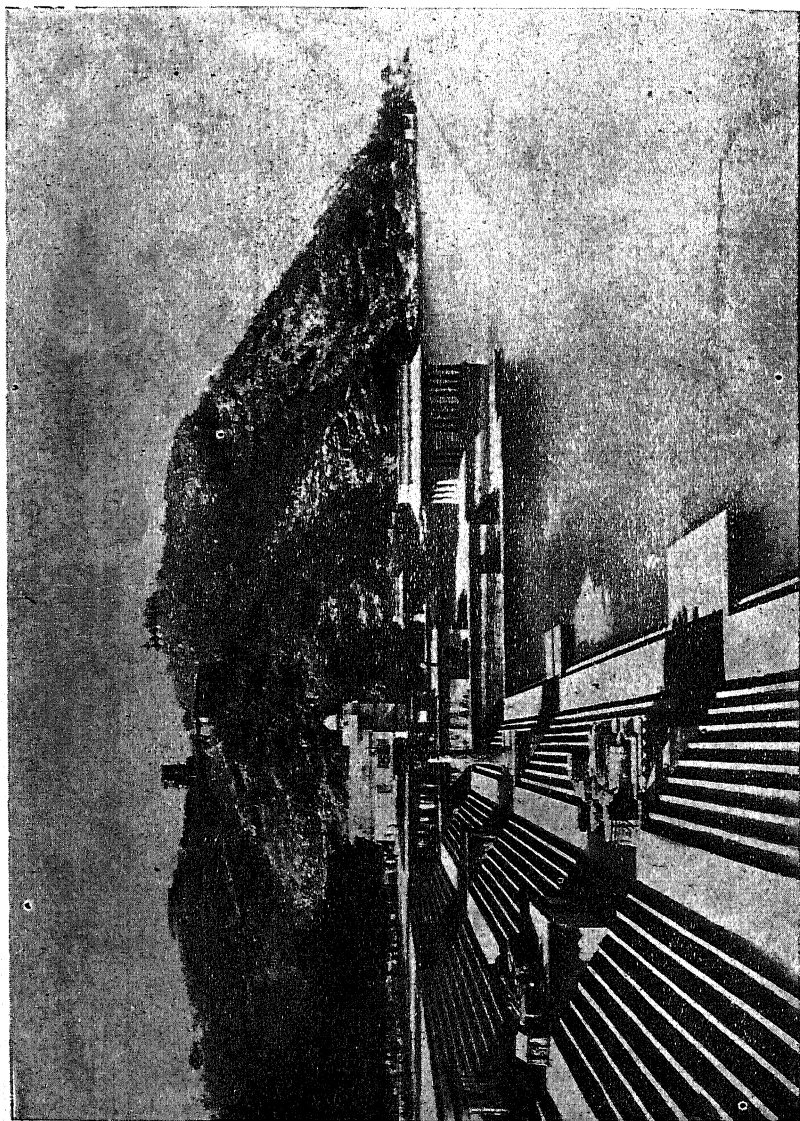
प्रोहित अरु प्रति भट प्रमुख, पूछै पुरुष पुरान ।
 अपरिपूर्ण इन उदक में, बंध्यौ किन बंधान ॥ १०८ ॥
 कहि प्रोहित तब जारि कर, कैलपुरा प्रभु काज ।
 गुरु सलिता ए गोमती, सलितनि में सिरताज ॥ १०९ ॥
 अमर राण इहिँ आइकै, किन्नौ हौ कमठान ।
 परि सरिता पय पूरतैं, बंध्यौ नहीं बंधान ॥ ११० ॥
 बिधि किनहीं जौ ए बँधै, तौ सर सायर तोल ।
 होइ सही कै हिंदुपति, अबनि सुनाम अबोल ॥ १११ ॥
 सुनि ऐसी मह प्रभु खवन, करी हाम सर काज ।
 अनुक्रमि आए उदयपुर, सब दल बहल साज ॥ ११२ ॥
 संवत सतरासै सु परि, संवच्छर दस सात ।
 उतख्यौ मास असाढ़ कौ, बिन घन वज्रत बात ॥ ११३ ॥
 स्रावन किंपिन हूँ ख्यौ, भाद्रव परि दुर्मख्य ।
 मेघ बिना नव खंड महि, प्रज चल चलिय प्रत्यख्य ॥ ११४ ॥
 बिकल भयै नर अन्न बिनु, भूखहिँ अमख भखंत ।
 कंत तजत निज कामिनी, कामिनि तजत सु कंत ॥ ११५ ॥
 मात पिता हूँ निठुर मन, बैचत बालक बाल ।
 ररवरि रंक करंक परि, दिसि दिसि रौर दुकाल ॥ ११६ ॥
 पसु पंखी पाए प्रलय, प्रजा प्रलय पावंत ।
 कोपिय काल कराल कलि, धीर न कोइ धरंत ॥ ११७ ॥

(कवित्त)

पश्चिम पवन प्रचंड, बजत अहनिसि सु बंध बिनु ।
 अथिर उतारु आभ, प्रात प्रहरेक बहत पुनि ॥
 क्रूर अधिक करि किरन, तपत मध्यानहिँ तापन ।
 प्रचलत पश्चिम पहर, अनिल सीतल असुहावन ॥
 निसि तार नक्षत्र निर्मल निखरि, बहल बिद्युत गाज बिन ।
 भयभीत चिह्न दुरभक्ष के, देखि सकल जग भौ दुमन ॥ ११८ ॥

(छंद हनुफाल)

भयभीत परि दुरभक्ष, प्रज बिचलि चलिय प्रत्यक्ष ।
 प्रगट्यौ सु प्रलय प्रचंड, खरहरिय क्षिति नव खंड ॥ ११६ ॥
 नद नदिय सर सुखि नीर, धनवंत हूँ तजि धीर ।
 तुलि अन्न कंचन तोल, महआघ मिलत न मोल ॥ १२० ॥
 उत्तमहु तजि आचार, आदरिय एकाकार ।
 सुचि सौच सत संतोष, दुरि गए अन्नहिँ दोष ॥ १२१ ॥
 बल बुद्धि भिनय बिबेक, कुल जाति पाँति सु टेक ।
 परहरिय निय परिवार, लागंत अन्नहिँ लार ॥ १२२ ॥
 सगपन सयान सु गेह, नर नारि हूँ तजि नेह ।
 भिन अन्न जग बिललंत, भूखेति अभख भखंत ॥ १२३ ॥
 उलटे बराक अनंत, चहुँ बरन दीन चवंत ।
 गृह गृहनि ग्रास उच्छिष्ट, अति अरस बिरस अनिष्ट ॥ १२४ ॥
 मार्गंत कहि माँ बाप, कुननंत करत कलाप ।
 दारिद्र तनु दुरवेस, कस्वित रु बढि नख केस ॥ १२५ ॥
 लिलहरित पट लटकंत, जन जन सु जिन्ह हटकंत ।
 कर मध्य खप्पर खंड, बपु हीन क्षीन बितंड ॥ १२६ ॥
 भिननंत मक्खी भूरि, चित चलित चित्ता पूरि ।
 जहँ जुरत कछु तहँ खात, तजि वर्ग मात रु तात ॥ १२७ ॥
 फल फूल मूल रु पात, तरु छालि हूँ न रहात ।
 ररबरत लोक बराक, खोजंत भाजी साक ॥ १२८ ॥
 मन निठुर करि पिय मात, लहुबाल तजि तजि जात ।
 केई सु विक्रय करंत, निज बाल तजत रुदंत ॥ १२९ ॥
 परि पुहवि रंक करंक, को गिनति कहि करि अंक ।
 दिसि बिदिसि बढि दुर्व्वास, पल चरनि पूरिय आस ॥ १३० ॥
 पसु पंखि प्रलय करंत, चुग चार हूँ न लहंत ।
 मानसहिँ मानस लगि, जहँ तहँ सु रोरति जगि ॥ १३१ ॥
 इल नगर पुर उद्वंस, नर जात बहु निर्बस ।
 मुरझंत जल बिनु मीन, त्यौँ बिस्व अन्न बिहीन ॥ १३२ ॥



राजसमुद्र का एक दृश्य

(६५)

(कविच)

बसुमति अन्न बिहीन, दीन दुखित तनु दुब्बल ।
ससत निसत सरफरत, कितकु तरफरत ग्रहित गल ॥
कितकु करुन कुननंत, मक्खि भिननंत दसन मुख ।
कितकु धीर न धरंत, हीय हहरंत दुसह दुख ॥
टलटलिय बिटल घन टलबलत, गिरत परत अंतक हरत ।
हट श्रेणि चौक त्रिक उमग मग, रंक करंकति ररवरत ॥ १३३ ॥

(दोहा)

अनाधार असरन असत, आसा भंग अतीव ।
प्रलय होत प्रज पंखि पसु, जलचर थलचर जीव ॥ १३४ ॥
जानि महा दुर्भक्ष जब, दयावंत दीवान ।
प्रतिपालन जग की प्रजा, मंत मतै मतिमान ॥ १३५ ॥
सिखरी बिचि गोमति सलिल, बंधि महा बधान ।
करै कोटि घन खरच करि, सरवर उदधि समान ॥ १३६ ॥
प्रजा सकल इहिं बिधि पैलै, भगै भूष दुर्भक्ष ।
अचल सुजस प्रगटे अवनि, सुकत भेर सदृक्ष ॥ १३७ ॥
ठीक एह ठहराइकै, सज्जि सैन चतुरंग ।
आए गोमति सलिल तहँ, अद्रि अनेक उत्तंग ॥ १३८ ॥
लेइ सु महुरत सुभ लगन, परठि नीम पायाल ।
लगै नारि नर केइ लख, दूर भग्यौ सु दुकाल ॥ १३९ ॥

(कविच)

संबत्सर दह सत्त, सत्त दह संवत सोहग ।
मण्डि महा कमठान, जानि दुरभष सकल जग ॥
पोस अष्टमी प्रथम, बार मंगल वरदाइय ।
नायक हस्त नक्षत्र, सिद्धि बर योग सुहाइय ॥
तिहिं दिवस सकल मंगल सहित, परठि नीम पायाल मधि ।
राजेस राण रचि राजसर, नितु नितु बहु बिलसंत निधि ॥ १४० ॥

सहस एक गजधर सु, मंत कर कनक रूप गज ।
 एक एक गजधर सु, अग सत सलपकार सज ॥
 विबुध बिस्वकर्मा, समान सु सयान सलप सुत ।
 बेलि बृक्ष बहु बिधि, बिचित्र सुर असुर अलंकृत ॥
 लागि बेलदार नर उभय लख, क्षिण क्षितिधर भारंत खनि ।
 कंधै कुदाल दंताल कसि, तै नर उंडति लरक गनि ॥१४१॥

चउलख प्रबल मजूर, लगै कमठान नारि नर ।
 सकट अद्ध लख सकल, वृषभ लख लक्ख महिस वर ॥
 लक्खक करभ सु लेखि, और प्रवहन अपरंपर ।
 दिन प्रति सहस दिनार, खरच लगात साडंबर ॥
 प्रति दिसहिं कोस पंचदस परधि, हार डोर लागि गिरि गहन ।
 राजेस राण रचि राजसर, धर पद्धर किय सघन बन ॥१४२॥

सलित पाट सुबिसाल, अधिक डोरी अष्टादस ।
 मध्य पुलिन मरुथल, समान चलि सकत न मानस ॥
 बहुत बाह षट्कतु, प्रबाह बल सीर सजल जल ।
 सकति थान सोभा, निधान तिन तट सीहरि तल ॥
 थिर थपि नीम तिन थह प्रथम, पट्ट कट्टि पत्थर प्रबल ।
 घन रहट चरस ढिँकुरी करि, सोषि रसातल जल सकल ॥१४३॥

उगम दिसि तिन अग, अबल इक कोस सहज तट ।
 तिन अगौ फुनि नीम, दीन दुअ कोस दिग्घ थट ॥
 गज पण तीस गुहीर, साल सु बिसाल साढ़ सत ।
 गज समान ग्रावा, गरिष्ठ मनु मंडि महीभृत ॥
 सीसक सु पंक चूना सघन, चेजागर लक्खक चुनत ।
 ढोवंत सहस नर मिलि सलप, सो सुबत्त कहत न बनत ॥१४४॥

खनत केइ नर खानि, पल्ल कट्टंत पहारनि ।
 करत अंस चौरंस, सुघन जंबू रस भारनि ॥
 गढ़त केइ गुरु ग्राव, सह सुनीयै न टंकि सुर ।
 सकटनिकेइ धारंत, सबर मिलि मिलि सहसक नर ॥
 आनंत उमगनि ममा परि, ज्यौ पटगर ताना तनत ।
 राजेस राण रचि राजसर, सो सुबत्त कहत न बनत ॥१४५॥

सत बरस संबंध, नीम सोमंत लगै नित ।
 लगी दिनार सु लक्ख, अधिक जल रासि उल्लिखत ॥
 बंध्यौ तदनु बंधान, हिदुपति कीन महा हठ ।
 मह धन भयै मजूर, भग्यौ दुरभय भैर भठ ॥
 मंगल गावंत मजूर तिय, लुं ब मुं ब भूषन लसति ।
 आसीस बंदति अनेक तिय, चिरजीवहु चीतौरपति ॥१४६॥

इंद्रसभा अनुहारि, सभा सरवर उपकंठहि ।
 मंडि आप महाराण, अंग उलसत उतकंठहि ॥
 सब नर तियनि सुनाइ, हुकम श्रीमुखहिं हंकारत ।
 करहु सुधारि सु काम नवल कमठान निहारत ॥
 चहुँ आर दोगा चौकसिय, केइ सावधानी करत ।
 अवलधि पौनि छत्रीस प्रज, हार भोर जग मन हरत ॥१४७॥

सेढी बुरज सवार, चुनत केई चेजागर ।
 सिंगी काम सपल्ल, पल्ल ढोवंत केइ नर ॥
 कितै महिष भरि गारि, पालि पूरत पर्वत सम ।
 गाहत कै गजराज, काज दृढ़ बंध क्रमं क्रम ॥
 केई सु खोर चूना बहत, खनत केइ सर मध्य खिति ।
 राजेस राण रचि राजसर, इहि परि किय आरंभ अति ॥ १४८ ॥

बरस सत बरसंत, प्रबल जलधर रितु पावस ।
 मिलि बहु सलित मिलाप, जलधिज्यो जानि महाजस ॥
 सलित भयौ सु बिसाल, पंचदस कोस प्रमानह ।
 गंगाजल गोखीर, सुधा सेलरी समानह ॥
 जंगम जिहाज सु गढ़ाई जब, जल क्रीड़ा क्रीडंत नृप ।
 सीतल तरंग मारुत सहित, हरत ग्रीष्म ऋतु दाघ तप ॥ १४९ ॥

(छंद हंसचार)

पढ़ मंतह नीम पयाल पइट्रिय सु बिसालह गज साढ सयं ।
 गजधर इग सहस सल्प बिधि ग्यायक बेलदार नर लाख बियं ॥
 ऊँडह सु अलेख लगै आरंभहिं हरषित चित्तर मुख हँसै ।
 राजेसर राण महोदधि रूपहिं राजसमुद्र रच्यौ सुरसै ॥ १५० ॥

गज्जंतै जल गंभीर गोमती नीर निरंतर सबल नदी ।
 बंधी गुरु हठ करि उभय अद्रि बिचि वृद्धि पालि अति तुंग बदी ॥
 बहु कोस प्रमित दीरघ बलवंती दुर्ग रूप चहुँ दिसि दरसैं ।
 राजेसर राण महोदधि रूपहिँ राजसमुद् रच्यौ सुरस ॥ १५१ ॥

संख्या को कहैं बहू तहँ सेदी सत्रल बुरज जानिकि सिखरी ।
 तिन ऊपर महल विपुल अति तुगह कनक मोल कोर न निकरी ॥
 नव लाख लगौ धन तिहुँ नव चौकिय लच्छिवती गुरु पालि लसैं ।
 राजेसर राण महोदधि रूपहिँ राजसमुद् रच्यौ सुरसैं ॥ १५२ ॥

जल भखौ अथग गंग जल जैसौ सुचि सुगंध सीतल सरसं ।
 षोडस बर कोस सहज गोखीरह सुनियै सब देसहिँ सुजसं ॥
 पीयूष सरिस पय युग मुख पीवत अधिक अमर नर तनु उल्हसैं ।
 राजेसर राण महोदधि रूपहिँ राजसमुद् रच्यौ सुरसैं ॥ १५३ ॥

मंड्यौ मह यज्ञ मिलै बहु महिपति द्विज चारन घन भट्ट दलं ।
 गज बाजी यूथ सत्थ सेवक गन जाँनि कि उलटै उदधि दलं ॥
 सुप्रतिष्ठा कीन सत्त दह संवत बर्त्तीसै उत्तम बरसैं ।
 राजेसर राण महोदधि रूपहिँ राजसमुद् रच्यौ सुरसैं ॥ १५४ ॥

मासोत्तम माह रच्यौ सु महोत्सव पेखन आये देवपती ।
 सुर बर तेतीस कोटि सिद्ध साधक जत्थ जुँरै नव नाथ जती ॥
 बनि व्योम विमान बिष्णु सिव ब्रह्मह विविध कुसुम सुरभित बरसैं ।
 राजेसर राण महोदधि रूपहिँ राजसमुद् रच्यौ सुरसैं ॥ १५५ ॥

गंधर्व नचंत सु गायन गावत गज्जत नभ घन राग गहैं ।
 बादित्र बहू विधि घोष सु बज्जत रवि ससि रथ थिर होइ रहैं ॥
 वेदंतीय विप्र सु वेद बदंतह हवन करंत सु संत रसैं ।
 राजेसर राण महोदधि रूपहिँ राजसमुद् रच्यौ सुरसैं ॥ १५६ ॥

दसमी रविवार बिचारि विजय दिन सर प्रतिष्ठ्यौ हुअ सुखं ।
 रचि कनक तुला राजन मन रंगहिँ दूरि करन दारिद्र दुखं ॥
 जाचक जन केइ सु कीन अजाचक दान कि पावस घन बरसैं ।
 राजेसर राण महोदधि रूपहिँ राजसमुद् रच्यौ सुरसैं ॥ १५७ ॥

हय दीनै दत्त सु केइ हजारह करी केई बगसीस कियै ।
 दीनै बहु ग्राम अनमाल दौलति युग युग लौ जाचक जियै ॥

करिहैं को यज्ञ सु इन कलिकालहिं यज्ञ सु इन सम जगत जसैं ।
राजेसर राण महोदधि रूपहिं राजसमुद् रच्यौ सुरसैं ॥१५८॥

धनि धनि तुम बंस पिता तुम धनि धनि धनि जननी जिन उयर धरै ।
धनि धनि तुम चित्त उदार धराधिप काम सु चितित सफल करै ॥
पुहर्वीं तुम धन्य सकल हिंदूपति धनि धनि तुम जीवित धुरसैं ।
राजेसर राण महोदधि रूपहिं राजसमुद् रच्यौ सुरसैं ॥१५९॥

निरखंत सरोवर जानि पयोनिधि पालि कि पब्बय रूप पहू ।
सलिता संमिलन अधिक जल संचय बिलसत जलचर जीव बहू ॥
सारस कलहंस बतक बग सारंग चक्रवाक युग सुख बसैं ।
राजेसर राण महोदधि रूपहिं राजसमुद् रच्यौ सुरसैं ॥१६०॥

प्रगटे जे तित्थ प्रयाग रु पुष्कर एकलिंग व अर्बुद सिखरं ।
द्वारामति सेतुबंध रामेस्वर रेवतगिरि मथुरेस वरं ॥
सुकृत तिन दरस स्नान जिन सलिलहिं कलिमल संकट दुष्ट नसैं ।
राजेसर राण महोदधि रूपहिं राजसमुद् रच्यौ सुरसैं ॥१६१॥

गुरुतर कल्लोल मरुत युत गजहिं जग जन सेवित जास जलं ।
केई नर नारि चतुष्पद क्रीडत दिसि दिसि पूरित नीर दलं ॥
आयौ इहिं थानकि क्षीर उदधि इहि मेदपाट महि दरस मिसैं ।
राजेसर राण महोदधि रूपहिं राजसमुद् रच्यौ सुरसैं ॥१६२॥

नैननि निरखंत करहिं दृग निरमल स्नान सकल संताप हरैं ।
पय पान करंत सु पीड़ प्रणासहिं कवि मुख कितीक किति करैं ॥
अवतार सफल जिन दृग अवलोकित राज सरोवर चित्त रसैं ।
राजेसर राण महोदधि रूपहिं राजसमुद् रच्यौ सुरसैं ॥१६३॥

कोटिक धन जिन लगौ जिन कमठानहिं कोटिक धन युत जज्ञ कियौ ।
निय नाँउ सुजस प्रगट्यौ नव खंडहिं जय हिंदूपति सफल जियौ ॥
सुर भवन सुजस बोलै इह सुरगुरु बिबुधाधिप सुनि सुनि बिहसैं ।
राजेसर राण महोदधि रूपहिं राजसमुद् रच्यौ सुरसैं ॥१६४॥

चंपक सहकार सदाफल चंदन श्रीफल पुंगी सीयफलं ।
सहतूत असोक बिदाम सरौसिय रंभा राइनि ताल कुलं ॥

दारिम जंभीरि दाख मौलसिरी तरवर सरवर सकल दिसे ।
राजेसर राण महोदधि रूपहिँ राजसमुद् रच्यौ सुरसे ॥१६५॥

अखियात अचल युग युग अवनीपति निस्चल किय भल निज नाम ।
ससि रवि सुर सैल अवनि सुर सलितह कंस मलन सिव बिधि काम ।
श्री देवि सिवा सावित्री सुरवर तो लौ कित्ति कलानि हँसे ।
राजेसर राण महोदधि रूपहिँ राजसमुद् रच्यौ सुरसे ॥१६६॥

अंवर वर पत्र मिखी पय अंबुधि लेखिनी बज्र सुरेस लिखै ।
अवदात तऊ परि पार न आवहिँ राण सु हिदू धर्म रखै ॥
सुरही जन संत सु विप्र सहायक बसुधा गय हय धन बगसै ।
राजेसर राण महोदधि रूपहिँ राजसमुद् रच्यौ सुरसे ॥१६७॥

रबिबंस बिभूषन जय हिदू रवि तिलक तुही सब हिदु जन ।
असुरेस उथप्पन बीर अभंगह घन दायक तुम सुजस घन ।
राजै राजेद रिधू तुम राजस दौलत काइम प्रति दिवसै ।
राजेसर राण महोदधि रूपहिँ राजसमुद् रच्यौ सुरसे ॥१६८॥

सविता ज्यौ ससी सलिलनिधि ज्यौ सर रटियै ज्यौ बासर रजनी ।
केहरि मृग कनक लोह अंतर कहि मौक्तिक जल कन मुकर मनी ॥
इह भाँति सु राण असुरपति अंतर यौ उत्तम कवि उपदेसै ।
राजेसर राण महोदधि रूपहिँ राजसमुद् रच्यौ सुरसे ॥१६९॥

खल खंडन देव तुम्हारौ खगाह को समरांगन होइ करै ।
अवनीपति को तुव मीढ़ सु आवहिँ तोयधि को निज बाहु तिरै ॥
जग राण सुनंद सदा चिरजीवहु बोलत मान सु ज्ञान बसै ।
राजेसर राण महोदधि रूपहिँ राजसमुद् रच्यौ सुरसे ॥१७०॥

(कवित्त)

सु रच्यौ राजसमुद्, रूप अट्टम रयणायर ।
राजसिंह महाराण, हरष करि हिदू दिवायर ॥
उत्तम तीरथ अवनि, सफल भव होत संपिखत ।
राजनगर रमणीक, राजगढ़ सुख छहूँ ऋतु ॥
धनि धनि सु बंस पित माय धनि, अवनि नाउ नितु नितु अचल ।
जयदेस राख पाटै सु जय, बद्रत मान बाजी विमल ॥१७१॥

(१०१)

महियल जितै मंडान, देखियै जितै दिगंतह ।
सूर जितै संचरै, पवन जेतै पसरंतह ॥
जितै दीप अरु जलधि, जानि ससि तारक जहँ लग ।
जितै बृष्टि जलधार, जितै नर नारि रूप जग ॥
इल जितीक अष्ट कुली अचल, बसुमति देखिय सम बिसम ।
कवि मान कहै दिट्ठौ न कहँ, सरवर राजसमुह सम ॥१७२॥

नवम विलास

(दोहा)

श्री राजेसर राण जय, जित्तन औरंगजेब ।
खल खंडनि खूमान ए, टलै न ध्रुव ज्यौं टेव ॥ १ ॥
देव कहा दानव कहा, असपति कहा यु आइ ।
राजसिंह महाराण सौं, जोति न कोई जाइ ॥ २ ॥
अचल रज्ज इकलिंग बर, महियल ज्यौं गिरि मेर ।
रिधू राण राजेसवर, जिन किय आलम जेर ॥ ३ ॥
किहि विधि बीत्यौ ए कलह, उपज्यौ क्यौं सु उपाइ ।
सो संबंध गुंथिय सरस, सब प्रति कहौ सुनाइ ॥ ४ ॥
आदि बैर हिदू असुर, धरनि धर्म दुहुं काम ।
कोटिक इन बितै कलप, सबल करत संग्राम ॥ ५ ॥
बसुमति हिदू नृप बड़े, इला हिंदु आधार ।
धरनि सीस हिदू धनी, भामिनि ज्यौं भरतार ॥ ६ ॥
जोर भयै महि स्लेच्छ जब, तब हरि जानि तुरंत ।
आप धरै अवतार दस, आनन असुरनि अंत ॥ ७ ॥
इल त्यों हरि अवतार इह, राजसिंह महाराण ।
औरंग से असुरेस सौं, जीतै जंग जु आन ॥ ८ ॥
असपति परि औरंग अति, कूर कपट को कोट ।
जिन मारै बंधव जनक, अल्लह दै बिचि ओट ॥ ९ ॥

(छंद पद्धती)

दिल्लीस साहि औरंग दिह, रुक्केव पिता रज्जहिं बइठ ।
बिस्वास देइ तिन हनै बंधु, ऐ ऐसु दुष्ट उर रज्ज अंधु ॥ १० ॥
निय गोत सकल करिकै निकंद, सुलतान भयौ छल बल सुछंद ।
मग्नै न चित्त पर बुद्धिमंत, दस्ख समान इहमेवत ॥ ११ ॥

जिन जीति प्रथम उज्जैनि जंग, सेना असंख कमधज्ज संग ।
 दस सहस लुत्थि पर लुत्थि दिन्न, हय गय अनेक भय छिन्न भिन्न ॥१२॥
 संग्राम धौलपुर फुनि सु सज्जि, भय मज्जि साहि सूजा सु भज्जि ।
 पत्तौ सु भूमि दरियाव पार, इन साहि भीति तोऊ अपार ॥१३॥
 अल्लह सु देइ निज अंतराल, सु मुरादि साहि उर जानि साल ।
 कर करिय छुरिय लहु बंधु कंठि, गुरु भार बंधि जिन पाप गंठि ॥१४॥
 जय पत्त तृतिय अजमेर जुद्ध, बंधू सु साहि दारा बिरुद्ध ।
 सोई कहंत लीनौ संहारि, यो सकल सहोदर जर उखारि ॥१५॥
 एकल्ल भयौ पतिसाह आप, पहु प्रगट कलंकौ ज्यौ प्रताप ।
 न सुहाइ जास षट्दरस नाँउ, धीधिदु दुद्ध बहु पाप धाँउ ॥१६॥
 नव लख तुरीय पख्खर सनाह, गय सहस पंच मनु बारिबाह ।
 सज होत सीघ्र जिन चढ़त सैनु, रवि चंद बिब ठकै सु रेनु ॥१७॥
 जिन साहिजाद पन अप्प जोर, घंघल मचाइ गढ़ कज्ज घोर ।
 दौलताबाद लिन्नो यु दुर्ग, सुलतान तास पहुँचाइ स्वर्ग ॥१८॥
 गुरु गाढ़देव गढ़ देस गुंड, नृप छत्रसाहि जसु देत दंड ।
 हरि वर्ष हुँन इक लखख हेत, लगौ जु प्रेत मनु भखख लेत ॥१९॥
 फुनि लयौ दुर्ग पूना प्रधान, थिर धरिय तत्थ अप्पन सु थान ।
 भारत्य दक्खनिय राइ भंजि, रख्यौ सु बोल असपत्ति रंजि ॥२०॥
 बस किनह बीजापुर बिसाल, भरि दंड भूमि रक्खै भुवाल ।
 इहि भाँति दिसा दक्षिन्हि आँन, जिन साहि कीन जानत जिहान ॥२१॥
 दिसि पुब्ब सिद्धि आसाम देस, पयपंथ जास तिहुँ मास पेस ।
 मंडलह सोइ दरियाव मज्झ, जगतो सु लई जिन करिग मुज्झ ॥२२॥
 कुरु कासमीर कासी कलिग, बैराट धाट बब्बरह बंग ।
 बंगाल गौड़ गुज्जर बिदेह, सोरठ सिंधु सोबीर छेह ॥२३॥
 सुलतान खान मरहड सार, पंजाब पंच पथ सिंधु पार ।
 मेवात मालपद आदि देस, जिन साहि आन बित्थर बिसेस ॥२४॥
 दरबार जास घन दोइ दीन, अनमिष्व नैन ठड्डै अधीन ।
 सेवंत जोरि युग कर सु ठीक, महाराज राज बर मंडलीक ॥२५॥

उमराव खान इहि बिधि अनेक, प्रनमंत जास पय छंडि टेक ।
 द्वादस हजारि जनु हुकमि दूत, परवार छंडि परदेस पूत ॥२६॥
 इक भरत दंड इक मिलत आइ, पारीयहिँ इक्क पतिसाह पाइ ।
 इक परत बंदि जसु नृप उधत, परिकर समेत तिय भ्रात पुत ॥२७॥
 चौरासि अवल्लिय रूप चारु, चौबीस पीर क्रामाति धार ।
 थप्यै सु अप्प तुरकान थान, काजी कतेश कलमा कुरान ॥२८॥
 रसना रटंत महमद रसूल, ईदह निवाज रोजा अभूल ।
 बाराह छंडि गो सत्थ बैर, सुदि पष्ण बीय बटै सु खैर ॥२९॥
 गरबर बंदंत पारसि गुमान, प्रासाद तित्थ खंडै पुरान ।
 महकाल थान मह जीव मंड, औरंगसाहि आलम अदंड ॥३०॥

(दोहा)

करै सोइ असपति कुरस, सब दिन हिदू सत्थि ।
 जिन उज्जैनी जंग जुरि, लुंठिय असुरनि लुत्थि ॥ ३१ ॥
 फुनि हुरंम धवलापुरहि, कर लुट्टी कमधज्ज ।
 महाराय जसवंत नै, कोटिक कनकह कज्ज ॥ ३२ ॥
 सैमुख न मिलै साहि सौँ, कूर राय कमधज्ज ।
 सिह रूप जसवंतसिह, जोधपुरा युग रज्ज ॥ ३३ ॥
 सो दुख सल्लै साहि डर, गस धरि बंझै गैर ।
 मुरधरपति महाराय सौँ, बहै अहो निसि बैर ॥ ३४ ॥
 मुँह मिटौ रुटौ सु मन, पारधि ज्यौँ सुर पुंगि ।
 असपति औरंगसाहि यौँ, कमधज हनन कुरंगि ॥ ३५ ॥

(कवित्त)

अखै औरंगसाहि, सुनहु जसवंतसिह नृप ।
 महियल तुम महाराय, तरिण ज्यौँ प्रगट रज्ज तप ॥
 अब हम तौ असपती, भयै तप पुब्ब भाग बल ।
 तुम आवहु हम सेव, अधिक तौ देहु अन्य इल ॥
 हँ बिचि रसूल अब तुम रु हम, बहुरि कबहुँ कर नह बिरस ।
 सब लखै कोह इह निपुन हूँ, गहिय साहि इहि भंति गस ॥३६॥

(१०५)

(दोहा)

कपट सु लखि कमधज कहि, साहि कहौ सो संच ।
परि तुम बायक पलट तैं, खिन न करौ खल खंच ॥३७॥
तिन कारन तुम दुसह तप, जिय हम सह्यौ न जाइ ।
दीजै हुकम सु दूरि तैं, धर त्यों लीजै धाइ ॥३८॥

(कवित्त)

सँमुख न मिलाँ साहि, निकट तुम सीस न नाऊँ ।
बदौ तुम बिस्वास, और चढ़ि तीर न आऊँ ॥
देस संधि दिगपाल, रहौँ रिपु थानहिँ रक्खन ।
मैं इह मीनति होइ, और कछु बहुत न अक्खन ॥
सु बिहान आन सिर धारिहौँ, तपै सोइ दिल्ली तखत ।
कमधज राइ जसवंत कहि, राखौँ पतिसाही रखत ॥३९॥

(दोहा)

नावै ढिग कमधज नृप, सुनियौ औरंग साहि ।
निफल पुत्र मति जानि निज, मतै मंत मन माहि ॥४०॥

(छंद पद्धरा)

फुनि रच्यौ एक पतिसाह फंद, निय कैद करन कमधज नरिद ।
फिरि लिख्यौ दुतिय फुरमान मान, बहु नरम भास राजस बिनान ॥४१॥
अवनी सुव धारै अधिक आन, परगना एकतीसह प्रधान ।
सजि उभय तुरंगम कनक साज, सिरपाव ऊँच जरकस समाज ॥४२॥
मुख बैन और यों अक्खि मिट्ट, आलम पगार तुम बिरद इट्ट ।
ध्रुव टेक एक तुम सोइ धर्म, कमधज राय बर ऊँच कर्म ॥४३॥
पतिसाहि थंभ तुम भूमिपाल, दिल्ली यु नगर तुम ही सु ढाल ।
अहमदाबाद थानह सु एँन चिर रहौ हुकम हम मन्नि चैन ॥४४॥
सुप्रसंस इती अनुगहि सिखाइ, पतिसाहि बेगि दीनों पठाइ ।
पहुँतौ सु दूत महाराज पास, सु बधार अपि गुदरे वृहास ॥४५॥
अहमदाबाद थानह सु अक्खि, सिरपाव आदि गुदरे स सक्खि ।
राखै सुथान फुरमान राज, बसुमती बधारह बाजिराज ॥४६॥

सिरपाव साहि पठयौ यु सोइ, तिनसौँ अमेल ज्यौँ तेल तोइ ।
 तिहिँ कज तेह पहिख्यो न ताम, कछु जानि तत्थ कलिकूट काम ॥४७॥
 पहुठ्यौ सोइ खावास पानि, महाराय मंत जनु देव मानि ।
 संतोषि दूत पठयौ यु साहि, तपनीय साज हय दीन ताहि ॥४८॥
 सिरपाव मुति माला सतेज, सुभ खान पान आसन सहेज ।
 मनुहारि करी इक राखि मास, पठयौ सु दिल्ली पतिसाह पास ॥४९॥
 औरंगसाहि भेज्यौ सु अत्थ, परख्यौ नरिंद सिरपाव पत्थ ।
 पहिराइ अन्य पुरुषहिँ सु प्रीति बर हंस तास तनु तैं व्यतीत ॥५०॥
 ए ए सुबुद्धि कमधज्ज अंग, सब कहत सूर सामंत संग ।
 घण घल्लि साहि विस्वासघात, महाराय करी सादूल मात ॥५१॥
 पतिसाह जोर किँनौ प्रपंच, राठौर-राय चूक्यौ न रंच ।
 जग मज्झ जास तप भाग जोर, किँ करै तासु रिपु छल कठोर ॥५२॥
 अवलोकि असुर पति कृत अनीति, भगौ बिसास नृप मन अभीति ।
 अमरप गुमान बाढ़्यौ अछेह, राखै अमेल जनु अद्रि रेह ॥५३॥
 इक कहै पुञ्च पच्छिम सु एक, पग पगहिँ पंथ भाषा प्रत्येक ।
 धर धरै इक्क बर क्षत्रि धर्म, कलि करै इक्क घन म्लेच्छ कर्म ॥५४॥
 बाराह इक्क इक सुरहिँ बैर, इक हनत हक्कि इक करत गैर ।
 इहिँ भंति उभय नृप भौ अमेल, सल्लै सु साहि उर जानि सेल ॥ ५५ ॥
 नन छल्यौ जाइ कमधज्ज नाह, अभिनव सु बुद्धि अंबुधि अथाह ।
 चढ़ि समुख युद्ध जो करौँ चूक, इनसौँ न तऊ जितौँ अचूक ॥ ५६ ॥
 सब एक होइ एहिँ हिंदु साज, राजेस राण सगपन सकाज ।
 हाड़ा नरिंद गढ़पति हठाल, भल भावसिंघ बुँदी भुवाल ॥ ५७ ॥
 तौ लेहिँ दिखी चढ़ै तुरंग, जुरि जोर घोर हम सत्थ जंग ।
 बर बीर धीर बल विकट बंक, सुलतान चित्त यौँ पत संक ॥ ५८ ॥

(कविच)

सकै चित सुलतान, द्यौस निसि मन न मिटै डर ।

जोधपुरा जसवंतसिंघ महाराइ जोरवर ॥

न मिलै चित निराट, सैल पाषाण रेह सम ।

अबुलफज्ज उख्यौ, धरै धर इक्क क्षत्रि ध्रम ॥

(१०७)

सिरपाव साहि औरंग कौ, पहिरै नहि कबहुँ सु पहु ।
अति टेक लियै असुरेस सौ, बैर भाव राखै सु बहु ॥ ५९ ॥

(दोहा)

जहाँ बैर तहाँ बैर बहु, मेल तहाँ बहु मेल ।
मन बित भगौ ना मिलै, तैसेँ तोय रु तेल ॥ ६० ॥

(कवित्त)

बढ़य बैर तैं बैर, मिलन तैं मिलन बढ़य मन ।
बित्त बित्त तैं बढ़य, रिनह तैं बढ़य अधिक रिन ॥
बुद्धि बुद्धि तैं बढ़य, रज्ज तैं बढ़य रज्ज रिधि ।
लोभ लोभ तैं बढ़य, सिद्धि तैं बढ़य सकल सिधि ॥
बढ़य सु बीज बर बीज त, मान मान तैं बढ़य महि ।
अवगाढ़ साहि औरंग तैं, गाढ़ अधिक राठौर गहि ॥ ६१ ॥

मन भगौ नन मिलय, मिलय नन भगौ मुत्तिय ।
सार भग्ग नन संधै, पल्ल रेहा सु प्रपत्तिय ॥
कोटिक कियै कलाप, दूध फट्टौ न होय दहि ।
बाक हीन फिरि बाक, किंपिनन होइ लोक कहि ॥
तुठौ यु तार जोरै तऊ, परै गंठि दुहु मज्ज पुनि ।
औरंग करै सनमान अति, मिलै नहौ महाराय मनि ॥ ६२ ॥

इक कहि क्षत्रो ऊँच, एक तुरकान सु अक्खहिँ ।
बिधि रक्खहिँ इक बेद, राह कुतबाहिक रक्खहिँ ॥
बधै इक्क बाराह, इक्क उर दुड्ड सुरहि उरि ।
रटै इक्क मुख राम, इक्क रसना रसल ररि ॥
मनै सु इक्क दिसि पुब्ब मन, इक पच्छिम दिसि अभिनमय ।
जसवंतराय दिल्लीस युग, राति चौस बादहिँ रमय ॥ ६३ ॥

(दोहा)

जसपति राजा जीव तैं, ससकन भग्गी साहि ।
सल्लै आड़ौ सेल ज्यौँ, औरंग के उर मॉहि ॥ ६४ ॥

(१०८)

(कवित्त)

जीवंता जसवंतराय, मुरधरहिँ रट्टवर ।
मिथ्यौ न कबहूँ मान, साहि औरंगहि सरभर ॥
सैमुख न किय सलाम, आन असपती न अक्खिय ।
कज सु जान्यौ कियौ, हइ हिंदवानी रक्खिय ॥
महाराज सोइ पतौ मरन, ब्रह्म विष्णु शिव जासु बस ।
ए ए असार संसार इह, सार एक युग युग सुजस ॥ ६५ ॥

(दोहा)

युगल पुत्त जसराज के, युगलहिँ लहु पन जान ।
बरस इक्क पतै सु बय, सहस किरनह समान ॥ ६६ ॥
ते नृप सुत लहु जानि तब, अरि औरँग सुलतान ।
पिता बैर घन पुत्त सौँ, पोषन लग्न सु प्रान ॥ ६७ ॥

(कवित्त)

बैरी न तजै बैर, जानि निज समय जोरवर ।
मूसहि ज्यौँ मंजार, मच्छ ज्यौँ बगल मज्झ सर ॥
राजा जसपति रख्यौ, अहोनिशि हम सौँ अड्यौ ।
अंगज तिनकै एह, जोर इनको कुल जड्यौ ॥
पारौध पिसुन ए पत्तले, संपति हय गय लेहु सब ।
चितै सु साहि औरंग चित, इह औसर आयौ अजब ॥ ६८ ॥

(दोहा)

इह औसर आयौ अजब, महाराज गय मोष ।
भू असपतिहूँ अब भयौ, दूरि गयौ सब दोष ॥ ६९ ॥
बैरी स्वान बिडारियै, कहँ लोक यो कथ ।
यवन सु थप्पौँ जोधपुर, ए बालक असमथ ॥ ७० ॥
राजा बिन को रट्टबर, जुरिहँ हम सौँ जंग ।
धरौँ तुरक नृप मुरधरा, इह चितय औरंग ॥ ७१ ॥
पठ्यौ दूत सु जोधपुर, करि पतिसाहि किताब ।
सकल रट्टबर सत्थ सौँ, सो कहि जाइ सिताब ॥ ७२ ॥

(१०६)

(कविच)

सकल रटुबर सत्थ, सुनहु सामंत सूर वर ।
जे राजा जसवंत, अधिक संचै धन आगर ॥
सो मंगै सुलतान, साहि औरंग समत्थह ।
तौ सु योधपुर तुमहिँ, सकल मुरधर धर सत्थह ॥
बगसै सु फेरि सु बिहान वर, महिरवान फिर होइ मन ।
खपि जाय खान उमराव तसु, धरे सु साहि खजान धन ॥७३॥

(दोहा)

तागीरी न तरकि तुमहिँ, मुरधर देस महंत ।
प्रभु सेवा तै पाइहौ, औरहि अवनि सु अंत ॥७४॥
इहि पतिसाही रीति अति, क्रूर न मिट्य कोइ ।
अचल चलथ सलसलय अहि, जल जो उत्थल होइ ॥७५॥
सुनियो कमधज्जह सकल, मते मंत मतिमान ।
पातिसाहि जान्यौ पिसुन, अक्खै करि अभिमान ॥७६॥

(कविच)

हम जोधपुरा हिंदु, धनी हम आदि मुरधर ।
हम कुल इती न होइ, दंड दै रहै साहि दर ॥
जो कोपै यवनेस, तऊ इह धर सिर सटै ।
राखै हम रजपूत, क्रूर दानव दल कटै ॥
आसुरी रीति नाहीं इहाँ, धन गृह दै रक्खै धरनि ।
यो कहौ साहि औरंग सौ, फुरमावै ऐसी न फुनि ॥७७॥

(दोहा)

जान्यौ नृप जसवंत कौ, पत्तौ ही पर लोक ।
ऐसी फुनि औरंग यू, फुरमाओ जिन फोक ॥७८॥
जानौ कबहुँ एह जिन, हम तुम हुकमी होइ ।
धन सटै रक्खै धरनि, खग्ग महाबल खोइ ॥७९॥

(कविच)

खेती हम कुल खग्ग, खग्ग हम अखय खजानह ।
खग्ग करै बस खलक, नाम हम खग्ग निदानह ॥

(११०)

खल दल खंडन खग्ग, खेत इच्छत हम खग्गह ।
 क्षिति रक्खन फुनि खग्ग, अहितु भग्गौ इनि अग्गह ॥
 खग धार तित्थ क्षत्री धरम, आवागमनहिँ अपहरन ।
 सो खग्ग बंध हम सूर सब, धरय न साहि खजान धन ॥८०॥

धन खजान नहिँ धरय, करय नन एह नवल कर ।
 जे कीनी जसराज, सेव सो करिहँ सुंदर ॥
 आगे हू आलमह, भये बड़ बड़े महा भर ।
 किनहि न ऐसी कीन, धरै किन तुरक मुरधर ॥
 निस्वै यु एह ह्वै नहीँ, रसना ए नर पट्टिहौँ ।
 कमधज्ज रज्ज करतार किय, महियल सो क्यों मिट्टिहौँ ॥८१॥

(दोहा)

जा ऐसी यवनेस सौँ, जंपहु दो कर जोरि ।
 किपि न दै रट्टौर कर, कैसी लक्ख करोरि ॥८२॥
 बेगि गयौ दिल्ली बहुरि, दूत साहि दरबार ।
 सकल उदंत सुनंत हीँ, असपति कुपि अपार ॥८३॥

(कवित्त)

कितिक एह कमधज्ज, हमहिँ सत्थै रखै हठ ।
 दौलति हमहिँ यु दीन, सु तो समुझै न चित्त सठ ॥
 रसा हमारी रहै, बहुरि हम सौँ खग बंधै ।
 राजा करि हम राखि, सर यु हम ही पर संधै ॥
 कृत हीन सकल का पुरुष ये, कुटिल तैं यु सूझै करौँ ।
 असपति साहि औरंग हौँ, धाराघर भुजबल धरौँ ॥८४॥
 बैरी, ए विष बेलि, फलै जनु रूष सरिस फल ।
 जैसौ नृप जसवंत, भयौ त्याही ए हँ भल ॥
 मारवारि धर मारि, बिढिग इन गिन गिन बढौँ ।
 करि पद्धर गढ़ कोट, केवि जन पद तैं कढौँ ॥
 ल्याऊँ सु खजाना लच्छि सब, कहौँ सोइ निस्वै करौँ ।
 असपतीसाहि औरंग हौँ, तौ भल दिल्ली पै भरौँ ॥८५॥

यौ कहि करि अभिमान, तबल टंकार त्रहंकिय ।
 बजै चढ़न सुबग्ग, हेट हय गय रथ हंकिय ॥
 नारि गोर धज नेज, बान कमनैत बिबिधि परि ।
 कुहकबान नीसान, तोब सब्बान सोर भरि ॥
 वतुरंगिनि सज्जिय असंख, चमु जनु बित्थुरिय समुह जल ।
 बढ़ी अवाज घन सकल बसु, जगि अगि आराब भल ॥ ८६ ॥

सहस तीन सुंडाल, मेघमाला बिसाल मनु ।
 अंजन गिरि उनमान, अंग चंगह उतंग घनु ॥
 भिलि कपोल मद भरत, गुंज मधुकर ग्रणणंतह ।
 दसन सउज्जल दिग्घ, घंट धुंघरू घ्रणणंतह ॥
 पंचरंग भूल पटकूल मय, सुज्झिय ढाल सिदूर सिर ।
 पीलवान हथ अंकुस प्रबल, बनि बहु बरन पताक बर ॥ ८७ ॥

उभय लक्ख बर अस्व, सजड पख्खर सपलानह ।
 पंखी बेग पवंग, पवन पय पंथ प्रधानह ॥
 ऐराकी आरबी, खैंग कबिला खुरसानी ।
 साणौरा सिंहली, कच्छि कांबोज किहौणी ॥
 कास्मीर किहाड़ा कौंकनी, चलत जानि मारुत चपल ।
 खुरतार मार धरहरिय खिति, प्रचलि सैल खुलि ईस पल ॥ ८८ ॥

पयदल सेन प्रचंड, करषि कोदंड उदंडह ।
 सनध बद्ध सायुद्ध, चित अहमेव सुचंडह ॥
 तौन सकति कटि तेग, कुंत अरुढाल सु कत्तिय ।
 गुरज हत्थ किन गरुअ, रोस भरि दिट्ठि सु रत्तिय ॥
 मुररंत मुंछ मयमत्ता मनु, केइ तोब कंधै बहय ।
 धमकंति धरनि जिन पय धमक, रुपिपाय रिन मुखर रहय ॥ ८९ ॥

सुभर रत्थ बहु सख, कवच बगतर कल हंकित ।
 खच्चर भरित खजान, सहस इक डोरि सु सोभित ॥
 बहु बिधि रखत बखत्ता, करम भरि भार अनंतह ।
 चढ़थौ बाजि चकतेस, घोष नौबती घुरंतह ॥
 मचि सोर जोर रव लोक मुख, हय हींसतु गज्जंत गय ।
 सुनिथै न सह घन भरि खवन, भूमि सकल हयकंप भय ॥ ९० ॥

सत्तारि खॉन सुसत्थ बलिय उमराव बहुत्तारि ।
 तरु वन धन तुहंत, पुहवि उन मग्ग मग्ग परि ॥
 रवि नभ ढंकिय रेनु, चलत गिरि भय चकचूरह ।
 सर सलिता दह सुक्कि, पसरि दिसि दिसि दल पूरह ॥
 फनधर सभार संकुरिय फन, कठिन कुंभ खुप्परि कटकि ।
 परि पंच कोस सु पराव पहु, मंड रुपि बहु बिधि भटकि ॥ ६१ ॥

कूच कूच बहु करिग खरिग त्रय त्रय स कोस खिति ।
 आए गढ़ अजमेर, प्रगटि आवाज जगत प्रति ॥
 मारवारि मेवार, खंड खैरार खरभरि ।
 बागरि छप्पन बहकि, डहकि गढ़वार चित्त डरि ॥
 कांबोज कुक्क परि कलकलिय, प्रचलिय कच्छ बिभच्छ पह ।
 चलचलिय चहो दिसि चक्क चढ़ि औरंग साहि प्रताप यह ॥ ६२ ॥

(दोहा)

गड्डि मंड अजमेर गढ़, अप्प साहि औरंग ।
 सवा लाख हय सेन सौ, रह्यौ सु रढ़ घन रंग ॥ ६३ ॥
 सथ तुरंग सत्तारि सहस, सहिजादा सजि सेन ।
 पठ्यौ मुरधर देस पर, लछि कमधज्जी लेन ॥ ६४ ॥
 सो सिताब आवत सुन्यौ, सज्यौ रट्टवर सत्थ ।
 हय गय पयदल घन हसम, सहस बतीस समत्थ ॥ ६५ ॥
 जोघपुरह तैं यवन दल, पंच कोस सु प्रमान ।
 आइ पत्थौ जाँन कि उद्धि, आडंबर असमान ॥ ६६ ॥
 अनुग मुक्कि तिन अक्खि इह, सुनहु रट्टवर सूर ।
 करौ कलह हम सत्थ कै, सौपौ घन संपूर ॥ ६७ ॥
 लेहु निमिष विश्राम लटि, आए हो तुम अज ।
 कत्तिह सही हम तुम कलह, कही बहुरि कमधज्ज ॥ ६८ ॥
 बीत्यौ बासर बत्तही, परी निसा तम पूर ।
 छल करिकै तब रिपु छलन, सजै रट्टवर सूर ॥ ६९ ॥

(११३)

(कवित्त)

अद्ध रयनि तम अधिक, छलन रिपु इक्क कियौ छल ।
संड पंच सय शृंग, जोइ युग युग हलाल भल ॥
हंकिय सो वर हेट, उभय चर अरि दल अभिमुख ।
अप्प चढ़ै दिसि अवर, लियै वर कटक इक्क लख ॥
पिखिय चिराक प्रद्योत पथ, संड समुख धाए असुर ।
उत तैं सु वीर अजगैव कै, परै आइ अरि सेन पर ॥१००॥

(छंद भुजगी)

परै धाइ अरि सेनं रोस पूरं, सजै सेन सायुद्ध रडौर सूरं ।
कियै कंठलंकालिकंकालिकूरं, भनकी युखगौ बजी भाक भूरं ॥१०१॥
मची मार मारं जनं मुखं मुखे, भिलै जानि गो मंडलं सीह भूखे ।
सरं सोक बज्जी नभं ढंकि सारं, भटक्के घनं सोर आराब भारं ॥१०२॥
घटक्के धरा धुंधरं पूरि धोमं, बढै बीर बीरा रसं लग्गि व्योमं ।
फुरै योध हत्थं महा कूह फुट्टी, इतैं आसुरी सेन पच्छी उलट्टी ॥१०३॥
धपै धींग धींगं धरालं धमक्कै, चहौं कोद तैं लोकपालं चमक्कै ।
जपै इट्ट जप्पं जुरै जोध जोधं, करौं कंक बंकै भरै भूरि क्रोधं ॥१०४॥
मुरै सार सारं ननं मुख्ख मोरै, पटे टट्टरं बान सन्नाह फोरै ।
धरै सीस नच्चै कमधं प्रचंडं, मही भिन्न भिन्नं रुरै रुंड मुडं ॥१०५॥
लरै द्रोण के सीस पच्छै लटकै, कहूं कंठ ज्यौं हड्ड जाडै कट्टकै ।
घनैं घाउ लग्गौ कितै बीर घूमै, झुकतै धुकतै कितै फेरि भूमै ॥१०६॥
हहक्कं तहक्कं कितै हाय हायं, परै धंखि खितं मरै हत्थ पायं ।
परै दीप मज्जै कितै ज्यौं पतंगा, उछं छेनि छंछै करै होम अंगा ॥१०७॥
भभक्कंत सौनं कटै कै भुसुंडं, बिना दंत दंती परै है बिहंडं ।
बहू बान बेधै कुननंति बाजी, गए चून है पैदलं मीर गाजी ॥१०८॥
सिवै संग है उतमंगा सरोजा, चवंसट्टि लागी टगी चित्त चोजा ।
पिये सौन पानं बहै बाह पूरं, बहै बाहु जंघा मुजंतं बिरूरं ॥१०९॥

बिना सत्थ केतै परै लत्थ बत्थ, रनं रोस रत्तै रूपै पाइ हत्थै ।
 मचै मुट्टि युद्धं मनौं मल्ल मल्लं, अरे मत्त माहिष्य ज्यौं द्वै अडुल्लं ॥११०॥
 कितै कातरा काय ज्यौं एन कंपै, नचै नारदं तुंबरू जैति जपै ।
 गहकै सिवा चित्त गोमायु गिद्धं, लहकै पशू पंखिनी मंस लुद्धं ॥१११॥
 कितै डूब जमदट्ट कट्टै कटारी, भरं मुंभए भीम ज्यौं रोस भारी ।
 तिनं मोह माया तजै गेह तीयं, पुकारै बकारै मनु छाक पीयं ॥११२॥
 सराहै रु बाहै कितै सैल सैलं, चुवै रत्त आरत्त ज्यौं नीर चैलं ।
 तुटै चाप चर्मं धजा तेग त्रानं, बरं युद्ध आनुद्ध में भो विहानं ॥११३॥
 फिरै पील सूनै परै पीलवानं, लुटै लच्छि लुंटाक पिक्खै सु प्रानं ।
 हयं नंखि रंडं नियं छंद हिंडै, बली तत्थ बड़ हत्थ रट्टौर तडै ॥११४॥
 मनौं पाथ पांथोधि छंडी मृजादा, सबै सेन सत्थै भगी साहिजादा ।
 भगी सेन सुलतान की मन्नि भीतं, बड़ी जैति कमधज्ज सत्थै बदीतं ॥११५॥
 नियं जैति मन्नी यु बगौ निसानं, जपै देव जै जै सुरंगें न यानं ।
 खलं खंडि खगें वरं खेत मुज्जयौ, बहू लुत्थि आलुत्थि किन जाइ बुज्जयौ ॥११६॥
 परै मीर सै अट्ट रिन इक्क पंती, गिनै कौन है पैदलं और दंती ।
 भयौ खेम पेमं सबै अप्प सत्थै, कहै मान यो छंद रट्टौर कत्थै ॥११७॥

(कवित्त)

कलह जीति कमधज्ज, सेन भगी सुलतानी ।
 मंड नेज भूकजोरि, तोरि डेरा तुरकानी ॥
 हय गय लुट्टि हजार, लुट्टि केउ लाख धन लिन्नौ ।
 स्वामि बिना संग्राम, कहर अरि दल संकिन्नौ ॥
 पैतीस कोस पच्छौ पुल्यौ, सहिजादा सुबिहान कौ ।
 पतै सु बीर सब जोधपुर, हठ रख्यौ हिंदुवान कौ ॥११८॥

(दोहा)

परि पुकार अजमेर पुर, सुनि औरंग सु बिहान ।
 कमधज्ज जुरि जीतै कलह, सेन भगी सुलतान ॥११९॥
 जानै हिंदू ज्योरवर, तजै न टेक निदान ।
 कलह कियै नावे सु कर सोचै चित्त सुलतान ॥१२०॥

(११५)

करतैं तौ हम ए करी, राठौरनि सौँ रारि ।
इन अमौँ फुनि आहुटैं, है पतिसाही हारि ॥१२१॥
फिरि बसीठ फुरमान लिखि, पठयौ सैं पतिसाह ।
करन मेल कमधज्ज पै, राखन रस दुहुँ राह ॥१२२॥

(कवित्त)

बुज्जय बचन बसीठ, मिट्ट घन इट्ट सुद्ध मन ।
सुनहु रट्टवर सूर, बीर तुम युद्ध बियक्खन ॥
कीनौ हम ए क्रूर, प्रबल तुम प्राण परक्खन ।
परि तुम बड़ रजपूत, राह रखन अभंग रन ॥
हम तुम सुप्रीति ज्यौँ आदिहै, त्यों राखहु रस रीति तुम ।
आखै सु साहि औरंग अब, भूलि न कौ रक्खौ भरम ॥१२३॥

भूलि न राखहु भरम, नरम अति करिग चित्त तिय ।
सजि चंतुरँगिनि सेन, प्रबल हय गय पयदल प्रिय ॥
हम पै आवहु, हरषि, निरखि नृप जसपति नंदन ।
रीझि करौँ राजेंद्र अप्पि मुरधर आनंदन ॥
इनमें अलीक जौ होइ कछु, सुकत तौ हम फोक सब ।
कमधज्ज सुतौ सुलतान कहि, अलिय टेक मंडौ न अब ॥१२४॥

(दोहा)

अलिय टेक मंडौ न अब, जपै यौँ यवनेस ।
रस राजस दुहुँ राखियै, करि सब दूरि कलेस ॥१२५॥
मन्त्री सब कमधज्ज मिलि, सांत लख्यौ सुलतान ।
नृप सुत करि अमौँ नृपति, सजि दल बल संधान ॥१२६॥
आए चढ़ि अजमेर गढ़, पय भेटे पतिसाह ।
नृप सुत युग किन्नै निजरि, असपति चित्त उमाह ॥१२७॥

(कवित्त)

इक दह हय गय एक, सज्ज, सोवन सिंगारिय ।
मनि इक मुत्तिय माल, उभय चामर अधिकारिय ॥

(११६)

इक करबाल अनूप, एक जमदाढ़ सु अच्छिय ।
पातिसाह प्रति पेस, लख्ख इग रुब सुलच्छिय ॥
कमधज करी रस रंग करि, भयौ मेल दुहुँ दीन भल ।
हरख्यौ सु साहि औरंग हिय, आण दान बरती अचल ॥१२८॥

(दोहा)

कहि आलम कमधज सुनहु, योगिनिपुर हम जाइ ।
नृप गुरु सुत करिहैं नृपति, बहु सनमान बढ़ाइ ॥१२९॥
तिहिँ कारन हम सत्थ तुम, चलौ सकल चित चंग ।
प्रभु सब करिहैं पछरी, भूलि न जानहु भंग ॥१३०॥
बहु विधि बचन बिसात तैं, चूक न चितिय चित ।
ढिल्लि नैर ढिल्लीस सौँ, सब कमधज संपत्त ॥१३१॥
सेव करत नृप सुतन सौँ, बासर बहुतक बित्त ।
परि न देत महराय पद, असपति चित अपवित्त ॥१३२॥

(कवित्त)

ढिल्लीपति लखि ढिल्लि, कथन कमधज कहावहिँ ।
पातिसाह परवरदिगार, कज्जु किन गहर लगावहिँ ॥
हम आए प्रभु हुकुम, देस हम हमकुँ दिज्जै ।
थपि जोधपुर थान, नृपति गुरु सुत नृप किज्जै ॥
सतपुरुस बैन डुल्लै न सहि, ध्रुव सु एह उर धारियहि ।
रस कियै रसहि रस राखियै, अरज इती अवधारियहि ॥१३३॥

सुनि सुबोल सुलतान, उलटि उलटी इह आखिय ।
रस हम तुम कहा रह्यौ, सो ब तुमही चित साखिय ॥
आगै हूँ तुम ईस, बह्यौ हमसौँ गुमान बहु ।
जुरिग उजैनी जंग, सेन हय गय मिंडिय सहु ॥
फुनि लुटि हुरम धवलापुरहि, सल्ल रीति सल्लै सदुष ।
सो राज रीति तुम संग ही सोचि कहौ इहि कौन सुख ॥१३४॥

रखण कनक अरु रूप, घनी तुम जे संचिय घन ।
सो हम अप्पहु सज्ब, गिनिब हय गय खचर गन ॥

(११७)

तौ सु मेल हम तुमहिँ, पुहबि तबही तुम पावहु ।
अत्र हम सौँ अरदास कहा इह वृथा कहावहु ॥
मन्नै सु कौन महाराय के पुत न जानै कब प्रगटि ।
मयमत्त भयौ जनु पंचमुख, पातिसाह बचनहिँ पलटि ॥१३५॥

(दोहा)

रिपु जन मन राखैं न रस, गुन परि को न गहंत ।
पन्नम कौ पय प्यावतैं, समझि करैं चित संत ॥१३६॥

(कवित्त)

रिपु जन कै रस कहा, कहा तिन बचन त्रिसासह ।
कहा पिसुन सु प्रतीत, कहा अरि कौ इकलासह ॥
महुरै कौ कहा मीठ, कहा हिम सैल सीत जग ।
कहा स्व प्रगटित अगनि, कहा पय पोषित पन्नग ॥
पतिसाह सु बोल पलटि कै, स्रु लम्गै सुख जान रुख ।
सुभ सीख तास कौ सीखवै, लायक नर जो मिलिय लख ॥१३७॥

(दोहा)

सुनि ऐसी राठौर सब, भयै रोस भर भार ।
सब पतिसाही सेन पर, तुष्टै ज्यौँ खहतार ॥१३८॥

(छंद मोतीदाम)

जगै कमधज महा रन योध, कियै दग रत्त भयै भर क्रोध ।
बजी बर बीरन हक्क बहक्क, छुटै जनु इम्भ महा मद छक्क ॥१३९॥
धरातलि धावत उठि धमक्क, चहुँ दिसि दानव देव चमक्क ।
कढ़ी कर नागिनी सी करबाल, जितं तित ढाहत है गज ढाल ॥१४०॥
लसै मनु लोह कि अग्नि लपट, झनंकत नह खरी खग भट्ट ।
खलं दल कीजत खंड बिहंड, जितं तित मीर परै त्रिन मुंड ॥१४१॥
कटक्कत हड्ड सुजड्ड करार, करै जनु कट्टिय सैल कवार ।
भभक्कत सौन सुइम्भ भसुंड, जितं तित जोर मच्यौ खल खंड ॥१४२॥
परै जनु पत्थर रूप पठान, हयै जमदादनि गट्ट जुवान ।
भजै नर कायर भारथ भीर, गजै प्रति सहनि व्योम गुहीर ॥१४३॥

कितै बिन सीस नचंत कमध, लड़बड़ मत्थ लटकत कंध ।
 कितै घन घाइन छक्क घुमंत, जितं तित दौरत पीसत दंत ॥१४४॥
 उभंटिय आसुरि सेन अलेख, जितं तित सत्थर है रहै सेस ।
 गिर्नै कुन गंक्खर भक्खर ग्यान, बलोचिय लोदिय बिद्धिय बान ॥१४५॥
 ररब्बरि खब्बरि रुम्मिय रुंड, मंमोरिय भूरिय भभर मुंड ।
 रनं घन रोलिय मत्त रुहिल्ल, जितं तित मच्चिय रत्त चिहल्ल ॥१४६॥
 खुरेसिय खम्मा कियै खय काल, हवस्सिय होइ रहै यु बिहाल ।
 सु सेंधर मुच्छिय केसरि बानि, जितं तित जाइ परै पय पानि ॥१४७॥
 इहाँ बिधि आलम कै मुँह अग, जितं तित जंग महा भर जग ।
 भखौ दरबार भग्यौ भहराय, भगौ यवनेस सु अंदर जाय ॥१४८॥
 खरभरि आसुरख्खम जिहान, जितं तित रुक्खिय आवन जान ।
 जरे दरवाननि गढ्ढ कपाट, घनं परि घेर रुकै जल घाट ॥१४९॥
 रलंतलि लोग परी पुर रौरि, दुरै नर भगि दई द्रढ़ पौरि ।
 गृहं गृह कंचन रुब गइंत, भगौ बहु भामिनि बाल रइंत ॥१५०॥
 गहँ कुन कप्पर सार किरान, धरप्पर ठिप्पर ठिल्लहिँ धान ।
 मची घन लंबी कूह कराल, चहौँ ढिग होइ रह्यौ ढकचाल ॥१५१॥
 मुखं मुख जक्खिय मारहिँ मार, हवै नर मेछिय केउ हजार ।
 ठंदोरिय ढिल्लिय किन्न सु ढिल्ल, कियै गढ़ कोट उथल्ल पुथल्ल ॥१५२॥
 बिहंडिय खंडिय खेणि सुहट्ट, जितं तित कीजत गेह कुघट्ट ।
 लबकहिँ लुट्टहिँ लुट्टक लच्छि, गए तिन नाहर नवन गच्छि ॥१५३॥
 बिहँसिय योगिनि वीर बेताल, महेस सु गुंथहिँ मच्छिय माल ।
 भरप्पहिँ पंखिनि गिद्धिनि, मुंड, उडै नभ केक गहँ पल तुंड ॥१५४॥
 जितं तित लगिय लुत्थित जेट, पसू पल चारिनि पूरिय पेट ।
 बढ्यौ रस बैरिज सेन बिभच्छ, सुरासुर मन्निय अद्भुत अच्छ ॥१५५॥
 अरै नन आसुर, अइह आइ, लगी जनु मारुत ग्रीषम लाइ ।
 चक्कह चूरि चमू किन्न चून, फिरै हय हींसत सिधुर सून ॥१५६॥
 ससकहिँ थकहिँ औखंसमहिँ, कलंमलि बित्त उठंत कराहि ।
 हूहकहिँ चक्कहिँ मिडहिँ हत्थ, महल्लनि मव्व डुलावहिँ मत्थ ॥१५७॥

(११६)

गए कितहूँ तजि मीर गँभीर, नहों सु नवाबनि कै मुँह नीर ।
तुरकन कोइ रह्यौ हमतीर, भिरै इन सत्थ करै हम भीर ॥१५८॥
इहाँ बिधि युगिनि नैरहि आइ, बली कमधज्ज सुखग बजाइ ।
चलै चतुरंग चमू निय लेइ, दमामह दुइनि कै सिर देइ ॥१५९॥

(कवित्त)

ढिल्लि नयर करि ढिल्ल, ढाहि आबास ढँढोरिय ।
दुइ महल दलमलिय, बग्घ के असुर बिरोलिय ॥
चूरि चकत्ता चमू, चंग हय गय चतुरंगह ।
लुट्टि अनंत सुलच्छि, रजत अरु कनक सुरंगह ॥
भयभीत साहि औरंग भय, जरि कपाट अंदर दुरिय ।
कमधज्ज सकल रक्खन सु कुल, कलह केलि इहि बिधि करिय ॥१६०॥

(दोहा)

करि यौँ दिखिचपुर कलह, रिन अभंग राखैर ।
उद्धसिय असुरान अति, अरयन कौ मुँह और ॥१६१॥
पहर तीन युगिनिपुरहिँ, पारि ढारि परजारि ।
कीन कुरूप कुदरसनी, नाइक बिन त्यों नारि ॥१६२॥
करि अगौँ महाराइ कै, पुत प्रभाकर रूप ।
चलै सज्जि चतुरंग चमु, अप्पन इला अनूप ॥१६३॥
आड़े जे आए असुर, सकल लिए सु सँहारि ।
मारवारि पतै सुमहि, प्रमुदित सब परिवार ॥१६४॥

(कवित्त)

आए मुरधर इला, जीति योगिनिपुर जंगह ।
सूर रठवर सेन, सकल हय गय भर संगह ॥
घोष निसान घुरंत, जोध पतै सु जोधपुर ।
जिन जिन की जो अबनि थपि तिन तिन सुथान थिर ॥
आलम औरंग महंत अरि, अति उद्धत आसुर अकल ।
भारत्थ युद्ध तिन सत्थ भिरि, बसुमति लीनी अप्प बल ॥१६५॥

कितक दिननि कबिलेस, किन्न निय महल मंत कजि ।
जुरै यवन घन जूह, खान उमराव खूब सजि ॥

(१२०)

हय गय केड हजार, पार पायक को पावहिँ ।
गुरजदार छरिदार, जोरि इतमाम जनावहिँ ॥
जुरि सेठ सेनापति जौहरिय, काजी कुल्लि दीवान बर ।
कोतवाल दूत सँधिपाल कैँ, दल बढल जनु साहिदर ॥१६६॥

कहि तब असपति कुपि, सुनहु स्रवननि नबाब सव ।
कहौँ सोइ कीजिये, अरि सु आवै न हत्थ अब ॥
सुरधर कैँ मेवासि, तेग बंधी हम सौँ तिन ॥
हमहु अदब उत्थपि, लरै हम महल कुलक्खन ॥
उमराव खान उदंसि कैँ, निधि लुट्टी दिल्ली नगर ।
हम सल्ल भंति सल्लै हियै, पतै तै रिपु जोधपुर ॥१६७॥

(दोहा)

तिन कारन हम मन तुरित, भंजन रिपु जनु भीम ।
काजी पूछहु बेगि कैँ, सजैब किन दिन सीम ॥१६८॥
करत प्रस्त दिन सुद्धि कहि, काजी पिक्खि कुरान ।
भइव सित दुतिया भली, सजौ सेन सुलतान ॥१६९॥

(कवित्त)

संबत्सर छत्तीस, सीम सतरासैँ संवत ।
भइव दुतिया धवल, चढ़्यौ पतिसाह चंड चित ॥
दोय सहस गुरु दंति, पंति जनु हल्लिय पब्बह ।
उभय लक्ख उत्तंग, बाजि बर बेग सु सन्बह ॥
आराब नारि गोरह अधिक, रथ जत्री दो सहस रजि ।
औरंगसाहि आडंबरहिँ, सेन कोटि पायक सु सजि ॥१७०॥

आवत सुनि औरंग, साहि दल बढल सज्जह ।
दुर्गादास सोनिंग, कलह कारक कमघज्जह ॥
आदि सकल रड्यौर, भए इकमिक्क मंनि भय ।
मंत ईक्क बर मतैँ, युद्ध जिहिँ भंति लहै जय ॥
रिपु दुड धिडु आरिडुँ रिन, चमू जोर आवंत चलि ।
किजैब जुद्ध कबिलेस सौँ, टेक छांडि ज्यौँ जाय टलि ॥१७१॥

जपै ताम सु जान, राय सोनिग रट्टवर ।
 ईस बाल अप्पनै, सुकल दुतिया जनु ससि हर ॥
 सो न जोग संग्राम, नृपति जसवंत सु नंदन ।
 सुभट लरै प्रभु संक, करै भारथ रिपु कंदन ॥
 'अप्पन' अनाह सब ही सु सम, हिंडहिँ अरि मुख किन हुकम ।
 तिन काज राँण श्री राज सौँ, मिलि रक्खै खित्री धरम ॥१७२॥

ए हिंदूपति आदि, धनी हिंदवान धरमंधर ।
 इन सु बंस अकलंक, खग असुरान खयंकर ॥
 इन सौँ मिलत न ऐब, एह सरनागय बत्सल ।
 कालंकिन केदार, नीति गंगा जल निर्मल ॥
 नर नाह और इन से नहीं, अप्पहिँ रक्खन जो सुपहु ।
 श्री राज राँण जगतेस सुअ, बंकै बिरुद बंदत बहु ॥१७३॥

अबल राय आधार, सबल सुलतान सु सल्लह ।
 सुर मिरि वर सम तुल्ल, अप्प अज्जेज अडुल्लह ॥
 चित्रकोट पति अचल, जास इकलिंग ईसवर ।
 ब्रह्म बेद बाहरू, उदधि जल दल आढंवर ॥
 पुहवी प्रसिद्ध ए छत्रपति, दुज्जन जन घन दल दमन ।
 श्री राज राण जगतेस सुअ, राजै ज्यौ सीता रमन ॥१७४॥

मालपुरहिँ मार यौ, दाह दिल्लीपुर दिन्नह ।
 रूप पुत्ति रट्टवरि, साहि तै सबल सुल्लिन्नह ॥
 गुरु हठ कै गोमती, बंधि सल्लिता सु राजसर ।
 सीरोही सिर दंड, किन्न राना राजेसर ॥
 किन्तीव कहूँ मुँह कित्ति जस, बल अनंत हिंदू सु बर ।
 अब्र धाइ गँहें तिन पय सरन, भंजहिँ फिरी असुरान भर ॥१७५॥

इन अनिद्ध औरंग, रज्ज कज्जै राजंधहिँ ।
 बाप हन्यौ हनि बंधु, पुत्त हनि सकल प्रबंधहिँ ॥
 कूर गेह कलि गेह, जानि अहि ज्यौँ दो जिम्भह ।
 बचन जास चल विचल, मान मयमत कि इम्भह ॥
 कर तै सुछंद सेवा करत, पुत्ति देत होतन प्रसन ।
 मिलियै ब राण राजेस सौँ, पातिसाह आवै पिसुन ॥१७६॥

(१२२)

(दोहा)

सुनत एह सारी सभा, सोनिंग देव सुमंत ।
राजा रावत रटवर, भल भल सकल भनंत ॥१७७॥
जान्यौ जग प्रभु जोरवर, राजसिंह महरान ।
सरन तकि कमधज्ज सब, जीवित जन्म प्रमान ॥१७८॥
ठीक मंत ठहराइ कै, लिखै ललित फुरमान ।
राना श्री राजेस कौ, बिनय विविध बाखान ॥१७९॥

(कवित्त)

स्वस्ति श्री सुभ थान, प्रगट पट्टन उदयापुर ।
राजै श्री महाराण, रूप राणा राजेसर ॥
सुर नायक ससि सूर, जास ऊपम युग जानिय ।
सुरतर सुरमनि सिंधु, देव ज्यौ अधिक सु दानिय ॥
अरदास सकल कमधज्ज की, मन्नहु साई प्रसन मन ।
पतिसाहि पिसुन पच्छै पखौ, आवहि हम अब प्रभु सरन ॥१८०॥

संग्रामहि असमत्थ, समझि बिन लहु हम साई ।
साई बिनु कहा सेन, तेज साई ही ताई ॥
महाराय गय मोरव, सोइ होते समत्थ पहु ।
अब प्रभु ही सौ अदब, रहै रटियै कितीक बहु ॥
कमधज्ज कहै इन कलह में, करि उपपर निज जानियहि ।
राजेस राण जगतेस सुअ, आलम तौ बस आनियहि ॥१८१॥

मारै हम बहु सुगल, दंद रवि जोर साहि दर ।
युग्मनि पुर परजारि, पारि कीनी धर पद्धर ॥
लच्छि अमित तहँ लुटि, चंड चौकी चकचूरिय ।
हय गय रथ भर हनिय, पेट पसु पंखिनि पूरिय ॥
कीनै यु खून असपति कै, केतक मुख करि कित्तियै ।
राजेस राण जगतेस सुअ, पहु पसाय अब जित्तियै ॥१८२॥

नामौरिय नृप कज्ज, दीन पतिसाह जोधपुर ।
इहै आदि हम उज्ज, सो ब आवै प्रभु उपर ॥

यदुपति ज्यौ पंडवनि, कलह में आरति कप्पहु ।
 नृप कै नंद रु नारि, थान निर्भय तहँ थप्पहु ॥
 आयौ ब साह औरंग चढ़ि, हम लरिहँ सब प्रभु हुकम ।
 राजेस राण जगतेस सुअ, रडौरनि राखहु सरम ॥१८३॥

रवि बंसी महाराण, राण राहप हरि रूपह ।
 श्री दिनकर सक बंध, न्याउ नरपाल अनूपह ॥
 कृतब ऊँच जसकरन, पुन्य पालह प्रथवीपति ।
 पीथल राण प्रबंड भाणसी राण देव भति ॥
 भल भीम अजैसी लखमसी, अरसी राण महा अडर ।
 सुलतान गहन मोखन सकल, राण एह राजेस बर ॥१८४॥

राण हमीर सुरीति, राण खेतल अभंग रिन ।
 लाखनसी बहु लील, राण मोकल उदार मन ॥
 कुंभ, राण जम किति, राण कुल रूप रायमल ।
 सबल राण संभ्राम, उदय नित उदय राख इल ॥
 कायम प्रताप अमरह करण, जगतसिंह जग जोरबर ।
 सुलतान गहन मोखन सकल, राण एह राजेस बर ॥१८५॥

रामचंद राजेंद, बंधु लच्छन सु वीर बर ।
 कृष्ण देव रिपु काल, कंस आसुर विधंस कर ॥
 कैरव कण कण करण, जंग जोधार जुधिष्ठिर ।
 अर्जुन भीम अभंग, सूर सहदेव अचल सर ॥
 नरनाह विरुद पंडव नकुल, असुर संहारन विरुद इन ।
 राजेस राण जगतेस सुअ, पुहवि रखी सो क्षत्रिपन ॥१८६॥

तुम हिंदूपति प्रगट, तुमहिं दिनकर हिंदूकुल ।
 तुम हिंदू उद्धरन, विरुद सरनागय बत्सल ॥
 तुम करुनाकर सुकृत, तुम सु कलियुग दुख कप्पन ।
 अवलनि तुम आधार, तुम सु असुरेस उत्थप्पन ॥
 इन धर अनादि अवनीस तुम, खग तेज बदै खलक ।
 राजेस राण जगतेस सुअ, तुम सब हिंदू सिर तिलक ॥१८७॥

सीसोदा चहुआन, तुँअर पाँवार रडवर ।
 हाड़ा कूरंभ गौड़, मोरि यादव बड़गुज्जर ॥

भाला भट्टी डोड, दह्या देवरा बुंदेला ।
 बड़गोता दाहिमों, डाभि बारड़ बग्हेला ॥
 खीची पड़िहार सु चावड़ा, संखुल गोहिल धंधलह ।
 राजेस राण सब हिंदुपति, टाँक पुँडीर सु सिधलह ॥१८८॥

तिन प्रभु सरनहिँ तकि, धाइ आविहिँ आसा धरि ।
 राखहु श्री महाराण, हिंदुपन सबल असुर हरि ॥
 दिसि दिसि में दीवान, साँइ सम कोइ न दिट्ठौ ।
 सुलतानह हम सत्थ, रोस करि औरंग रुट्ठौ ॥
 अमरख सुचित्त रक्खै अधिक, क्षत्रीपन मेतंत खल ।
 असुराइन सौँ ब उथपि कै, बसुमति लीजै अप्प बल ॥१८९॥

(दोहा)

इहिँ बिधि गुरुता लखि अधिक, पठ्यौ दूत प्रसिद्ध ।
 पत्तौ सो उदयापुरहिँ, अबिलंबन अबिरुद्ध ॥१९०॥
 हिंदू पति भेटे हरखि, दिय पय नमि अरदास ।
 बिनय सु अक्खै मुख बचन, सानंदित सोल्लास ॥१९१॥
 बंची सो अरदास बर, उपमा बिनय अनूप ।
 कमधज्ज रु कबिलेस कौँ, सकल लिख्यौ सु सरूप ॥१९२॥
 देइ दिलासा दूत कौँ, फेरि लिखै फुरमान ।
 सब राठौरनि सत्थ कौँ, सुंदर बिधि सनमान ॥१९३॥

(कवित्त)

राज राण मति मेर, तदपि इह लखि चतुरं तन ।
 महाराय रावरह, राव रावत सब राजन ॥
 पूछै निय उमराव, कहौ कैसौ मत किज्जै ।
 काम पखौ कमधजनि, साहि दल सज्यौ सुनिज्जै ॥
 अक्खै सु ताम उमराव इह, जानि चित्त वृत्तिहिँ जिन ।
 बेगै बुल्लाउ प्रभु रट्ठवर, पुहवी रक्खहु अप्प पन ॥१९४॥

सुनि इह श्री महाराण, लिखै फुरमान सु लाखन ।
 सुनिहु रट्ठवर सूर, सदा हम तुमहिँ सगपन ॥

सजि आवहु हम सरण, भूलि नन धरहु चित्त भय ।
 हौं अभंग बर हिदु, खग्न सब असुर करौं खय ॥
 सुलतान समर करि संग हौं म्लेछ रहैं को हम सँमुख ।
 सत खंड करौं बर समर सजि, दुष्ट तुमहिं जो देख दुख ॥१६५॥

सेख सकल संहारौं सैद पारौं सब पत्थर ।
 पच्छारौं सु पठान, लोदि बल्लोची भक्खर ॥
 सरवानी भंभरिय, हनौं हवसी निय हत्थहिं ।
 रन रोलवौं रहिल्ल, मुगल सु करौं बिन मत्थहिं ॥
 गाड़ौं धर रूमी गक्खरी, उजबक्कनि सद्धौं सु असि ।
 कहि राज राण कमधज्ज हौं, रक्खौं यौं तुम रंग रसि ॥१६६॥
 ऊज्जर करि अगारौ, ढाहि ढिल्ली ढंढोरौं ।
 लाहोरिय धर लुट्टि, तटकि तुरकानी तोरौं ॥
 खनि नंखौ खंधार, बेगि खुरसान बिहंडौं ।
 परजारौं पट्टनहिं, देस भक्खर सब दंडौं ॥
 सु बिहान साहि औरंग कौ, गज समेत जीवत गहौं ।
 हौं राज राण तो हिंदुपति, कहा अधिक तुम सौं कहौं ॥१६७॥
 बिस्तारौं बर बेद, पुहवि रक्खौं सु पुरानह ।
 काजी सत्थ कतेब, करौं सब छार कुरानह ॥
 चकता करौं सु चून, थान निज दिल्ली थप्पौं ।
 रक्खौं हिंदू रीति, आसुरी रीति उत्थप्पौं ॥
 ईस्वर प्रसाद बर उद्धरौं, म्लेछ तित्थ खंडौं सु महि ।
 रक्खौं सु सकल रट्टौर कौ, कोपि राण राजेस कहि ॥१६८॥
 मीर मलिक मस्संद, भूत सम तेह भयंकर ।
 घन घेरे रिपु घल्लि, चुनिग चुनि हनौं निसाचर ॥
 युगिनि रख सज्जरक, बीर पंखिनि बेतालह ।
 देत भूत भख देहु, करौं असपति खय कालह ॥
 रक्खौं सु हिंदुपन बीर रस, बसुमति रक्खौं अप्प बल ।
 तौ राज राण जगतेस सुअ, खग्न प्रान जितौं यु खल ॥१६९॥

(दोहा)

बल बँधाइ सु बिसेस तै, दल लिखि अनुगहि दीन ।
 बेगि बुलाए रट्टवर, हिंदूपति सु प्रवीन ॥२००॥

(१२६)

रंग बढ़ै सब रटुवर, ले निय परियन लच्छि ।
मेदपाट पति सौँ मिलै, अब भूख मारौ मिच्छि ॥२०१॥

(कवित्त)

इभं गरुये इगबीस, दोय दस सहस तुरंगम ।
कोटिक रूप रु कनक, प्रवर बहु रथ पवनंगम ॥
सतक जंत्रि भर सख, करम युग सहस मत्त कल ।
कलहंतनहि सकज्ज, सहस पण बीस पयइलं ॥
इतनै सु सत्थ परिकर अमित, महाराइ सुत मज्झ बर ।
राजेस राण सौँ रटुवर, आइ मिलै असुरेस डर ॥२०२॥

गरुअ गात गजराज, सकल खंगार सुसोमित ।
कनक तोल तिन मोल, अस्व एकादस उप्पित ॥
खग एक खुरसान, कनक नग जरित कटारह ।
इक हीरा सु अमोल, दाम दस सहस दिनारह ॥
कमधज्ज सकल कर जोरि करि, प्रभु नमि मुक्किय पेसकस ।
श्री राज राण जगतेस कै, रक्खी हित धरि रंग रस ॥२०३॥

(दोहा)

सब ही सनमाने सुभट, बर बैठक सु बताइ ।
बीरा और कपूर बर, सैंकर अप्पै साँइ ॥२०४॥
खरच कज्ज सु बिचारि खिति, दीनै द्वादस ग्राम ।
नगर कैलवासौँ निरखि, अवनि सकल अभिराम ॥२०५॥
किहिँ मुक्ताफल माल किहिँ, हय गय गाँउ सहेत ।
रीमि राण राजेस बर, दिन दिन सुभटन देत ॥२०६॥

दसम विलास

(कवित्त)

करिय अहोनिमि कूच, साहि अजमेर सँपत्तह ।
 बंकागढ़ बिंदुलिय, राजि पट महल सु रत्ताह ॥
 रहै तत्थ असुरेस, बिकट चौकी बैठाइय ।
 परिय कटक गढ़ परधि, जलधि ज्यौ दीप जनाइय ॥
 निसुनीब तत्थ आसुर नृपति, जानै हिंदू जोरबर ।
 रवि बंस राण राजेस कौ, सरल गह्यौ बर रट्टबर ॥ १ ॥

(दोहा)

तप्पौ अधिक तुरकेस तहँ, सुनि हिंदूपति नाम ।
 कलमलि उर कर मीड़ कहि, हा हिय रही सु हाम ॥ २ ॥
 हम सौँ लरि भरि रक्खि हठ, गए सु राजि धर गोह ।
 क्यौ करि रहि हँ इक्खियै, राण सरण अब एह ॥ ३ ॥
 जहाँ जाइ तहाँ जाइ कै, गह्यौ यु तिन परि गैल ।
 तरु तरु पत्त सु पत्त करि, सब ढंडौरौ सैल ॥ ४ ॥
 स्वर्गहि सेढिय जाल जल, पर्वत गुहा प्रदीप ।
 खनि कुदाल पाताल खिति, अरि आनौ अवनीप ॥ ५ ॥

(कवित्त)

करि यों मानस कोप, दिन्न फुरमान दिग्ध गस ।
 कैलपुरा प्रभु कज्ज, बढ़हिँ जिन सुनत बीर रस ॥
 सुनहु राण राजेस, साहि औरंग समक्खिय ।
 हम सु सत्रु बहु हठी, रट्टबर क्यौँ तुम रक्खिय ॥
 अप्पौ सु एह हम कज्ज अब, कै कलहंतन सद्य करु ।
 नन रहै एह किनही नृपति, उदय अस्त रवि चक्र तर ॥ ६ ॥
 इन लुट्यौ अमारौ, देस दिल्ली धर दाहिय ।
 कियौ कलह हम महल, पालि सब ही पतसाहिय ॥
 मारि धान मेड़ता, अप्प बल लयौ ओधपुर ।
 सल्लै ज्यौ नटसल्ल, राह सल्लै यु अन्ह उर ॥

(१२८)

रक्खै यु तुम्ह तिन रिपुन कौँ, बढि हँ तौ अप्पन बिरस ।
राजेस राण रटौर दै, साहि सत्थ रक्खौ सुरस ॥ ७ ॥

(दोहा)

बंछि साहि फुरमान बिधि, पाइय सकल प्रवृत्ति ।
राण लिखै फुरमान फिरि, साहि जोग सब सत्ति ॥ ८ ॥

(कवित्त)

रक्खै हम रटौर, सत्थ जसवंतराय सुत ।
इन जौ सत अपराध, कियै तौऊ इह संमत ॥
करन मतौ सो करहु, जोर कहा कहिय जनावहु ।
कहौ सु आवन कलिह, अज्ज सोई किन आवहु ॥
जैहौ सु लेइ तब जानियहिँ, प्रभु पन और सु पुरुष पन ।
राजेस राण कहि साहि सुनि, बसुमति रहि हँ बर बचन ॥ ९ ॥

आइ गहँ को इनहिँ, देव कहा दैत रु दानव ।
रक्ख सज्ज खरिसाल, मिलहिँ जौ कोटिक मानव ॥
अब हम त्यौँ ही एह, स्नेह हम इन गुरु सघन ।
अप्यैँ जौ इन छेह, तौ ब कैसौ क्षत्रीपन ॥
कहियै सु आदि ही अह्य कुल, सरनागय बत्सल बिरुद ।
राजेस राण कहि साहि सुनि, महि उपगार बडौ मरद ॥ १० ॥

(दोहा)

गयौ अनुग अजमेर गढ़, असपति कर फुरमान ।
दीनौँ हिदु दिनेद कौ, बीरा रस बाखान ॥ ११ ॥
बंछि बंछि दिलीस बर, बढ्यौ रोस बिसेस ।
फेर दुतिय फुरमान दिय, नागद्रहा नरेस ॥ १२ ॥

(कवित्त)

मिडि देस मेवार, कोट गढ़ ढाहि ढेर करि ।
आऊँ उदयापुरहिँ, गाहि हय गय पाइनि गिरि ॥
रावर रावत राइ, आइ फिरि हँ जे अड्डै ।
संहति तिन संग्राम, खवन धर अप्यौ जड्डै ॥

(१२६)

जरि थान थान थाना यतन, हंधि राह चहुँ कोद रहल ।
राजेस राण सुलतान कहि, मंडय कौ हम सेन मुख ॥१३॥

तोयधि भुज बल तिरै, कवन तुल्लै गिरि कद्यहिँ ।
पावक को मुँह पिवै, सिंह सनमुख रिन सद्यहिँ ॥
महि कौ थंभय मरुत, नाग कहु कवनु सु नत्थय ॥
गयन खंभ कौ देख, सोब जितै हम सत्थय ॥
हठ छंडि अलिय इन देहु हम, सीख कहा तुम सिक्खवै ॥
राजेस राण सुलतान कहि, अनम सोइ हमसौ नवै ॥१४॥

(दोहा)

हिंदूपति फुरमान यों, बंचिहु तिय बरजोर ।
अप्य दयौ फुरमान इह, साहि करौ किम सोर ॥१५॥

(कवित्त)

जरहु थाँन तुम जितै, इक्क दिन तितै उठावहिँ ।
आलम प्रथम उथपि, बहुरि औरहिँ बैठावहिँ ॥
मेदपाट महि रज्ज, सहस दस गाम ईस बर ।
एकलिग अम्ह दियै, कबहुँ नावै किनही कर ॥
आवौ असुरेस अनेक इहिँ, कट्टि बंक सूधे करै ।
राजेस राण कहि साहि सुनि, तोयधि यों भुजबल तिरै ॥ १६ ॥

ऊजर करि अंगारौ, घाइ लाहोर लेहुँ धन ।
दिल्ली करौ दहल्ल, तोरि तुम तखत ततखन ॥
अलवर नरवर आइ, थान थप्यै रिनथंभहिँ ।
उज्जैनी आहनौ, धार मंडव हनि डिंभहिँ ॥
गुजरात देस लै दंड गुरु, सज्जौँ दल सोरठ सकल ।
राजेस राण कहि साहि सुनि, तुल्लौँ यों सुरगिरि अतुल ॥ १७ ॥

(दोहा)

रोस राण परवान कौ, बंचत बढ़यौ बिसेस ।
वृत्तिय बहुरि फुरमान तिन, अप्यौ इह असुरेस ॥१८॥

(१३०)

(कविच)

श्रीपुर तुम संहस्यौ, कोप हम बिलय सुकिन्नह ।
रूप पुत्ति रटवरि, लगि हम साँ फुनि लिन्नह ॥
दंड देत देवल्या, नालि बंधन सु निरंतर ।
दोइ सहस दीनार, ऐन सल्लै उर अंतर ॥
सल्लै यु सत्रु ए तुम सरन, सो ब सिताब समप्पियहिँ ।
राजेस राण सु बिहान कहि, कलह मूल तैं कप्पियहिँ ॥१६॥

राजथान निय रचौ, बास चित्तौर बसाइय ।
आनौ दिल्लिय यहाँ, सेन घन लच्छि सजाइय ॥
नौबति नह निसान, घोस इहिँ तखत घुराऊँ ।
सचौ तौ हूँ साहि, बहुत कहि कहा बताऊँ ॥
फुरमान लिखेब कहा सु फिरि, तिहुँ तिहुँ बेर कहीं सु तुम ।
राजेस राण सुलतान कहि, अब जिनि कढ़दौ दोस हम ॥२०॥

(दोहा)

यौ तीजौ फुरमान पहु, राण बंचि राजेस ।
कूर कोप करि लिखि कहैं, सुनि औरंग असुरेस ॥२१॥

(कविच)

जिहिँ रक्खैं जगदीस, अप्प इकलिग ईस बर ।
जिहिँ रक्खैं जोधार, राण अनमी राजेसर ॥
जिहिँ रक्खैं योगिनी, रिधू चित्तौर सु रानी ।
जिहिँ रक्खैं बावन्न, बीर मुख कह कह बानी ॥
पतिसाह मात आवै प्रगट, बरस सहस लौँ जौ बिढ़य ।
सुलतान साहि औरंग तदपि, चित्रकोट कर नाँ चढ़य ॥२२॥

जौ हेमालय गरहु, गहौ जौ कासी करबत ।
जौ जीवत धर गड़हु, पड़हु जौ चढ़ि गढ़ परबत ॥
जौ जालंधर जाइ, सीस कालिका समप्पै ।
जौ हिंसि दिखि बल देइ, काइ तिल तिल करि कप्पै ॥
जागती जाति ज्वालामुखी, जौ ज्वालावलि में धँसै ।
राजेस राण कहि साहि सुनि, बहुरि जनम ले भल बसै ॥२३॥

(१३१)

(दोहा)

अनुग हत्थ फुरमान इह, द्यौ तृतीय दिवान ।
तहिँ फुनि करिकै गति तुरत, सौँप्यौ जइ सु बिहान ॥२४॥

बंघि साहि सब ही बिगति, जानि हिंदुपति जोर ।
बढ़न कज्ज तब हीँ बिपल, बज्जी बंब बकोर ॥२५॥

धुर कत्तिय पंचमि सु ध्रुव, सागर जल ज्यौँ सेनु ।
सज्जि चलयौ दिल्लीसबर, रवि नभ ठंकिय रेनु ॥२६॥

(छंद भुजंगी)

चढ़्यौ सेन सज्जै । सु बाजी चकत्ता ,
मनौँ मास भहौँ महा मेघ मत्ता ।
सज्जै सिंधुरं पाखरंगं सनाहं ,
करै बंधि खगं दुधारा दुबाहं ॥२७॥

किनं पिट्टि सज्जै लसै नारिगोरं ,
किनं पिट्टि नेजा धजा बै किसोरं ।
किनं पिट्टि सोहै ढलक्कंति ढल्लै ,
किनं लोह कोठी हठै मग हल्लै ॥२८॥

किनं बंधि कट्टार सुंढार दंतै ,
किनं पिट्टि डोला चलै इक्क पंतै ।
ठनंकार घंटा रवं तं घनकै ,
घनं घुंघरं पाइ ग्रीवा खनकै ॥२९॥

भरै दान गंधं भवै भौरै भौरं ,
लसै तेल सिंदूर फुन्नि सीस चौरं ।
पढै धत्त धत्ता मुहं पीलवानं ,
अगगग गज्जै महा मेघ जानं ॥३०॥

चलै अग पच्छै सभाला चरख्खी ,
पुलै वायु बेगं नभं जानि पख्खी ।
जरै सुंखला पाइ गट्टै जंजीरं ,
किनं सात कौंभं सु कुंभं कंठीरं ॥३१॥

कितै अंग करिणी करै ताम चल्लै ,
 उमत्तै गुमत्तै तरु कै उखिल्लै ।
 किनं पिट्टि नोबत्त बज्जै निहस्सै ,
 सुभै सेन मज्झै करी दो सहस्सै ॥३२॥

हयं हंस वंसा तुला हेम तुल्ला ,
 कितै अंग ऐराक देसी असीला ।
 कितै कोकनी बाजि कच्छी कबिल्ला ,
 किहाड़ा खुड़ा रत्तड़ा केक निल्ला ॥३३॥

कितै सिंघली जंगली जा सिंघाला ,
 कितै जाति साणौर सारंग फाला ।
 पंखाला जंघाला सिंहाला पवंगा ,
 कितै आरबी कासमीरा लतंगा ॥३४॥

कितै जाति कांबोज बंगाल देसा ,
 खुरासानि खंधारि खैगा खुरेसा ।
 कितै भौर भारी जनौ अंग भ्रगा ,
 चलै चंचलं चाल चाला सु चंगा ॥३५॥

कितै पौन सत्थी धरा पौन पत्था ,
 रजै रूप राजी मनौ सूर रत्था ।
 कितै पानि पंथा तुटै जानि तारा ,
 कितै जाति तेजी तुरक्की तुषारा ॥३६॥

कितै पर्वती अस्व प्राकम पूरै ,
 सजी साकती स्वर्ण सोभा संपूरै ।
 कितै थाल मज्झै ततत्थेइ नच्चै ,
 तिनै लोयनं लोल संसार रच्चै ॥३७॥

भिल्लंती जरी भूल सा पंचरंगै .
 रजै पूंछ ज्यौ चौर सालं तरंगै ।
 सिखा दीप ज्यौ ऊँच सोभै सुकर्ण ,
 गुह्री केस बालं कचं स्याम वर्ण ॥३८॥

बंद्यौ हेख हेखा रवं सोर सोर ,
 किंथै कंध बंकै चलै बंधि कोरं ।

(१३४)

छजै दंड सोवर्ण जा सीस छत्रं ,
उमै उद्यलं चौरै दुरते पवित्रं ।
चहुँ ओर जा गुर्ज बरदार चह्लै ,
छरीदार हजार के सेन ठिह्लै ॥४७॥

भरी खच्चरं सहस स्वर्ण खजानं ,
गिनै कोन करहा दलं नत्थि गानं ।
सजो नारि पिट्टै छुटंती हवाई ,
कितै स्वान चीता सु सत्थै सजाई ॥४८॥

उडै रैनू ब्यूहं सु ढंक्यौ अयासं ,
भयौ भानु बिबं मनौ संभ भासं ।
महा सेल कहुँ करै सुद्ध मगं ,
भरं भूरुहं भर करं कखि भगं ॥४९॥

करतै पयानं उरभै कुरंगा ,
जनौ जलधि संमेल कालिदि गंगा ।
नदी ताल द्रह कुंड बहु सुक्कि नीरं ,
घुरै घोष निर्घोष नोबति गुहीरं ॥५०॥

मच्यौ सेन सोरं सुनै कौ सु सइं ,
गजै नारिगोरा मनौ मेघ भइं ।
प्रति घौस दर हाल कीये पयानं ,
प्रपत्तौ दलं मज्झ मेवार थानं ॥५१॥

(दोहा)

मेदपाट पत्तौ सु महि, चढ़ि औरंग असुरेस ।
बोलि सकल उमराव बर, राण तदा राजेस ॥५२॥

(छंद पद्धरी)

रस राजनीति राजेस रान, दरबार जोरि बैठे दीवान ।
छाजंत सीस नग जरित छत्र, पढ़ि उभय चौरै उज्जल पवित्र ॥५३॥
हय हत्थि पयहल मिलिअसंख, जिन सजत, दिह्लिपति होत भंख ।
महायुध सबल पद धरन धीर, बोले सु ताम अरिस्सिंह बीर ॥५४॥

जयसीह कुँअर बोले सुजान, भलहलत तेज जनु जिठ्ठ भान ।
 भल भीम रूप भीमह कुमार, बोले सु जंग बहु जैतवार ॥५५॥
 रावर सु बोलि जसकरन रंग, असुरेस सल्ल अनमी अभंग ।
 भल मंत भेद धर भावसिघ, रानाउत रक्खन जोर रिघ ॥५६॥
 महाराय मनोहरसिघ मान, गिरि मेर नंद गिरिवर गुमान ।
 दलसिंह सिंह रिपु दलन दुट्ठ, कंकाल कलह जनु कालकुट्ठ ॥५७॥
 भगवंतसिघ कुँवर सभाग, बर फलेसिघ गुरु खाग त्याग ।
 सु गुमानसिघ अरिसिघ नंद, दरबार आइ जनु ससि दिनेंद ॥५८॥
 रजवट्ट रूप सबलेस राव, चहुवान चंड चित लरन चाव ।
 झाला नरेद सहै जुझार, कहि चंद्रसेन जसु अचल कार ॥५९॥
 केसरीसिघ रावत सु कित्ति, जसु कुँवर गंग मह जंग जित्ति ।
 झनकंत खग झाला, सुजैत, दिल्लीस गहन जौ दाव दैत ॥६०॥
 गढ़पति पँवार दाता दुझल, बर बीर राव भनि बैरिसल्ल ।
 महसिघ बंक रावत उमत्त, चविये सु चौड हर चंड चित्त ॥६१॥
 रन अचल सु रावत रतनसेन, फंदै स रिपुन ज्यौ फंदि ऐन ।
 सामलहदास कमधज्ज क्रूर, नरनाह विरुद जिन मुक्ख नूर ॥६२॥
 रावत रडाल रिन मानसिघ, जित्तन सु जंग भुज सबल जंघ ।
 केसरीसिघ चहुवान राव, घन घटै मिच्छि जिन खग घाव ॥ ६३ ॥
 लीयें सु चौडहर नीति लज्ज, केसरीसिघ रावत सकज्ज ।
 महुकंमसिघ सगत सुभास, राठौरराय बर दुर्गदास ॥६४॥
 सोनिंग देव सामंत सूर, चालुकराय बिक्रम विरूर ।
 रावत रुखमांगद सुभट रूप, जसवंतसिघ झाला सु भूप ॥६५॥
 गोपी सु नाह राठौर राइ लहि समर समय जनु सोर लाइ ।
 प्रोहित सु राजगुरु जग प्रसिद्ध, सु गरीबदास बहु मंत सुद्ध ॥६६॥
 गढ़पती महेजा अमरसिंह, बर रतनराव खीची अबीह ।
 सहै सु अनी उमराव सब्ब, आदर समान जिन गुरु अदब्ब ॥६७॥
 प्रणमेवि सकल महाराण पाइ, बैठक सु कीय बैठे सुआइ ।
 श्रीराजसिघ राना सनूर, कहि नाम देत बीरा कपूर ॥६८॥

(१३६)

(कवित्त)

सुनहु सकल सामत, रान जपै राजेसर ।
सजि दल बल सव्वान, इत्थ आवहिँ असुरेसर ॥
युद्ध करै जिहि थान, बेगि सौ थान बतावहु ।
भज्जै जहँ यवनेस, असुर संहरि घर आवहु ॥
बिन युद्ध कियै बुझै न इह, दिल्लीपति औरंग दुमन ।
इक मंत होइ सब अवनिपति, पच्छौ ए पारौ पिसुन ॥६६॥

अक्खै तब उमराव, जोरि कर युगल साँइ सम ।
असुर कहा हम अगग आवहिँ ठिल्लै करि उद्धम ॥
सिहासन सोभियहिँ, साँइ हम हुकम सु किज्जै ।
दिसि दिसि सज्जिय दुगै, रटक रिपु सौँ इहि लिज्जै ॥
जैहँ सु भजि इह यवन दल, कबलौ रहि कारहँ कलह ।
गहि लेहुँ असुरपति गज चढ़्यौ, सजि तुरंग पख्खरसिलह ॥७०॥

(दोहा)

गरीबदास प्रोहित सु गुरु, अक्खिय तिन फिरि एह ।
एक सुमंत सु अरज इक, अब धारहु सु सनेह ॥७१॥
प्रभु हम सकल पहारपति जित्तहु पर्वत जोर ।
घाट घाट रिपु घेरिकै, बेगै देहु बहोरि ॥७२॥
बिग्रह इह कै बरस लौँ, सु बढ्यौ जानि बिसेस ।
अगनित दल असुरेस प, हम मन इह अंदेस ॥७३॥

(कवित्त)

ये सब अद्रि अभंग, नीर छाया युत निर्भय ।
जंग करहु यवन सौँ, जरिग घन घाट सदा जय ॥
लौँ न तह इन लग, असुर कोटिक जो आवहिँ ।
बकै निज बर बीर, मंडि अब असपति ढावहिँ ॥
आपके पंच सत्त पंच अरि, होइ तऊ रक्खैयु हनि ।
इहिँ मंतहिँ श्री महाराण निति, असपति दल अकतूल गिनि ॥७४॥

उदया राण अभंग, सक चितौर समै सर ।
आइ इनहँ अचल, अरथौ जब साहि अकब्बर ॥

सर भर किय संग्राम, बरस द्वादस लौं विग्रह ।
 अंत भगौ असुरेस, गयौ सिर पटकि स्वयं गृह ॥
 ए अचल किए इक लिंग हर, अचल राज कै काज तुम्ह ।
 इहिं मंतहिं श्री महाराण निति, अप्प सुजानि रु मन्नि अम्ह ॥ ७५ ॥

प्रगटै राण प्रताप, जंग फुनि इहिं गिरि जितै ।
 घोघुंदा पुर घाट, घेरि आसुर सब घतै ॥
 अबदुल्ला सु नबाब, गिरुअ गज सहित गिराइय ।
 मानसिंघ निय मान, गयौ कूरंभ गमाइय ॥
 दल सहस बहत्तरि असुर दलि, हिंदूपति रक्खिय सु हद ।
 इहिं मंतहिं श्री महाराण नित, सुगल ईस छंडै सु मद ॥ ७६ ॥
 अमर राण अवदात, साहि जहँगीर सजि दल ।
 आयौ चढ़ि असुरेस, मज्झ मेवार सु महियल ॥
 थप्पि च्यारि असिथान, लैन बसुमति सु हठ्यौ बहु ।
 सत्त बरस लौं सीम, नेटि अरि भगि रहै नहु ॥
 असि च्यारि थान इक दिन उटै, अमर राण लिन्नी सु इल ।
 इहिं मंतहिं श्री महाराण निति, बसुधा धरण अतुल बल ॥ ७७ ॥

कुसल रहैं निय कटक, बैरि दल होइ बिहंडह ।
 रुक्कै आवति रसत, भूख मरि ह्वै अरि भंडह ॥
 भगौ असपति भोर, इत्थ ज्यौं बहुरि न आवहिं ।
 इहै मंत अह्म ईस, कियै सद्यन सुख पावहिं ॥
 करियै न पिसुन भायौ कबहिं, कथन खलक यों करि कहैं ।
 राजेस राण इहि मंत तैं, दूध डंग दोऊ रहैं ॥ ७८ ॥

(दोहा)

सु बचन प्रोहित के यु सुनि, राजसिंह महाराण ।
 कुसल जैति दुहुँ कज्ज ए, मन्यौ मंत प्रमान ॥ ७९ ॥
 करन दुर्गा सजि कै कलह, जित्तन दल असुरेस ।
 जानि सु परबत दल प्रबल, राण चढ़ै राजेस ॥ ८० ॥

(कवित्त)

राण चढ़ै राजेस, सहस पण बीस तुरग सजि ।
 घुरत निसाननि घोष, रवि सु ढंकिव हय खुर रजि ॥

मयंगल दल मयमत, घटा उट्टी कि स्याम घन ।
 पयदल सहस पचीस, सज्ज सायुध सूरं तन ॥
 रथ जंत्रि सहस सखहिं भरिय, करहा गिनति परंत किहिं ।
 जग मज्झ कवन जननी जन्यौ, जंग आइ जितै सु जिहिं ॥ ८१ ॥

सत्थ चढ़ै अरि सिंघ, बंधु महाराय बीर बर ।
 जैत हत्थ जैसिंघ, कुँवर करमैत कुलोधर ॥
 भीम कुमार सभाग, जोध रावर जसवंतह ।
 भावसिंघ भूपाल, अरिन जन करन सु अंतह ॥
 महाराय मनोहरसिंह, चढ़ि नृप दलसिंह सु बीर नर ।
 सामंत राण राजेस कै, कलह कूर कंकाल कर ॥ ८२ ॥

नृप अरसिंह सुनंद, कुँवर भगवंतसिंह भर ।
 फतैसिंह करि फतै, गुनी सु गुमानसिंह गुर ॥
 सबल राव सबलेस, चंद भाला रु जैत चिर ।
 सगतावत रावत्त, केसरीसिंघ सिंह कर ॥
 पौवार सु बैरीसल्ल पट्टु, महासिंघ रावत मरद ।
 रावत चौडावत रतनसी, महुकमसिंघ सु बड़ बिरद ॥ ८३ ॥

साँवल दास सकाज, राज रक्खन सु रट्ट वर ।
 मानसिंह रावत्त, सु मंत चौडाउत सुंदर ॥
 चाहुवाँन चतुरंग, राव केहरि रिन केहरि ।
 रावत केहरि रूप, चंड चौडाउत उच्चरि ॥
 रावत रुखमांगद बीर रस, सोलंकी विक्रम सु ध्रुव ।
 नृप दुर्गदास सोनिग सम, सकल रट्टवर सत्थ हुव ॥ ८४ ॥

युग भाला जसवत, गोप रट्टौर जैत कर ।
 प्रोहित गिरवर प्रगट, बखत बल बखत सीह बर ॥
 रतनसेन खीची सु, बीर कन्हा सगतावत ।
 अबूमल्लिक अजेज, डोड महासिंह सुहावत ॥
 गढ़पत्ती महेजा अमर गिनि, भाला नृप बरसिंघ मिलि ।
 चढ़ि चलै सजि चतुरंग चमु, मनौ उदधि सुरसरित मिलि ॥ ८५ ॥

(दोहा)

मनौ उदधि सुरसरित मिलि, सुरु लहु अगनित भूप ।
 सध्वः राख राजेस कै, चढ़ै बीर रस चूप ॥ ८६ ॥

देवी पानिय देव गिरि, पंच कोस सु प्रमान ।
 प्रथम मुकाम तहाँ प्रवर, मंडि महा मंडान ॥ ८७ ॥
 सोर भटक अरु सेन सुर, गिरिवर अंवर गाज ।
 स्रवनन सद सुन्यौ परै, अरि दल बढत अवाज ॥ ८८ ॥
 प्रथम मुकामहिँ हिंदुपति, मिलै आइ मेवासि ।
 पानौरा मेरहपुरा, जूरा पुरा जबासि ॥ ८९ ॥
 सजि पुलिंद सब पल्लिपति, सहज पचासक सत्थ ।
 ध्रुव पय रोपन धनुषधर, समर सूर सु समत्थ ॥ ९० ॥
 तरकस युग युग पिट्टि तिन, संपूरित सर युद्ध ।
 कथै कत्थ नट बिकट लौ, दुरय न तिन रिपु युद्ध ॥ ९१ ॥
 तरु दल छेदै तक्कि कै, व्योमहिँ उडत विहंग ।
 बदि लाखक मै दुज्जनहिँ, बेधत वान अरंग ॥ ९२ ॥
 प्रनमि हिंदुपति पाइ सब, ठट्टै महलहिँ ठट्ट ।
 मनौ गंग अमुना मिली, सलिल समेल सुघट्ट ॥ ९३ ॥
 हुकम दयौ तिन करन हर, भारहु घाट सभार ।
 दस दस सहस रहौ सु भर, पिसुन न ह्वै पैसार ॥ ९४ ॥
 खरच सु लेहु खजान तैं, ध्रुव पद रोपौ धीर ।
 रसित रुक्कि रिपु रुक्कि कै, मारौ बड़ बड़ मीर ॥ ९५ ॥
 यौ कहि सब अभिमानि कै, सबनि दयै सिरपाव ।
 अस्व कनक भूषन अषय, बसुधा ग्राम बढाव ॥ ९६ ॥
 पंच फौज तिन रचि प्रबल, रहै घाट गिरि रुक्कि ।
 आवन जान न लहै अरि, थान थान मग थक्कि ॥ ९७ ॥
 पत्त नैनबारा सु पहु, गिरिवर तहँ गुरु गाढ़ ।
 भार अठारह तरु भरित, अहनिंसि लगत असाढ़ ॥ ९८ ॥

(कवित्त)

अहनिंसि लगत असाढ़, नित्य बरषै तहँ नीरद ।
 नदी नाल नीभरन, सरस बसुधा रसाल सद ॥

चहूँ ओर गुरु अचल, घाट दुर्घट घन घट्टिय।
 बंकोगढ़ बहु बिकट, नारि अरि दलन निहट्टिय॥
 पतै सुथान महाराण तिन, नैनबारा गुरु गढ़ निपट
 असपति अनेक आवै तऊ, जयति हिंदुपति खग भट ॥६६॥

संमुह दल जैसिघ, कुँवर रक्खैँ स कलापह।
 दल सुभीम दक्खनहिँ मंडि बहु सुभट भिलापह॥
 भुजा बाम भगवंतसिह, महाराय बंधू सुअ।
 रक्खैँ पीठि महाराय, मनोहरसिह मेरु धुअ॥
 दिसि च्यारि रक्खि दिगपाल ए, च्यारि च्यारि हाजार हय।
 नव सहस तुरग बिचि हिंदु नृप, जुद्ध राण राजेस जय ॥१००॥
 पातिसाह दल प्रबल, तदपि महाराण तेज तिन।
 परै न अगौ पाउ, हिरनपति ज्यौँ हूतासन॥
 तरु तरु थंभतु तकतु, जकतु जहँ तहँ गुरु जंगल।
 ज्यौँ कुरंग जंगली, समै समतल महि मंडल॥
 सापुरस सीह सी बान इन, अचल अचल ह्वैँ आदरत।
 औरंग सुसोवत औभक्त, चौँकि चौँकि उद्धत चित ॥१०१॥

(दोहा)

असपति अहनिसि औभक्तु, राण तेज असहेज।
 आयौ कै आयौ सु अब, अनमी हिंदु अजेज ॥१०२॥
 मंडै भूलि न हूँ महल, सहल न चढ़त जगीस।
 दहल राण राजेस की, दुरथौ रहत दिल्लीस ॥१०३॥
 डरत डरत असुरेस दल, करत मुकाम सु कोस।
 आए उदयापुर निकट, दुज्जन पूरित दोस ॥१०४॥
 बसुधाधर देखै बिकट, औघट घाट अजीत।
 थंभ्यौ निज दल तिनहिँ थह, भयौ साहि भयभीत ॥१०५॥
 धरैँ न कौ धाराधरहिँ, धर सम आए धाइ।
 राणनि सुनि ये बत्त रुचि, कबिलेस सौँ कहाइ ॥१०६॥

(कवित्त)

आवत जिन अहमेव, उनहिँ अहमेव सु आवहु।
 देखि देखि निज दुर्गा, कहा निज मन कंपावहु॥

(१४१)

धर सम आए धाइ, धसौँ अब क्यों न धराधर ।
जुरौ आइ इत जंग, रोस करि लेहु रटवर ॥
पिखिव पहार परि क्यों रहै, पय पय क्यों थंभौ सु पथ ।
राजेस राण कहि साहि सुनि, पवन बेग पक्खरहु रथ ॥१०७॥

(दोहा)

लरौ तौ आवहु अचल बिचि, न तरु कि छंडिव देस ।
जाहु साहि जुगिनिपुरहिँ राण कहत राजेस ॥१०८॥
संदेसा यौँ सवन सुनि, लगी अरि उर लाइ ।
रोस पूर महाराण कौ, सह हियै न समाइ ॥१०९॥
मनु मद पीनौ मक्कडाहिँ, डसि बृत्तिक लगि भूत ।
किँ किँ कौतुक ना करै, सो दिल्लीपति सूत ॥११०॥

(कवित्त)

कथन राण अति क्रूर, भूरि भृकुटी चढ़ाइ करि ।
दब्बि अधर कर मोडि, भूत भासुर सरोस भरि ॥
चढ़न कछौ चकतेस, बरजि तब खान बहादर ।
अहो कविले आलंम, बिकट अगौँ पहार बर ॥
नन लाग नारि गोरान, कौ हय रु हत्थी निबहै न तहँ ।
इहि मंत अन्य दल पटवहु, अप्पन साहि रहौ सु इहँ ॥१११॥

मानि बहादर मंत, दिल्लीपति रह्यौ मानि डर ।
सहिजादा निज सहि, अगुरु सुलतान अकब्बर ॥
सकल भाँति सनमानि, कछौ तुम करौ कटक्की ।
जोर हिंदु गिरि जोर, हलकि गहि लेहु हटक्की ॥
आवै सु दाइ दल लेहु अति, सैल सकल करिकै सरद ।
करि जोर हिंदु दल सौँ कलह, मही लेहु बडिम मरद ॥११२॥

साहि हुकम सु प्रमान, लटकि सीसहिँ चढ़ाइ लिय ।
सत्थ करी सु सलाम, साहिनंदन अनंत स्रिय ॥
अद्ध लाख सजि अस्व, सहस सिधुर मनु सैलह ।
कितै खान उमराव, गर्व गाढ़ै लिय गैलह ॥

हरवल हुस्सैन नबाब बहु, गोर नारि आराब गुर ।
चढ़ि चल्यौ अकब्बर चंड चित, पत्त ततखन उदयपुर ॥११३॥

प्रबल पौरि प्राकार, पिक्खि प्रासाद गृहं गृह ।
गोख भरोखा गिरुअ, जरित जारी सु जहाँ तहँ ॥
बहु देवल बाजार, हट्ट भनि केउ हजारह ।
सिगी काम सपल्ल, अटा चित्रसारि अपारह ॥
जहँ तहँ सुकुंड बर बापिका, बन उपवन सरवर सलित ।
भू नारि सीस जनु भालि यल, नगर उदयपुर चैन नित ॥११४॥

निरखि उदयपुर नैन, रिपु सुपत्तै अदभुत रस ।
भुल्लि रोस सुधि भुल्लि, देखि कमठान चहौं दिसि ॥
सँमुँह करत सराह, वाह फुनि वाह बर्दतह ।
राजथान सच्चा सु, राण इतमाम अनंतह ॥
पुर चहुँ ओर सु पराव परि, विषधर ज्यौं चंदन बिटपि ।
पतिसाह सु औरंग साहि पहु, थान थान तब थान थपि ॥११५॥

थपि थान चित्तौर, थपि पुर मंडल थानक ।
मंडलगढ़ बैराट, मैसरोड़हिँ सु भयानक ॥
दसपुर नीमच दुर्गा, चलहु सतकंधह चच्चर ।
अरु जीरन उँटाल, कपासनि नगर राजसर ॥
जरि थान उदैपुर भरि यवन, अति अनीति बरती अबनि ।
पतिसाहि साहि औरंग कौ, मक न परत छिनि रयनि दिन ॥११६॥

(दोहा)

थान जरै जहँ तहँ सु थिर, अरि औरंग असुरेस ।
मेदपाट महि मंडल, राण सुनी राजेस ॥११७॥

(कवित्त)

मेदपाटपति महल, भूप भूपह सु भूमि भर ।
महाराइ रावर, महिद रावत घन घुंमर ॥
राजा राव रढाल, आदि उमराव अनेकह ।
हिंदूपति क्रिय हुकम, सजौ निज सेन सटेकह ॥
भंजौ थान असुरान भर, निज निज घर रक्खौ सुनृप ।
अनसक कंक अरि उथपहु, तिल न गिनौ तुरकेस तप ॥११८॥

(१४३)

(दोहा)

हिंदूपति श्रीमुख हुकम, सुबर बीर सुप्रमानि ।
अप्प अप्प रक्खन अवनि, चढ़ै पवंग पत्तानि ॥११६॥

(कवित्त)

गोपिनाह कमधज्ज, चढ़ै बिक्रम चालुकह ।
रावत रतन उदंड, चंड चौंडाउत रूपह ॥
कहि सगताउत कन्ह, रंग रुखमांगद् रावत ।
चढ़ै राव चहुवाँन, केसरीसिंह सुहावत ॥
सामलहदास कमधज्ज चढ़ि, चढ़ि दयाल मंत्रीस बर ।
केसरीसिंह रावत चढ़ै, चौंडाउत नृप रज्ज चिर ॥१२०॥

चढ़ै कुँवर बर गंग, केसरीसिंह सुनंदन ।
सगताउत कुल सूर, जोर अरि जूह निकंदन ॥
दुर्गदास सोनिंग, चढ़ै राठौर सुचंडह ।
महुकमसिंह मरह, चौंडहर अकल अदंडह ॥
काल नरिंद जसवंत चढ़ि, दिल्लीपति दल बल दहन ।
सामंत राण राजेस कै, गुरु गुमान गय घड़ गहन ॥१२१॥

(दोहा)

चढ़ि उमराव चतुईसह, उद्धासन असुरान ।
सेन सहस दस अस्व सज्जि, निहसत नद् निसान ॥१२२॥

— — —

ग्यारहवाँ विलाम

(दोहा)

सोलंकी विक्रम सुभट, गोपिनाह कमधज्ज ।
रोमी तिन घन रलतलै, साहसवंत स कज्ज ॥ १ ॥
आवत जब जानै असुर, देवसूरि दुर्घट ।
रोमी द्वादस सहस दल, बल आराब बिकट ॥ २ ॥
नारि तहाँ औघट निपट, पंचकोस परजंत ।
अस्व एक पथ अतिक्रमै, चीँटी ज्यौँ सु चलंत ॥ ३ ॥
दीनौँ आवन दुअन दल, नारि मध्य निरभार ।
रोकै तब दुहुँ राह कै, पहुनि करन पैसार ॥ ४ ॥
मारि मचाई दुहुँ मरद, विक्रम चालुक बीर ।
गोपिनाह कमधज्ज नै, मारै बड़ बड़, मीर ॥ ५ ॥

(छंद त्रिभंगी)

विक्रम बलवंता रणरस रत्ता अति हिउ मत्ता सामंता ।
पिसुननि पर पत्ता तेजी तत्ता बसुहब दत्ता दुईता ॥
करबाल रु कुंता हत्थ फुरंता बीर बिरत्ता बाधंता ।
प्रजरंत पलित्ता जंगहिँ जुत्ता धमचक धुत्ता गुरु गत्ता ॥ ६ ॥

रोमी मुँह रत्ता घेरि सुघत्ता भय भय भित्ता चल चित्ता ।
अल्लह उचरंता असुर उद्धता खब्बड़ खुत्ता मदमत्ता ॥
तक्कैँ गिरि गत्ता सरण असत्ता मन सुभिरत्ता तिय पुत्ता ।
बिसरै सुधि बत्ता कै तनु छित्ता तरु तरु लिता बिलवंता ॥ ७ ॥

कितनैँक कबिल्ला उररि असिल्ला अक्खिल्ला इलल्ला महिमिल्ला ।
काजी बहु मुल्ला बिफुरि बिलुल्ला भर मुह भल्ला सिर खुल्ला ॥
नर निपट नवल्ला रंग रसिल्ला दंदहु भल्ला मनु मल्ला ।
खग तेजरु भल्ला बान बहिल्ला गुरु जग हिल्ला हर हुल्ला ॥ ८ ॥

कत्ती किलकिल्ला सक्ति सलिल्ला तोब त्रिसूझा जाजुझा ।
 दल मचि दहचल्ला लोह उजझा नहिँ बिचि पल्ला भर भल्ला ॥
 धूमत घायल्ला छक्क छयल्ला तजि गृह तल्ला एकल्ला ।
 तुटि तूर तबल्ला ढरि गज ढल्ला कायर डुल्ला अकतुल्ला ॥ ६ ॥

सोलंकी सूर बबकि बिहूरा किय भकभूरा अरि भूरा ।
 नाहर ज्यौँ तूरा बजि रन तूरा सुर सिंधूरा परि पूरा ॥
 पर दल चकचूरा करि बल क्रूरा बरि बर हूरा रिन रूरा ।
 अरि विष अंकूरा सकल समूरा ज्यौँ जर मूरा उनमूरा ॥ १० ॥

गोपा कमधज्जा सूर सकज्जा अटल अजेज्जा गुरु लज्जा ।
 सिंधुर हय सज्जा रूप सुरज्जा धर गिरि धुज्जा खग बज्जा ॥
 तीखै तनु तज्जा भूरत भिज्जा गगन सु गज्जा आचिज्जा ।
 भय करि रिपु भज्जा सीस सरुज्जा गिद्धिनि खज्जा गहि चुज्जा ॥ ११ ॥

दुज्जन दहबट्टा बिमन विकट्टा खग मग खुट्टा उदभट्टा ।
 नर के ज्यौँ नट्टा उलट पलट्टा भरत कुलट्टा तंग तुट्टा ॥
 जोधा रस जुट्टा घनदल घट्टा दुपट उपट्टा गाहट्टा ।
 झुकि झुकि खग झट्टा उफट्टा सझट्टा रिणरस लुट्टा आहुट्टा ॥ १२ ॥

ररबरि घन रुंडा विचलि विहंडा महि परि मुंडा खल खंडा ।
 आसुर सु उदंडा बिलफ बिंतंडा प्रबल प्रवंडा भुजदंडा ॥
 कर सर कोदंडा बहु बलबंडा भल किय भंडा खल खंडा ।
 करि कट्टि भसुंडा अरिन अखंडा चढि रिण चंडा झरमंडा ॥ १३ ॥

(कविच)

मंड्यौ झर मुंछाल, काल रोमीन खयं कर ।
 सोलंकी नृप सूर, नाम बिक्रम सु बीर नर ॥
 साच वाच सा धम्म, गोपि नायक युग कित्तिय ।
 देवसूरि दुर्घाट, यवन सेना तिन जित्तिय ॥
 लुटि लच्छि खजान अनेक बिधि, राणा राजेसर सुबल ।
 जय पत प्रथम इहि जंग जुरि, भल भगौ असुराण दल ॥ १४ ॥

बारहवाँ विलास

(दोहा)

उदयभान कूँअर अमर, चाहुवान चतुरंग ।
उदयापुर थानै उररि, मारै म्लेच्छ मतंग ॥ १ ॥
रुक्मागद रावत्त कौ, कूँअर सूर सपष्प ।
सहस पचीसक असुर पर, नंखी बग्ग समुष्प ॥ २ ॥
सूरा एकहि सहस सम, सहसहिँ सद्धत्त एक ।
सहसनि हूँ सद्धै न्हिँ, सूरा एक अनेक ॥ ३ ॥
धनि आसंगनि धीर धनि, धनि धनि चित्तसुधर्म ।
साँई कज्जै रचि समर, मारै असुर अधर्म ॥ ४ ॥
पचीसौँहि पवंग साँ, सहस पचीसनि मध्य ।
असुरायन उद्धंस तै, निकरै सेन सु सद्धि ॥ ५ ॥

(छंद हनुफाल)

तुटैब ज्यौँ खहतार, कलि उदयभान कुमार ।
मह यवन सेन सु मध्य, योधार मंडिय युद्ध ॥ ६ ॥
करबाल कुंत रु कत्ति, आदेय देवि उमत्ति ।
रिपु उदरि परिय सु रौरि, दल मचिय दौरा दौरि ॥ ७ ॥
मुख चवत चूक रे चूक, भट बिकट अग्नि भभूक ।
बिफुरै सु हिंदू बीर, मारंत बड़ बड़ मीर ॥ ८ ॥
हय हय सु केइ जकंत, के सिलह जीन कुकंत ।
उभकै सु सोवत केक, कहि तेक तेक रे तेक ॥ ९ ॥
भुंजतै कै भयभीत, उठि भगै बारि अपीत ।
सतरंज पासा सारि, भरपै सु खेलहिँ डारि ॥ १० ॥

(१४७)

कितनैक करत निमाज, धावंत ध्यानहिं त्याज ।
हलहलिय दल परिहाक, छवि उतरि उत्सक छाक ॥११॥
धुंधरिय नभ घन धोम, गडडंत गज्जत गोम ।
भरहरिय कायर भग्नि, लकलकिय उर धा लग्नि ॥१२॥
रिपु रुंड मुंड रुडंत, मुख मार मार बकंत ।
उड़ि सोन छिछि अपार, बहि चलै रत्त प्रनार ॥१३॥
भलहलत सिलह सभान, भट उभट बज्जि अमान ॥
किलकार बीर कुकंत, हलकार केक हकंत ॥१४॥
कटि सीस नचत कमंध, ज्यौं फिरत नर जाचंध ।
कटकंत हड्ड कटक, खनकंत खग्नि भटक ॥१५॥
भभकंत इभभ भसुंड, बहिरत्त दंड बिहंड ।
हय नरनि परि संहार, हरखंत हर रचि हार ॥१६॥
गिद्धिनिय अरु गोमाय, पल लेइ केइ पुलाय ।
तुटि टोप तुबक रु त्रान, कोदंड कुंत क्रपान ॥१७॥
चौसट्टि पीवत चोल, भरि भरि सु पत्र अलोल ।
बिहसंत बीर बेताल, कलिकाल भाल कराल ॥१८॥
अरि मित्र अप्पन आन, तन परत सुद्धि सयान ।
हहरंत कै मुख हाय, लगि जानि ग्रीषम लाय ॥१९॥
तरफरत कै अवतंग, असि छिन्न भिन्न सु अंग ।
संहरिय आसुर सैन, जनु परिय सिंह सु ऐन ॥२०॥
अटक्यौ न किहिं मुख आइ, बर बीर धीर बलाइ ।
चहुँवान रिन चित चंड, अति सबल सकज अखंड ॥२१॥
निकरै सु अरिन निहति, अखियात अचल सु किति ।
राणा महा राजेस, सनमान कीन बिसेस ॥२२॥

(कविच)

सनमानिय सु बिसेस, दिए बर ग्राम दोय दस ।
सोवन साकति अस्व, सरस सिरपाव जरकस ॥

(१४८)

कंक बंक कशबाल, कनक नग जरित कटारिय ।
बीरा प्रवर कपूर, बहुत चित हित बिस्तारिय ॥
रिन रुकमांगद रावत कौ, उदयभान अत्थौ कुँवर ।
चहुवान बीर रस चौगुने राण कहत राजेस वर ॥२३॥

तेरहवाँ विलास

(दोहा)

अंगज साहि औरंग कौ, अकबर साहि अमान ।
धस्यौ पहारनि मध्य धर, रिन जित्तन महारान ॥ १ ॥

बाजी सहस बतीस सौ, नर वै केइ नवाब ।
नारिगोर आराब गुर, सजि दल चढ़्यौ सिताब ॥ २ ॥

हरबल अल्लिहुसैन हुव, पकौ पंच हजार ।
कलह कूर कंकाल कर, रढ़ छंडै नन रारि ॥ ३ ॥

भंड रुपि भारौल थह, द्वादस कोस प्रमान ।
नैनबारा गिरिवर प्रगट, सुभट थट्ट महाराण ॥ ४ ॥

निसुनि बत्त हिंदू नृपति, सामंतनि सनमान ।
पठये आसुरि सेन पर, जंगहि भीषम जान ॥ ५ ॥

(कवित्त)

निनहि बेर तुरंत, बीर बिफुरंत खिवंतह ।
तरित जानि तटकंत, विमल कलिकंत बधंतह ।
महासिंध मुंछाल, राज रक्खन बड़ रावत ।
रतनसीह गुरु रोस, चढ़ै रावत चौडावत ॥
चहुवान राव फुनि सजि चढ़ै, केसरि सिंह सुकक बर ।
त्रयवेनि सलित ज्यौं सेन तिहुं, उलटि जंग असुरान पर ॥ ६ ॥

बीर बैर बिडुरिय, भीर उम्भरिय रोस भर ।
सिंधु राग संभरिय, धोम धुंवरिय व्योम धर ॥
साँइ नाम संभरिय, सह संधुरिय सुत्रंवर ।
धक्क हक्क धमचक्क, उदरि आसुर भक्क उमभक्क ॥
मुंडाल काल लंकाल सम, भंड भंड देवे भूपट ।
रावत राण राजेस कै, लोह छोह पावक लपट ॥ ७ ॥

दुड्ड हड्ड दड्ड मुड्ड, मुड्ड आरुड्ड जुभारह ।
 मंडि मौर ढकचार, बज्जि बैरिन सिर सारह ॥
 बरसि बान दुरि भान, रँनु नभ उड्डिय डंवर ।
 कल कल मचि मचि कूह, जूह कबिलान उभंभर ॥
 तोबा करंत हहरंत हिय, धूक भंति रन बन घुसत ।
 रावत्त मत्त महसिंघ मुख, सन्नु सेन न धरंत सत ॥ ८ ॥

(छंद गीतामालती)

धसमसिय धर गिर सिहर उद्धसि बीर गुर गस उभंभरै ।
 कलकलिय परि मचि कूह कलकल भलल बिज्जुल उगघरै ॥
 भटभटिय बजि रिन भाक भरभट त्रिघट घन घट तच्छयं ।
 महसिंघ बंक उमत्त रावत बैरि करन बिभच्छयं ॥ ९ ॥

चल प्रचल अरि दल सकल चल दल होत रलतल सामुहैं ।
 भलमलत सिलह स टोप भलमल चपल चंचल आरुहैं ॥
 करबाल रिपु कुल काल कर गहि मरद मारत स्लेछयं ।
 महसिंघ बंक उमत्त रावत बैरि करन बिभच्छयं ॥ १० ॥

सलसलिय फनधर सधर संकर कंध कच्छप कसमसैं ।
 भलभलिय जलनिधि सलिल थल जल अनल विनल सु उद्धसैं ॥
 डर बिडर दिसि दिसि बिदिसि डंवर पह उभंभर पिच्छयं ।
 महसिंघ बंक उमत्त रावत बैरि करन बिभच्छयं ॥ ११ ॥

चढ़ि चाक चहुँ चक उभक हकबक छैल मद छक छुट्टयं ।
 किलकंत कंत हसंत कलरव जंग जहूँ तहूँ जुट्टयं ॥
 मचि मार मार बकंत मुख मुख कच्छ ज्यौँ नट कच्छयं ।
 महसिंघ बंक उमत्त रावत बैरि करन बिभच्छयं ॥ १२ ॥

खनकंत खग उनग खगान भनकि जानि कि भल्लरी ।
 भनकंत भेरि नफेरि भुंगल तूर त्रंभक दुरबरी ॥
 गावंत सिंधु राग गोरिय पिसुन पारन पच्छयं ।
 महसिंघ बंक उमत्त रावत बैरि करन बिभच्छयं ॥ १३ ॥

कटि कंध अंध, कर्मंध आसुर बीर नक्षत बावरै ।
 भटकंत दिसि दिसि धाइ खग भट उभट समट उतावरै ॥

सलहंत सूर सनूर साहस मीर मीरन संमिले ।
रघु चौडहर गुरु रतन रावत रिनहिँ रिपुदल रलतले ॥१४॥

बिबि खंड बंड बिहंड बाहू मिन्छि मत्थय संभिरै ।
लसि लोह छोह सु रत्त लोयन बीर रस बर बिस्तरै ॥
घट बिघट घाट त्रिघाट घाइय घुरिय घन घन घंघलै ।
रघु चौडहर गुरु रतन रावत रिनहिँ रिपुदल रलतलै ॥१५॥

भभकंत इभभ भुसुंड तुंडनि प्रचलि स्रोन प्रनालयं ।
ढरि ढाल लाल सु पीत नेजा ढंग मिलि ढकचालयं ॥
घूमंत असि छक बिछक घाइल दुट्टि खप्पर टलतलै ।
रघुचौडहर गुरु रतन रावत रिनहिँ रिपुदल रलतलै ॥१६॥

लटकंत किहिँ सिर पीठि लड़लट तदपि घट घट ना घटै ।
असि कंक बंक उभारि अंबर फिरत टट्टर कै फटै ॥
उड़ि छिछि स्रोन सजोर संमुह चोल चच्चर संचलै ।
रघु चौडहर गुरु रतन रावत रिनहिँ रिपुदल रलतलै ॥१७॥

पय भरत रोपत कुंत धर पर लरत परत न लरथरै ।
जनु जनमि धुर इक जंघ जनपद सूर सूरन संहरै ॥
रिण मिलित रोर सु यवन रजवट गलित गज थट गजगलै ।
रघु चौडहर गुरु रतन रावत रिनहिँ रिपु दल रलतलै ॥१८॥

तुटि सिलह टोप सु त्रान तुरकनि तेक तुबक तुरंगमा ।
धज नेज तोरि भंभोरि भंडनि भाक बज्जि भमंभमा ॥
गटकंत युगिनि रुहिर गट गट दबट दहबट दुज्जनों ।
केसरीसिंघ सु कंक गहि करि राव भल सज्यौ रिनो ॥१९॥

गहगहिय खग गोमाय गिद्धिनि मुंड रुंडनि भरफरै ।
कुननंत अंत फुरंत फेफर तंग भंग सु तरफरै ॥
धावंत सून तुरंग सिंधुर तोरि सुंखल बंधना ।
केसरीसिंघ सु कंक गहि करि राव भल सज्यौ रिनो ॥२०॥

हर अट्टहास प्रहास प्रमुदित कमल गल माला गठै ।
बेताल बपु बिकराल ब्यंतर बीर बख बख करि उठै ॥

नचंचंत नारद तान नव नव बीर बरत बरांगना ।
केसरीसिंघ सु कंक गहि करि राव भल सज्यौ रिनाँ ॥२१॥

लगि जेट लुत्थि अलुत्थि लुत्थिन आन अप्पन को लखै ।
परि दंति पंति पवंग पाइल धंखि धर धरनी धुख ॥
लुटंत हेम सु रूप लुत्थिय करि तुरंगम कूदना ।
केसरीसिंघ सु कंक गहि करि राव भल सज्यौ रिनाँ ॥२२॥

दग देखि हिंदू सेन दह दिसि अचल दल कल कंदलै ।
भरहरिय अल्लिहुसैन भगिय साहिजादा सं पुलै ॥
जय पत्त जंगहिँ राव रावत बोल रक्खै बहुगुनाँ ।
केसरीसिंघ सु कंक गहि करि राव भल सज्यौ रिनाँ ॥२३॥

(कवित्त)

को अडुझ हरवल, को सु करवल अठिल्लह ।
कि गज ठल मफिल, भूप छावल छयल्लह ॥
दुज्जन कौन दुहिल, कहा कोतिल रु सिल्लह ।
कि सु किल बनि निल, नेत किं पित्त सुलल्लह ॥
सादुल्ल मल्ल एकल्ल सेह, ए भल्ल जे खल्ल जिन ।
रावत्त मत महसिंघ मुख, रहै न को आसुर सु रिन ॥२४॥

रावत चढ़ि रतनेस, असुर दल कट्टि अपारह ।
ररबरि रंक करंक, भूमि बल लिय भर भारह ॥
सार धार भकभार, अंखि पिख्यौ उद्धम अति ।
हरवल अल्लिहुसैन, भगौ सु नबावहि रन भति ॥
भय पाइ साहि दल सब भगौ, भगौ साहिजादा डरत ।
पय गिरत परत लरथरत पथ, धावत पल धीर न धरत ॥२५॥

उद्धसै असुरान खान, सुलतान खुरेसिय ।
मत्थय बिनु किय मुगल, सैद संहारै विदेसिय ॥
पिट्टै सेस पठान, लोदि बिल्लोचि बिडारै ।
भंजै भंभर भूरि, सकल सरवानि संहारै ॥
हक्खी रहिल्ल उज्जवक सु हनि, गक्खर भक्खरि परिगहन ।
चहुवान राव केहरि सु चढ़ि, महारंभ किय महमहन ॥२६॥

(१५३)

(दोहा)

तजि पहार भगौ तुरक, गिरत परत उरभंन ।
घाट घाट घन घटतु, हिय सु हारि हहरंत ॥२७॥
कहुँ सु नारि हथनारि कहुँ, कहुँ रथ सिलह सभार ।
हय गय भर आसुर नरनि, परि गय मग संहार ॥२८॥
फागुन मास सु फरहरत, तनु थरहरत सु सीत ।
सब निसि कोस पचीस लौ, भगौ रिपु भयभीत ॥२९॥
आए साहि हजूर सब, कटै बढै कद्रूप ।
कहि उदंत आलम कबिल, इहँ रहनान अनूप ॥३०॥
जोरावर हिंदू जुरै, मुंड मुंड रहै भूमि ।
बे सु भूमि कै भूमिपति डप्पन सकल अभूमि ॥३१॥
ए पहार पति आदि कै, रहै पहारनि रुक्मि ।
लागत अपनौ इहिँ लगै, थान थान मग थक्कि ॥३२॥
मारै पर्वत मध्य ए, फुनि जौ करै प्रयास ।
गहौ घाइ चितौरगढ़, महा अचल मेवास ॥३३॥

(कवित्त)

साहि सु बचन प्रमानि, सकल दल साज बेग सजि ।
कियौ सु पच्छौ कूच, तबल टंकार तूर बजि ॥
बढ़ि अवाज बसुमती, हलकि ज्यौ जलधि हिलोरह ।
उबट बट्ट गज थट्ट, बंधि कंठल चहुँ ओरह ॥
नर वै नवाब उमराव बहु, पर अप्पन समुझि न परत ।
चित्रकोट जाइ बेगै चढ़्यौ, अति दिल अंतर औदरत ॥३४॥

(दोहा)

पच्छौ भय धरि दिङ्गिपति पुल्यौ कोस पंचास ।
गहौ जाइ चितौरगढ़, उपजी जीवन आस ॥३५॥

चौदहवाँ विलास

(दोहा)

सज्यौ सु दुर्गा बिसेस कै, पौरि बुरज प्राकार ।
नारिगोर आराब रुपि, अन्न सु संचि अपार ॥ १ ॥
कबिल गल्ह ऐसी करत, महि मेवार बसाँउँ ।
रोकि चित्रकोटहिँ रहूँ, जाव जीव नन जाँउँ ॥ २ ॥

(कवित्त)

पहिलौने पतिसाह, बरस द्वादस करि बिग्रह ।
गढ़ लिन्नै बिनु गये, गरब गुरु छंडि छंडि गृह ॥
हौँ अभंग औरंग, साहि गढ़ सु बसु बसाँऊँ ।
महि सु लेहुँ मेवार, दाम निज नाम चलाऊँ ॥
दिल्ली न जाँउ इहिँ दुर्गा ही, जाँ जीऊँ तौ लग रहौँ ।
याँ लोक सुनाउन गल्ह गुरु, साहि करत धर संगहौँ ॥ ३ ॥

(दोहा)

रह्यौ साहि औरंग रुपि, चित्रकोट गढ़ चंग ।
केहरि ज्यौँ गिरि कंदरा, रोकि रहै रिन रंग ॥ ४ ॥
बिंटिय गढ़ दल बल बिकट, ज्यौँ जलनिधि मधि दीप ।
ठौर ठौर चौकी ठई, उदभट भट अवनीप ॥ ५ ॥
गंग कुँअर गुन अगारौ, सगताउत सिरमौर ।
आप जनाउन आसुरनि, चढ़ि लग्यौ चीतौर ॥ ६ ॥

(कवित्त)

बय किसोर तनु गौर, समर बरजोर सूर तन ।
दिल उदार दातार, बधत बड़वार ऊँच मन ॥
सब सयान गुरु मान, राज महारान सभा मुख ।
भर किँवार मेवार, सुभट सिरदार सदाँ सुख ॥

(१५५)

केसरीसिंह रावत्ता कौ, कुँअर गंग बहु सेन बनि ।
चढ़ि धायौ गढ़ चीतौर कौ, आप जनाउन आसुरनि ॥ ७ ॥

सौ कुंजर साहि के, मग्ग बिचि मिलै भरत मद ।
अंजन गिरि से संग, रंग मचकुंद कुसुम रद ॥
घम घम घूँघर घमकि, ठनन घंटानि ठनंकत ।
पीठि भूल पटकूल, पढ़त पीलवान धत्त धत ॥
अंकुस प्रहार मानै न जे, तोरत संकर साख तर ।
चर अग पच्छ चरखी चलत, लेत लपेटै सुंड भर ॥ ८ ॥

सबल दरोगा सत्थ, असुर असवार पंच सय ।
नेजा बजत निसान, हेख हेखनि हींसतु हय ॥
तकि तकि मारत ताक, कठिन कम्मान बान कर ।
पाखर जरित पवंग, सार संनाह टोप सिर ॥
दो दो कटार कटि चोँन दो, दो दो तेग बंधै दुमन ।
चौकी सु देत बन चौकसी, गजनि सिखावत सुगति गुन ॥ ९ ॥

सुंडारे साहि के, निरखि बहुरूप निवच्छर ।
गरजै कुँवर गंग, फौज असुरनि अड्डौ फिरि ॥
फेरौ रे कहि पील, हकि पीलवान हँकारे ।
सबनि अज्ज संहारौ, उररि असि बर उभारे ॥
महाराण दुहाई कहु सुमुख, हथि लै चलौ गैल हम ।
नन जान देहुँ कुंजर सु इक, तेक तुबक समरौब तुम ॥ १० ॥

सुनि सु दरोगनि सेन, आइ गय हथिन अड्डै ।
मार मार मुख बकत, अधिक ढकवार उमंडै ॥
असि उभारि ऊधरी, कुँअर धायौ जन केहरि ।
कबिल निकाल कराल, भाक बज्जी सु भाटभरि ॥
मारे सु मीर बड़ बड़ मुगल, उछरि उछरि उभरि उररि ।
मचि करल कूह करि जूह मधि, गंग जंग मंड्यौ सुपरि ॥ ११ ॥

(छंद विज्जुमाला)

गरजि कुँअर गंग, रोके करि जंग रंग ।
अंवर उभारै तेग, बाहत पवन बेग ॥ १२ ॥

तुट्टै रिपु तुड मुंड, बारुण करै विहंड ।
लरथरै परै लुत्थि, अनो अन्यं सं आलुत्थि ॥१३॥

आराव छुट्टै अछेह, मानौ गज्जै भहौ मेह ।
धर गिरि धुआँ धार, उठे बीर चहूँ ओर ॥१४॥

किलकि किलकि केक, तुरकनि भारै तेक ।
लुंवि मुंवि ललकारि, हक्कै बक्कै मारि मारि ॥१५॥

उखरै उतग सौन, छिछि भिछि धप्पी छौनि ।
टट्टर बहूँ गुरज्ज, प्रथक उडै पुरज्ज ॥१६॥

सट्टै खुट्टै तुट्टै सत्थ, लगौ योधा लत्थौवत्थ ।
धाकि लौ उठिल्लै धाइ, किन्नै छिन्नै भिन्नै काइ ॥१७॥

उररि देते उपट्ट, भाक बज्जै भट्टो भट्ट ।
खुप्परि खनकै खग, अरि भगौ अगो अग ॥१८॥

कबिल नचै कमंध, बिछट्टै उछट्टै बंध ।
घाइन छकै घुमंत, जनां दंती दुरदंत ॥१९॥

परिग सु दंति पंति, भरनि पहार भंति ।
छायौ गैन रेनु छाया, हहरै करै के हाइ ॥२०॥

कायर भगे कुरंग, समरि सु गेह संग ।
सहै भिर सूर सूर, त्रंजक त्रहक्कै तूर ॥२१॥

तुट्टै टोप तेग त्रान, नौरंगे नेजा निसान ।
अस्व डारै असवार, धावै लगौ खगौ धार ॥२२॥

रोरै जोरै भारे कुंत, उभारै बाहूँ सुमंत ।
निकरै परै निनार, दससै लसै दुसार ॥२३॥

मही हरै रुंड मुंड भमकै करी भसुंड ।
चौसट्टी पीवै सु चोल, उछंगै रंगै अल्लोल ॥२४॥

रुडमाला गंठ, रुद, निहस्सै नारद नद ।
पलचारी धप्पै प्रेत, डक्कारै हक्कार दैत ॥२५॥

(१५७)

गिद्धनी भरफे गैँन, बुट्टे खुट्टे मंस चैन ।
भारी यों मच्यौ भारतथ, प्रगटे मनौ पारतथ ॥२६॥
भगौ ते दरोगे भोर, जैसे प्रात होते चोर ।
हाक फुक्की हाहाकार, दिल्लीपति दरबार ॥२७॥
धाओ रे धाओ को धीर, माम्मी जोई बड़े मीर ।
दंती सौही एक दौर, जाय लिए हिंदू जोर ॥२८॥

(कविच)

जीते कुँअर सु जंग, कितक करि जूह भंग करि ।
कितक भारि पीलवान, तोरि संकर गय भर हरि ॥
सब में देखि सरूप, हथि दस बीस सु हंकै ।
कुंत अनी चुंकरत, सुभट हुंकरत सुबंकै ॥
निरभय निसंक बहुरे निगम, हथिन हल्लत तिन हनत ।
केसरीसिंघ रावत कौ, गंग न आलम कौ गिनत ॥२९॥

सुनी साहि औरंग, गंग कुँअर लिन्नै गज ।
बदन छाई बिलखाय, सीत माखौ मनु पंकज ॥
उरहिँ भ्रसक्कि ससंक्कि, भुभि भल्लमलिय स्वेद तन ।
गय सु सुद्धि बर बुद्धि हुत्थ दलमलत दीन मन ॥
गहु गहु सु जान पावै न गज, गहु सु गंग हम गज गहन ।
हँसिहँ जिहाँन हत्थी गयै, इन सु बत्त कछु सोह नन ॥३०॥

धपै धींग पर धींग, खँग चढ़ि चढ़ि सँग गहि ।
परत नाल परताल, बज्जि खुरताल धुज्जि महि ॥
कवच त्रान पक्खरनि, करी मंङ्कुरिय भमंभम ।
तबल तूर टंङ्कुरिय, निगम संङ्कुरिय क्रमंक्रम ॥
कलकलिय सुरव बंबरि बहरि, अरक उंमत्तरि डरि बिडुरि ।
पिक्खै कुँआर आवत पिसुन लुंङ लुंङ जलनिधि लहरि ॥३१॥

करि अगौ करि जूह, बग्ग थंभै सु बाजि बर ।
कलहणि कंठल कोर, मंडि मोरछा सुहर भर ॥
रुक्कि राह खगवाह, करहिँ करबाल भवुक्कत ।
ज्यों सलिता जल पूर, आइ अड्डै गिरि रुक्कत ॥

भय सेल भेल भयभीत, मचि, दंग जंग दरबरी दवरि ।
बढ़ि बोह छोह तनु मोह तजि, समर ईस गंगा गवरि ॥३२॥

सार सार संचटे धार संधार संतुष्ट ।
भूमकि अगि भर जगि, लगि खग भट खल खुट्ट ।
बज्जि भनंक खनंक, कंक भलमलत सु भौई ।
घुरिय सुघाट त्रिघाट, सौह हंकरि निज साई ।
कहि वाह वाह भल भल सु कहि, बीर पचारत बिबिहि भति ।
रिन रौर घोर रलतल रुहिर, गंग कुँअर कुँभत सुमति ॥३३॥

भट किसोर उड़ि गोर, धटकि गुरु नारि धरं धरि ।
खरहरि सिंहरी सु खंग, धरणि धरहरि परिधुंधरि ॥
गज्जि गोम लागि व्योम, बुंद भर बरखत गोरिय ।
अधिक गाज आग्राज, भूमकि बिद्युत खग जोरिय ॥
बजि डुंभ गुंभ आयुध बिखम, अति भंभोरिय तनु सुतर ।
भारथ उमड़ि भव सु भर, कुँअर गंग कुँभत कहर ॥३४॥

रुंड मुंड ररबरत, परत धर पर हय बर खुर ।
तंग भंग तरफरत, ससत, सरफरत चरन कर ॥
सिधुर दरबर सबर करर बज्जत तनु पंजर ।
हरबर खर भर होत, समर सज्जै भर सर भर ।
भरहरत अरिन सिर रुहिर भर, बजि गुरुज्ज गुरु परि बिहर ।
चवै चलै चेल रंग चोल ज्यौँ, चलि प्रवाह चच्चर सुचिर ॥३५॥

भभकि भसुंड बिहंड, भरिय करि सुंड उदंडह ।
उछरत परत उत्तंग, जानि अजगर अहि जडुह ॥
कटि संनाह पखरनि, कवच कटकंत खग भट ।
तुट्टि सथ लागि बत्थ, लुत्थि आलुत्थि लट्टपट ॥
भरफरत गगन थट गिद्धिनिय, चिल्ह चंचु जनु कुंत फर ।
कर चरन रु मत्थय आसुरनि, गहत उड़त अंबर अधर ॥३६॥

परै मुगल सय पंच, पंच सय परै पठानह ।
सेख जादे सत्त सै, सैद इक सहस प्रमानह ॥
लोदि बलोचि अलेख, परै सत्थर सरवानी ।
गकखरीन कौ गिनय, भूरि भंभर भर भानिय ॥

(१५६)

रुंमी रुहिल्ल उजबक असुर, परै करंक करंक परि ।
फुनि भगी फौज पतिसाह की, गंग जैति कीनी बहुरि ॥३७॥

कहुँक नारि करिनारि, कहुँक करि करभ कहुँ हय ।
कहुँ सिलह रथ सुभर, कहुँक खच्चर खजान मय ॥
कहुँ नेजा रु निसान, जीन पक्खर तजि भारिय ।
नहुँ आसुर निलज. हीय हहरत अति हारिय ॥
सगताउत गंग कुँअर सुहर, दिल्लीपति दल बल सु दलि ।
गजराज नवंनव जूह गहि, गृह आए जितेब कलि ॥३८॥

(दोहा)

एकहि बैर औरंग कै, नव गजराज उतंग ।
भेट कियै महाराण की, केहरि कुँअर गंग ॥३९॥
हरषै हिंदूपति सु हिय, दंती देखि दीवान ।
सगता गंग कुँआर कौ, कियौ अधिक सनमान ॥४०॥
हेम तोल चंचल सु हय, साकति हेम सरूप ।
बसुमति ग्राम बढ़ाउ बहु, अरु सिरपाव अनूप ॥४१॥

पंद्रहवाँ विलास

(दोहा)

चकतापति चीतौरगढ़, रोकि रह्यौ हठ पूरि ।
कितक बरस छाउन कहत, दिल्ली छंडी दूरि ॥ १ ॥

एह गल्ह असुरेस की, बिथुरी सुनि बिरुदाल ।
भीमराण राजेस कौ, कुँअर कोपि कराल ॥ २ ॥

दिल्लीपति कौ देश तैं, कट्टन कियौ सु मंत्र ।
सोरठ अरु गुजरात सब, मारन देस सहत ॥ ३ ॥

बजै त्रंबक बज्जनै, बढी सकल भय बात ।
भीमसिंह कुँअर चढ़ै, मारन धर गुजरात ॥ ४ ॥

हय गय रथ पायक सजै, सजै सकल उमराव ।
तुंग तुंग फौज मिली, ज्यौ सलिता दरियाव ॥ ५ ॥

बोलत बहु बिरुदावली, दुरत चौरै दुहुँ ओर ।
चढ़ै बाजि चंचल चतुर, भीम कुँवर दल जोर ॥ ६ ॥

(कवित्त)

भीम कुवर दल जोर, चढ़ै गुज्जरि धर मारन ।

कटक बिकट भट उभट, सुथट गज घट भट चारन ॥

बोलत बहु बिधि बिरुद, मरद भंजन आलम मद ।

गुरु पगार मेवार, सूर सु प्रताप ऊँच पद ॥

जयकार जुधार अपार युध, दृढ़ प्रहार करबार कर ।

जगजैत राण राजेस के, तौसुँ कौ मंडै समर ॥ ७ ॥

अंबर धर आवरिय, रंग भंखरिय रजंबर ।

धाराधर धुंधरिय, दुरिय दुति चंड दिवायर ॥

बढी हेष पर हेष, बहरि बंबरि कलरव बहु ।

सुनियत सदन स्रवन्, जूह हय गय रथ गहमहु ॥

अनुसरत इक्क इक्क अगग मग, उमग मगग परि भरि अवनि ।
सजि चढ्ठौ सेन गुज्जरि सधर, भीमसेन ज्यौ भीम भनि ॥८॥

भई भूमि भय कंप, प्रचलि पर धर पुर पत्तन ।
होत कोट संलोढ, गिरत गढ़ दुर्ग गाढ़ घन ॥
दिसि दिसि उट्टि दहक, भुक्क भय गुरु भर भक्खर ।
सर सलिता द्रह सुक्कि, रुक्कि दर राह धरद्धर ॥
थरहरिय थान थानह सु थिर, बिथुरि प्रजा डुल्लत अथिर ।
प्रजरंत नैर खरहर सु परि, जहँ तहँ मंनिय जोर डर ॥९॥

उजरि अहमदाबाद, पीर पट्टन ससंक परि ।
खंभायत खरहरिय, सूँन सूरति घन संहरि ॥
जूनागढ़ जंजरै, कच्छ कलकाल सु मंनि डर ।
गौर सिंधु सो बीर, भूमि बहु भई उमंखर ॥
मचि हक्क धक्क चहुँ चक्क मधि, आप आप भय बढ़िय डर ।
चढ़ि भीम राण राजेस कौ, आयौ कै आयौ कुँवर ॥१०॥

सुबच सुभग सुंदरिय, दुरिय गिरि दरिय ससंकिय ।
सालंकरिय सुबेस, चित्रनिय चित्र कलंकिय ॥
नवयोवन सौबन्न, सुवान मानिनि मृगनैनिय ।
रूप रंभ आरंभ, दरस देखै सुख दैनिय ॥
पयतन प्रवाल पल्लव सु पय, सत्थन कौ सत्थी सुबिय ।
बहु भीमसेन कुँवर सुभय, डोलत बन घन सत्रु तिय ॥११॥

(छंद पद्धरी)

सजि भीमसेन सेना बिसेस, दहबट्ट करन गुज्जर सुदेस ।
दल बिंटी प्रथम ईडर दुरंग, भट विकट जानि चंदन भुजंग ॥१२॥

गढ़ तोरि तोरि गट्टै कपाट, थरहरिय थान असुरान थाट ।
नट्टौ सु सैद हॉसा नवाब, गढ़ छंडि छंडि किल्ला सिताब ॥१३॥

रलतलिय प्रजा बहु परिय रौरि, डर मंनि जात बन गहन दौरि ।
बनिता धपंत लहु नंखि बाल, भूषन पतंत खिरि मुत्ति माल ॥१४॥

तजि न्हाण बख इक तनु लपेट, चित चौँकि जात दीनै चपेट ।
ब्याकुलिय इक्क अध गुंथि बेनि, भरि फाल जात ज्यौँ जात ऐनि ॥१५॥

नैनिय निय सु कज्ज छंडै निनार, चल चलिय खलक भय भीत भार ।
को गह्वर सार कप्पर किरान, नग हेम रूप बदरा निदान ॥१६॥

भूषन जराउ बहु रूव भंति, जहँ तहँ सु गड्डि धन लोक जंति ।
जरकस सज्योति मुखमल अमोल, सिकलात सूप तनुसुख पटोल ।
सुद तूल मसद्यर विविध रंग, मिस्त्रू दुमास चीनी सु चंग ॥१७॥

खीरोदक अतलस सरस ल्हाइ, बुलबुल चसंम मनु सुखद स्याइ ।
पामरी पीत अंबर दुपट्ट, साहिबी पाट अरु हीर पट्ट ॥१८॥

भैरव भरुच्छ मलमल सु धौत, महभूँदि चीर सेला सु पौत ।
सिंदली भून सूसी सुफेद, खासा अटान टुकरी सुभेद ॥१९॥

रूी साप सालु इक पट सकोर, चौतार तार तनु पंच तोर ।
बहु विधि सुवस्त्र छंडै बजाज, भमौ सभीति हट स्त्रेणि त्याज ॥२०॥

घृत खंड तेल सकर सभार, अति खास अन्न उधरै अवार ।
मधु रस सुस्वाद मेवा मिठाइ, हरवाइ, गरन सक्कै उठाइ ॥२१॥

मृगमद कपूर केसर लवंग, अहिफेन हीर रसम सुरंग ।
तज जायपत्रि पत्रज तमाल, रस नारिकेल घुंगी रसाल ॥२२॥

हिंगरू अगर चंदन सु ईठ, एलची जाइफल अरु मजीठ ।
इत्याद्यनेक छंडै कृयाण, भगौ सुगंधि रक्खन सु प्रान ॥२३॥

विधि बरन च्यारि छत्तीस पौँनि, चौपय प्रत्येक बहु जीव योनि ।
भरहरिय भग्नि भय यत्र कुत्र, परि गय बियोग तिय आत पुत्र ॥२४॥

ढंढौरि हट्ट पट्टन सु ढारि, गृह गृहनि बारि सु प्रजारि पारि ।
सिंघनी सुँधि नर कै सुज्ज, खनि खोदि क्षोनि कहूँ खजान ॥२५॥

धरहरत धरनि खरहरत कोट, लगि बेलदार किन्नैँ सँलोट ।
आबास ऊँच भयतर अपार, जहँ तहँ सु भूमि परिगय बिहार ॥२६॥

इहि भाँति दुर्ग ईडर उड़ाइ, सठे सुभृत्य अन धन सवाइ ।
भरि कनक रूप धन कोटि भार, हय हत्थि करभ लखर अपार ॥२७॥

(१६३)

राजेस राण नंदन सरोस, भल भीमसेन कुँवर भरोस ।
कहुनह दूरि पतिसाह काज, रक्खन सु राह मेवार राज ॥२॥

(कवित्त)

ईडर दुर्ग उजारि, पारि किन्नौ धर पद्धर ।
खंखेरिय खनि खोदि, किए मंदिर तर उप्पर ॥
ढंढौरिय हट खेणि, कौन मल्लौ कर कप्पर ।
श्रीफर सार किरान, ठेलि अन धन पय ठिप्पर ॥
नट्टौ सु सैद हाँसा निलज, गुरु नवाब छंडेब गढ़ ।
जय कीन राण राजेस कै, भीमसेन रक्खी सु रढ़ ॥२६॥

(दोहा)

ईडरगढ़ उद्धंसयो, सुनी सकल संसार ।
भीमराण राजेस कै, कुँवर कुल सृंगार ॥३०॥
पच्छिम निसि पतिसाह दर, परिय सु करल कराह ।
कौन नौँद आलम कबिल, सोए तुम पतिसाह ॥३१॥
भीमराण राजेस कौ, कुँवर कोपि कराल ।
ईडरगढ़ लीनौँ अचल, चढ़ि दल किय ढकचाल ॥३२॥
हंस सैद हहरंत हिय, नट्टौ अप्प नवाब ।
अब सु जात गुजरात धर, करहु इलाज सिताब ॥३३॥

(कवित्त)

सुनि सु कूह सकराल, रेनि पच्छिली सवन सजि ।
उम्कि चौँ कि औरंग, उठथौ दिल्लीस नौँद तजि ॥
निकट बुलाइ सु दूत, बहुरि, बुझै दिल्लीबर ।
कितक सत्थ सो कुँवर, अक्खि तिन दल अपरंपर ॥
ईडर उजारि सु प्रचारि दिय, उजरि देस गुज्जर सुधर ।
सोरठ सिंधु सोबीर लौँ भीमसेन कुँवर सुडर ॥३४॥

(दोहा)

रह्यौ ओटि पय ज्यौँ सरिस, स्लेछ ईस गहि मौन ।
बोल सुबोलत ना बनेँ, सीसक चढ़ि भय सोन ॥३५॥

(१६४)

(कवित्त)

राजसिंघ महाराण, प्रजा पीहर प्रजपालक ।
प्रजाछत्र प्रजपोष, प्रजामंडन प्रजधारक ।
बरण च्यारि बर सरण, दीन उद्धरण दया पर ।
दीनबंधु दुखहरण, सकल षट्दरस सुहंकर ॥
पीरंत पेखि पर प्रज प्रबल, कुँअर भीम कुपिय कहर ।
बड़नगर सुढासा सिद्धपुर, प्रमुख सकल भंजै सहर ॥३६॥

लिखै एह परवान, राज महाराण भीम प्रति ।
प्रीति पोष संतोष, सकल सनमान सरस भति ॥
कुलदीपक तुम कुँअर, सबलह मरद धुरंधर ।
तजि बिदेस सुबिसेस, बेगि आवहु निज मंदिर ॥
परवानह करि पर धरह नन, अप्पन श्री इकलिंग बर ।
प्रज पीड़न पिरवी जात इह, अनुकंपा उपजंत उर ॥३७॥

(दोहा)

चरहिँ जाइ दीनौ चपल, कुँवर हत्थ फुरमान ।
कहि मुख बचन प्रसंस करि, बहु विधि प्रीति बखान ॥३८॥

(कवित्त)

महाराण परवान, सीस सहिवान सुसोभित ।
प्रनमि बंचि विधि पाइ, मुंकि अनिखाइ भुक्कि चित ॥
पिता हुकम सु प्रमानि, दंद मुक्कथौ निज दारुन ।
बहुरे कुमर सुजान, जानि अंकुस बर बारुन ॥
धन कोरि जोरि ढंदौरि घर, बैर बहोरि अनंत बल ।
निज गेह आई बिलसंत निव, भीम भोग संजोग भल ॥३९॥

सोलहवाँ विलास

(दोहा)

बंकागढ़ बघनौर पति, साँवलदास सकाज ।
केतुबंध कमधज्ज कुल, मेरतिया महाराज ॥ १ ॥
भगति जोर तिनको भई, बंकेस्वरि बरदाइ ।
माता त्रिभुवन मंडनी, सांप्रति करन सहाइ ॥ २ ॥
तेग बँधाई देवि तिन, पाती दे करि प्रीति ।
जहँ जहँ कीनै जंग जिन, तहँ तहँ भई सुजीति ॥ ३ ॥

(कवित्त)

जहँ तहँ कीनी जीति, रीति रक्खी रदौरिय ।
महाराण कै काम, दंद रचि दल सजि दौरिय ॥
रुक्की आवति रस्ति, थान भंजै तुरकानी ।
पीरौ परि पतिसाह, स्रवन सुनि सुनि सु कहानी ॥
तिन दीन्हौँ महि मेवार तजि, गय औरंग अर्जमेर गढ़ ।
मेरतिया साँवलदास सम, देखि न कौ सा धर्म दढ़ ॥ ४ ॥

बिंदि थान बघनौर, परी सेना पतिसाहिय ।
धुपटै धर बर धींग, गहन धन वन गिरि गाहिय ॥
हय मुँह सुपर कण, रत्त दृग मुँछ रोम बिनु ।
भारखंध भुज सुभर, भार भोजनरु भार तनु ॥
तिन नाम रहिल्ला नर भखन, तजै न कौ पसु पंखि पल ।
जहँ तहँ पराव जल उदधि ज्यौँ, उद्धम गति औरंग दल ॥ ५ ॥

(दोहा)

नायक सब रहिलानि में, नाम रहिलाखान ।
लंबी तेग लिये रहै, अप्सुर जंग अमान ॥ ६ ॥
द्वदस सहस तुरंगदल, नेजा बंध नबाब ।
मदिरा मत्त सुरत्त मुह, जिहिं तिहिं देव न ज्वाब ॥ ७ ॥

(१६६)

बिटि रहौ दल बल बिकट, बसुमति किय बिपरीति ।
पारि प्रसाद प्रजारि गृह, अति ही मंडि अनीति ॥ ८ ॥

(कविच)

सुनि इह साँवलदास, मरद मेरतिया महिपति ।
खीजि खलनि खय करन, थान उत्थपन अरिन थिति ॥
सजि सिताब हय गय, दुबाह सन्नाह सपक्खर ।
कवच करी मंकुरत, कुंत भलमलत सूर कर ॥
बजि बंत्र नगारनि घोर बहु, बरन बरन धज नेज बनि ।
चढ़ि चलै फौज चहुँ फेर घन, उदधि जानि उलट्यौ अवनि ॥ ९ ॥

खिति धरहरि हय खुरनि, चरन गिरि पस्स चुल्ल भय ।
उड़िय रैन भरि गैन, भानि मंखरिय ताप खय ॥
चारन भट्ट सु चंग, रंग बोलत जस रूपक ।
साँवलदास सनूर कर, कमधज कुलदीपक ॥
जय करहु जंग घनहनि यवन, आलम दल भंजहु अनम ।
बैरिन बिनास किज्ज बसति, त्रिपुरा दाहिन हथ तुम ॥ १० ॥

संभै संभै लहि संच, प्रबल रतिवाह बिचारिय ।
खान पान खल दल्ल, विलगि दीपक अधिकारिय ॥
तबहिं तरित ज्यौं त्रटक, परै पतिसाह सेन पर ।
गाहत दाहत हनत, भनत मुख मार मार भर ।
रलतलिय रहिल्लनि परि खरि, दहकि बहकि धकि परि दहल ।
तजि खान पान भगौ तुरक, कलकल कंदल मचि कबिल ॥ ११ ॥

(छंद त्रोटक)

हय चंचल साँवलदास चढ़ै, कर गैन उभारिय खग कढ़ै ।
जुरि जोधनि जोध बजै जरके, कटि टोष कटक करी करके ॥ १२ ॥
खिरि कंकनि कंक सु धार खिरै, भनकंत कृपान कृसानु भरै ।
मचि कंदल मीर गंभीर कटै, खननकति बज्जति खग कटै ॥ १३ ॥
टुटि सिप्पर खुप्पर लौनि हटै, फिर सैद बिकैद है सीस फटै ।
छिल्लि लोह पठान सु झाक छकै, जल आतुर बारिहि बारि बकै ॥ १४ ॥

दुहुँ ओर दुबाह दुहाइ बदै, अप अप्पन साँइ चहंत उदै ।
 करि ताक सँभारि सँभारि कहँ, बरसँ घन ज्यौँ बहु बान बहँ ॥१५॥
 कर कुंत कटारि सकत्ति धरै, फरसी हर हुल्ल गुपत्ति फुरै ।
 गज मुगार नेज गुरुज बजै, गगनांगन गोर अमराब गजै ॥१६॥
 धर धुंधरि सोर सुरत्त धखै, जहँ अप्पन आन न कोइ लखै ।
 तजि साहस संकुर साँइ तजै, भय पाय रु कायर जात भजै ॥१७॥
 घन घोष त्रंबागल सिधु धुर, सहनाइ सु भेरि गंभीर सुरै ।
 कुननंत कितै कलि कूह करै, रिन जोर रुहिल्लनि रुंड रुहै ॥१८॥
 उत्तमंग पतंत कितै उचरै, रसना थकि तौ उर सूत ररै ।
 इक अल्लह अल्लह नाउँ अखै, मिलि नैनरु टोप मिलंत मुखै ॥१९॥
 भय रुकिनि टूक कितैइ रुमी, निकरै दुहुँ लोइन ग्रीव नमी ।
 हबसी मिलि आपस मेंइ हनै, अधियारि निसा नन सुद्धि गनै ॥२०॥
 नर आसुर केक कमंध नचै, सिर भूमि अटट्ट हास सचै ।
 हय हत्थि बिना असवार फिरै, घन वक्खर भार सुढार ढरै ॥२१॥
 तरफै अधतंग तुरक्क तुटै, चलि चच्चर चोल नदी उपटै ।
 भभकै करि मुंड बिहंड भई, महि कीन जहाँ तहँ रत्त मई ॥२२॥
 उड़ि सोनित छिछि अयास तटै, पय कोंकम ज्यौँ पिचकारि छुटै ।
 गवरीपति अंबुज माल गठै, सब केक हँकारि बकारि उठै ॥२३॥
 गुरु गिद्धिनि तुंडनि मुंड गहँ, भरफै गगनांगन मुंड बहँ ।
 रत लै युगिनी जल ज्यौँ अचवै, चवसट्टि जयं जय सह चवै ॥२४॥
 धज नेज भँभोरिय जोरि धनं, ढकचार ढँढोरिय ढान धनं ।
 कमधज महा बलि जैति बगी, भय मंनि रुहिल्लनि फौज भगी ॥२५॥
 तजि थानहिँ तंबु तुषार तई, रथ कंचन बारुन बस्तु नई ।
 निसि ही निसि भग्नि हैरान भए, गति हीन है साहि कै पास गए ॥२६॥

(कवित्त)

गए असुर तजि गर्व, हसम हय गय रथ हारिय ।
 गिरत परत बन गहन, भए भारथ भय भारिय ॥

(१६८)

निसि अधियारी निपट, सुबट थट घट्ट न सुज्झत ।
कानन तरु कंटकनि, अंग अंसुक आलुज्झत ॥
उभक्तंत परस्पर पिक्खि अग, सब रुहिल्ल सुगहिल्ल हुअ ।
कमधज्ज गहिय करवार कर, जंग रंग मंडयौ सु जय ॥२७॥

(दोहा)

इहिँ परि थान उथप्पि कै, राख्यौ जस रठौर ।
स्वामिधर्म पन संचयौ, सकल सूर सिरमौर ॥२८॥

सत्रहवाँ विलास

(दोहा)

धर पुर धरहरि गिरि भ्रसकि, पयदल मसकि पयाल ।
धार नगर मालव सु धर, दौरयौ साह दयाल ॥१॥
राजा उत घन रोस रस, तारक रित ज्यौँ तुटि ।
मालव धर उद्धंसि महि, लच्छि अनंत सु लुटि ॥२॥
खाग त्याग दुहुँ भाँति खिति, नितु नितु नाम नवल्ल ।
खाग त्याग बिनु क्षत्रिपन, आख्यौ यूँ अकतुल्ल ॥३॥
मँगि हुकम महराण पैँ, सुबर सुभट संजोर ।
चढ़यौ लेइ चतुरंग चमु, अवनि कपि चहुँ ओर ॥४॥
धर गिरि अंबर धुंधरिय, दिसि दिसि उठी दहक्क ।
आडंबर रवि आवरिय, चित्त दिगपाल चमक्क ॥५॥

(कवित्त)

प्रचलि चित्त दिगपाल, भूमि तजि भग्नि आप भय ।
उजरि नैर पुर उभकि, बिभुकि गढ़ कोट दुर्ग गय ॥
थक्कि राह थरहरिय, थान थानह असुरायन ।
बजि अवाज गुरु गाज, जानि जग्यौ पंचायन ॥
खरहरिय सु प्रज क्षितिधर खलक, जनु धाराहर धरहरिय ।
मालव सुदेस सद्धन सुमहि, सजि सुसाह दल संचरिय ॥६॥

कहुँक दंड किजियहि, कहुँक लिजियहिँ पेसकस ।
थापि कहुँक निय थान, रिपुन रुक्कियहिँ रोस रस ॥
कहुँक बंक बैरीन, गहिब घल्लियहिँ जेल गल ।
कहुँक लच्छि लुटियहिँ, कहुँक मेलियहिँ दुर्ग भल ॥
कहुँ कोट जोट कबिलान कै, उथलि पथलि थल बिथल किय ।
पारंत खरि पर धर प्रबल, जानि प्रलय कालह जगिय ॥७॥

म्लेच्छ मुंछ मुंडियहिँ, खंडि महजीदि मँदारनि ।
 काजी पकरि कुरान, गरहिँ बंधैव गमारनि ॥
 बोरत बारि अथाग, धाक बज्जी धींगानी ।
 भेष बदलि रिपु भगत, बदलि बानी तुरकानी ॥
 धकधूनि देस मालव सु धर, बारुन ज्यौँ चंदन बिटपि ।
 मुँह मिल्यौ असुर नन मुक्कियहिँ, थिर सु प्रतंज्ञा एह थपि ॥८॥

(छंद मोतीदाम)

चढ़्यौ दल सज्जि सु साह दयाल, किधौँ कलि कालनि कौ खयकाल ।
 बहै बहु मगग कटक विकट, जनौँ जल अंबुधि गंग उपट ॥९॥
 सुभैँ दल अम्महिँ स्याम सुँडार, चलै जनु अंजन कै यु पहार ।
 ठनकति घंट सुग्रीवहिँ ठाइ, घमंकत धुंधरु नेछर पाइ ॥१०॥
 भर मदवाह कपोलनि भौर, भमैँ तिन दान सुवासहिँ भौर ।
 सुभैँ सिर तेल सुरंग सिंदूर, बहैँ बिरुदावलि बंक बिरुर ॥११॥
 मनोहर कुंभहिँ सुचिनमाल, मभैँ मभ पोइय पाव प्रवाल ।
 उभैँ स्रव सीसहिँ चौर सुभंत, सभार सउज्जल दीरघ दंत ॥१२॥
 भिलंतिय रंग सुरंगिय भूल, जिगंमिय योति जरी पटकूल ।
 दलकति बंकिय बास सु ढाल, बने किन पिट्टहिँ डोल बिसाल ॥१३॥
 पढ़ैँ धत धत्ता मुहँ पिलवान, सवैँ कर अंकुस बिद्यु समान ।
 पताक प्रलंब बनै पचरंग, जरी पटकूल सुचिन्ह सुचंग ॥१४॥
 जरे पय लोह सुलंगर जोर, किधौँ करि स्याम घटा घनघोर ।
 चरकिख्य अम्मा रु पच्छ चलंत, खरै इतमाम महा मयमंत ॥१५॥
 ऐराकिय आरबि अस्व उतंग, कछी कसमीर कंबोज कलिंग ।
 बंगालिय कौंकनि सैँधवि बाज, पयं पथ वायु पथ पँखराज ॥१६॥
 मजनस लाखिन्न रंग सुबंस, हरी हरडैँ अरु बोर सु हंस ।
 कितैँ किरडैँ तनु नील कुमैत, सु सिहलि रोमिय रंग सुभैत ॥१७॥
 अँबारस भौर मसकि अपार, तुरंजे ताजि तुरकक तुषार ।
 किलकिलैँ कातिलैँ केइ किहार, गंगाजल गरुडैँ कै गुलदार ॥१८॥

(१७१)

बिराजति साकति स्वर्ण बनाव, जरै नग मुत्तिय हीर जराव ।
 गुही बर बेनिय स्याम सुकंध, फुंदा गलि रेसम डोरि सुबंध ॥१६॥

ततत्थेइ नच्चत ज्यौं नट तान, पुलंतन पंखिय पुज्जत प्रान ।
 सचंचल चाल नैं चीकनैं चोख, सपक्खर सज्जर हिंस सरोस ॥२०॥

चढ़ै भर केइ महा चित चंड, अरेणिय जानि कि भीम उहंड ।
 बंकै बर बीर सभीर बिरुर, फनंकति खग्ग करै म्फक्कभूर ॥२१॥

भरै रथ सत्थि आराव सभार, किसै धन ख्वरु हेम दिनार ।
 भरै बहु भारहि ऊंट अपार, किती भरि बेसरि भार बिभार ॥२२॥

पयहल बइल ज्यौं दल पूर, उड़ी रज अंबर दंक्रिय सूर ।
 परै नन अप्पन आन कि सुद्धि, डपटिय जानि कि ज्येर अंबुद्धि ॥२३॥

सुसंकर संकुरि कुंडलि सेस, कटक्किय कच्छप पिट्ठि बिसेस ।
 भये भयभीत पुल्लि दिगपाल, डगंममि कोट रु दुग्गं दुकाल ॥२४॥

थरत्थरि पत्थर सुत्थिर थान, भगौ पुर पत्तन नैर भयान ।
 रुकै दर राह सु उट्टि दहल्ल, सुसै सलिवा सर नीर सुहिल्ल ॥२५॥

मच्च्यौ भय मालव देस मम्मार, उडै प्रज जानि कि टिट्ठि अपार ।
 कहूँ तिय पुत्त कहूँ गय कंत, रडै जननी कहूँ बाल रडंत ॥२६॥

कहूँ पति भृत्य कहूँ परवार, कहूँ धन धान रहै निरधार ।
 कहूँ भय चोप यहूँ परहत्थ, नसै नर नारिन वृंद अनत्थ ॥२७॥

लुटै केउ लुंटक मुंटक लक्ख, परै बहु कूह कराह प्रतक्ख ।
 जनौ कलपंतर अंतर जग्गि, लुकि मुकि मानस मानस लग्गि ॥२८॥

कियै प्रति कूचनि कूच प्रलंब, लसै दल बइल सावन लुंब ।
 धसंससि बिंठिय कोट सु धार, परी पतिसाह सुगेह पुकार ॥२९॥

(कवित्त)

मंडव भय मंनियौ, उजरि प्रज भग्गि उजैनिय ।
 सारंगपुर भय सून, निकरि नट्टी मृगनैनिय ॥
 दहल परिय देवास, धरनि गड्डियहिं हेम धन ।
 सुनिव ससंकि सिरौंज, चल्लिय चंदेरि चक्रित मन ॥

जहँ तहँ अवाज संकै यवन, जंजरि गढ़ करियहिँ यत्न ।
आयौ सुसाहि यों अरिन पुर उम्क अहो निसि मिटिय नन ॥३०॥

अक्खै कै असुरानि, कंत तिल गहर न किजैँ ।
आवत कटत उदंड, छंडि गृह कै तनु छिजैँ ॥
कह सोवत सुख सेज, उट्टि उठि राखि सु आतम ।
मो कहूँ पूरन मास गढ़, सुगिरि गुहा क्रमंक्रम ॥
बिलवंत बाल कै बाल तजि, नट्टि बनं धन गहन नग ।
सकबंध साह दल चढ़त सुनि, बिभजि लोक ज्यौँ बन बिहग ॥३१॥

ब्रिटि कोट बर बीर, भंति गो सीस भुयंगम ।
ज्यौँ पहार अरु जलधि, प्रबल दल दंति पवंमग ॥
किल्ला तजि तिहिँ काल, पुलै आसुर सु पठानी ।
सेन असुर घन सहस, मुक्ति साहस समुदानी ॥
जगि लुट्टि गृहं गृह जनहिँ जन, कौन गहँ कप्पर सुकर ।
केसर कपूर मृगमद कितक, ईधन ज्यौँ प्रजरै अगर ॥३२॥

कंसहिँ को कर गहै, तंब गहि को तनु तौरै ।
करिय कहा कत्थीर, जसद गंठहि को जोरै ॥
पाटहिँ को प्रतिग्रहै, सूत पटक वन सु संचै ।
अंगीकरै न अन्न खंड घृत गुड़ कत खंचै ॥
बहु हेम रजत मौक्तिक बिमल, पन्ना पाव प्रवाल नग ।
तुष्ट लोक लच्छक सुलछि, जहँ तहँ लहत निधान जग ॥३३॥

जरी सूप सिकलात, भिखु सुखमल रु मसज्जर ।
चीणी खीरोदक, दुमास अतलस पीबांबर ॥
नारी कुंजर ल्हाइ, साहि बीततु सुख मनसुख ।
बुलबुल चसमा पाट, पामरी थुरमा बहु लख ॥
दरियाइ दुलीचा चंद्रपट, उत्तरपट गिनति न परत ।
परकूल अमूल प्रसिद्ध पन, बसु जन जन विक्रय करत ॥३४॥

भैरव बर भई वल्ली, मिट्ट मूलमल महसुंदी ।
सुना सिंदली सालु, सुसी सेला सानंदी ॥

खासा खास अटान, पंचतोरे सु प्रकारे ।
 इकतारे स्त्रीसाप, चीर दुकरी चौतारे ॥
 सु दुमामि दुतारे चौरसे, भीन पोत दुति भलमलत ।
 बदीयैव कितै बहु विधि बसन, पयदल पाइनि दलमलत ॥३५॥

नालिकेर न्यौजा, विदाम बर दाख चिरौंजिय ।
 खारिक पिंडखजूरि, भूरि मिस्री मन रंजिय ॥
 मधुर मधुर मेवा, मिठाई घृत गुड़ अपरंपर ।
 सकल अघाइय सेन, हत्थि हय करम अन्नचर ॥
 एलची लवंग अहिफेन रस, सुंठि मरिच पीपरि प्रमुखि ।
 सुक्रयाण सार अंवार सज, धखत झार घन अग्नि मुख ॥३६॥

पनहिं न जिन पय हुती, तिनहिं गृह भये तुरंगम ।
 दूत भये दौरतै, मिलै तिन चढ़न मतंगम ॥
 दारिद जिन देखते, लच्छि लच्छक तिन लीनी ।
 बासन जिन बपु हुते, तिनहु सुखपाल सप्पनी ॥
 सपनै न संपिखी सुंदरी, तिन सुंदरि युग युग मिलिय ।
 धसि नगर धार बर संहरत, कनकहिं खलक निहाल किय ॥३७॥

दिन दस करिग मुकाम, खग्ग बल रचि खलखंडह ।
 नगर धार संहारि, देस मालव करि दंडह ॥
 नर बहु भए निहाल, लच्छि अपरंपर पाए ।
 करि सुबोल कंधाल, उमगि उदयापुर आए ॥
 मंत्रीस सुमति महाराण कै, कलह साहि सरभर करिय ।
 अवदात यहै नित नित अचल, अचल नाम जग विस्तरिय ॥३८॥

इहिं परि धार उदंसि, वत्त बर बिस्व बखानी ।
 सुनि औरंग सु बिहान, दूत, मुख स्रव दुखदानी ॥
 उर कलमलि अकुलाय, पस्थौ अंदर पछितावत ।
 किन्नौ यहै कुमंत, सकल परिजन समभावत ॥
 आवै न हत्थ बिग्रह सु इह, खुस खजान घन खुट्टए ।
 अनमी सु राण हूँ आदि कै, महि किन जाइ सुमिट्टए ॥३९॥

अठारहवाँ विलास

(दोहा)

श्री जयसिंह कुँआर कौ, अब अवदात अनूप ।
राजसिंह महाराण कै, पाट प्रभाकर रूप ॥ १ ॥

सतरा सै सैंतीस कै, बरस असाढ़ बखान ।
मारै मीर मतंग महि, थिर चीतौर सुथान ॥ २ ॥

सामंतनि सनमानि कै, किय सुमंत धर काज ।
असुर सँहारन ऊँमहै, गिरिधर अंबर गाज ॥ ३ ॥

आगे ज्यौँ कूँअरपनै, उदयरान मुँह अगग ।
कुँअर प्रतापहिँ नामकिय, खंडै धन खल खगग ॥ ४ ॥

सो सुमंत सु बिचारि चित, बढै बीर रस बीर ।
कंठीरव जनु कोप करि, गज्यौँ गिरा गँभीर ॥ ५ ॥

(कवित्त)

चित्रकोट थानहिँ, सुचंड औरंग सुनंदन ।
सहिँजादा अकब्बर, सुसेन हय गय रथ स्यंदन ॥
अद्ध लाख साहन, अनीक सपलान संपरकर ।
सहस एक सिंधुर, सरूप जनु सैल पट्टभर ॥
पयदल असंख आराब गुरु, नारि गौर जंबूर धन ।
रहि राण धरा रिणथंभ रुपि, कोट ओट गढ्ढौँ यवन ॥ ६ ॥

दिशि दिशि देत दहल्ल, धरा धुपदंत धान धन ।
गाम गाम प्रतिगमहि, ढाहि प्रासाद पुरातन ॥
पारि पौरि प्राकार, सुरहि बध करत न संकत ।
रहत छक्यौँ दिन रेन्ति, बैर बहु बहत अहंकृत ॥
ऐस्वर्य तरुन मद अंध मन, मेध भंति मैँ मैँ करत ।
सुलतान अकब्बर साहि सुत, धरनि न सुद्धै पय धरत ॥ ७ ॥

(१७५)

तखतरवाँ तपनीय, तुंग नग जरित तरनि प्रभ ।
तहँ सु बइठ्यौ तपन, तेज असहेज मान इभ ॥
उभय पाख चामर, ढरंत इतमाम अनेकह ।
छरीदार प्रतिहार, अंगरक्षक सबिवेकह ॥
नर वै नवाब बहु पय नवत, सेवत ठढ़ै सत सहस ।
नित राग रंग पातुर नृतति, घुरत निसाननि घन घमस ॥ ८ ॥

कबहुँ लरारहिँ मल्ल, कबहुँ मद् मत्तै कुंजर ।
पायक कबहुँ प्रचंड, कुंत असि नग्न सकति कर ॥
कबहुँ सिंह करि कलह, कबहुँ ठोरी डंडायुध ।
कबहुँ सिंह बन सहल, कबहुँ त्रिय सत्थ महल मध ॥
कबहुँ क बाग बर बाटिका, सलिता सलिल समूह सुख ।
क्रीडंत केलि नव नव सुदिन, न लिहँ कत ससि सूर रुख ॥ ९ ॥

(दोहा)

साहि सुतन कै चरित सुनि, रत्त नैन करि रोस ।
श्री जयसिंह कुँआर जब, गह्यौ खग कर कोस ॥१०॥
संहरिहौँ दिल्लीस सुत, क्यौँ रहि इह इन कोट ।
असुर कहा हम अमाए, सकल करं संलोटे ॥११॥
हमहिँ द्यौँ इकलिंग हर, इह गढ़ आदि अनादि ।
ध्रुव सु रज्ज मेवार घर, पाइय भाग प्रसादि ॥१२॥
तो'ब कौन बपुरौ तुरक, गढ़ रहि मंडै गेह ।
कितकु एह सुख कर, सुंदरि सत्थ सनेह ॥१३॥
बीबी सौँ बू बू करै, भगौ सोवत भोर ।
मध्य निसा नित मंडि कै, जीवित गह्यौँ सजोर ॥१४॥

(कविच)

अंबर इक आदित्य, इक निरि गुहा सिंह इक ।
असि इक इक प्रतिकार, ठौर औरहिँ न एह ठिक ॥
ए सुथान बहु मान, नहीँ असुरान थान इह ।
करौँ भंजि चकचूर, साहिजादा रु सेन सह ॥

हम छते कौन इहि रहि सक, आवौ असुर अनेक दल ।
जब लौं सु सिंह नहि संवरै तब लौं, जानि कुरंग बल ॥१५॥

तब लग तम प्रस्तार, नार उडुग्रह तबहीं लग ।
तब लग तस्कर जोर, धूक दृग बल तबहीं लग ॥
तब लग रजनी रौर, ढोर तब लग गल बंधै ।
खह खद्योत उद्योत, चक्र चकई चखु अंधै ॥
किन्नौ प्रकास जब सहसकर, तब न कोई ग्रह तार तम ।
कातिक कुंआर बहल कबिल, बाहु बहै भूठौ विभ्रम ॥१६॥

करै दहन कर गहन, अवर अहि मुँह घर घल्लै ।
सिंह जगावै सुपत बिखम, बीरनि संग बुल्लै ॥
उदधि तरन आसँ गै, खाइ विष तनु सुख चाहै ।
त्यौं छ' तुरक अर्यान, लरन हम सत्थ उमाहै ॥
जिन दहै अद्रि बड़ बड़ अगनि, तिन मुँह अग्र कितेक तरु ।
बारुनहि उड़ावत वायु सौं, तो पूनी कह जोर बर ॥१७॥

बुल्लय तब बर बीर, भूप भगवंत सिंह भर ।
महाराइ अरिसिंह, नंद धटदरस ऊँच कर ॥
संग्रामहि सुसमत्थ, बेद बसुमति प्रति रक्खन ।
कबिल करिन केहरी, समान बहु बुद्धि बिचक्खन ॥
इतो'ब कोप इन परि कहा, सकल वत्ता सुबिसेसियहिं ।
संहरौं साहि सेना सकल, तो हम हत्थ सुलेखियहिं ॥१८॥

कितक एह गुरु काम, एह लहु हम तर लायक ।
कबल उखारन काज, कहा कुंजर दल नायक ॥
कट्टन काँस कुठार, कहा केहरि कुरंग कजि ।
कहा कीटकनि केकि, कहा मंडुकनि नाग सजि ॥
कितनैक कबिल ए युद्ध कर, गड्डुर ज्यौं सब घेरि घन ।
इक्कैक हनौ असि घाउ करि, उथपि थान औरंग सुतन ॥१९॥

अथ चंद्रसेन भोला के बचन

प्रथक ऊँख ज्यौं पीलि, दलिंग कन ज्यौं घन दुंजन ।
मूरन ज्यौं उनमूरि, दूरि नंखौ दह दिसि तिन ॥

करषनि ज्यौँ आकरषि, खेत खल तितु तितु तत्थिय ।
 कुसुम कली ज्यौँ चूँटि, खूँटि डारनि ज्यौँ मिच्छिय ॥
 घन दाव घाव घन घंघलनि, अरि असुरानि उथपिहौँ ।
 कहि चंद्रसेन झाला सु कर, थिर निज थानहिँ थपिहौँ ॥२०॥

अथ चहुवान राव सबलसिंह को बचन

सबलसिंह ज्यौँ सिंह, तबहिँ गुंज्यौ करि तामस ।
 सुनत गैँन प्रति सह, बिकट चहुवान बीररस ॥
 मारौँ मुगल मसंद, दंद दलमलहु साहि दल ।
 रिँण हम मुख को रहै, कहा आसुर अनंत बल ॥
 भंजौँ ब भूरि गिरि बज्र ज्यौँ, चून करौँ इन चंड चित ।
 तो नंदराव बलिभद्र को, अब उमाँटि नंखो अहित ॥२१॥

अथ रावत रतनसी चौडाउत के बचन

ज्यौँ अंबुधि अंच्यौ, अगस्ति ज्यौँ तरणि रंथनि तम ।
 दावा ज्यौँ बन द्रुम, अनेक दहि दुर्ग असम सम ॥
 ज्यौँ बहल फारंत, वायु त्यौँ इह असुरायन ।
 महन रंभ आरंभ, पारि पिसुननि पारायन ॥
 इकलिग ईस जो सीस पर, तो 'ब कहा परवाह इन ।
 करि प्रबल कोप रघुनंद कहि, रावत चौडाउत रतन ॥२२॥

तदनु सगताउत कुँअर गंगदास के बचन

सगताउत रावत, केसरीसिंह सुनंदन ।
 गरजै कुँअर गंग, सैन बध असुर निकंदन ॥
 कहँ सु भारथ कथ, यूथ बन यवन सँहारौँ ।
 पारथ ज्यौँ हौँ प्रबल, म्लेच्छ कौरव दल मारौँ ॥
 मधुसूदन ज्यौँ सायर मथिग, हनु ज्यौँ सैल समुद्धरौँ ।
 गहुँ साहि नंद गजगाह बाँधि, कहा बत बहुतेँ करौँ ॥२३॥

(दोहा)

पंचौँ भट महाराण कै, पंचौँ भारथ भीम ।
 पंचौँ मिलि किन्नौ मतौ, पंचौँ सुरगिरि सीम ॥२४॥

(१७८)

पंचौ दल सज्जै प्रबल, पंचौ बिस्व विख्यात ।
ध्रुव रक्खन मेवार धर, लरन असुर संघात ॥२५॥

मंगि हुकम महाराण प, है ठहै सिर नाइ ।
तब बीरा रु कपूर बर, सँकर अप्पै सॉइ ॥२६॥

सिर चढ़ाइ पुनि नाइ सिर, घुरिय निसाननि घाउ ।
बढ़ि अवाज असुरान पर, चढ़ि जयसीह सु चाउ ॥२७॥

(कवित्त)

प्रथम सु होत निसान, चढ़ति बज्जी चावहिसि ।
हय गय पक्खरि भर, सनाह पहिरिय सुबंघि अस्ति ॥
दुतिय निसान सुहोत, हसम घमसान घनारुंभ ।
मिलै सकल सामंत सूर, ज्यौं समुद सलित अंभ ॥
बाज्यौ सु तृतीय निसान जब, तब जयसिंह चढ़ै सु हय ।
चामर दुरंत उज्जल उभय, आतपत्र नग रूप मय ॥२८॥

चंद्रसेन भाला, नरिद गजगाह बंध गुरु ।
चढ़ै राव चहुआन, सिंघ ज्यौं सबर सिंघ बरु ॥
बैरी सल्ल पवार, राय बीराधिबीर रन ।
सगताउत रावत सु, सज्जि केहरि केहरि गुन ॥
रावत चौड़ाउत रतनसी, महुकम रावत बड़ सुमति ।
चहुवान केहरीसी चढ़ै, चपल्ल तुरंगम चंड गति ॥२९॥

महाराथ भगवंत, सिंह रुखमांगद रावत ।
खीची राव सु रैण, खैंग चढ़ि खुरियन खावत ॥
मानसिंह रावत, सुमंत महुकम सिंघ रावत ।
गंगदास कुँअर, अभंग केहरि चौड़ाउत ॥
माधव सु सिंह चौड़ा मरद, कन्हा सगताउत सु कर ।
जसवंत जैत भाला प्रमुख, सजै सकल सामंत भर ॥३०॥

(दोहा)

सबल एह सामंत भर, अग्नि उमराव अपार ।
सेन कुँअर जयसिंह की, करन असुर संहार ॥३१॥

(छंद गीतामालती)

गंग गड़ धौँ कि निसान धौँ करि भजज भंभा भरहरै ।
 भननंकि ताल कँसाल भननन द्रनन दुरबरि डँबरै ॥
 सहनाइ पूरि सँपूरि सिंधुअ ठनन तूर ठनंकियं ।
 दम दमकि जंगी ढोल दम दम फुनि नफेरि भनंकियं ॥३२॥

संचलै दल मुख सबर सिंधुर मात अंजन गिरिवरा ।
 सत्तांग भूमि लगंत सुंदर भरत गिरि ज्यौँ मंदमंता ॥
 सिंदूर तेल सुरंग सीसहिँ मुक्ति माल मनोहरं ।
 संदुरत उज्जल चौर सिरि स्रव सिंह सोवन श्रीभरं ॥३३॥

मुँह सुंड दंड उहंड मंडित तरुन तरु तरु उन्नमूरतै ।
 दृढ़ दिग्ध दंत सभार ससि दुति सकल सोभ सँपूरतै ॥
 महकंत दाँन कपोल मूलहिँ गुंज रव अलिगन भ्रमै ।
 ठनकंत घंट सुघंट कंठहि चरन घुघर घमघमै ॥३४॥

सुसनद्ध बद्ध सनाह संकर तदपि खगगति पगधरै ।
 गरजंत ज्यौँ घन गुहिर जलघर भीमे ऋतु भद्व भरै ॥
 सु पताक हरित सुरत्त पीतनि चिन्ह हरि रवि चंडियं ।
 कर कनक अंकुसि धत्त धत्ताह पीलवाननि तंडियं ॥३५॥

चर चलत अमारु पच्छ चरखी खून तदपि खरै खरै ।
 बहु बिरद बंकै बंदि बोलै भूमि तब इक पय भरै ॥
 करि अभा करिनी केक करिवर सुद्ध चित तब संचरै ।
 पर दलनि पैलन पील दलपति बिकट कोटनि जे अरै ॥३६॥

ढलकंत ढाल सु बास डंकित ढोल वर किन पर कसै ।
 गुरु नारि गोर जंबूर किन पर लोह कोष्टक किन लसै ॥
 किन पिट्टि नह निसान नौबत कनक केसु भरभरै ।
 गजराज गुरु सुरराज के से स्याम घन जनु संचरै ॥३७॥

ऐराक आरब देस उतपति कासमीर कलिंग के ।
 कांबोज कोकणि कच्छि कबिले हय उतंग सु अंग के ॥
 पय पंथ सिंधुअ पवन पथ के तरणि रथ के से तुरी ।
 बहु विविधि रंग सुरंग मजनस खैंग वर करते खुरी ॥३८॥

हंसिलै हरडै हरी किरडै रंग लाखिय लीलडे ।
 रोमांय सिंहलि भेर अंबर स बोर मसकी दृग बडे ॥
 संजाब तुर्रजे ताजि तुरकी किलकिले अरु कातिले ।
 सु कुमैत गंमाजल किहाडै गरुड गुलरंग गुण निले ॥३६॥

जिगमिगति नग युत स्वर्ण साकति बेनि बर खंधै बनी ।
 सु जवादि मंडि रु पाट पचरंग गुंथी मधि मौक्तिक मनी ॥
 फवि विविधि फुंदावली रेसम लुंबमुंब बखानियै ।
 बढि हेख हेख सघ्राण बज्जत जोर सोर सु जानियै ॥४०॥

नचवंत घृततततान नट ज्यौं थाल मध्य थनं गनै ।
 सकुनी न पूजतु मग संगहिं गिरि उतंगहिं ना गिनै ॥
 परकरे नख सिख सजर परकर समर योग सराहियै ।
 मनु मस्त मित्र किं चित्र चित्रित चाल चंचल चाहियै ॥४१॥

रंग चडै तिन पर राव रावत अन्य गुरु लहु उंभरा ।
 बर बीर धीर समीर नृप भर सिलह पूर सडंबरा ॥
 घन घाघरट थट सुघट अवघट घाट कीजत दल धनै ।
 बढि छोह जोह सकोह कंदल क्रूर वर देखै बनै ॥४२॥

रथ भरित कै धन कनक रुबहिं धुर्य जिन जोए धुरा ।
 गुरुनारि गंत्रिन सोर गोरिय तीर तरकस तोमरा ॥
 धनु कवच त्राण कृपाण भगवति कुंत कत्ती किलकिला ।
 सु सवारि सार छत्तीस आयुध करण खल दल कंदला ॥४३॥

पयदल प्रचंड उदंड संडति सनधबद्ध समायुधा ।
 रिस रोस जोस सुरत्त लोयन सहबेधी संयुधा ॥
 पतिभक्त पर दल पूर पैरत पाइ नन पच्छै परै ।
 धस्ससहि धर तिन चरन धमकनि धकनि कोटनि धरहरै ॥४४॥

दल मध्य दिनपति सरिस तनु द्युति कुंअर श्री जयसिंह है ।
 आरुहै हंस सुबंस हय वर सकल चक्ख समीह है ॥
 उतमांग चौर दुरंत उज्जल आतपत्र जराव को ।
 कवि ब्रह्म छंद ब्रह्म कीरति देवदुम सद भाव को ॥४५॥

(१८१)

दिसि बिदिसि दल दल ज्यौँ जलधि जल अचल चलचल है चलै ।
खल गृहनि खलभल कुंति कल कल सलल सेसति सलसलै ॥
कलकलिय कच्छप पिट्टि कसमस धीग धसमस धावहीं ॥
खुरतार तार प्रतार बज्जत जानि बिस्व जगावहीं ॥४६॥
सिव संक सकबक इंद्र अकबक धीर धाता धकपकै ।
सुर सकल सटपट चंद्र चटपक अरुण अटपट हकबकै ॥
भलभलिय निधि रवि परिय भंखर पह उभंखर पिकखण ।
सर सलित सलिल समूह संकुरि बर प्रयान बिसिक्खण ॥४७॥

(कविता)

करिग पयान सु कोप, चमू सज्जीव चतुरंगनि ।
अरक बिब आवरिय, रेणु भरि गैण सोर भनि ॥
उलटि जानि जल उदधि, कटक भट विकट उपट थट ।
मुकित मग सर मुकित, चकित चहुँ ओर अटपट ॥
उरभत कुरंग बराहे बर, हरि धर बन पुर असम सम ।
जयसिंह कुँआर सकरन जय, चेदि दल बहल गम अगम ॥४८॥

एक अग अनुसरत, एक धावंत वप्र तजि ।
एक कुदावत तुरग, इक्क रहबाल चाल सजि ॥
हयनि हेक नासा, निनाद प्रति साद गैन गजि ।
पर निज सुद्धि न परति, भीति धरि रिपु रिन बन भजि ॥
उन्नत पताक पँच रंग प्रवर, तिन उरभत रवि तुरग पय ।
तिनतैं श्रवंत मुगतानि कन, जानि राज्य श्री स्रवति जय ॥४९॥

अडग डगति डगमगति, अद्रि षरहरति अष्ट कुल ।
चंड चक्षु चक चकति, उघरि लय लगति मुद्रित पल ॥
अचल चलति खलभलति, भवकि भलभलति जलधि सर ।
अढर ढरति ढरि परति, धरनि धरहरति हयनि खुर ॥
अकबकति इंद्र हकबकति हर, धकपकि धाता धीर नन ।
जयसिंघ सेन सजि चढ़त जव, तब त्रिभुवन संकत सुमन ॥५०॥

(दोहा)

प्रबल पयान दिसान प्रति, नाद पूरि रज पूरि ।
बन गिरि तुट्टि संखुट्टि बन, भय पर जनपद भूरि ॥५१॥

आलम के दल उप्परहिँ, तत्ते किए तुषार ।
 आए तबही गढ़ उररि, श्री जयसिंघ कुँआर ॥५२॥
 दिए मलीदा मैंगलनि, रातव हयनि रसाल ।
 सलिल प्याइ छटैव मुँह, बरत्यौ समय बियाल ॥५३॥
 बीरा मध्य कपूर बर, लहु एलची लवंग ।
 नवल जायफल नागरस, रंजै सुभट सुरंग ॥५४॥
 सिंधू गौरी बजत सुर, सूरनि बढ़त सुखोह ।
 त्रिन ज्यौँ तन धन तिन तजै, मानिनि माया मोह ॥५५॥
 पलक जात रजनी परी, बिथुरथौ तम सु बिसाल ।
 तुरकानी दल पर तुरी, भेलन लगै भुवाल ॥५६॥
 तबही बंगा गहँ तुरित, सकल सूर सामँत ।
 करै बीनती कुँवर सौँ, सीतल भाष सुमंत ॥५७॥

अथ भाला चंद्रसेनजी की अरदास

प्रभु हम प्राक्रम पेखियहिँ, धरहु आप मन धीर ।
 प्रथम पदाति युधंत जुधि, तदनु साँइ बर बीर ॥५८॥

चहुवान राव सबलसिंहजी की अरदास

हम समान सेवक सहसं, निपजैँ बहुरि नवीन ।
 साँइ सेवक लक्खकनि, पोखन कौँ प्रभु कीन ॥५९॥

पँवार राव बैरी सालजी की अरदास

साँइ इह सेना सकल, हय गय सुभट ससाज ।
 समर समय ही कौ सजै, कहा और हम काज ॥६०॥

सगताउत रावत केसरीसिंह जी की अरदास

साँइ काम सेवक मरै, तो तिन स्वर्गहिँ ठौर ।
 साँइ पैखैँ संकरैँ, तिनहिँ नरग नहिँ और ॥६१॥

चौँडाउत रावत रतनसिंह जी की अरदास

साँइ रक्खैँ खीस पर, सेवक लरैँ सुभाइ ।
 जब सेवक साहस बँडैँ, तहँ प्रभु करैँ सहाइ ॥६२॥

सगताउत रावत महुकमसिंघ जी की अरदास

मनिधर ज्यौँ थिर थपि मनि, आप तास सु प्रकास ।
चेजा करत सचेत चित, त्यों हम लरन उल्हास ॥६३॥

राव केसरीसिंघ जी की अरदास

साँई सिरजै हुकम कौँ, हुकम दिपाउनहार ।
हुकमी साँई कै बहुत, जंगवार जोधार ॥६४॥

तदनंतर महाराजा भगवतसिंघजी की अरदास

तोरी पताका तुरक कै, नोबति लेइ निखान ।
आवै तौ उमराव तुम्ह, प्रभु हम बचन प्रमान ॥६५॥

तदनु चहुवान रुषमागद रावत की बिनती

साँई पचारत सेवकनि हाँ भल बोलि हुस्यार ।
तब मन दूनों बल बढै, सत्रुनि करत संहार ॥६६॥

तदनु खीची राव रतन की अरदास

इह तन इह मन इह सुधन, इह सुख गेह सयान ।
हैं साँई ही कै सकल, परिकर संयुत प्रान ॥६७॥

अथ रावत मानसिंह जी की अरदास

राखी पीठि मुरारि रिन, पंडव पंच प्रधान ।
कौरव दल तिल तिल कियौ, हम मन एह मंडान ॥६८॥

अथ सगताउत रावत महुकमसिंघजी की अरदास

साँई भरोसो रक्खियै, हम अभंग रन हिंदु ।
कहर काल करबाल गहि, मारहिँ मीर मसंद ॥६९॥

अथ सगताउत गंगदास कुँअर की अरदास

बिमल बंस जन के बिदित, मात पिता प्रभु एक ।
ते साँई के कामतै, टरै न इह तिन टेक ॥७०॥

अथ चौँडाउत रावत केसरीसिंघ की अरज

देखत चंदहि दूरि तैं, चुनत क्रसानु चकोर ।
त्यों साँई निरखत सुभट, रण सुमचावहिँ रोर ॥७१॥

(१८४)

अथ माधोसिंघ चौड़ाउत की अरदास

सौई सुख तैं हम सुखी, सकल सूर सामंत ।
ज्यौ तरु सींच्यौ पेड़तैं, पात पात पसरंत ॥७२॥

अथ कन्ह सगताउत की अरदास

सौई सकल सयान हौ, गुरु बंधै गजगाह ।
एक तमासौ अनुग कौ, देखहु दंद दुबाह ॥७३॥

कर युग जोरि सुललित करि, करि निज निज अरदास ।
करि प्रसन्न जैसिध मन, बगग थंभि व रहास ॥७४॥

सहस सुभट हय बर सहस, प्रभु रक्खै निय पास ।
समर धसै हय सहस दस, सुभट सहस दस भास ॥७५॥

(कवित्त)

सकल सूर सामंत, अरज बिन्ती सु अद्र निसि ।
वरषागम बहल, बियाल दग चाल बंध दिसि ॥
भेले भय भारथ सु, भीम परिसाहि सेन पर ।
त्रटकि जानि घन तरित, भटकि चित चक्रित असुर भर ॥
बे चूक चूक कबिला बकत, जानि किसान लुनंत कृषि ।
बज्जी सु भ्राक भर खगा भट, संयुग प्रलय समीर सिधि ॥७६॥

(छंद मुकुद डामर)

भननंक्रिय खगा सु बज्जि भटाभटि धाइ धसंमस धींग धसै ।
कर कुंत सकंति रुकंति कटारिय लोह भलंमल भाँइ लसै ॥
जुरि जोधनि जोध जनौ जम जोरिय टोप कटकि करी करकै ।
भटकंत सन्मह कृपान भनंकति हडु कटकि बज जरकै ॥७७॥

मिलि कंकनि कंक सुधार खिरंतह अग्नि भरंत कि बिज्जु भला ।
तिन होत उदोत तकै उतमंगहिँ कोपित सूर अनंत कला ॥
मचि कंदल मीर गंभीर कटै मधि माभिय जेइ मसंद महा ।
तनु भार सँभारिय खंध भुजा तिन भार पराक्रम खगा बहा ॥७८॥

बहि बज्र प्रहार गदा गुरु सुमार पक्खर भार सुढार ढरै ।
 टुटि टोपनि टूक फटै फुनि टट्टर सैद बि कैद से सून फिरै ॥
 लरि लुंघ पठान छकै छिलि लोहनि खंड बिहंड बितंड भये ।
 प्रहन्त न अप्पन आन पिछानत जानि सु ठाण के खंभ ठये ॥७९॥

दुहुँ ओर दु बाह उछाह उमाहिय आपनै ईस की आन बदै ।
 तजि नेह सुदेह सुगेह सुमानिनि सौंइय काम सुहोम हदै ॥
 करि ताक सँभारि सँभारि सुहक्कत बेधत बान अभंग बली ।
 तनु त्रान संधान युआन स प्रानहिँ बेधत आनहिँ होत रली ॥८०॥

सर सोक बजंत सुढंकिय अंबर डंबर जानि कि मेघ स्रवै ।
 बहि रंग प्रबाह सुराह प्रबालिय चोल रँगै जनु चेल चुवै ॥
 फरसी हर हुल्ल गुपति फुरंतह धीरज केइक धीर धरै ।
 भननंकिय गोर सु सोर भटक्किय गैन गजै गिर संग गिरै ॥८१॥

धर पिट्टि असक्कि असक्कि धराधर कायर जानि कुरंग भमै ।
 घन घोष सु त्रंबक सिंधु घुरंतह ज्यौँ बर बीरनि बीर जगै ॥
 कुनन्त कितै कबिला कलहंगनि रुम्मि रुहिल्ल गोहल्ल रुरै ।
 मक्कि मारहु मार सुमार मुखं मुख भारिय भारेत भूप भिरै ॥८२॥

उतमांग पतंत कहैँ केइ अल्लह कै रसना तँ रसूल ररै ।
 घन घायल घाउ लगैँ घट घूमत भूमत ही धर धंखि परै ॥
 हबसी उजवक्क बलोचिय भंभर गक्खरि भक्खरि कौन गिनै ।
 परि सत्थर बित्थर बैरि रिनंगन बायक कैसे कहंत बनै ॥८३॥

कटि कंध कमंध सुअंध गहँ असि नच्चत रूप बिरूप लगै ।
 उबरंत परंत गिरंत कि गिंदुक जिंदु अटट्ट हास जगै ॥
 गज बाजि फिरंत रिनंगन गाहत भंजि करंकनि भूक करै ।
 तरफैँ अधतंग तुटै नर आसुर ज्यौँ जलहीन सु मीन रुरै ॥८४॥

करै खग कदैँ सिर खंध लटक्कत आन भटक्कत सुंभि भरै ।
 मुख मार बकंत हकंत हुस्यारिय भार प्रनार सुरंग भरै ॥
 नट ज्यौँ भटकैँ किन बल्ल निपट्ट उलट्ट पलट्ट कुलट्ट नचै ।
 अनतुंग अनोकुह अंत अलुज्झन मांस रु सोनित पंक मचै ॥८५॥

किन अस्व कटंत धपंत सु पाइन पाइ भरंत सुकुंत बरें ।
 रहि ठट्ट सुगट्ट कुधंत इकै करपार बंदंतन क्षौनि परें ॥
 बिन हत्थ कितै धपि मारत मुंडहिं ज्यौ वृष मेष महीष भिरें ।
 बढि सत्थ लथब्बथ कै हथ बाहु सुमुट्ठिन मुट्ठि ज्यौ मल्ल जुरें ॥८६॥

भभकै करि मुंड बिहंड भसुंडह चच्चर रत्त प्रवाह चलें ।
 उछरें अनि खंड सुजानि अजगार जंगल केलि करंत जलें ॥
 उडि स्रोनि त छिंछि उतंग अयासहिं संभ समान सुबान बढ्यौ ।
 बलि लेन बिताल रु बीर बिनोदिय चौसठि युग्गिनि रंग चढ्यौ ॥८७॥

लगि लुत्थिन लुत्थि उलत्थि पलत्थिय हत्थिन हत्थिय व्यूह अरें ।
 हय सत्थ कितै हय ग्रीवह बस्सिय बाढ़ बिहास्सिय भूमि ढरें ॥
 दुटि दोप रु त्राव कृपान सरासन तीर तरक्कस कुंत तुटें ।
 बर बैरख बंबरि भंड उभंभरि नेज रु नारि अराब फटें ॥८८॥

बहु रूप बिलास प्रहास समीहित ईसर अंबुज माल गुहें ।
 सब केक हकारि बकारि सु उट्टहिं गिद्धिनि तुंडनि मुंड गहें ॥
 प्रहनंत दुहू पख बीर पचारत बाहि समाहि बंदंत बली ।
 तिन सद् सुनंत सु नारद तुंबर रक्खस जक्ख सु होत रली ॥८९॥

अरि मुंड कितै हय गय पय ठिप्पर चोट चौगान की दोट भए ।
 रन रंग रत्तत्तल रत्त महीतल चक्क चलंचल चंड जुए ॥
 रस भैरव भूत पिसाच महोरग दैतरु दानव दंद चहें ।
 सुर इंद सबै मिलि सूर सराहत हो हिंदुवान की जैति कहें ॥९०॥

रुरि रुंड रु मुंडनि नार मलेछनि सेन सुखंड बिहंड भई ।
 प्रहरेक प्रमान महा भर मंडिय भारथ उद्धम भाँति ठई ॥
 बरि हूर सनूर सँपूर सुसूर सनेह गरें बरमाल ठवें ।
 जयकार करंति बधाइ सुमुत्तिन मंगल गाय प्रसून सबै ॥९१॥

(कविच)

प्रमुदित स्रवति प्रसून, गीत रंभांगन गावत ।
 बरत सु बर बर बीर, बिमल मोतीन बधावत ॥

गरहिँ घल्लि बरमाल, साखि दे सकल सूर सुर ।
 पंकजनैनि पढ़त, बखौँ मैं प्रगट एह बर ॥
 बैताल फाल विकराल बपु, हास अटट हरषत हसत ।
 असि भरभरंत तुटत असुर, धीर बीर रिण धर धसत ॥६२॥

असि अपार अकरार, धार रिपु मार धपंतिय ।
 जंगवार जोधार, भार करतार सुभंतिय ॥
 भलमलंति भनकंति, खिज्जि खल मत्थ खिपंतिय ।
 सौदामिनि सोदरा समर सन अजय जयंतिय ॥
 रंगी सुरंग रलतल रुहिर, सकल सत्रु संहारती ।
 हिंदवान थान रक्खन सुहद, भगवति प्रगटी भारती ॥६३॥

बिफुरि हिंदु बर बीर, ढान असुरान ढंढोरत ।
 हय गय नर संहार, भार घन झंड झकोरत ॥
 लुटत लच्छि अलेख, कूह फुट्टी अकरसिय ।
 सोबत सुंदरि सत्थ साहिजादा भय भारिय ॥
 खलभलिय सु खल तिय कुल सकल, अकल विकल हिय हरवरत ।
 भगौ सभैति गिरि बन गहन, निसि अंधियारी अरवरत ॥६४॥

हिय हहरंति हुस्म, हार तुटत मोतिन मन ।
 परत हीर परवाख, लाल श्रम भाल स्वदेकन ॥
 निघटि स्वास निस्वास, भरति खोचन मृगखोचनि ।
 यूथ अष्ट मृग बधू, समान चक्रित रस रोचनि ॥
 धावंत उनगनि मग तजि, एकाकिनि गिरि गृह सजति ।
 ऐ ऐ प्रताप जयसिंघ तुम अरिन बाम रन बन ब्रजति ॥६५॥

लुटि खजान अमान, लुटि हय गय सु बिहानिय ।
 साहिगंज ढंढौरि, तोरि तंबू तुरकानिय ॥
 नौबति लेइ निसान, भार रिपु थान सु भज्यौ ।
 जानी सकल जिहान, सकल सज्जन मन रंज्यौ ॥
 बहुरे निसंक जय करि बहुत, मिल्यौ म्लेख तिन मारयौ
 महाराण सुभट सामंत सजि, बहु असुरान बिडारयौ ॥६६॥

(१८८)

(दोहा)

भगौ साहिजादा गयौ, गढ़ अजमेर अनिह ।
 रहै न आसुर और रन, नृप नबाब सब नह ॥६७॥
 करै सु मुजरौ कुअर सौँ, सकल सूर सामंत ।
 छवि छिलतै रन छोह लै, बहु सुख पाय अनंत ॥६८॥
 लहै सु जिन जिन लुटि कै, हय बर हथी हेम ।
 कुँअर अग तै भेट करि, पोखिय प्रबर सु प्रेम ॥६९॥
 रक्खन जोगे रक्खि कै, सनमानै सब सूर ।
 ग्राम ग्राम तिन देइ गुरु, सज सिरपाव सनूर ॥१००॥
 आए निज गृह जीति अरि, करि बहु कंदल काम ।
 उथपि थान असुरेस को, हृदय सु पूरिय हाम ॥१०१॥
 इहि परि रक्खै निज अवनि, राजसिंघ महाराण ।
 और हिंदु सेवै असुर, खल खंडन खूमाण ॥१०२॥

(अथ कलस कवित)

अजमेरह अमारौ, धाक दिल्ली धर धुजै ।
 रिनथंभह रलतलै, लच्छि लाहौर लुटिजै ॥
 खुरासान खंधार, थदा सुलतान थरक्कै ।
 चंदेरी चलै चलय, भीति उज्जैनि भरक्कै ॥
 मंडवह धार धरनी मिलय, डुलय देस गुजरात डर ।
 औदकै साहि औरंग अति, राण सबल राजेस बर ॥१०३॥
 अचल युद्ध धर अकल, अखल अज्जेज अभंगह ।
 अद्भुत अनम अनंत, आदि अवनीस सु अंगह ॥
 कालंकिन केदार, पापि कज्जै प्रयाग पहु ।
 महि सु गंग मदुवान, विरुद इहिँ भाँति जास बहु ॥
 जगतेस राण सुअ जगत जस, अतिथि देत बिलसंत अति ।
 कहि मान राण राजेस यौँ क्षत्रीपन रक्खंत खिति ॥१०४॥
 सज्जन सौँ सनमान, दंड भरि थक्कै दुज्जन ।
 जसकरक जसकरक, हरेत हय हथिय दिन दिन ॥

न्याउ बेद बर नीति, दूध को दूध जलं जल ।
 अजा सिंघ थल इक्क, सलिल दुक्कत त्रिन संकल ॥
 घुव रज्ज जास जौ लौ धरा, प्रकट बिरुद जिन हिंदुपति ।
 कहि मान राण राजेस यौ, क्षत्रीपन रक्खंत खिति ॥१०५॥

इद्र रूप ऐश्वर्य, दान जलधर ज्यौ दिज्जै ।
 राज तेज रवि रूप, क्रोध रिपु काल कहिज्जै ॥
 लीला ज्यौ लच्छीस, न्याय श्रीराम निरंतर ।
 अर्जुन ज्यौ सर अचल, विक्रमादित्य बचन बर ॥
 कलियुग कलंक कप्पन बिरुद, मलन असुरपति विमलमति ।
 कहि मान राण राजेस यौ, क्षत्रीपन रक्खंत खिति ॥१०६॥

एँ उत्तम आचार, निबल आधार सबल नृप ।
 सुरहि संत जन सरन, जग्य घन दान होम जप ॥
 विस्तारन विधि बेद, ईस प्रासाद उद्धरन ।
 असुरायन उत्थपन, सु कवि घन वित्त समप्पन ॥
 दिन दिनहि सदाव्रत षट्दरस, भुंजाई यदुनाथ भति ।
 कहि मान राण राजेस यौ, क्षत्रीपन रक्खंत खिति ॥१०७॥

परिशिष्ट

१-प्रतीकानुक्रम

[संख्याएँ अध्यायों एवम् छंदों की हैं]

अंकुस सरिस जो—५-६२
 अंगज साहि औरग—१३-१
 अंत पंतिय पय—१-२२५
 अंबर इक आदित्य—१८-१५
 अंबर घर आवरिय—१५-८
 अंबर बर पत्र—८-१६७
 अंबर बिलगि अंब—४-५
 असुक कि इंदु—१-२६
 अकस्मात तब सिंह—१-१६१
 अक्खै तब उमराव—१०-७०
 अक्खै कै असुरानि—१७-३१
 अखंत खग बल—३-४१
 अखिय आइ बघाइ—७-४४
 अखिय बिप्र असीस—३-५८
 अख्यात अचल युग—८-१६६
 अखै औरंगसाहि—६-३६
 अगरु तगरु अनाइ—८-४६
 अचल युद्ध घर—१८-१०४
 अचल रज इकलिंग—६-३
 अज अजर अमर—१-३१
 अजमेरह अग्ररौ—१८-१०३
 अजेज गाढ़ आगरे—५-४३
 अज सफल अवतार—८-६०
 अटक्यौ न किहँ—१२-२१
 अट्ट मासं सुयं—१-१३८

अडग डगति डगमगति—१८-५०
 अति इंद्रलोक मंज्यौ—२-१५३
 अति उतंग अंबर—१-६२
 अति दत्त चित्त—१-८६
 अति दत्त चित्त—२-५१
 अति दलमलियत उरहिँ—३-१०५
 अति पावस उल्हरिग—१-३६
 अति बढिदु अवाज—६-२६
 अति मिलिय प्रजा—७-१०५
 अति रोसहिँ कीन—६-३६
 अतैव अंस अक्खियै—५-५७
 अदभुत थानिक पिक्खि—८-१०५
 अद्ध रयनि तम—६-१००
 अनपुठिठराय पुठिठय पलान—६-२२
 अनमिख नैन निहार—३-१०६
 अनाधार असरन असत—८-१३४
 अनुक्रमि वर्ष दुतीय—२-१८६
 अनुक्रमि हरि गृह—८-५२
 अनुक्रमेँ दिवस द्वादसम—२-१७१
 अनुग मुक्ति तिन—६-६७
 अनुग हत्य फुरमान—१०-२४
 अनूप हेम आसन—५-३
 अनेकं अभेदं अनोप—३-६
 अनेक राय जूथ—३-८०
 अप्पि बर एम—१-१५७

अब हम गमन—१-१५२
 अबल राय आधार—६-१७४
 अबलाकृत अरदास—७-४२
 अबारस भौर मरकि—१७-१८
 अभंग जास सासन—५-२०
 अभिनवा बसुमति इंद—२-५७
 अमर राण अवदात—१०-७७
 अमर राण इहिं—८-११०
 अरविंद पुण कि—१-२४
 अरबी ऐराक आरब—८-१३
 अरसी राख महा—२-३०
 अरि को मंडय—३-६७
 अरि बाम बाल—३-४०
 अरि भवन लगन—२-१६३
 अरि मित्र अप्पन—१२-१६
 अरि मुंड कितै—१८-६०
 अरै नन-आसुर—६-१५६
 अर्चैयषि कर्दम सकल—७-६७
 अलंकृत कुंदन अंग—२-१७८
 अलावदी आलम चडि—२-१६
 अलिय टेक मंडौ—६-१२५
 अल्लह सु देह—६-१४
 अल्लू रावर राजनीति—२-६
 अवदात सुजस अपार—२-५८
 अवनी सुख धारै—६-४२
 अबिलंब सजि दलबल—८-६
 अवलोकि असुर पति—६-५३
 अष्टादस सर अभिराम—७-१४
 असंख यों चमू—३-७८
 असन बसन बसु—२-८६
 असपति अहमिसि औसकतु—१०-१०२
 असपति परि औरंग—६-६

असि अपार अकरार—१८-६३
 असुरायन धरनी अवर—१-६३
 अहमिसि लगत असाढ—१०-६६
 अहमदाबाद थानह सु—६-४६
 अहो जोगिंद करि—१-१५४
 ओवरी अगच्छि अँन—४-६
 आइ गहै को—१०-१०
 आई निरंतर हसित—१-१२
 आए चढ़ि अजमेर—६-१२७
 आए निज गृह—१८-१०१
 आए नृप दुर्गाहिं—१-२३२
 आए मुरधर इला—६-१६५
 आए साहि हजूर—१३-३०
 आगे ज्यों कूँअरपनै—१८-४
 आगौ हूँ इन—३-२७
 आजानबाहु अनमी अभंग—३-३२
 आडे जे आए—६-१६४
 आदि बैर हिंदू—६-५
 आरति दीप उतारि—८-८५
 आराब छुटै अछेह—१४-१४
 आलम के दल—१८-५२
 आवंत पेसकस प्रति—८-३२
 आवत जब जानै—११-२
 आवत जिव अहमेव—१०-१०७
 आवत सुनि औरंग—६-१७१
 आसाढ मास आयौ—१-४०
 आहुट्टराय दल बल—३-३३
 इंद्र रूप ऐश्वर्य—१८-१०६
 इंद्रसभा अनुहारि—८-१४७
 इंद्रसभा की ऊपमा—१-२३६
 इक कहि लुभी—६-६३
 इक कहै पुन—६-५४

इक दह हय - ६-१२८
 इक दिन आलम—७-२३
 इक भरत दंड—६-२७
 इण परे सरस—१-५१
 इत्यादिक अविलंब तै—८-४६
 इत्यादि देस अनेक—१-८६
 इत्यादिक रावर—२-२१
 इन अनिष्ट औरंग—६-१७६
 इन चित्रकोट सु—१-११४
 इन परि सुनि—१-३४
 इन मंड आदि—१-११५
 इन लुखौ अग्रगौ—१०-७
 इम गरुये इगबीस—६-२०२
 इल ल्यौ हरि—६-८
 इल नगर पुर—८-१३२
 इला इंद तूही—५-२५
 इह औसर आयौ—६-६६
 इह तन इह—१८-६७
 इहिँ पर सेव—८-६१
 इहिँ परि करि—८-६१
 इहिँ परि घन—८-४०
 इहिँ परि थान—१६-२८
 इहिँ परि घर—१७-३६
 इहिँ बर कै—३-१०८
 इहिँ बिधि आलम—६-१४८
 इहिँ बिधि गुरुता—६-१६०
 इहि पतिसाहि रीति—६-७५
 इहि परि रक्खै—१८-१०२
 इहि मति अलंकरि—८-७६
 इहि मंति लिख्यौ—३-४८
 इहि भौति दुर्ग—१५-२७
 इहिँ बिधि युगिनी—६-१५६

ईडरगढ़ उद्धंसयो—१५-३०
 ईडर दुर्ग उजारी—१५-२६
 उगम दिसि तिन—८-१४४
 उच्छरै दामयं रूप—७-६४
 उच्छारि मुक्ति अखण—५-१६
 उच्छरै उतंग खौन—१४-१६
 उजरि अहमदाबाद—१५-१०
 उभटिय आसुरि सेन—६-१४५
 उठि प्रात तच्छ—१-१०४
 उडि खोनित छिछि—१६-२३
 उडिय रेनु सु—१-२१६
 उडै रैनु व्यूह—१०-४६
 उत तै मोरी—१-२०८
 उतमंग पतंत कितै—१६-१६
 उतमांग पतंत कहै—१८-८३
 उतमाग पूर्ण कुंमह—७-१०४
 उत्तंग गिरि सम—१-६६
 उत्तंग चक्र गंत्री—८-२१
 उत्तमहु तजि आचार—८-१२१
 उथपै दलं बहलं—३-८
 उदयमान कूँअर अमर—१२-१
 उदयसिध राणा अनम—२-३५
 उदया राणा अमग—१०-७५
 उदार चित्त अखिख्यै—५-४४
 उदैपुर इंद्रलोक अनुहार—२-८७
 उद्धंसै असुरान खान—१३-२६
 उद्यम ग्रंथह काज—१-३७
 उनमत्त करत अगग—६-६
 उनमत्तराय अंकुस प्रहार—८-२८
 उपनौ अचिज्जं—१-१८५
 उभय राज बर—३-८५
 उभय राज बर—३-८६

उभय लक्ख वर—६-८८
 उमग्ग मग्ग सैल—३-८२
 उमराव खान इहि—६-२६
 उर उरज उभय—७-१५
 उरवसी हेम मानिक—८-७६
 उररि देते उपट्ट—१४-१८
 उलटे बराक अनंत—८-१२४
 ऊचलि गय अग्गरौ—६-२७
 ऊजर करि अग्गरौ—१०-१७
 ऊजर करि अग्गरौ—६-१६७
 ए ए सुबुद्धि—६-५१
 ए पहार पति—१३-३२
 ए हिंदूपति आदि—६-१७३
 एक अग्ग अनुसरत—१८-४६
 एक दस वरस—१-१४४
 एक दिन एक—१-१४५
 एकल्ल भयौ पतिसाह—६-१६
 एकहि बैर औरंग—१४-३६
 एह गल्ह असुरेस—१५-२
 ऐ उत्तम आचार—१८-१०७
 ऐ अवतार रूप—५-६३
 ऐ हिंदु कुल—२-४०
 औराक अस्व आरब—७-६०
 औराक आरब अन्नु—१-७१
 ऐराक आरब देस—१८-३८
 ऐराक आरबी अस्व—६-८
 ऐराकिय आरवि अस्व—१७-१६
 औरंगसाहि मेज्जौ सु—६-५०
 कंसहि को कर—१७-३३
 कन्नु देस निज—१-२०५
 कटक्कट हड्ड सुजड्ड—६-१४२

कटल बटल कुंद—४-७
 कटि कष अंध—१३-१४
 कटि कष कमंध—१८-८४
 कटि कसै कटारी—६-१६
 कटि सीस नचत—१२-१५
 कट्टन दरिद दुख—५-६०
 कची किलकिल्ला सक्ति—११-६
 कथन एह कमधज—३-६०
 कथन राण अति—१०-१११
 कदली सुखम अधो—१-१५
 कनक कुंभ धज—८-४१
 कनक तोल ऐराकि—८-१०१
 कन्या दो तिन—३-३
 कपट सु लखि—६-३७
 कव कै तुम—३-६१
 कवहुँ लरारहि मल्ल—१८-६
 कविल गल्ह ऐसी—१४-२
 कविल नचै कमंध—१४-१६
 कमनीय काय अप्प—५-६१
 कमल नयन कंसारि—८-५६
 करं गहँ कृपानयं—५-८
 करंत केलि कोरि—५-४५
 करतै पयानं उरमै—१०-५०
 कर कुंत कटारि—१६-१६
 कर खग्ग कटै—१८-८५
 कर झल्लि वर—२-४७
 करण राण चंदती—२-३७
 करत प्रस्न दिन—६-१६६
 करत बिहंग केलि—४-१५
 करते तौ हम—६-१२१
 करते बहु कूच—६-३०
 करतै सु स्नान—८-६७

करन दुर्ग सजि—१०-८०
 करन पुत्र दुअ—२-२३
 करबाल कुंत र—१२-७
 करभसाल उन्नत करभ—२-७७
 करमसीह ऊँच कृत—२-११
 कर युग जोरि—१८-७४
 करसाख कमनिय रूप—१-१६
 करि अगौँ महाराइ—६-१६३
 करि अगौँ करि—१४-३२
 करि कर जंघा—७-२०
 करिकैँ ब्रज पर—८-५८
 करिग पयान सु—१८-४८
 करि भीर प्रभू—७-३६
 करिय अहोनिशि कूच—१०-१
 करि यौँ मानस—१०-६
 करि यौँ दिल्लियपुर—६-१६१
 करि सुजात हरि—८-६७
 करी सु करहा—१-१६८
 करना कर तै—७-२६
 करैँ दहन कर—१८-१७
 करैँ सु मुजरौ—१८-६८
 करैँ महाराण सु—२-१८२
 करैँ सोड असपति—६-३१
 कलं कनक्क कुंभ—५-४
 कलकंठ सु रसना—७-११
 कल कीरथंभ सु—१-१०६
 कलस रजत के—८-६६
 कलह जीति कमधज—६-११८
 कलह केलि जहँ—७-८१
 कलाधर भूधर श्रीधर—२-६०
 कविलानराय कद्वन सु—६-२१
 कहय रिषि एम—१-१५६

कहिँ परधि द्वादस—१-१००
 कहि आलम कमधज—६-१२६
 कहि कैँगुरा कल्यानियं—१-११२
 कहि तब असपति—६-१६७
 कहि पयान महारान—८-३८
 कहि प्रोहित तब—८-१०६
 कहियै निगोदर हार—१-२०
 कहियै राजकुँआर—३-२४
 कहियै श्री राजकुँआरी—७-६
 कहियै सुलगन कुल—२-१६४
 कहूँक दंड किजियहि—१७-७
 कहूँक नारि करिनारि—१४-३८
 कहूँ लंब कुच—१-८३
 कहूँ सु नारि—१३-२८
 कहूँ कठियार क्रीणत—२-१३६
 कहूँ कहूँ हट्ट—२-१०८
 कहूँ तिय सोहव—२-१४१
 कहूँ नट नच्चत—२-१४०
 कहूँ पति भृत्य—१७-२७
 कहूँ रघुबीर कहूँक—२-१०४
 कहूँ सु जगातिय—२-१३४
 कहूँ सु मंत्री—३-४
 कहै तब नाम—२-१७४
 काबरि कपोत कोरि—४-१७
 कायर भगे कुरंग—१४-२१
 कालंकि जन केदार—२-४१
 कालंकिराय केदार कथ—६-२०
 कासी र दीठ—१-७२
 काहूँ सौँ ही—१-१२८
 किज्जेव एह हम—३-४६
 कितक एह गुरु—१८-१६
 कितक दिननि कबिलेस—६-१६६

कितनैक कबिल्ला उररि—११-८
 कितनैक करत निमाज—१२-११
 कितिक एह कमधज्ज—६-८४
 किती तहँ मालनि—२-१२७
 किते सब नीक—२-६६
 कितेइ उपाश्रय चौकिय - २-१०५
 कितेइ कंठारिय मंडि—२-११५
 कितेइ कंदोह निहट्ट—२-१२१
 कितेइ बसंत सुनार—२-६४
 कितेइ सरापनि हट्ट—२-१०६
 कितेइ सौदागर अस्व—२-१४२
 कितेकन हट्टिय हट्ट—२-११६
 कितै अग्ग करिणी—१०-३२
 कितै इक मोचिय—२-१३६
 कितै इत मोरनि—२-१२४
 कितै उमराव हयगय—२-१४३
 कितै ऋतु ग्रीष्म—२-१२६
 कितै कातरा काय—६-१११
 कितै काल बिचै—१-१६१
 कितै जाति काबोज—१०-३५
 कितै डूब जमदब्द—६-११२
 कितै तहँ आवतु—२-१०३
 कितै तहँ कुदन—२-११०
 कितै तहँ गंध—२-१२५
 कितै तहँ गुड—२-१२८
 कितै तहँ जौहरि—२-१०७
 कितै तहँ देवल—२-१०२
 कितै तहँ बौहरे—२-१३२
 कितै परवालिय महिष—२-१४७
 कितै पटवानि के—२-१३१
 कितै पर्वती अस्व—१०-३७
 कितै पौन सत्थी—१०-३६

कितै बहु मौलिक—२-१११
 कितै बिन सीस—६-१४४
 कितै मन हट्टिय—२-१३७
 कितै षटदर्शन आश्रम—२-१३८
 कितै सिंघली जंगली—१०-३४
 किनं पिट्ठि सज्जै—१०-२८
 किनं बंधि कट्टार—१०-२६
 किन अस्व कटत—१८-८६
 किनै चित्रकोटे—१-१८४
 किय सेन अग्ग—६-४
 कियेँ प्रति कूचनि—१७-२६
 कीरतिध्रवल धवल—२-४
 किलकि कर कहँ—१-२१२
 किलकि किलकि केक—१४-१५
 किलकिले कातिले हय—८-१६
 किलकत माइ निहारि—२-१८१
 किहँ सुक्ताफल माल—६-२०६
 किहिँ विधि बीत्यौ—६-४
 किहि अस्वमुख नर—१-८२
 किहि धरा पुरुष—१-८५
 कीजंत राह मह—८-३१
 कीन निवछावरी—७-६३
 कुदनहिँ कुंती कीन—२-५४
 कुमलमेर अजीतगढ़—२-३३
 कुअरपनै सु केलि—४-२३
 कुणिय राजकुँआर रिन—३-६२
 कुर कासमीर कासी—६-२३
 कुसल रहँ निय—१०-७८
 कूच कूच बहु—६-६२
 कृत धर्म भवन—२-१६५
 कृपान पानि दुड्ड—५-४७
 केकी करंत मिस्वर—१-४२

केतकी र कचनार—४-८
 केदारराय कट्टन कलंक—८-२७
 केसरीसिंघ रावत सु—१०-६०
 को अडुल्ल हरवल्ल—१३-२४
 कोटि ते भूप—१-१४०
 कोटिक घन बिन—८-१६४
 कोदंड आकृति भृकुटि—१-२६
 कोसर कोठागार पति—२-७१
 कोसीस पंकति कंतप—१-६८
 कोसीसावलि सोह कर—२-६३
 कौन गिनै मरु—१-४
 कौसलर र कौकण—१-७३
 क्रमै ब्याह किन्नौ—१-१८६
 क्रमि क्रमै पत्त—१-१५०
 क्रर जसु कर—५-८७
 खनकंत खग्ग उनग्ग—१३-१३
 खनकंत जसु कर—२-४८
 खनत केइ नर—८-१४५
 खरच कज सु—६-२०५
 खरच सु लेहु—१०-६५
 खरभरि आसुरखौन जिहान—६-१४६
 खल खंडन देव—८-१७०
 खल भल्लि कीजत—२-५०
 खाग त्याग दुहुँ—१७-३
 खिजमति सु दार—७-६३
 खिति कहुँ जल—१-८४
 खिति घरहरि हय—१६-१०
 खिरि ककनि कक—१६-१३
 खिलावहिँ मुक्कि सु—२ १७६
 खीरोदक अतलस सरस—१५-१८
 खुरतार मार घरहरिय—८-३०
 खुरेसिय खग्ग कियै—६-१४७

खेतल राँण समाहि—२-३१
 खेती हम कुल—६-८०
 गंग कुँअर गुन—१४-६
 गग गड धौ—१८-३२
 गंधर्व नचंत सु—८-१५६
 गए असुर तजि—१६-२७
 गए कितहुँ तजि—६-१५८
 गजराज तजै खर—७-३२
 गज्जंतै जल गंभीर—८-१५१
 गज्जतु घोष गजादि—८-३६
 गड्डि भंड अजमेर—६-६३
 गढ चित्रकोट सु—१-६५
 गढ तोरि तोरि—१५-१३
 गढपति पँवार दाता—१०-६१
 गढपती महँजा अमरसिंह—१०-६७
 गढ मध्य बहु—१-१७२
 गयौ अनुग अजमेर—१०-११
 गरजि कुँअर गंग—१४-१२
 गरबर बर्दत पारसि—६-३०
 गरभ बालही पितृ—१-१३२
 गरीबदास प्रोहित सु—१०-७१
 गरुअ गात गजराज—६-२०३
 गल्हार करत गज्जंत—६-१७
 गहकि आसुर सेन—५-८८
 गहगहिय खग गोमाय—१३-२०
 गहिल गात गुजरात—८-३७
 गहँ कुन कप्पर—६-१५१
 गहँ तोब कंधै—१०-४३
 गाम नगर पुर—१-६६
 गावत जसु जस—१-८
 गावत बहु गंधर्व—८-६४
 गावहु गावहु सुकवि—१-३५

गिद्धनी भरफै नैन—१४-२६
 गिद्धिनिय अरु गोमाय—१२-१७
 गिनती कहा गुलाब—४-६
 गिनि मिथुन लगन—२-१६२
 गिनियहि मेरु गिरिवर—५-६६
 गिरि भेदि शृंग—१-५०
 गिरि सुंग उतंगनि—७-२७
 गुदराइय लेख कुमारि—७-३६
 गुरु गाढदेव गढ—६-१६
 गुरु गिद्धिनि तुंडनि—१६-२४
 गुरु चौरासी गढन—१-६४
 गुरुतर कल्लोल मरुत—८-१६२
 गुरु पुत्ति अञ्छि—३-४५
 गुरु बुरज गिरि—१-६६
 गृहं गृह दंपति—२-६६
 गृहं गृह मंगल—२-१००
 गृह गृह नित—२-८४
 गृह गृह भोग—२-८३
 गृह गृह मंदिर—२-८२
 गृहादित्य नृप गरुअ—१-१३६
 गोपा कमधजा सूर—११-११
 गोपिनाह कमधज—१०-१२०
 गोपी सु नाह—१०-६६
 गोरा नारि सु—१-२०१
 गोविंद रावर रिनाहि—२-३
 ग्वालोर अलवर गज्जना—१-१०६
 घन घोष ब्रंवागल—१६-१८
 घन नौबति नह—७-४१
 घन भंति भंति—८-७१
 घनै अतरादिक—२-१२६
 घनै घृत तैलरु—२-१२०
 घुरंती घमसै—१-१७६

घुरि निसानि सु—८-६८
 घृत खंड तेल—१५-२१
 घेवर मुत्तियचूर—८-६४
 घोष नौबति घुरं—७-५५
 चंचल सु रान—२-४६
 चंचल सुवेग रहवाल—६-११
 चंद सिय पंख—१-१४२
 चंद्रसेन भाला—१८-२६
 चंपक गुलाब जूही—८-८१
 चंपक सहकार सदाफल—८-१६५
 चंबेलि जूही जाइ—१-३०
 चउलख प्रबल मजूर—८-१४२
 चकतापति चीतौरगढ—१५-१
 चढि उमराव चतुर्दसह—१०-१२२
 चढि चाक चहुँ—१३-१२
 चढै कुंवर बर—१०-१२१
 चढै तुरंग चचलं—३-७६
 चढै भर केइ—१७-२१
 चढै सेन चतुरग—६-१
 चढ्यौ दल सज्जि—१७-६
 चढ्यौ सेन सज्जै—१०-२७
 चतुरंग चंग सेना—७-६६
 चतुरंग चमू सजि—६-२८
 चतुर्थ सु पंचम—२-१६०
 चरखी अगगरु चहुँघा—८-१२
 चर चलत अगगरु—१८-३६
 चरना रंगित बहु—७-१६
 चरनालि कटि तट—१-१६
 चरहि जाइ दीनौ—१५-३८
 चलंत बेग चंचलं—३-७३
 चल प्रचले अरि—१३-१०
 चलै अगग पञ्छै—१०-३१

चलौ चित्रकोटै—१-१६२
 चहबचा पिखै चारु—४-२०
 चहुँ ओर जोर—१-४१
 चहुँ दिसि बाग—२-६५
 चामर दलत सु—७-७०
 चारु दो चामर—७-५२
 चितिय बापा बीर—१-१६६
 चित्रंगी कच्छहिँ चलिय—१-२००
 चित्रंगी तब ही—१-१६५
 चित्रंगी मुक्किव चलयौ—१-१६६
 चित्रकोट आए सुचढ़ि—१-१६४
 चित्रकोट गढ चारु—१-१२१
 चित्रकोट गहि चित—१-२३०
 चित्रकोट चित्रागदे—१-११६
 चित्रकोट थानहिँ सुचढ—१८ ६
 चित्रकोट पति राज—१-७
 चित्रांगद ते सचमे—१-१२३
 चिरजीवि प्रताप जसु—५-६३
 चौरिय मडिय चित—७-४८
 चौघंट चक्र चौरथ—८-२०
 चौरासि अवल्लिय रूप—६-२८
 चौसट्टि पीवत चोल—१२-१८
 छकपर्कति मिच्छि धारि—५-४६
 छजंत सीस छत्रयं—५-१६
 छजै दंड सोवर्ण—१०-४७
 छत्रपतिराय सिर एक—३-३४
 छवि अंजन दग—७-६
 छाजंत सीसहिँ छत्र—२-४५
 छुट्टि बाननि भौन—१-२१०
 जंग जीतन जोध—५-८०
 जंपै ताम सु—६-१७२
 जगतसिंघ जोधार—२-३८

जगतेस रान घर—२-१५२
 जगमगति निसा खद्योत—१-५४
 जगै कमधञ्ज महा—६-१३६
 जग्गौ बापा वीर—१-२३६
 जपियहिँ तुमको जग—१-५
 जमाति भूप जुत्तयं—५-६
 जय जदुपति जगनाथ—८-५३
 जय जय कुँअर—५-५६
 जय जय जग—१-३२
 जयतु यसोमति नंद—८-५७
 जय पच तृतीय—६-१५
 जय पते जुरि—१-२३३
 जयसीह कुँअर बोले—१०-५५
 जय हिंदु धनी—६-३७
 जरकस के बहू—३-५३
 जरबाफ बसन बहु—७-१०१
 जरहु थौन तुम—१०-१६
 जरी पाघ जामा—१-१८६
 जरीस जोति जामयं—५-७
 जरी सूप सिकलात—१७-३४
 जरे पय लोह—१७-१५
 जलखंडौ खलि जालियुत—२-८०
 जल बहत जोर—१-४३
 जल भर्यौ अथग—८-१५३
 जसं राजसं तामसं—३-१४
 जसपति राजा जीव—६-६४
 जसु रूप अधिक—७-२२
 जहँ तहँ कीनी—१६-४
 जहँ हिंदुपति जयवंत—१-६०
 जहाँ जाइ तहाँ—१०-४
 जहाँ बैर तहाँ—६-६०
 जा ऐसी यवनेस—६-८२

जाति गोत बहु—२-८५
 जाति जाति निज—१-१६०
 जानि महा दुर्भन्ध—८-१३५
 जानै हिंदू जोरवर—६-१२०
 जानौ कबहुँ एह—६-७६
 जान्यौ जग प्रभु—६-१७८
 जान्यौ नृप जसवत—६-७८
 जामा जरीनि कटि—८-७४
 जिगमिगति नग युत—१८-४०
 जितं तित लगिय—६-१५५
 जितै बिरद धारति—५-३१
 जिन आनन रूप—७-२८
 जिन जीति प्रथम—६-१२
 जिन मानधाता जाय—२-५२
 जिन साहिजाद पन—६-१८
 जिहिँ रक्खै जगदीस—१०-२२
 जीते कुँअर सु—१४-२६
 जीवता जसवतराय—६-६५
 जुजई सकल जाति—४-३
 जुद्ध जुड़ण रिपु—२-७
 जुर्यौ जाइ चित्रंग—१-२०३
 जैवता दंपति युगल—३-६२
 जोधपुरह तै यवन—६-६६
 जोर मयै महि—६-७
 जोरावर हिंदू जुरै—१३-३१
 जौ हेमालय गरहु—१०-२३
 ज्यौ अंबुधि अँच्यौ—१८-२२
 ज्यौ जातु नालिकेर—४-१०
 कड रुपि भारौल—१३-४
 कनकति भेभरि नाद—१-१४
 कननकिय खग सु—१८-७७
 कूर मंडि इंद—१५-५

कूर मदवाह कपोलनि—१७-११
 कूरत लोह सु—१-२२४
 कूरै दान गंध—१०-३०
 कलकत मज्झ नर—५-६४
 कलकि सेन सु—१-२२३
 क्राट कूर मंडि—१-२१३
 किलंतिय रग सुरगिय—१७-१३
 किलंति रंग रंग—३-७०
 किलंती जरी भूल—१०-३८
 कुकि बिटपि सजल—१-५२
 कुभारे करारे अकारे—१०-४१
 टपकत बुंद तरु—१-५१
 टुटि सिंगर खुपरि—१६-१४
 ठनकि गज घटा—१-२११
 ठीक एह ठहराइकै—८-१३८
 ठीक मंत ठहराइ—६-१७६
 डगमगति दुर्ग खरहरति—८-३४
 डरत डरत असुरेस—१०-१०४
 डहकि मिच्छि जास—५-५६
 डहडहत हरित डबर—१-४६
 दंदौरि हट्ट पट्टन—१५-२५
 दमकि जंगि ढोलयं—५-१०
 दलकत ढाल सु—१८-३७
 दहिय सिंधुर परिय—१-२२१
 दिल्ली नयर करि—६-१६०
 दिल्लीपति अति दिट्ट—७-८२
 दिल्लीपति लखि दिल्ली—६-१३३
 तखतखाँ तपनीय—१८-८
 तजर तार तमाल—४-११
 तजि थानहिँ तुंब—१६-२६
 तजि न्हाण बख—१५-१५
 तजि पहार भग्गौ—१३-२७

ततथेइ नचत ज्यौं—१७-२०
 तनू उतंग तच—५-४८
 तनू सुख पच—२-१८७
 तनोसुख सूफ पटोर—२-११२
 तणौ अधिक तुरकेस—१०-२
 तब लग तम—१८-१६
 तबही बग्ग गहँ—१८-५७
 तमोलिय तेलिय बृंद—२-६५
 तरकस युग युग—१०-६१
 तरफरत कै अधतंग—१२-२०
 तरफै अधतंग तुरक—१६-२२
 तरहटी तीर तरंगिनी—१-१०१
 तर दल छेदै—१०-६२
 तहाँ श्रीफर पुंगिय—६-३४
 तागीरी न तरकि—६-७४
 ता तीरथ भेटन—८-४
 ता पाछै कमधज—३-६६
 तारागनं त्रिकुटाचलं—१-११३
 तिधार तिम्ब तोग—५-५२
 तिन कासम तुम—६-३८
 तिन कारन हम—६-१६८
 तिन कारन हो—३-६
 तिन पाट पुत्र—३-५०
 तिन प्रभु सरनहिँ—६-१८६
 तिनहि बेर तुरंत—१३-६
 तिभि तुल्ल कुखिस—१-१७
 तिय बसुमति भालहिँ—२-६०
 तिहिँ कारन हम—६-१३०
 तुग बिसाल त्रिकोट—१-६३
 तुटि सिलह टोप—१३-१६
 तुटै टोप तोग—१४-२२
 तुटै रिपु तुंड—१४-१३

तुटैव ज्यौं खहतार—१२-६
 तुम हिंदूपति प्रगट—६-१८७
 तुही इहकौ बृंद—५-३६
 तुही चारु मुखं—५-२६
 तुही जोगमाया महाजंग—५-३०
 तुही द्वारिकानाथ—५-२६
 तुही धर्मराजा धरा—५-३५
 तुही राम रूपं—५-२३
 तुही विश्वनेता तुही—५-३२
 तुही संकरं एकलिंगं—५-२४
 तूठौ क्यौं रिबि—१-११६
 ते नृप सुत—६-६७
 तेग बँवाई देबि—१६-३
 तो ब कौन—१८-१३
 तोयधि भुब बल—१०-१४
 तोरन तब बंदिय—३-६६
 तोरन मंडप तुंग—१-२३४
 तोरि पताका तुरक—१-६५
 तौ लेहिँ दिल्ली—६-५८
 त्रिहौलोक धाराधरासं—५-३६
 थपि मुकाम तिन—८-१०६
 थपि थान चित्तौर—१०-११६
 थरथरि पत्थर सुत्थिर—१७-२५
 थरहरि आसुर थान—८-३५
 थान जरै जहँ—१०-११७
 दंपति उभय संबध—७-७४
 दधि मधु घृत—८-४५
 दयौ अद्ध देसो—१-१८८
 दरबार जास घन—६-२५
 दरसन षट जहँ—१-६४
 दलं मध्य दिल्लीसरं—१०-४६
 दलपति गनपति दंडपति—२-७०

दल प्रबल मध्य—८-२५
 दलबिडिय मालपुरा—६-३१
 दल मध्य दिनपति—१८-४५
 दलिय युद्ध जयचद—२-१३
 दसमी रविवार बिचारि—८-१५७
 दाइजा एह नृप—७-६६
 दाइजा ताम रटौर—७-८६
 दातारराय जलधर सु—८-२६
 दासी किन इक—१-१७०
 दिष्ट मलीदा मैंगलनि—१८-५३
 दिनं दिन आवाहिं—२-१८५
 दिनं दिन बाढत—२-१७६
 दिन दस करिग—१७-३८
 दिनकर रान दिनेस—२-२६
 दिनौ समान बैठक—२-१६०
 दियौ सुअन्न दानय—५-१८
 दिल्लीपति कौं देश—१५-३
 दिल्लीस साहि औरंग—६-१०
 दिसि दिसि देत—१८-७
 दिसि पुब्ब सिद्धि—६-२२
 दिसि बिदिसि दल—१८-४६
 दीनी बघाई सु—२-१५४
 दीनौ आवन दुअन—११-४
 दीपति अति दुति—८-६३
 दीप धूप फल—८-४८
 दुजन दहबडा बिमल—११-१२
 दुजन भरत हय—५-६६
 दुजनौ सिर करत—५-७६
 दुद्ध हट्ट हट्ट—१३-८
 दुति बिमल युयुत्—८-६
 दुर्मा दुसाला—१-१७२
 दुहुँ ओर दु—१८-८०

दुहुँ ओर दुबाह—१६-१५
 दग देखि हिंदू—१३-११
 दग द्रविड़ देस—१-८०
 देइ दिलासा दूत—६-१६३
 देखत चंदहि दूरि—१८-७१
 देत दाइजै दाम—३-१०२
 देत निज निज—१-२१८
 देव कहा दानव—६-२
 देव देवि विमान—१-२२६
 देवालय देखंत दग—८-४२
 देवासुर मानवर मुनि—८-२
 देवी ज्यौं तुम—१-२
 देवी पानिय देव—१०-८७
 देवी सु आइ—१-५६
 देस देस फिरि—१-६२
 देस लियै निज—१-२३१
 दैन बघाई सोइ—७-४३
 द्वादस सहस तुरंगदल—१६-७
 धक धूँनिय धाम—६-३३
 धज नेज भँभोरिय—१६-२५
 धटकै धरा धुधर—६-१०३
 धणियाँणी दीजै सु—१-३३
 धन खजान नहिं—६-८१
 धनि धनि तुम—८-१५६
 धनि आसंगनि धीर—१२-४
 धपै धीग धीगं—६-१०४
 धपै धीग पर—१४-३१
 धर गिरि अंबर—१७-५
 धर धुंधरि खेर—१६-१७
 धरनि प्रगट मरुधरा—७-५
 धर पिठि प्रसक्कि—१८-८२
 धर पुर धरहरि—१७-१

घर पूरिय घोम—६-३५
 घर लोक जहँ—१-८८
 घरहरत घरनि खरहरत—१५-२६
 घरातलि धावत उट्टि—६-१४०
 घरा मध्य तूही—५-२८
 घरिय भेट हाड़ा—३-१०३
 धसमसत धपत घर—८-२४
 धसमसत घरनि गिरिवर—३-३८
 धसमसिय घर गिरि—१३-६
 धरै न कौ—१०-१०६
 धात्रौ रे धात्रौ—१४-२८
 धान-मढी लोहन—२-१४४
 धुंधरिय नभ धन—१२-१२
 धुर कत्तिय पंचमि—१०-२६
 धोवत सिहरि धन—१-४४
 ध्रुवं जनेउ धारए—५-६
 ध्रुव कौं ध्रुव—८-५६
 नऊँ निधान लच्छिनाथ—५-५०
 नच्चंत घृततततान—१८-४१
 नग बीचि जहँ—८-१०७
 नग लाल स्वर्ण—८-७५
 नगर नागद्वहा हूंत—१-१५६
 नटा बिट मागध—२-६७
 नद नदिय सर—८-१२०
 नन छल्यौ जाइ—६-५६
 नर आसुर केक—१६-२१
 नरनाथ चिरंजी तुम—२-१६७
 नुरनायक तो सम—७-३४
 नरा रत्न श्री—३-१६
 नराधि रूप नाहरं—५-५१
 नवं नव नाटिक—२-१६४
 नव लाख तुरीय—६-१७

नागरिय नारि बहु—७-१०३
 नागौरिय नृप कज—६-१८३
 नाम बापौ ठयौ—१-१४३
 नायक सब सहिलान—१६-६
 नारि तहाँ औषट—११-३
 नालिकेर अप्यौ नृपति—३-६१
 नालिकेर न्यौजा—१७-३६
 नावै ढिग कमधज—६-४०
 नाहर द्यौं नाहर—३-८७
 निकरै सु अरिन—१२-२२
 निज जीति करी—६-३८
 निज डेरा आए—८-६२
 निज निरखि नागर—१-७७
 निठुर ससुर बच—१-२०६
 नित सिंघ रूप—२-४४
 निति निति सुख—७-१०७
 निपावंत देवालये तं—५-३८
 नियं जैति मन्नी—६-११६
 नियं पुत्ति पुत्तं—१-१८०
 नियं बंस अवतंस—३-१८
 निय गोत सकल—६-११
 निय धर्म धरन—३-४४
 निय निय सु—१५-१६
 निरखंत नीर नीरधि—१-४८
 निरखंत सरोबर जानि—८-१६०
 निरखि उदयपुर नैन—१०-११५
 निरखि सुपन जग्यौ—१-१२७
 निरखि वल्लिका नाथ—१-१३०
 निर्घोस धुरिय नीसान—६-३
 निर्यामक बलन न—१-४७
 निलवट सनूर रत्नै—६-१४
 निमुनि चढ़त निसान—५-६१

निसुनि बच हिंदू — १३-५
 निस्चै इह आखै — ३-२६
 निहस्सई निसान नाद — ५-५३
 नूपुर सु पाइ — ८-१०
 नूर नर नागर — ५-८६
 नृतत नीर कमंध — १-२१५
 नृप अरसिंह सुनंद — १०-८३
 नैननि निरखंत करहिँ — ८-१६३
 पंच धापण सो — १-१४१
 पंच फौज तिन — १०-६७
 पंचौ दल सज्जै — १८-२५
 पंचौ भट महाराण — १८-२४
 पइयै वर कविराज — १-३
 पखरिय सजर पखर — ८-१८
 पग पग जल — १-६७
 पचीसौहि पवंग — १२-५
 पच्छिम दिसा प्रसिद्ध — १-१२४
 पच्छिम निसि पतिसाह — १५-३१
 पच्छौ भय धरि — १३-३५
 पठयौ दूत सु — ६-७२
 पढ़ मंतह नीम — ८-१५०
 पढ़ि गौर गंगा — १-७५
 पढ़ि पानि पंथ — ७-६१
 पढ़ै घत खच्च — १७-१४
 पतिसाह जोर किनौ — ६-५२
 पतिसाहि थंभ तुम — ६-४४
 पत्त नैनदारा सु — १०-६८
 पनहिँ न जिव — १७-३७
 पय भरत रोषत — १३-१८
 पय पंथ पौन — ८-६४
 पयदल पयोद दल — ८-२३
 पयदल प्रचंड उदंड — १८-४४

पयतल प्रबाल कि — १-१३
 पयदल बहल ज्यौ — १७-२३
 पयदल सुसज्जि पौरष — ६-१३
 पयदल सेन प्रचंड — ६-८६
 परनि रट्टवरि प्रिया — ७-८४
 परि पुकार अजमेर — ६-११६
 परि पुहवि रंक — ८-१३०
 परिग सु दंति — १४-२०
 परै जनु पत्थर — ६-१४३
 परै घाह अरि — ६-१०१
 परै मीर सै — ६-११७
 परै मुगल सय — १४-३७
 परथौ जाइ चित्रंग — १-२०४
 पलं पल प्यावत — २-१७७
 पल उपचित गच्छ — ७-१०
 पलक जात रजनी — १८-५६
 पल्ल खचित सम — २-६६
 पवंगा रुह पेखि — ३-२०
 पश्चिम पवन प्रचंड — ८-११८
 पसु पंखि प्रलय — ८-१३१
 पसु पंखी पाए — ८-११७
 पहर तीन युगिनी पुरहिँ — ६-१६२
 पहिलौने पतिसाहि — १४-३
 पहुँच्यौ सु उदयपुर — ७-३८
 पहुँच्यौ सोइ खावास — ६-४८
 पाट अचल मेव्रारपति — १-११८
 पातिसाहि दल प्रबल — १०-१०१
 पानि ग्रहन कीनौ — १-१६५
 पानि ग्रहन बूदी — ३-१
 पारावत बहु रंग — २-७६
 पालिय प्रवर कुँआरपद — ५-२
 पिल्लहिँ पिसुत ईश — ५-७३

पील सो लैं—७-५८
 पुच्छै यों महिपाल—३-५६
 पुत्री परनित सुनि—१-१६७
 पुनि फिरिऔ देस—१-७८
 पुन्य पाल राना—२-२७
 पुष्प फल करिय—१-१४६
 पुरं सु प्रवेशं—१-१७८
 पूरब गिरि पच्छिम—३-८६
 पुरुषोत्तम सु पुरान—८-५५
 पुरोहित भट्टर पाठक—२-८६
 पुलै अगग पाले—१०-४०
 पुष्कर गंग प्रयाग—५-२१
 पुहवी नन ता—७-३०
 पुहवी प्रजा प्रतिपाल—२-४२
 पेलिय प्रवर सुप्रेम—३-१०४
 प्रऊढ गूढ पद्म—३-७४
 प्रगट नाम पायौ—१-१८२
 प्रगटे जे तित्थ—१-१६१
 प्रगटै राण प्रताप—१०-७६
 प्रचलंत यवनपति ज्ञा—३-३५
 प्रचलि चिच दिगपाल—१७-६
 प्रजा सकल इहैं—८-१३७
 प्रणामेवि सकल महाराण—१०-६८
 प्रतपौ राना जगतपति—३-६५
 प्रतापसीह रावर—२-२०
 प्रथक ऊख ज्यौ—१८-२०
 प्रथम मुकामहैं हिंदुपति—१०-८६
 प्रथम सु होत—१८-२८
 प्रधान सु धौत—२-१६२
 प्रधान सु बघहि—२-१६१
 प्रनमि हिंदुपति पाइ—१०-६३
 प्रवर बिकट पुर—२-६२

प्रवर सुमग धरन—५-७३
 प्रबल पयान दिसान—१८-५१
 प्रबल पौरि प्राकार—१०-११४
 प्रभा कोटि रूपं—३-११
 प्रभु पद पूजन—८-४४
 प्रभु हम प्राक्रम—१८-५८
 प्रभु हम सकल—१०-७२
 प्रभू मोहि जो—३-१६
 प्रमुदित खवति प्रसन्न—१८-६२
 प्राकार तीन प्रचढ—१-६७
 प्रात हूवौ पचावै—१-१४६
 प्रान पौन प्रेरित—८-१०२
 प्रोहित अरु प्रति—८-१०८
 प्रोहित ए आसीस—३-६३
 प्रोहित भेटे हिंदुपति—३-५६
 प्रोहित सत्थ प्रसन्न—३-६४
 फबतै तरु फरास—४-१२
 फल फूल मूल—८-१२८
 फागुन मास सु—१३-२६
 फिरि बसीठ फुरमान—६-१२२
 फिरै पील सुनै—६-११४
 फुनि रच्यौ एक—६-४१
 फुनि लयौ दुर्ग—६-२०
 फुनि दुरंम धवलापुरहि—६-३२
 बंकागढ़ बघनौर पति—१६-१
 बंकी सु पाध—६-१५
 बंगले बने बिबेक—४-२१
 बंगाल जात के—६-६
 बंगाल देस कै—३-७२
 बंघि बंघि दिल्लीस—१०-१२
 बचि साहि फुरमान—१०-८
 बंघि साहि सब—१०-२५

बंची सो अरदास—६-१६२
 बंठिय मोहन भोग—८-८७
 बंदननि माल घर—२-१५८
 बंधव बरि आयौ—१-१३३
 बंधि आनत सित्रु—५-८१
 बधि गंठि बहु—२-१४५
 बंधै तोरन रतनमय—७-४७
 बखानिय या बिधि—२-१६३
 बग हसनि क्यौ—७-३३
 बचनहि बचन बिलगि—३-६३
 बजंत संख बीनय—५-११
 बज्जन बज्जई—७-६२
 बज्जै त्रंबक बज्जनै—१५-४
 बटनौर सिरीनौर—४-१३
 बटेर बाज बखान—४-१८
 बढ्य वैर तै—६-६१
 बढी अवाज सु—८-५
 बढ्यौ हेख हेखा—१०-३६
 बर्दत बिप्र वेदय—५-१४
 बदै चहुँ बेद—२-१०६
 बनिता बिचित्र बहु—८-७२
 बपु भुवन लगन—२-१६१
 बय किसोर तनु—१४-७
 बर एह जन्मपत्री—२-१६६
 बर कनक थाल—८-८४
 बर कनक बिसवा—२-५६
 बर करन कनकमय—७-१६
 बरतायै मंगल सकलै—७-७८
 बर तुला अप्प—२-५३
 बर पत्त जाम—२-१६६
 बर बामा मिलि—३-१०७
 बर बिबिध दोख—२-१५५

बरबीर बलय बेढिम—८-७७
 बर संतोषै षटबरन—३-१०१
 बरस सत्त बरसंत—८-१४६
 बरसै कंचन धार—३-१००
 बरी सर्व्व बाला—१-१७१
 बल बंधाइ सु—६-२००
 बल बुद्धि बिनय—८-१२२
 बस किंनह बीजापुर—६-२१
 बसत एक थल—८-३
 बसति जहौ बहु—२-६४
 बसुद्धाधिप वीर आजानबाहू—३-१
 बसुधाधर देखै बिकट—१०-१०५
 बसुपाल बेगि जोइसि—२-१५६
 बसुमति अन्न बिहीन—८-१३३
 बसुमति रक्खन बीर—२-४३
 बसुमति हिंदू नृप—६-६
 बसुमती देस बिदेस—१-१८१
 बसुमती रक्खन बीर—५-७६
 बसै तहँ कायथ—२-६२
 बसै तहँ सेठ—२-६१
 बसै बिरुदाइय भट्टनि—२-६३
 बसै गोह जाकै—३-१३
 बसै तथ बासं—१-१८१
 बसै तहँ राज—२-८८
 बहंत ते बिरुह—३-७६
 बहि बज्र प्रहार—१८-७६
 बहु करत क्रोड—२-१७०
 बहु बिधि बचन—६-१३१
 बहु भूप थट्ट—६-१८
 बहु रूप बिलास—१८-८६
 बहु सेना बिचि—७-६६
 बहु बिबेक बुद्धि—५-४२

बाजार चित्र कीनै—७-१०२
 बाजि घन घुम्भर—७-५४
 बाजीनि चरन खुरतार—६-२३
 बाजी सहस बतीस—१३-२
 बापा नृप बर—१-२०१
 बापा रावर पाट—२-१
 बामा सथ बैरिन—५-६८
 बाराह इक इक—६-५५
 बासुदेव बिधु विष्णु—८-५४
 बिंठि कोट बर—१७-३२
 बिंठि थान बघनौर—१६-५
 बिंठिय गढ़ दल—१४-५
 बिंठि रह्यौ दल—१६-८
 बिकल भयै नर—८-११५
 बिकसत हरिहर ब्रह्म—२-१५१
 बिक्रम बलवंता रणारस—११-६
 बिग्रह इह कै—१०-७३
 बिच आयुष होत—१-२१६
 बिच लरत सु—१-२२६
 बिंथुरिय सयल संसार—७-८५
 बिधि किनहीं औ—८-१११
 बिधि बरन चरि—१५-२४
 बिधु सकल कल—१-२१
 बिन हंक संक—८-२२
 बिना सत्य कैतै—६-११०
 बिनोदहिं बत्सर एक—२-१८३
 बिप्र वेद धुनि—८-६५
 बिफुर हिंदु बर—१८-६४
 बिफुर्यौ सो बहु—१-१६२
 बिबि खड बंड १३-१५
 बिबिध सघन वृक्ष—४-२
 बिभव तेज सदैव—५-७८
 बिमल बस जन—१८-७०

बियौ नाहिं ऐसौ—३-२२
 बिराजति साकति स्वर्ण—१७-१६
 बिराजहिं केउ बजार—२-१०१
 बिरुदैत बीर आबानबाहु—८-१६
 बिस्तारौ बर बेद—६-१६८
 बिहंडिय खंडिय खेणि—६-१५३
 बिहंसिय योगिनि बीर—६-१५४
 बीणा पुस्तक कर—१-६
 बीती सु निरा—२-१५६
 बीत्यौ बासर बचही—६-६६
 बीबी सौं छू—१८-१४
 बीर बैर बिडुरिय—१३-७
 बीरा मध्य कपूर—१८-५४
 बुल्लय तब बर—१८-१८
 बुल्लय बचन बसीठ—६-११३
 बेगि गयौ दिल्ली—६-८३
 बैठे निज निज—२-६६
 बैठे निज निज—३-५७
 बैठे सायुष सुत—८-६०
 बैताल फाल मंडै—३-३६
 बैरसिंघ रावल अतुली—२-१०
 बैरी ए विष—६-८५
 बैरी न तजै—६-६८
 बैरी स्वान बिडारिणै—६-७०
 बोलंत चलत बंदी—६-७
 बोलंत फिल्लि इक—१-१५६
 बोलत बहु कविवर—८-५१
 बोलत बहु बिरुदावली—१५-६
 बोले सु राण—२-१७२
 बोलैं नरिंद सुनु—३-४६
 व्याह बेर वपु—७-६७
 मई भूमि भय—१५-६
 भगग मोरी सेन—१-२२७

भगति जोर तिनकौ—१६-२
 भगवत सिंघ कुँवर—१०-५८
 भगिनी तस घर—७-३
 भगौ साहिजादा गयौ—१८-६७
 भगौ ते दरोगे—१४-२७
 भट किसोर उड़ि—१४-३४
 भट्टू रावर जास—२-६
 भणै विरुद भट्टा—१-१७७
 भनहिँ ईस सुनि—१-१२६
 भनै विरुद भट्टयं—५-१५
 भमकंत इम्म भसुंड—१२-१६
 भमकत इम्म भसुंड—१३-१६
 भमकि भसुंड बिहंड—१४-३६
 भमकै करि सुंड—१८-८७
 भमकत खौन कटै—६-१०८
 भय भन्निय असपति—२-१७
 भयभीत परि दुरभक्त—८-११६
 भय रुकिनि टूक—१६-२०
 भर चौकिय देत—६-३२
 भरी खच्चरं सहस—१०-४८
 भरुच्छिय भैरव—२-११३
 भरै दंड तुम—५-३७
 भरै यान जंत्री—१०-४५
 भरै रथ सत्थि—१७-२२
 भरै सु योन—३-७७
 भल चरन जान—८-८०
 भल भल भोजन—८-६३
 भलहलत सिलह समान—१२-४१
 भलौ काम भोगी—१-१८३
 भिननंत मक्खी भूरि—८-१२७
 भीम कुवर दल—१५-७
 भीम भय गढ—५-८४
 भीमराण राजेस कौ—१५-३२
 भीमसिंह कुँआर मह—५-७७

भीर मची पुरं—७-५३
 भुंजतै कै भयभीत—१२-१०
 भुजदंड लंब—१-१८
 भुजा प्रलब रूप—३-७५
 भुवि दीप सायर—२-५६
 भूमि चूड रावर—२-१८
 भूमि भोग पति—२-२८
 भूलि न राखहु—६-१२४
 भूषन जराउ बहु—१५-१७
 भूषन सु हेम—७-६४
 भैल बर भर—१७-३५
 भैल भरुच्छि मलमल—१५-१६
 मंगलीक दरबार सुख—२-८१
 मगि आदेस आयो—१-१४८
 मगि हुकम महाराण—१७-४
 मगि हुकम महाराण—१८-२६
 मडव भय मंनियौ—१७-३०
 मडियौ मुख तिणै—१-१५५
 मंडै ऋतु पावस—२-१३०
 मंडै न औरि—७-८७
 मंडै भूलि न—१०-१०३
 मंडोवर मैदानयं—१-११०
 मड्यौ भर मुखाल—११-१४
 मड्यौ मह यज्ञ—८-१५४
 मची मार मारं—६-१०२
 मच्छौदरि तिवलिय मज्जै—७-
 मच्यौ भय मालव—१७-२६
 मच्यौ सेन सोर—१०-५१
 मजंनस लाखिय रग—१७-१७
 मत्त भीर मजेन—५-८६
 मधु मेवनाद बज्जै—८-६८
 मन निठुर करि—८-१२६
 मन भगौ नन—६-६२
 मन सोचति ही—७-२६

मन हरषंत सु—३-५२
 मनिघर ज्यौं थिर—१८-६३
 मनु कनक संपुट—१-२५
 मनु कामलता इह—७-१२
 मनु मद पीनौ—१०-११०
 मनोहर कुंभाहि मुत्तिनमाल—१७-१२
 मनौ उदधि सुरसरित—१०-८६
 मनौ पाथ पाथोधि—६-११५
 मन्त्री सब कमधज्ज—६-१२६
 मयगल मोतिन की—७-१३
 मलमल साहि चौतार—२-११४
 महल तहाँ महंत—४-१६
 महादान अप्पै तुही—५-३३
 महाराण दान जनु—७-६८
 महाराण परवान—१५-३६
 महाराय भगवंत—१८-३०
 महाराय मनोहरसिंघ—१०-५७
 महि चित्रकोट सु—१-१०५
 महितल सकल मान—५-६५
 महिमांनिनि जानि दसार—७-४०
 महियल जितै मंडान—८-१७२
 महियल सुरंग उपजै—१-४५
 मही तैं जिनै—३-२१
 मही ररै रंड—१४-२४
 मान रटौर कै—७-६५
 माँगत कहि माँ—८-१२५
 मात पिता बधुनि—१-१३४
 मात पिता बच—१-१३५
 मात पिता हूँ—८-११६
 मानसिंह नुर सोचि—७-२४
 मानि बहादर मंत—१०-११२
 मारि मचाई दुहूँ—११-५
 मारुवारि महिमंडले—७-१
 मारै पर्वत मध्य—१३-३३

मारै हम बहु—६-१८२
 मालउ मरु मेवात—१-७०
 मालपुरहिं मार यौ—६-३६
 मालपुरहिं मार यौ—६-१७५
 मासोत्तम माह रच्यौ—८-१५५
 मिडि देस मेवार—१०-१३
 मिलि कंकनि कक—१८-७८
 मिलिय बापा वीर—१-२०६
 मिवास थान मुक्ति—३-८३
 मीर मलिक मस्संद—६-१६६
 मुँह मिट्यौ रुट्यौ—६-३५
 मुँह सुड दड—१८-३४
 मुख मुख जक्रिय—६-१५२
 मुख चवत चूक—१२-८
 मुख बैन और—६-४३
 मुख भीमकुंड सु—१-१०३
 मुद्रिय अंगुरी मन—७-१७
 मुरली प्रवाल कर—८-७८
 मुरै सार सार—६-१०५
 मुलतान खान मरहट्ट—६-२४
 मृगमद केसरि और—२-११६
 मृगमद कपूर केसर—१५-२२
 मृजाद मेर महाराज—५-५४
 मृदु फास कनक—७-६५
 मेदपाट जनपद सु—२-१४८
 मेदपाटपति महल—१०-११८
 मेदपाट पत्तौ सु—१०-५२
 मेदपाट फुनि मुरधरा—८-१
 मेदपाट महि मंडलह—१-६१
 मेदपाट महि मंडलै—१-१२६
 मेदपाट मालवौ—१-२२
 मेवा खादिम बहु—३-५४
 मेवार घर सम—१-१०७
 मोकल राण उदार—२-३२

मौक्तिक स्वस्तिक हरि—८-८६
 मौठ मसूर भाषा—१-६८
 म्लेच्छ मुंछ मुडियहिं—१७-८
 यही हिंदुनाथं यही—३-१७
 याभिनी तमस अति—१-५३
 युग भाला जसवंत—१०-८५
 युग युग नेह—७-७५
 युगल पुत्त जसराज—६-६६
 ये सब अद्रि—१०-७४
 यौ कहि सहे—३-२६
 यौ हिंदुनाह निय—७-१०६
 योगिनी सुर जपत—१-२२८
 यौ कहि करि—६-८६
 यौ कहि सब—१०-६६
 यौ तीजो फुरमान—१०-२१
 रंग चढै तिन—१८-४२
 रंग बढे सब—६-२०१
 रक्खन जोगे रक्खि—१८-१००
 रक्खै हम रटौर—१०-६
 रग मंडप बहु—७-७१
 रक्यौ बर आसन—२-१८८
 रक्यौ राणा सीह—४-२२
 रक्यौन सजल जलयान—६-२४
 रजवट रूप सबलेस—१०-५६
 रजै रूप तूही—५-२७
 रदनिय इहिं परि ३—६८
 रतन सेन रावर—२-१५
 रथ भरित कै—१८-४३
 रन अचल सु—१०-६२
 रबिबंस बिभूषन जय—८-१६८
 रमा रूप कै—७-४
 रयण कनक अरु—६-१३५
 ररबरी घन कंडा—११-१३
 ररबरी खरबरी रुमिय—६-१४६

रलंतलि लोग परी—६-१५०
 रलतलिय प्रजा बहु—१५-१४
 रवि बंसी महाराण—६-१८४
 रस कूपिका रसाल—५-२२
 रस राजनीति राजेस—१०-५३
 रसना रटत महमद—६-२६
 रसना सुरगी श्रवति—१-२२
 रहय कवन उद्योत—१-१६८
 रहि दीठ हबसी—१ ७४
 रह्यौ ओटि पय—१५-३५
 रह्यौ साहि औरंग—१४-४
 राखी पीठि मुरारि—१८-६८
 राग रमनी रसं—७-५७
 राजथान महारान कौ—२-६१
 राजथान निय रचौ—१० २०
 राजमहल संपत्त रसु—१-२३५
 राज राँण जगतेस—७-८३
 राज राज सुभ—२-१७३
 राज राण मति—६-१६४
 राज राण सु—५-६२
 राजलोक सुरलोक सम—२-६७
 राजसमा सिंहासनहिं—२-६८
 राजसिंघ महाराण—१५-३६
 राजसिंह महाराण—४-१
 राजसिंह महाराण—५-४०
 राजसिंह महाराण—५-५८
 राजसिंह महाराण—७-६८
 राजसिंह महारान—७-७६
 राजसिंह महारान प्रिया—७-८०
 राजसी रान जू—७-६६
 राजा उत घन—१७-२
 राजा बिन को—६-७१
 राजेस राण नंदन—१५-२८
 राण चढै राजेस—१०-८१

राणा राजेश्वर वीर—७-४६
 राणा हमीर सुरीति—६-१८५
 राणा जाच्या रायमल—२-३४
 राति बोली हुई—१-१५३
 रान अजयसी वीर—२-२६
 राना राहप रंग—२-२४
 रानि जनादे रूप—२-१४६
 रामचंद राजेंद्र बंधु—६-१८६
 रावत चढि रतनसेन—१३-२५
 रावर गात्र गिरुआ—२-८
 रावर चौड हिंदु—२-१४
 रावर पद गहि—१-२४०
 रावर पुंजा रिण—२-१६
 रावत रढाल रिन—१०-६३
 रावर श्री कुवेर—२-२
 रावर श्री नर—२-५
 रावर सु बोलि—१०-५६
 राहप रान अजेय—२-२५
 रिनयंभ मंडव रेवत—१-१०८
 रिपु जन कै—६-१३७
 रिपु जन मन—६-१३६
 रिपु रुंड मुंड—१२-१३
 रीभूत देत रीभू—५-७०
 रीभी देत रसाल—१-१०
 रुडमाला गंठ रुह—१४-२५
 रुड मुंड ररवरत—१४-३५
 रुंड मुंड रुंडत—१-२२२
 रुकमागद रावत कौ—१२-२
 रुचि सहज पाइ—७-२१
 रुपि जन्म गेह—२-१५७
 रुरि रुंड रु—१८ ६१
 रूपनगर महाराण की—७-४६
 रूपनैर रली—७-६१
 रूपवती दुति जानि—३-२८

रोमी मुँड रत्ता—११-७
 रोरै जोरै भारे—१४-२३
 रोस राण परवान—१०-१८
 लखि सीस फूल—७-८
 लगि जेट लुत्थि—१३-२२
 लगि लुत्थिन लुत्थि—१८-८८
 लटकंत किहि सिर—१३-१७
 लरै द्रोन के—६-१०६
 लरौ तौ आवहु—१०-१०८
 लसै कोटवालि सु—२-१३३
 लसै मनु लोह—६-१४१
 लहलहत मकत युत—८-११
 लहि औसरि सुंदरि—७-३१
 लहियै जु नाम—१-६१
 लहै सु निज—१८-६६
 लिखि लेख समै—७-३७
 लिखितं सु बुंदिगढ़—३-४२
 लिखै एह पखान—१५-३७
 लिखिरित पट लटकंत—८-१२६
 लीये सु चौडहर—१०-६४
 लुटै केउ लुटक—१७-२८
 लुटि खबान अमान—१८-८६
 लोह सु महुवरत—८-१३६
 लेख सु तबही—३-३०
 लेहु निमिष विश्राम—६-६८
 लोबान अगर चंदन—८-८३
 लोयन करिय सु—३-८८
 ल्यावहु सु वेगि—३-५१
 वादित्रिक मौष्टिक विविध—२-७४
 विचरंति भालावारि—१-७६
 श्री उदयपुर संगार—२-५५
 श्रीजगतसिंह सुरान—२-३६
 श्री जयसिंह कुँअर—१८-१
 श्रीराजसिंह रान—५-२

श्री राजसिंह रान—५-४१
 श्री राजेसर राणा—६-१
 श्रीराम जोग—३-४७
 श्री साप सालु—१५-२०
 श्रीपति गृह सिंगार—८-४७
 श्रीपति सेठ सुसार्थपति—२-७३
 श्रीपुर तुम संहस्यौ—१०-१६
 संकै चित्त सुलतान—६-५६
 संख्या को कहैं—८-१५२
 संगर सरस दल—४-१४
 सगहि लिय सीसौदियै—१-११७
 संग्राम धौलपुर फुनि—६-१३
 संग्रामहि असमत्य—६-१८१
 संचलै दल मुख—१८-३३
 संजनित चित्र सुरराय—३-३६
 संभ समै लहि—१६-११
 संतोषे नेगी सकल ७-७६
 सदेसा यौ खवन—१०-१०६
 संपत्तै सजि सेन—३-८४
 संबत प्रसिद्ध दह—६-२
 संवत सतरासै सु—८-११३
 संबत सु सच—१-५८
 संबत सोरह सरस—२-१५०
 संबत्सर छत्तीस—६-१७०
 संबत्सर दह सत्त—८-१४०
 संमुह दल जैसिघ—१०-१००
 संहरिहौं दिल्लीस सुत—१८-११
 सकल बहौं पूजै—१-६५
 सकल देव सेवंत—१-१२५
 सकल रज धुरा—५-८५
 सकल रट्टार सत्थ—६-७३
 सकल सखी समुदाय—७-७२
 सकल सबर कमठान—२-७५
 सकल सूर सामंत—८-८६

सकल सूर सामंत—१८-७६
 सकल सेन सामंत—८-५०
 सग सिंधु सरस—२-४६
 सगपन कीनौ सबर—३-५
 सगताउत रावच—१८-२३
 सगति जे कीजियै—१-१३६
 सगपन सयान सु—८-१२३
 सची सी सहेली—१-१७४
 सजि पुलिंद सब—१०-६०
 सजि भीमसेन सेना—१५-१२
 सजि सेन सु—७-३५
 सजै टोप संनाह—१०-४४
 सजै सकल सामंत—८-६६
 सजन आइ मिलै—७-७७
 सजन सौं सनमान—१८-१०५
 सज्यौ सु दुर्गा—१४-१
 सट्टै खुट्टै तुट्टै—१४-१७
 सतपत्र दमन मुगगर—८-८२
 सतरा सै सैंतीस—१८-२
 सत्तंग चग घर ८८
 सत्त अहोनिषि एक—८-६६
 सत्त दिन बोलियाँ—१-१५८
 सत्त बरस संबंध—८-१४६
 सत्तम दिन निसि—१-२३७
 सत्तरि खॉन सुसत्थ—६-६१
 सत्थ चढ़ै अरि—१०-८२
 सत्थ सेन चतुरंग—३-६६
 सत्य बचन श्रवनीस—३-२५
 सथ तुरग सत्तरि—६-६४
 सदा त रिधू—५-३४
 सदा सात कौभं—३-१५
 सनमानिय सु भिसेस—१२-१३
 सब एक होइ—६-५७
 सब देस में—१-८७

सब हलकि चली—१-४६
 सब हिंदवान कुल—१-६०
 सब ही सनमाने—६-२०४
 सबल एह सामंत—१८-३१
 सबल दरोगा सत्थ—१४-६
 सबलसिंह ज्यौं सिंह—१८-२१
 सबै लीन सथै—१-१७५
 समप्पितं सुगामयं—५-१७
 समरसिंह रावर बस—२-१२
 समर हय गय—१-२२०
 समुख सजिय सूर—१-२१७
 सरं सद्बेधी बर—३-१०
 सर सोक बजत—१८-८१
 सरल सहनाइयं गायनं—७-५६
 सरस सुर संगीत—५-८२
 सराहैं रु बाहैं—६-११३
 ससलक्कि सेस सेन—३-८१
 सलसलत सेस कलमलत—३-३७
 सलसलिय फनबर सघर—१३-११
 सलित पाट सुबिलास—८-१४३
 सविता ज्यौं ससी—८-१६६
 ससकि सेस कुरमि—८-१०३
 ससकहैं थकहैं औरंगसाहि—६-१६७
 ससि रवि सुर—५-७५
 सख छतीस धार—५-७१
 सख-यान भरि—१-२०७
 सहज सिंगारत सुंदरी—१-१६६
 सहनाइयं सुहावई—५-१२
 सहस एक गजधर—८-१४१
 • सहस तीन सुंडाल—६-८७
 सहस बहुचरि दल—२-३६
 सहस सुमट हय—१८-७५
 सहाय साधु स्याम—५-४६
 साँइ काम सेवक—१८-६१

साँइ पचारत सेवकनि—१८-६६
 साँइ भरोसो सक्खियै—१८-६६
 साँइ इह सेना—१८-६०
 साँइ रक्खै सीस—१८-६२
 साँइ सकल सयान—१८-७३
 साँइ सिरजै हुकम—१८-६४
 साँइ मुख तै—१८-७२
 सांप्रत देहु सरस्वती—१-६
 साँवल दास सकाज—१०-८४
 साकति सुवर्ण साजै—६-१२
 साकति सुवर्ण वर—७-६२
 साबूनीय रेवरि माठिय—२-१२३
 सामंतनि सनमानि कै—१८-३
 सारग करत गायन—१-५७
 सारंगि पुंगी सुनियै—८-७०
 सार सार संबटे—१४-३३
 सारनी बहत सार—४-४
 साहि सुतन कै—१८-१०
 साहि सु वचन—१३-३४
 साहि हुकम सु—१०-११३
 सिंगार सार साकति—८-१७
 सिंगारि नगर किजौं—७-१००
 सिंगारिय सिंधुर अस्व—२-१७५
 सिंगारे सुंडाला—१-१७३
 सिंधुर अस्व सिंगारि—८-३६
 सिंधुर कपोल पट—८-७
 सिंधुर तुरग श्री—५-६७
 सिंधू गौरी बजत—१८-५५
 सिंहासन हरि सनमुखहिं—८-६२
 सिखरी बिचि गोमति—८-१३६
 सिद्धि अपि रावर—१-२३८
 सिर चढ़ाइ पुनि—१८-२७
 सिरपाव मुत्ति माला—६-४६
 सिरपाव साहि पखौ—६-४७

सिरि भाल सधि—१-२८
 सिरि छत्र सहस—८-२६
 सिव संक सकवक—१८-४७
 सिवे संग है—६-१०६
 सीस बर सेहरं—७-५१
 सीसै सुछत्र छाजत—६-१६
 सीसोदा चहुँआन—६-१८८
 सीह कौड़ चित्रक—२-७८
 सुंदर तिय केउ—२-१४६
 सु अमृति मोदक—२-१२२
 सुकराय चवु कि—१-२३
 सुकुमार सुरभित वसित—८-७३
 सु केलि चढै—२-१८४
 सुकोमल सुरंगयं—५-५
 सुख सकल अत्र—३-४३
 सुखही सुख सौं—८-१०४
 सुखारिक दाख—२-११७
 सुगायन पराय त्रियानि—२-६८
 सुचि सुरभि सकोमल—७-७
 सु जलेबी हेसमी—८-६५
 सुजी भरभूँज कँसार—२-१३५
 सुडारे साहि के—१४-१०
 सुथाने संपत्तै—१-१६०
 सुनत राज बिप्र—३-६७
 सुनत एह सारी—६-१७७
 सु नफेरि संख—८-६६
 सुनहु सकल सामंत—१०-६६
 सुनि इह श्री—६-१६५
 सुनि इह सौवलदास—१६-६
 सुनि ऐसी मह—८-११२
 सुनि ऐसी शऔर—६-१३८
 सुनि बत्त सु—७-२५
 सुनि बापा नृप—१-१६४
 सुनि बिप्र बचन—१-१६८

सुनि ससभयौ कमधज—३-६४
 सुनि सु कूह—१५-३५
 सुनि सु दरोगनि—१४-११
 सुनि सु बघाई—७-४५
 सुनि सुबोल सुलतान—६-१३४
 सुनि हरखै जगपति—३-६०
 सुनिय बत्त संग्राम—१-१३७
 सुनियो कमधजह सकल—६-७६
 सुनियै सबद सारु—४-१६
 सुनी साहि औरंग—१४-३०
 सुने दूत सहं—१-१६३
 सुनौ सौह मंत्री—३-७
 सुप्रसन्न सरसुति मात—१-११
 सुप्रसन्न इती अनुगहि—६-४५
 सुबच सुभग सुंदरिय—१५-११
 सु बचन प्रोहित—१०-७६
 सु बघाए बृजराज—८-४३
 सुबास दान गच्छु—३-६६
 सुभ दरस जास—७-८८
 सुभ संवत दस—१-३८
 सुभर रथ बहु—६-६०
 सुभाउत तीउन भूरि—२-१८६
 सुभै दल अगहि—१७-१०
 सुमति राव छत्रसाल—३-५५
 सुमस्तकि लीलि मजीठ—२-११८
 सु मुक्तिमाल बिटि—३-६८
 सु रच्यौ राजसमुह—८-१७१
 सुरहि सजन जन—५-८३
 सुरेंद चंद सूर—५ ५५
 सुलतान मान मन्त्री—६-२६
 सु वर दयौ—१-३६
 सु विसाल भाल—१-२७
 सुश्रुषिक पार्श्वग—२-७२
 सु संकर संकुरि—१७-२४

सु संग्राम सीहं—१-१७६
 सुसनद्ध बद्ध सनाह—१८-३५
 सूर चंद सुर—७-७३
 सूर भूभक्त सार—१-२१४
 सूर वीर दातार—२-२२
 सूरवीर देखै—१-१६३
 सूर पकहि सहस—१२-३
 सुखला लोह लंगर—७-८६
 सौमुख न मिलै—६-३३
 सौमुख न मिलौ—६-३६
 सेख सकल संहारौ—६-१६६
 सेभवाल सुखपाल रथ—८-१००
 सेढी बुरज सवार—८-१४८
 सेव करत नृप—६-१३२
 सेव दो जौस—१-१४७
 सेवत सुर नर—१-१
 सो नृप औरंगसाहि—७-२
 सो दुख सल्लै—६-३४
 सो प्रबंध रचियै—१-१२०
 सो विताव आवत—६-६५
 सो सुमत सु—१८-५
 सोखि सलिता सरं—७-५६
 सोनिंग देव सामंत—१०-६५
 सोमंत चौर सेंदुर—६-५
 सोर भटक अरु—१०-८८
 सोर सग गट्टयं—७-६०
 सोरट्ट सिंघल साज—१-७६
 सोलंकी विक्रम सुभट—११-१
 सोलंकी सूर बचकि—११-१०
 सोलखिनी सुलच्छिनी—१-१३१
 सोवन सरिस कति—५-७४
 सौ कुंजर साहि—१४-८
 खावन किपिन हूँ—८-११४
 स्वर्गाहिं सेढिय जाल—१०-५

स्वर्ण कुंभ भरि—८-८८
 स्वर्ण रंग सररी—५-६०
 स्वस्ति श्री सुभ—६-१८०
 स्वस्ती श्रीउदयापुर—३-३१
 हंस सैद हहरंत—१५-३३
 हस हय सुदरं—७-५०
 हंसिलै हरइ हरी—१८-३६
 हद न्याय हिंदवान—१-६६
 हम जोषपुरा हिंदु—६-७७
 हम समान सेवक—१८-५६
 हम सौ लरि—१०-३
 हमहिं दयौ इकलिंग—१८-१२
 हम हूँ नृप—१-१६७
 हयं दो हजार—१-१८७
 हयं सुवस जाति—३-७१
 हयं हस वंसा—१०-३३
 हय गय रथ—१५-५
 हय चंचल सौवलदास—१६-१२
 हय दस किन—१-१६६
 हय दीनै दत्त—८-१५८
 हय हथिय पयदल—१०-५४
 हय हय सु—१२-६
 हय हींस करत—६-१०
 हय हेख हेख—८-३३
 हयसाला बहु बरन—२-७६
 हर अट्टहास प्रहास—१३-२१
 हरबल अखिलहुसैन—१३-३
 हरषै हिंदूपति सु—१४-४०
 हरियाल हरित हीर—८-१५
 हलककै सु हेरै—३-१२
 हलहलिय असुर घर—६-२५
 हसंते लसंते घसंते—१०-४२
 हदककं तहककं कितै—६-१०७
 हाड़ा नृप अति—३-२

हिंगरू अगार चंदन—१५-२३
हिंदूपति फुरमान यौ—१०-१५
हिंदूपति भेटे हरखि—६-१६१
हिंदूपति श्रीमुख हुकम—१०-११६
हिंदोलत माइ सुवर्ण—२-१८०
हिसारगढ़ हरणौरयं—१-१११

हिय हरंति हरंम—१८-६५
हुकम दयौ तिन—१०-६४
हुड़कि जत्र हृदयं—५-१३
हेम तोल चंचल—१४-४१
हो कमधज कुँआर—३-६४

२—अभिधान

[संख्याएँ अध्यायों एवम् छंदों की हैं]

अंखतै=कहने से, गान करने से, अव-
लोकन से । १-१२०

अंखि = देखकर । १-२३७

अंगज = बेटा । ६-६८

अंबरै=वस्त्र से । १-१४६

अकतूला=वेअंदाज, अपरिमित ।
११-६

अखए=अक्षत । ५-१६

अखए = कहता है । ५-१६

अखियात=ख्याति । २-३२, ८-१६६

अगारौ=आगरा नामक शहर । ६-२७

अगारौ=आगर । १४-६

अगाला = कपाट को बाहर से बंद
करने का डंडा । १-६४

अचिजं = आश्चर्य । १-१८५

अच्छूसी = अप्सरा । ७-६

अजुवालियं=उज्ज्वल किया । १-१३६

अजेजं = (अजेज) जिसे कोई जीत न
सके । ३-८

अट्टार (अट्टाल)=बुर्ज । १-४३

अड्डौ=विरुद्ध, उल्टा । ६-६८

अतिक्रम्यौ=चला गया । १-१५७

अथ्यै=अर्थ, धन । १-१७५

अदिट्ट=अदृश्य । १-१६४

अधिकार = प्रकरण । ३-१

अधिकार=बढ़कर । ३-१०८

अनगल = अथाह, अपरिमित ।
८-१५८

अनड़=जोरावर । १-२०६

अनड़=पहाड़ । २-३०

अबीहं = निर्भय । १-१७६

अभग—अडिग, निर्भय । ५-७६

अमान=अतुल, असीम । १२-१४

अरस्सि=अरिसिंह । ५-५६

अवगाढ़=मजबूत । ६-२८

असपति = बादशाह । ६-२

असहेज=असह्य । १०-१०२

असुर=मुसलमान । १८-३

आआज=गर्जना । १४-३४

आघाट=अहाड़ा (मेवाड़ के राजाओं
की पदवी) । २-६

आल=वेरा । ३-६६

आवरिग=घिर गई, छिप गई । १-३६

आसंगनि=सामर्थ्य, शक्ति । १-१०१

आसुर=मुसलमान । २-१३२

आहनिय=हराकर, मारकर, जीतकर ।
२-३६

आहनौं = जीतूँ, मारूँ । १०-१७

आहुटै=लड़े, मिड़ गए । ६-१२१

आहुट्ट=अहाड़ा (मेवाड़ के राजाओं
की उपाधि) । ३-२७

आहुत = आहुति । ८-४६

इकमिक्कि=समिलित, आपस में मिल
जाना । ३-८६

इट्ट = इष्ट । ६-१२३

ईहक=कवि, चारख । १-१४३

उगग्रै=उबरता है, निस्तार पाता है ।

५-४०

उभखर=ऊबाड़, वीरान । १३-११

उभट=भूभोड़ता है, गिरा देता है ।

८-६

उतन = (वतन) देश । ६-१८३

उतमाग=मस्तक । ७-१०४

उदंगल=खलबली । ८-३७

उदंत=वृक्षांत, बात । ३-४६

उन्नग = नंगी । १३-१३

उपन्नौ = उत्पन्न हुआ । १-१८५

उपाड़ = उखाड़नेवाला । ६-२१

उररि = क्रोध करके, जोश से । ११-८

उव्हरिग=उमड़ आया । १-३६

उसासयं = उड्ढास । १-२२

ऊँडह = गहरा । ८-१५०

ऊगम=उदय होने पर । ७-१०७

ऊमौ = खड़ा रहा । १-१५४

एम=यौं, इस तरह । १-१३६

औदकै=चौक पड़ता है । १८-१०३

कंक=युद्ध । ५-७१

ककह = युद्ध । ५-८७

ककालि=योद्धा । ६-१०१

कठल = वर्तुलाकार घटा अथवा घेरा ।

१-३६

कंधाला=मजबूत कंधोंवाला,

वीर । ५-५८

कड्ढौं = निकालूँ । ६-८५

कण = नाज का दाना । १-८५

कत्ति = कटार । १०-४४

कध्वन = काटनेवाली । १-३३

कप्पर = कपड़ा । ६-१५१

कूपर = खोपड़ी । १५-१६

कबिले=सुसज्जमान । ६-१०१

कमठान = निर्माणकार्य, तामीर ।

२-६४

कमधज = राठौड़ । ३-८५

करनारि = वाद्यविशेष । १४-३८

करमेत=उत्कृष्ट कर्म करनेवाला,

भाग्यवान । ३-१०६

करल = कराल, भयंकर । १५-३१

करसणि=कृषक, किसान । १-३६

करहा=ऊँट । १-१६८

कल=कला । १-२१

कलाप (सं० कल्प) = उपाय, युक्ति ।

६-६२

कहर = बहुत । १-२२३

कहर = विघ्न, आपत्ति । १८-६६

कावरि=रक्षीविशेष । ४-१७

कार = मर्यादा । ४-८

किगार=आवाज, कलरव, कूक । १-४२

किद्ध=किया । १-७३

किरनाल = सूर्य । ७-१०१

किरान = किराना । १५-१६

कुखिस=(कुब्धि) पेट । १-१७

कुननति = विलखती हुई । ७-२७

कुलवट = कुल की मर्यादा । २-६

कुलोद्धार = कुल का उद्धारक, वंशज ।

५-५८

केक=कई । १-१६२

केवि = शत्रु । ३-१०

केवि=कई । ३-७१

कैलपुरा=मेवाड़ के राजाओं की

उपाधि । ३-८५

कोड़ = प्रसन्नता, चाव, उमंग । २-

१८२

कोसीसावलि=कँगूरों की पंक्ति । १-६३

क्रमि = क्रम-क्रम से, धीरे-धीरे ।
१-१५०

क्रमै* = चलकर । १-१५०

खगिय = काटकर । २-१६

खंड = खोंड़ । ८-४५

खती = इच्छा, हर्ष, उमंग । १-१८७

खटदर्शन = षट्दर्श (ब्राह्मण, यति, योगी, संन्यासी, जगम और चारण) । १-२५

खलखंच = संकोच, हिचकिचाहट ।
२-१३३, ६-३७

खलहलत = खलखल शब्द करते हैं ।
१-४३

खवराहये = खिलाऊँ । १-१४८

खहं = आकाश । १०-४३

खाल = नाला, छोटी नदी । १-४३

खिति = (क्षिति) पृथ्वी । ६-२६

खिवै = चमकती है । ३-८१

खेतल = क्षेत्रसिंह । २-३१

खेम = क्षेम, कुशल । ६-११७

खौंग = घोड़ा । ५-४८

खैरारह = खैराड़ प्रदेश । १-१२१

खोर = खपरैल ईंट आदि के टुकड़ों की
गिड़ी । ८-१४८

गजघर = मिस्त्री । ८-१४१

गट्ट = मजबूत, भारी । २-३

गरथल = गलस्तन, निरर्थक वस्तु ।

१-८६

गल्ह = कहानी, अफवाह । १४-३

गल्हार = हॉक, हुँकार । ६-१७

गस = कपट । ५-८०

गस = गुस्सा । १३-६

गिरुअ = भारी । १०-७६

गुंडगरीनि = गन्ने की एक किस्म
विशेष । २-१२८

गुरु = भारी । १८-३७

गुहिर = गंभीर । १-४१

गूडर = खेमा, डेरा । ७-४८

गैन = आकाश । ६-१७

गैलह = मार्ग । १०-११३

गौण = (गोणी) बोरा । १-८५

गोम = आकाश । १२-१२

गोमाय = शृगाल । ६-१११

गोयर = (सं० गोपुर) द्वार । ७-५७

गोरिय = गोली । १३-१३

गोरी = गोली । १०-४३

ग्रंथ = द्रव्य । ७-६१

घंचल = युद्ध, बखेड़ा । ६-१८

घड़ = सेना । १०-२२१

घण = बादल । १-३६

घण = घना, बहुत । १-३६

घणु = बहुत । १-१४०

घमस = नाद, आवाज । ७-४२

घमसाण = गहरा, मीषण, घना ।
१-३६

घल्लन = (घाव) करनेवाला । ५-७७

घल्लि = डालकर, पहनाकर । १-१६४

घुंमर = गर्व, गर्वीला । ७-५४

घुंमर = चकर । १०-११८

घुरंत = बजते हैं । ३-७८

घुराया = बजाया, फैलाया । २-३६

चचल = घोड़ा । ३-७३

चऊँ = कहता हूँ । १-३३

चच्चर = मस्तक । १०-११६

चरखी = हाथी को वश में रखने का
एक शस्त्र । ६-४

चवत = कहता है । १२-८

चहवचा=फौवारा, होज । ४-२०
 चुग=चुगा, दाना । ८-१३१
 चुरस=आनंद, उमंग । ७-४८
 चूप=आनंद, उल्लास । १-२२६
 चेजा=हमला । १८-६३
 चेजागर=चुनाई करनेवाला मजदूर ।
 ८-१४४

चैल = वस्त्र । ६-११३
 चोजा = आनंद, उत्सुकता । ६-१०६
 चोलं=लाल रंग का । ७-१६
 चौंढहर=चूँडावत, चूँडा का वंशज ।
 १०-६४
 चौरस = बराबर, समतल, हमवार ।
 ८-१४५
 चौसट्टि = चौसठ योगिनियों । ३-३६
 छप्पन = मेवाड का छप्पन नामक
 प्रदेश । ६-६२

छिछि=फुहार, धारा । १६-२३
 छौल=लहर, धारा, फुहार । १-४६
 जगाति=चुंगी । २-१३४
 जगातिय=चुगी लेनेवाले । २-१३४
 जड्डौ=बड़ा, मोटा, मजबूत । ६-६८
 जसोभ्रम=यशप्रतिष्ठा । २-७
 जाइ=(सं० जाति) चमेली । १-३०
 जाड़ा=जड़ । ६-२१
 जिट्ट=ज्येष्ठ का महीना । ६-२
 जिट्ट=जेठा । २-५३
 जीपत=जीतते हैं । १-१२४
 जुजुई=जुदा जुदा । ४-३
 जेट=ढेर । ६-१५५
 जेण=जिसने । १-१३६
 जोरिय=जोर से । १४-३४
 झंख=व्याकुल, स्तान । ३-३३
 झंखरिय=धूमिल । १६-१०

झल=ज्वाला । ६-८६
 झल्लरी=झालर, वाद्य विशेष । ५-१२
 झल्लि = धारणकर, पकड़कर । ५-५१
 झाक=शस्त्राघात । १-२१७
 झाक झमाल=चटकीली, गहरी गुंथी
 हुई, खूब जड़ी हुई ।
 २-१२७

झाट=शस्त्र-प्रहार । १-२१३
 झाल=ज्वाला । १२-१८
 झिलती=झलमलाती है, चमकती है ।
 ७-६२
 झिलि=मुशोभित । ६-८७
 झूरह=चूरा । १-२१७
 झूरि (रा० झूड़) तलवार, लाठी
 आदि से मारना या पीटना । ५-७७
 टोडर = पॉव में पहिने का कड़ा या
 लगर । १-२४०

ठव्यौ=रखा । १-१४३
 ठाण = (स्थान) हाथी, घोड़ा आदि
 पशुओं को बॉधने की
 जगह । १-७०
 ठिप्पर=ठोकर । ६-१५१
 डंग=दोहनी । १०-७८
 डंबर=आडंबर । १-४६
 डहक = अतिशय । १-४६
 डिम=लड़ाई । ५-५६
 डिम=छोटा बच्चा । ५-५६
 डुंभ=आंधी । १४-३४
 ढकचाल=युद्ध, उपद्रव । ६-१५१
 दुक्कि=पहुँचकर । १-५५
 तंडै = गर्जना करता है । ६-११४
 तणै = के । १-१४३
 तत्थ = उस । १-१८१
 तप्प=ताप । ७-२४

तर=(सं० तर) वृत्त । ५-८६
तवत = कहते हैं, स्मरण करते हैं,
ज्ञान करते हैं । ८-२

तसु=उसका । १-६१
तहति=तथेति, ठीक है ऐसा । १-१५२
ताम=उसकी । २-१५१
ताया=तथाया हुआ । २-३१
तास=उसके, उसको, उसका । १-३२
तिके=वे, उनको । १-१३६
तिण=उसने । १-१४७
तुंग = ऊँचा । १-६३
तुबर=देवताओं के गायक विशेष ।
२-२६

तेक=तलवार । १२-६
तौन (सं० तूण) तरकस । १-२०६
त्रंवागल=नगाड़ा । १६-१८
थई=हुई, होकर । १-१५४
थट्ट=समूह । २-१०१
थह=स्थान । १०-१०५
थाटह=समूह । १-६४
थाट=ठाट, आडंबर । ५-२
थानक=थाना, स्थान । १०-११६
थापणौ=प्रतिष्ठित करना, स्थापित
करना, देना । १-१५४
थी=से । १-१५६
दड़कि = फटकर, कटकर । १-२२४
दड़वड़=दौड़ । १-२२२
दत्त=दान । २-३१
दमामह=नगारा । ६-१५६
दरस षट्=षट्दर्शन (ब्राह्मण, यति,
योगी, संन्यासी, जंघम और
चारण) । १-१२५
दहकि=भयभीत । ५-८
दाय=पसंद १-७२

दाहबा=दहेज में । ७-८६
दाबटै=दबाता है, दमन करता है ।
३-८०

दित=देते थे । १-१४१
दीठ = (दृष्टि) देखा । १-७१
दाढ़ाल = डाढ़ावाला महावीर ।
१-११६

दुधारिय=कटारी । १-२१२
दुबाह=वीर । १०-२७
दुरब्बरी=वाद्य विशेष । ५-१२
दुरंमा=रंगीन, सुंदर । ५-३३
दोट=गँद । १८-६०
दोहग=दुर्भाग्य । ५-२१
धकै=आगे, मुँह के सामने । ३-१०
धकंत=बलती है ।
धणियाँणी=स्वामिनी । १-३३
धाराल=तलवार । ५-५५
धवरावियै=स्तन पान कराने के लिए ।
१-१४०

धाएण = दाइयाँ द्वारा । १-१४१
धीम=जोरावर । ३-१०
धीबिठ = दुर्दर्ष, भारी । ६-१६
धुअ=घटल । ३-७
धुवं = आदिकाल से । ३-२३
धूपटै = छीनते हैं, धर दबाते हैं ।
५-८१

धुर=ध्रुव, अटल । २-२१
धुरकाली = उत्तर दिशा की काली
घटा । १-३६

नंखि=डालकर, छोड़कर । १-१३८
नट्टौ=भाग गया । २-१६८
नन=नहीं । १-५४
नरवर = नरश्रेष्ठ । १-१२२

नाँवहि=नहीं आता है । १-७२
 नारि=(रा० नाळ) पर्वत श्रेणी में
 होकर निकलनेवाला तंग रास्ता ।
 ११-४

नारि=(रा० नाळी) तोप । १-६८
 नाहर=सिंह । ३-८६
 निपाइय=बसाया । २-१
 निप्पनिय=उत्पन्न हुआ । २-१५०
 निबौरी = गले का आभूषण विशेष ।
 ७-१२

निराट = बिल्कुल । ६-५६
 निवान = (निपान) जलाशय । १-६७
 निहसत=बजते हैं । १०-१२२
 नीम=नींबू । ८-१३६
 नीलाणी = हरित हुई । १-४४
 नीसरी=निकली । १-१५६
 नेट = नहीं । १-१५६

नैर=नगर । ६-३०
 नैसाल=न्यायालय । २-१०६
 नौ = का । १-१४५
 पखाला=पंखधारी, पक्षी । १-१७२
 पखरै = पंखर सहित । १०-३६
 पचावै=पकाकर । १-१४६
 पटह=दुधुभी, नगाड़ा । १-६५
 पट्भर = पतझड़ । १-८६
 पट्टा=कतार । १-१७७
 पत्त (सं० प्रप्त) = प्राप्त हुआ, पहुँचा,
 देखा । १-१२५

पत्र=पात्र । ८-२४
 पथ्ये = मार्ग में । १७-१६
 पदर=चौरस, अनुकूल । ८-१४२
 पमनंत=कहते हुए । २-५८
 पमन = कमल । १८-४६

परज (सं० प्रजा) = आश्रित जन ।
 ३-६८
 परट्टयौ = भेजा, छोड़ा, रखा । १-१३७
 परि = परंतु । ६-१३२
 परि = जैसे, तरह, भाँति, ज्यों, मानों ।
 १-१३७
 परि=ऊपर । ८-६१
 परिकर = परिवार, अनुचर वर्ग ।
 ६-२७
 पल=चार कर्ष की एक तौल । ७-२८
 पल्ल=उपल । २-६६
 पल्लिपति = भीलों की, बस्तिनों के
 मुखिया । १०-६७
 पवंगा=घोड़ा । ३-२०
 पह=पथ । १३-११
 पही=पथिक । ७-३८
 पाज=सेतु, पाल । ५-४२
 पाट=चौड़ाई । ८-१४३
 पाती=नीम के वे पत्ते जो भैरव, देवी
 आदि के पुजारी अपने-भक्तों
 को आशिका के तौर पर देते
 हैं । १६-३

पिड=शरीर । १-१३७
 पिसुन=शत्रु, दुष्ट । ६-१८०
 पीथल=पृथ्वीसिंह । ६-१८४
 पीहर=पीड़ा को हरनेवाला । १५-३६
 पुंभिका=रई अथवा कपड़े का छोटा
 टुकड़ा । ३-१२
 पुट्टि=पीठ, पीछे । ६-६
 पुलै=भागता है, दौड़ता है । २-१०४
 पसकस=खुरमाना, करद । ८-३२
 पौंचीय=पहुँची, कलई का आभूषण
 विशेष । १-१८
 पोति=पवित्री, गले में पहिने का

काला डोरा अथवा गुरिया ।

१-२०

पोसिजए = पोषित । १-१४१

पौसाल (सं० उपशाला) ओसारा,
बरामदा । २-१०६

प्रतपौ = तपो, राज करो । ३-६५

फोक = फोकट । ६-७८

बंभ = ब्रह्मा । २-१५

बखत = समय । १-२३३

बग्ग = बजे । ६-२३

बट्झी = मार्ग । १-१५३

बड़वार = बड़ा । १-२३०

बदलौ = काटू । ६-८५

बबकार = ललकार । ३-६०

बब्बर = बर्वरी देश । १-७२

बरतायै = पूरे किए । ७-७८

बराक = निर्धन, बेचारा । ८-१२४

बहय = चलता है । १-१६८

बहिरखा = बाहु का एक गहना विशेष ।

१-१८

बाउ = ओधी । १-१६२

बागर = बागड़ प्रदेश । ६-६२

बारदि (रा० बाळद) टोंड़ा । २-१४५

बावि = बापिका । ३-२

बिटियो = चिरा हुआ । ३-१०८

बिटुलिय = चेरकर । १०-१

बिद = दुलहा । ३-८३

बिढ = लड़ाई । ३-८८

बिढिग = लड़कर । ६-८५

बिथारनी = फैलानेवाली । १-१६

बिरुदाल = विरुदधारी । १५-२

बिरुदैत = यशस्वी, विरुदधारी । ८-१६

बिलूरै = चिल्लाती हैं, प्रलाप करती हैं । १-१६२

बिसन = व्यसन । १-१४४

बिहस्सि = जोश में आकर, उत्साह से भरकर । १-४३

बुट्ट = बरसा । २-५३

वेढिम = बहुमूल्य, बढिया । ८-७७

वैठक = राजसभा में बैठने की आज्ञा और इज्जत । १०-६८

बोलियाँ = व्यतीत होने पर । १-१५१

बोली = व्यतीत हुई । १-१५३

भकभूरा = भीड़, समुदाय । ११-१०

भख = भोजन । ६-१६६

भग्गला = किवाड़ को भीतर से बंद करने का ढंडा । १-६६

भति = भौंति, प्रकार । ६-१८४

भलाइय = सौंपकर । १-२०२

भार = भारी, विशाल । १-४३

भारथ = युद्ध । १-१३६

भिलवारि = भीलप्रदेश । १-७४

भींच = बहादुर । १-२१६

भुगल = वाद्य विशेष । १३-१३

भुबाल = बलिष्ठ भुजाओं वाला । २-४२

भेलिन = नष्ट करने (लगे) कुचलने (लगे) । १८-५६

भौंचपा = गुंवारा, आतिशबाजी । ७-६०

मंभए = में । १-१५७

मंढ = मंदिर । १-२०८

मंढाण = अस्तित्व । १-७०

मंढान = श्रीगणेश । १-३८

मंढान = विचार । १८-६८

मंढियौ = खोला । १-१५५

मंत=मंत्रणा । ३-२५
 मकड़=बंदर । १०-११०
 मठ (सं० मष्ट) निस्तेज, लुप । ३-२
 मदभर=हाथी । १-१२१
 ममोल=बीरबहुटी । १-४५
 महियल=पृथ्वी । ८-१७२
 महुर = अशरफी । ७-१०७
 माभी=जोरावर । १४-२८
 मात=हार । ३-६७
 मालहंतौ=भूमता हुआ । १-१५७
 मिखी=श्याही । ८-१६७
 मीढ़=समता, बराबरी । ८-१७०
 मुँछालह = मुँछावारी । ३-१००
 मुक्ति=मेजकर । ६-६७
 मूक्त=मूर्च्छित । १-२२५
 मेवास = किला । ३-३२
 मोचरि = जूते । ५-७
 मोरछा = मोरचा । १४-३२
 मोरी = मौर्यवंशी । १-११६
 मौज=इनाम । ७-१०७
 यल=(सं० इला) पृथ्वी । १०-११४
 युगिनिपुर = दिल्ली । ६-१६२
 रगरली = आनंदोल्लास । ७-४०
 रखत=सुरक्षित । ६-३६
 रजवट = रजपूती, क्षात्र धर्म । १०-५६
 रुईत=रोते-चिल्लाते हुए । ६-१५०
 रड़वड़=इधर-उधर, अस्तव्यस्त ।
 १-२२२
 रड़ = टेक, हठ । ३-१००
 रड़ाल=हठी बीर । २-४२
 रतनाली = रत्नावली । ७-१३
 रती = शोभा । ७-३०
 रत्तकी=कालिमा । १-१५३

रवरि = रोर, हल्ला । १६-११
 रस्ति=रसद । १६-४
 रहवाल=धीमी चालवाला घोड़ा ।
 ६-११
 राइन=खिरनी । २-१२६
 राबरी=(रा० रखड़ी) शिर का
 आभूषण विशेष । ७-७
 रिधू=अचल, रिद्धिवान् । १-१२१
 रुड़त=लुड़कते हैं, भटकते हैं । १-२२२
 रुकिनि = तलवारें । १६-२०
 रुवं=(रा० रूपा) चोदी । ६-१५०
 रेहा (सं० रेखा) लकीर । ६-६२
 रैवारिय=ऊँट चरानेवाली एक जाति
 विशेष । २-६७
 लंकालि=सिंह । ६-१०१
 लखपसाव=एक लाख का दान ।
 ५-६७
 लथब्बथ=गुत्थंगुत्था । १८-८६
 लहु=लघु । ६-६६
 लिलहरित=फटा हुआ । ८-१२६
 लील=लीला । १-६१
 लीलह=लीला । २-२२
 लुंबभुंब=फल, फूल आदि से सघन ।
 २-१५७
 लुत्थि = लोथ । ६-१२
 लुलि=भुक्कर । २-४८
 लूण=(लवण) नमक । १-८५
 वही=कही । १-१६१
 वर प्रापति=विवाह-योग्य । ३-४
 बलिहका=बलभीपुर । १-१२४
 वारुण = हाथी । ८-५४
 विच=व्यतीत होने पर, समाप्त होने
 पर । २-१७०

वित्त=धन । २-१७०
 विभाङ्ग=भयभीत करनेवाला । ६-२१
 विविहि=विविध । १-१३७
 संज=सामान । २-१२८
 संठिय=संस्थित, बैठा हुआ । १-२६
 संड=सौँड़, बैल । ६-१००
 सपजै=प्राप्त होता है । १-६१
 जंपत्तौ=गुह्य, मिला । ३-८४
 संपरवरू=श्रेष्ठ, मुख्य । १-१४४
 संलोड=ध्वस्त, धराशायी । १५-२६
 सकति = बरछी । १-२०६
 सगताउत=शक्तावत, शक्तिसिंह के
 वंशज । १०-१२०
 सग्गपन=संबंध, सगाई । ३-४
 सजङ्ग=तलवार । ६-८८
 सट्टै=बदले में । ६-७६
 सत=सतीत्व । २-१४६
 सत्य=साथ, समान । १-१४४
 सदै=जुलाकर । ३-४८
 सवर=बलवान । १-१८२
 समान=समान, आदर । २-१६०
 समाहि=पकड़कर, थामकर । १८-८६
 सयल=(सं० शैल) पर्वत । १-४२
 सरुवं=स्वरूपवान, सुंदर । १-१७२
 सरोस=रंसीली, सरस । ४-१३
 सलिता=सरिता, नदी । १-४६
 सहल=सैर । ८-१०४
 साकति=जीन, साज । ३-५२
 साख=शाखा, गोत्र । २-२१
 साचवी = सँभाली, की । १-१४७
 सार=तलवार । २-१२
 सार=साल, शल्य । ४-४
 सारनि=नहर । २-६५

सारह=लोहा । २-१२
 सारु = अन्धका । ४-१६
 साल=सार, तत्त्व, फल । ८-२१
 सालि=चावल । १-६७
 सिंदूरी=ग्वारपाठे का फूल । ४-१३
 सिंधु=वीर रस का राग विशेष ।
 १-२१५
 सिघाला=श्रेष्ठ । १-१७२
 सिप्पर=ढाल । ८-२३
 सिय=सिन, श्वेत । १-१४२
 सिरि=श्री, शोभा । १-१३६
 सिरि=पर, सिर पर, चोटी पर । १-४२
 सिसौदा=सीसोदा नामक गाँव । ५-७६
 सिहर=शिरोमणि, सर्वोपरि । ३-२४
 सिहरि = शिखर पर । १-४४
 सीर = हिस्सा । १-१६८
 सुंदार = हाथी । १०-२६
 सुकमाल = सुकुमार, कोमल । ३-३
 सुतवि (सं० स्तव) स्मरण करके ।
 १-३८
 सुपखौ=स्वपत्नी, मित्र । ३-२३
 सुहव=सचवा स्त्री । १-१५८
 सँकर=अपने हाथ से । ६-२०६
 सँग=साँग । १४-३१
 सँमुह=अपने मुँह से । १०-११५
 सँमुख=स्वयम् । ६-३३
 सेढी=सीढ़ी । ८-१४८
 सेलड़ी = गन्ना । १-६७
 सेलरी = गन्ना । ८-१४६
 सौँडाल=हाथी । ६-५
 सोक=समूह, बौद्धार । १८-८१
 सोर = बारूद । ६-८६
 सोरिय=बारूद । १-२०६

सोहग = शुभ, सौभाग्य । ८-१४०
 हंस (रा० हिसालो) हींसिता हुआ ।
 ७-६८
 हंस=घोड़ा । ७-६६
 हंस=हँसली । ७-१२
 हजूरि=वशवर्ती, सेवक, दासी । १-११
 हठाला = हठी वीर । १-१७३
 हथलेव=वाणिग्रहण । ३-१०२
 हलक=हड़कप, हल्ला । ६-२५
 हलाया=हिलाने से । २-३०
 हल्लियौ=चला । १-१५३
 हसम=सेना । १-१२४

हाँम = हज्जाम, उमंग । ३-१०१
 हाली (हालिक) हलवाहा । १-३६
 हिंडै=चलते हैं, भागते हैं । ६-११४
 हियालं = दिलेर । ३-११
 हींसवाला=हिनहिनाते हुए । १-१७२
 हुड़कि=छोटा ढोल । ५-१३
 हूंत=से । १-१५६
 हूंतौ=से । १-१५६
 हेज = घोड़ा । ३-८
 हेट=(रा० हेड़) घोड़ों का झुंड ।
 ६-८६
 हेब=एक । १५-८

[संकेत—रा०=राजस्थानी, सं०=संस्कृत ।]

— — —

३—छंद-विमर्श

दोहा—(१११)

दो पंक्तियों में लिखा जानेवाला चार चरण का अधसम छंद, जिसमें ४८ मात्राएँ होती हैं। विषम चरणों में १३-१३ और सम चरणों में ११-११ मात्राएँ रहती हैं। दूसरे और चौथे चरण का तुकांत मिलना चाहिए।

कवित्त (छप्पय)—(१११०)

छह पंक्तियों में लिखा जानेवाला मात्रिक छंद, जिसमें १४८ या १५२ मात्राएँ होती हैं। इसके आदि में रोला के चार पद २४-२४ मात्राओं के तथा उनके बाद उल्लाला के दो पंक्तियों में लिखित चार पद होते हैं, जिनमें प्रत्येक पंक्ति में कहीं १३ + १३ के दो पदों की २६ और कहीं १५ + १३ के दो पदों की २८ मात्राएँ होती हैं।

गीतामालती—(११११)*

प्रत्येक चरण में सोलह और बारह के विराम से २८ मात्राओं का छंद, जिसकी ५वीं, १२वीं, १६वीं तथा २६वीं मात्रा लघु होनी चाहिए। अंत में लघु-गुरु (१५) होते हैं।

पद्धरी (पद्धटिका)—(११४०)

मात्रिक छंद, जिसके प्रत्येक चरण में १६ मात्राएँ होती हैं और अंत में जगण होता (१५१) है।

इनूफाल—(११७०)

मात्रिक छंद, जिसके प्रत्येक चरण में १२ मात्राएँ और अंत में गुरु-लघु (५१) होते हैं।

* 'पृथ्वीराजरासो' (काशी नागरीप्रचारिणी सभा का संस्करण) में 'गीतामालची' है। पृष्ठ १५८० की टिप्पणी में लिखा है—'आधुनिक हिंदी विंगलों में इस छंद को प्रायः हरिगीतिका करके लिखा है'।

दंडमाली (हाकली)—(१।१५)*

मात्रिक छंद, जिसके प्रत्येक चरण में १४ मात्राएँ होती हैं और अंत में लघु-गुरु (15) होते हैं।

कामुकी बांताण (सग्विणी)—(१।१३८)*

एक वर्णवृत्त, जिसके प्रत्येक चरण में चार रगण (515) होते हैं।

विराज (भुजंगप्रयात)—(१।१७१)*

वर्णिक छंद, जिसके प्रत्येक चरण में बारह वर्ण होते हैं, जिनमें पहला, चौथा, सातवाँ और दसवाँ वर्ण लघु तथा शेष गुरु होते हैं। अर्थात् प्रत्येक चरण में चार यगण (155) रहते हैं।

दंडका (१।२०६)*

प्रत्येक चरण में सात-सात के विराम से १४ मात्राओं का छंद, जिसके अंत में दो लघु (11) होते हैं।

विअक्षरी—(२।१)*

मात्रिक छंद, जिसके प्रत्येक चरण में १६ मात्राएँ होती हैं और अंत में प्रायः भगण (511) होता है।

नीसानी—(२।२५)†

प्रत्येक चरण में तेरह और दस के विराम से २३ मात्राओं का छंद, जिसके अंत में दो गुरु (55) होते हैं।

मोतीदाम—(२।८७)

एक वर्णवृत्त, जिसके प्रत्येक चरण में चार जगण (151) होते हैं।

भुजंगी (भुजंगप्रयात)—(३।७)‡

वर्णिक छंद, जिसके प्रत्येक चरण में चार यगण (155) अर्थात् बारह वर्ण होते हैं। (वस्तुतः भुजंगी छंद भुजंगप्रयात से भिन्न होता है। भुजंग-

* इन छंदों का लक्षण 'राजविलास' में प्रयुक्त स्वरूप के आधार पर दिया जा रहा है, हिंदी के प्राचीन पिंगल-ग्रंथों से मिलान भी किया गया है।
कोष्ठक में दिए नाम पिंगल-ग्रंथों के हैं।

† हिंदी-शब्दसागर।

‡ हिंदी-शब्दसागर, पृष्ठ २५७६।

प्रयात का अंतिम वर्ण हटा देने से वह बनता है। इसलिए उसमें तीन यगण और लघु-गुरु (ग्यारह वर्ण) होते हैं ।

वृद्ध नाराच (पंचचामर)—(३।६७)

वर्णवृत्त, जिसके प्रत्येक चरण में ६-७ के विराम से १६ वर्ण होते हैं। इसमें क्रमशः आठ लघु-गुरु, या जगण, रगण, जगण, रगण, जगण और अंत में गुरु होते हैं (।।।।।।।।।।।।।।।।) ।

विद्युन्माला—(४।२)*

वर्णवृत्त, जिसके प्रत्येक चरण में ८ वर्ण होते हैं। अंत में गुरु-लघु (।।) रहते हैं ।

लघु नाराच—(५।२)

प्रत्येक चरण में ८-८ के विराम से १६ वर्ण का छंद है। इसके प्रत्येक चरण में आठ लघु-गुरु या जगण, रगण, जगण, रगण, जगण तथा गुरु रहते हैं। (वृद्ध नाराच से इसमें केवल विराम का अंतर होता है, वहाँ ६-७ पर विराम होता है यहाँ ८-८ पर) ।

सद्गोर (कज्जल)—(५।५६)

मात्रिक छंद, जिसके प्रत्येक चरण में १४ मात्राएँ होती हैं। अंत में गुरु-लघु (।।) होते हैं ।

दंडक—(५।७७)

देखिए ऊपर 'दंडका'

मुकुंद डामर (दुर्मिल)—(६।२८)

वर्णवृत्त सवैया, जिसके प्रत्येक चरण में आठ सगण (।।।) होते हैं ।

गुणावेलि—(७।६)

मात्रिक छंद, जिसके प्रत्येक चरण में १४ मात्राएँ होती हैं और अंत में दो गुरु (।।) या सगण (।।।) होता है ।

त्रोटक—(७।२५)

वर्णवृत्त, जिसके प्रत्येक चरण में चार सगण (।।।) रहते हैं ।

रसावल—(७।४६)

मात्रिक छंद, जिसके प्रत्येक चरण में १० मात्राएँ होती हैं। अंत में लघु-गुरु (15) होते हैं।

चंद्रायन (चांद्रायण)—(७।७२)

मात्रिक छंद, जिसके प्रत्येक चरण में ११ और १० के विराम से २१ मात्राएँ होती हैं। पहले विराम पर जगण (15) तथा, दूसरे पर रगण (215) होता है।

हंसचार (दंडकला)—(८।१५०)

यह दंडक मात्रिक छंद है। इसके प्रत्येक चरण में ३२ मात्राएँ होती हैं अंत में सगण (115) रखते हैं। दंडकला में १०, ८, १४ पर विश्राम होता है। इसमें विश्राम नियत नहीं होता।

त्रिभंगी—(११।६)

मात्रिक दंडक छंद, जिसके प्रत्येक चरण में ३२ मात्राएँ होती हैं और १०, ८, ८, ६ मात्राओं पर विश्राम होता है।

विष्णुमाला—(१४।१२)

देखिए ऊपर 'विष्णुमाला'

कलस कवित्त (छप्पय)—(१८।१०३)

देखिए ऊपर 'कवित्त'

४—पाठांतर-संकलन

सकेत

उदय — उदयपुर (राजस्थान) के सरस्वतीमंडार में सुरक्षित [संवत् १७४६ के हस्तलेख की प्रतिलिपि । हस्तलेख का आकार लगभग १०' × ६' । पत्रसंख्या १६८ । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पक्तियाँ और प्रति पंक्ति में २४-२५ अक्षर हैं । अक्षर बड़े बड़े लगभग आध इंच आकार के सुंदर रूप में हैं । संपूर्ण एवम् मुलिखित ।]

सभा — काशी नागरीप्रचारिणी सभा में सुरक्षित हस्तलेख । [पुस्तकाकार । संपूर्ण एवम् मुलिखित । कागज—देशी बाँस का । पृष्ठसंख्या—६१ । नाप पत्रे की—१०' × ८' । नाप लेख्य अंश की—१०।' × ५।।' । पक्ति प्रतिपृष्ठ २५ । अक्षर प्रतिपंक्ति २६ । लिपिकाल—अज्ञात ।]

दीन — लाला भगवानदीन जी 'दीन' द्वारा संपादित तथा काशी नागरी-प्रचारिणी सभा द्वारा सन् १९१२ में प्रकाशित मुद्रित प्रति ।

+ — प्रति में संशोधित पाठ ।

+ + — प्रति में दुबारा संशोधित पाठ ।

÷ — प्रति में संशोधन के पूर्व का मूल पाठ ।

⊙ — प्रति में छूटा पाठ ।

? — प्रति का संदेहास्पद पाठ ।

सिरनामा—॥६०॥ [मागलिक चिह्न कदाचित् शंखचक्र] श्री ऋषभ-
देव जी सत्यमेव ॥ श्रीसरस्वत्यै नमः ॥ (उदय) ; ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
श्रीऋषभदेव जी सत्यमेव श्रीसरस्वत्यै नमः ॥ (सभा) ।

[३] लच्छी; लछी (सभा) । [५] करन; करत (सभा, दीन) ।
[६] पोषनि, पोषन (सभा) । इच्छित, इक्षित (सभा) । [६] रीभी; रीजी (सभा) । [१०] सुररांनी; सुररानी (सभा) । संवरत; संरवत (सभा) । [११] सरसुति, सुरसति (सभा) । [१३] उज्जल; उजुल (सभा) । [१४] मल; मन (दीन) । [१५] जुग, जग (सभा) । [१६] तिमिर; तिमर (सभा, दीन) । [१६] अरुन नखर, अन नषर (सभा+); अरुनै नषर (सभा++) । [२०] मुत्ति; मुत्त (सभा+) । तिलरी, तिलरीय (सभा) । सुख; मुख (सभा) । [२१] वणों; वणों (सभा) सुपक्क; सुपक्क (दीन) [सभा के हस्तलेख में 'क' के दो रूप मिलते हैं । एक में 'क' की केवल छुंडी है दुपट्टा नहीं जो 'क' पढ़ा जाता है । ऐसा कई स्थलों पर है] । मनहारनी; मनुहारनी (सभा) । [२२] सुरंगी; सुरंती (सभा १, दीन) । पुष्प; पुष्फ (सभा) ।* [२६] कुटिलिति, कुटिलति (सभा) । भमहिं, ? (उदय) ; भमुह (सभा) । स्वैर; छैर (उदय, सभा, दीन) । [२८] मंडित; मंजित (सभा) । भलभलं; भलमलं (सभा, दीन) । सुरमित, सुरनित (सभा+, दीन) । [३२] गावत; गावंत (सभा, दीन) । [३३] रचि रचि, रचिर (सभा) । [३४] सनमुक्ख; सनमुष् (सभा) । समर्पन सुक्ख, समर्पन सुख (सभा) । [३६] प्रनमि; प्रत मि (सभा, दीन) । [३७] आलसि, आलस (सभा) । [३८] पाख; पख (सभा) । जौं, जा (सभा) । [३९] उत्हरिग; उत्हरिय (दीन) । करिग; करिय (दीन) । वित्थुरिग, वित्थुरिय (दीन) । आवरिग; आवरिय (दीन) ।

❁ 'उदय', 'सभा' और 'दीन' में 'पुष्प' शब्द का रूप 'पुष्फ' तथा 'पुष्फ' अन्यत्र भी मिलता है ।

बल्लभ, वलभ (सभा) । [४५] मेघ; मध्य (दीन) । [४६] विधूर ; विदधूर (सभा) । उज्जल ; उद्यल (दीन) । [४७] निर्व्यामक ; निर्व्यमिक (उदय, सभा ÷, दीन) । लगंत; लगत (सभा) । [४८] ढहढहत; ढहरत (सभा) । [५०] निरभ्रण ; निजभ्रण (उदय, सभा) ; निभ्रण (दीन) ।

[५१] पत्र , पव्व (सभा, दीन) । [५२] घन; रघन (सभा) । [५४] जगमगति, जिगमिगति (सभा) । हत्थे सुहत्थ , हच्छे सुहच्छ (उदय, सभा, दीन) । [५६] मज्झ; मष्ट (दीन) । [५७] यटत, घटत (दीन) । [६५] सुरभि, सुरति (सभा) ; मुरित (दीन) । [६६] बहुत , बहु (सभा) । [६८] जुवार; रुहारि (सभा), रुहार (दीन) । [७१] कच्छ ; जच्छ (दीन) । [७६] कट्टी; काठी (सभा, दीन) । [७८] फिरंग, ७ (सभा ÷) । [७९] त्रिय, तिय (दीन) । भासन; भूसन (दीन) । [८०] गक्खर; ? (उदय) ; गखर (सभा) ; गरवर (दीन) । [८१] भरि; तरि (सभा, दीन) । भेस; तेश (सभा, दीन) । [८४] बापि; बावि (सभा) । [८५] को इन, कोइ ने (दीन) । [८८] मोरच्चा; मोरछा (सभा, दीन) । जंबूरयं , गंबूरयं (दीन) ।

[१०१] किहिं; कहि (दीन) [१०२] बापि ; बावि (सभा) [अन्यत्र भी यह वर्तनी है] । [११२] टिल्ला; ठिल्ला (दीन) । [११४] भृत्य, नृत्य (सभा, दीन) ; ? (उदय) । [११६] मोरी ; भोरी (दीन) । [११९] तूठौ ; ऊठौ (दीन) , ऊठौ (सभा ?) । [१२०] कित्ति; किनि (दीन) । [१२१] रिधू ; रधू (सभा) ; रघू (दीन) । लक्ख; लरक्क (सभा) ; लष्य (दीन) । सहस सुरथ ; सहसु रत्थ (दीन) । रिण ; रण (दीन) । जुग्गवै ; जग्गवै (सभा) ; जग्गवै (दीन) । [१२२] खैरारह; वैरारह (दीन) । दाखिए; देखिए (दीन) । दल; दल दल (सभा) । [१२४] बल्लिक्क ; बल्लिका (सभा, दीन) । उर, डर (दीन) । [१२५] सेवंत , देवंत (सभा ÷, दीन) । क्षित्तिज ; क्षितिय (दीन) । हत्थि ; हत्थि (सभा, दीन) । मेघज ; ते षज (सभा, दीन) । अंगज कजह; अंग जकद्रह (दीन) । सुरजह, सुरद्रह (दीन) । उज्जल; उद्यल (दीन) । [१२६] निज कृतव सत्थ , निज कृत वसत्थ (दीन) । [१२८] दिहिंयै; दिज्जियै (सभा) ; दिहिंयै (दीन) । [१३०] बरि आये; बरि ये (सभा ÷) । [१३१] वर्यौ; र्यौ (दीन) । [१३६] भीम; भौम (दीन) । रज्ज, रद्र (दीन) । अत्थि ; अत्थि (उदय,

सभा, दीन) । [१३७] सत्त संगह्यौ , सत्त संगह्यौ (सभा) , संग संगह्यौ (दीन) । फारि काढ्यौ गरम , फारिग कढ्यौ गरत (सभा); फारि काढ्यौ गरत (दीन) । धनि; धन (सभा, दीन) । [१३८] सत्थे, सत्थे (उदय, सभा, दीन) । आवासय, आयासय (उदय, सभा) । बरसावयं , बरवावयं (सभा, दीन) । [१३९] जे; जो (दीन) । अजुवालियं , अजुवालियं (सभा) , अजुवालियं (दीन) । परम...पालय, ० (दीन) । तिम; तिण (सभा) । [१४०] कोटि ते...कारावियै ; ० (दीन) । नायन ; नायन्त (सभा) । धवरावियै ; धवरावियं (दीन) । हत्थ; हत्थ (उदय, सभा, दीन) । [१४१] पोसिज्जण , पोसिद्यण (दीन) । चिज्जण , चिद्यण (दीन) । मज्जण; मद्यरण (दीन) । सालंकियं ; सोलकिय (दीन) । [१४२] दिद्धण; दिज्जण (सभा); दिव्वण (दीन) । [१४४] साहस; साहसै (दीन) । सत्थ, सत्थ (उदय, सभा, दीन) । [१४६] अद्य, अज्ज (सभा) ; अद्य (दीन) । [१५०] तत्थ; तत्थ (उदय, सभा, दीन) । तिहो; तहो (सभा, दीन) ।

[१५२] रज्ज; रद्य (दीन) । उत्तक पणौ, उक्तक पणौ (सभा—); उक्तक पणौ (दीन) । आपणौ, आपणौ (दीन) । [१५३] बट्ठडी; बट्ठडी (दीन) । [१५४] रज्ज , रद्य (दीन) । मुनि ; ० (उदय, सभा) । [१५६] एम; राम (दीन) । [१५७] तित्थ; तिच्छ (उदय, सभा, दीन) । [१५८] भणी, तणी (सभा, दीन) । [१५९] रिज्जण; रिध्मण (दीन) । [१६१] उतरि सिहरि; उतरिसु हरि (दीन) । [१६४] नेहा; नेह (सभा) । मन; मनु (उदय?, दीन) । अठ, अत (दीन) । [१६५] अट्ट ; अठ (सभा) ; अत्त (दीन) । मिट्ट ; मिठ (सभा) ; मित्त (दीन) । [१६६] बादिच्च, चित्त; बादिच्च, चित्र (सभा) ; बादिच्च, चित्र (दीन) । [१६७] सुन, मुनि (सभा) । तत्थ , तत्थ (उदय, सभा, दीन) । संपत्त ; सपत्ति (दीन) । [१६९] पलान; पालन (दीन) । [१७३] हलते हठाला ; हलतेह ठाला (दीन) । [१८०] पुत्तं, पुत्तं (सभा, दीन) । [१८१] तत्थ; तत्थ (उदय, सभा, दीन) । [१८२] देवि भाषा ; देव भाषा (दीन) । [१८५] पुत्ति, पुत्ति (उदय, सभा, दीन) । [१८६] पुत्ति ; पुत्ति (सभा, दीन) । [१८६] पाघ ; पाद्य (दीन) । [१८४] सुचडि ; सुचडि (उदय) । [१८६] जुभार; जुघार (सभा) ।

[२०२] भौन; तौन (सभा ; दीन) । भग्ग ; भग्ग (सभा) गद्यत; गज्जत (सभा) । [२०५] सुक्कह; सुक्कह (दीन) । कह्यौ; कद्यो (सभा) ।

कोप, कैरप (सभा); कैखव (दीन) । सज्जह ; सद्यह (दीन) । तप्यौ ; तप्यो (दीन) । [२०६] बच सुनत ; वचनि सुनि (सभा) । सथ पखर ; पखर (उदय, सभा); परवर (दीन) । चळ्यौ, चळो (सभा) । [२०७] सूर नरन, सूरन रन (दीन) । [२०८] रिन ; रन (दीन) । [२०९] जुदै ; कुरे (सभा, दीन) । जोरिय ; भोरिय (उदय, सभा, दीन) । [२१०] पलाइय, पुलाइय (सभा) । [२११] खननन ; वननन (दीन) । [२१२] सुपिमुन, सुपिन (सभा), सुपिन (दीन) । [२१३] घुमत, घमत (सभा, दीन) । घण, घण (सभा) । गटगट, घट घट (सभा, दीन) । [२१५] नृतत, नृतत (दीन) । सिंधु, मिंध (सभा, दीन) । रुहिर, रुधिर (दीन) । [२१६] सुरीय ; सुरिय (सभा), सुरन (दीन) । [२२५] अलूमन, अलुमन (सभा, दीन) । [२२७] मोरी, मोरिय (उदय, सभा, दीन) । [२२८] हूँत, हुँत (सभा, दीन) । [२३३] रज्ज, रद्य (दीन) । [२३४] मंडप ; मडिय (सभा) । [२३५] जय तिकौ ; जयति को (दीन) । [२३६] भारे ; भोर (दीन) । [२३७] रज्ज ; रद्य (दीन) । तुम्ह, तुम्ह (सभा) । [२४०] सिंधुर, सिंधर (सभा, दीन) । पायक सत्त, पायक सुमत्त (उदय, सभा, दीन) । भण ; भक्त (उदय, सभा, दीन) ।

पुष्पिका—इति श्रीमन्मानकविवरचिते राजविलासशास्त्रे राउल श्री बापाजीकस्योत्पतिः रावलपदस्थापना चित्रकोट राजस्थानकरण नाम प्रथम विलास संपूर्णम् ॥ (सभा, दीन) ।

सिरनामा—अथ श्री बापा राउल तो पट्टावली लिख्यते (सभा, दीन) । [१] खमणौर निपाइय ; बमणौर निपाइय (दीन) । [५] लील रढालह, लीलर ढालह (दीन) । [७] धारन ; धारम (दीन) । [८] गिराआ बस ; गिराआ बस (दीन) । [१४] घण ; घण (सभा, दीन) । [१८] सारी, सारीय (सभा) । डुल्लय, डुल्लय (सभा, दीन) । [१९] रिण ; रण (दीन) । सेननि खगिय ; सेन निषगिय (दीन) । [२१] सु-रज्य ; सुरद्यह (दीन) । [२२] सुसीलह ; सुसीलप (दीन) । [२३] जुगति ;

उजगति (सभा) ; जगति (दीन) । दुहुँ बेर...पूजै वृपति; ७ (सभा ÷) ।
 [२५] रिन ; रन (दीन) । [२७] पीथल; पीथड (सभा, दीन) । [२६]
 जुत ; जत (सभा, दीन) । [३०] अनड़; अनम (दीन) । रिधू; रधु
 (सभा, दीन) । [३१] कटक , कट (सभा) , कट (दीन) । लछि, लच्छि
 (उदय, सभा, दीन) । [३३] महन, महत (दीन) । [३७] मनते, तन ते
 (सभा, दीन) । [३८] रखन, रखन (सभा) , राखन (दीन) । [४०]
 अनमह; रन मह (दीन) । [४१] जन; जिन (दीन) । [४२] रिण ; रिख
 (सभा, दीन) । भीम, भीत (दीन) । [४५] भल, तल (सभा, दीन) ।
 [४६] रुडत; रुरत (उदय, सभा, दीन) । [४८] लुलि, तुलि (सभा,
 दीन) । भुवि, जुवि (सभा, दीन) । [४९] लाख; लख (सभा, दीन) ।

[५६] बर, पर (दीन) । [५८] जस ; ७ (सभा ÷) । [६८] सुरेस;
 सुमेर (सभा, दीन) [७३] सेठ, सेव (दीन) । [७४] नर; रन (सभा ÷) ।
 राजसभा वर्णनम्, इति राजसभा वर्णनम् (सभा, दीन) । [७८] सीह क्रौड़,
 हसी क्रौड़ (दीन) । [७९] पारावत; पारापत (सभा) । [८१] सुख, सुख
 (सभा) । [९३] लाख, लख (सभा, दीन) । [१०३] योति, योठि
 (सभा) । [१०४] कहुँक महेश, कहुँ करमेश (उदय, सभा, दीन) ।
 पेखत; पिखत (उदय, सभा, दीन) । [१०७] लीलक पच्च , नीलक पाच
 (सभा) ; नीलक पच्च (दीन) । [१०८] रूप , रूठ (सभा, दीन) ।
 [१११] मसजर, मसंघार , (दीन) । सुभै सिकलात दुमास; सुभैसी कला
 तदु मास (दीन) । [११२] पाट, पाठ (दीन) । [११३] श्री साप , श्री
 साय (दीन) । [११४] चौरस, चौरिसे (उदय, सभा, दीन) । आघ ;
 आद्य (दीन) । [११६] गंधक सं, गंध कसं (दीन) । [११८] सुगंठित;
 सुगंठिन (उदय, सभा, दीन) । [१२३] कढ़ाह; कटाह (उदय, सभा,
 दीन) । [१२५] चंपेल, पचेल (सभा, दीन) । कुंदरु जाह ; कुंदरि जाह
 (उदय, सभा, दीन) । [१२६] जवादि ; जनादि (दीन) । [१२९]
 सहतूतरु ; सहनूतरु (सभा) । [१३३] कोतवाल, कोटवाल (सभा, दीन) ।
 [१३४] महारान, महारानु (दीन) । [१३५] चग, रंग (सभा - , दीन) ।
 [१३८] साला जल बाग; सा लाजल बेग (दीन) । [१४२] लोहन, लोनह
 (सभा, दीन) । सुभ ; सु (सभा) ।

[१५०] ससि; असि (सभा, दीन) । [१५१] अपछुरि; अछुरि
 (सभा) । [१५४] बचाई सुदासि; सुबचाई दासि (उदय, सभा, दीन) ।

[१५६] रज्ज ; रद्य (दीन) । [१६०] विचकारक ; चित्तकारक (सभा दीन) ।
 [१६२] विचकार ; चित्तकार (सभा, दीन) । [१६७] तुम ; उम (सभा,
 दीन) । [१७२] पढम ; पटम (सभा, दीन) । सु तुमहिँ ; सुनु महिँ
 (सभा, दीन) । [१७३] सुभ ; ० (उदय, सभा, दीन) । राज ; सुराज
 (उदय, सभा, दीन) । रिधू, रधू (सभा) ; रघू (दीन) । [१७६] बाढत ;
 बाघत (सभा) । मज्झ ; मग्ग (दीन) । [१७८] राखत ; रखत (उदय,
 सभा, दीन) । [१८२] नरिँदाहिँ होइ, नरिँद हिँदोइ (उदय ?, दीन) ।
 [१८४] रिधू, रधू (सभा, दीन) । [१८६] बुलै ; बोले (उदय, सभा,
 दीन) । [१८८] सघान, संघान (सभा, दीन) । [१९०] राजकुमार ;
 राजकुआर (सभा) । [१९१] जरकर ; अरकस (दीन) ।

पुष्पिका—इति श्रीमन्मानकविविरचिते श्रीराजबिलासशास्त्रे द्वितीयो
 विलासः ॥ २ ॥ (सभा, दीन) ।

३

[६] पिल्ल ; मिल्ल (सभा?) । [१०] केवि काल , के विकाल (दीन) ।
 [१५] सात , सान (दीन) । दत्तं , दोत्तं (दीन) । मज्झ , मज्ज (दीन) ।
 [१६] नहीँ ; चही (दीन) । [२०] पवगा रह ; एवं गारुहं (सभा,
 दीन) । [२१] मध्य ; मज्ज (सभा) । सारंग ; सारंगि (सभा) । [२२]
 कजं , कय (दीन) । [२४] सिहर ; सिरह (उदय, सभा, दीन) । किजैब
 यहै ; किजै बय है (दीन) । आखैँ , अखै (उदय, सभा, दीन) । [२५]
 जा पयान , जाप यान (दीन) । [३७] रलहलत , रलतलत (सभा) ;
 रलरलत (दीन) । चक्र, चक्क (सभा) । मीर, नीर (दीन) । [३८] घसक्कि ;
 भ्रसक्कि (सभा) । सरित , सलित (सभा) । सोर जोर, जोर सोर (दीन) ।
 [३९] संजनित ; संजनिज (सभा, दीन) । परिजन तजत , परि जनत जत
 (दीन) । [४१] अखंत ; आषत (दीन) । [४३] देह , रेह (सभा) ।
 [४८] हत्थ , हच्छ (उदय, सभा, दीन) । समत्थ, समच्छ (उदय, सभा,
 दीन) । [५०] बरन ; ० (सभा-) । अनत , अतंत (दीन) ।

[५५] पत्तौ, पत्ता (उदय, सभा, दीन) । [५६] रिधू, रधू (सभा, दीन) ।
 [५८] जयतु रौण ; जयतु रौण (सभा, दीन) । [६१] सत्थ , सच्छ (उदय,
 सभा, दीन) । हत्थ ; हच्छ (उदय, सभा, दीन) । [६४] सत्थ ; सच्छ (उदय,

सभा, दीन) । बिचह , बित्रह (सभा, दीन) । पविचह ; पवित्रह (सभा, दीन) । प्रतपै राना; प्रत पौराना (सभा, दीन) । [६५] प्रतपौ राना ; प्रत पौराना (सभा, दीन) । [६६] सत्थ, सच्छ (उदय, सभा, दीन) । [६६] सुच्छ ; सच्छ (उदय, सभा, दीन) । केवि काल; के विकाल (दीन) । [७०] सु ददह; सु दह (उदय, सभा, दीन) । [७१] कबिल्ल...सुलच्छि कै; ० (सभा-) । [७२] नृतत्त, नृतत्व (दीन) । [७३] षुरी ; पुरी (सभा, दीन) । सैल, षेल (सभा +, दीन) । [७५] मुंछ , पुंछ (सभा, दीन) । मसंद , समंद (सभा, दीन) । [७६] हत्थ, हच्छ (उदय, सभा, दीन) । पामरी; यामरी (दीन) । [७८] षोष ; ० (सभा-) । [८०] अखनै; अखनै (उदय, सभा), आखनै (दीन) । [८३] बुझियै, बुझीये (दीन) । [८४] बर सनमुख , बरसन मुख (सभा, दीन) । रठवर , रठवर (सभा), राठवर (दीन) । कजै , कछे (दीन) । [८६] अप्प , अप्प (दीन) । [९३] कटि ; कटि (सभा, दीन) । [९४] ए क्रूर, राटूर (दीन) । यही; कही (दीन) । [९७] जिन केहरि, जिनके हरि (दीन) । [१००] रिधू; रधू (सभा, दीन) । अप्प , अप्प (दीन) । रठ, रट (सभा, दीन) । मज्झ , मज्झ (दीन) । राजेस रढालह, राजेसर ढालह (दीन) ।

[१०२] सेज , सेफ (सभा, दीन) । सुलक्खन ; सुखन (सभा) । [१०३] सुपेस, सुपेस (सभा) । [१०६] अनसिख नैन निहारि, ० (सभा) । एसु , रासु (दीन) । [१०८] सुव, सुय (सभा) ।

पुष्पिका—इति श्रीराजविलासशास्त्रे श्रीराजकुंआरजीकस्य श्रीबुंदी-
दुर्गो प्रथम पाणिग्रहणवसरे कमधजेन शाकं जय प्राप्ति नाम तृतीयो विलास
संपूर्णम् ॥३॥ (सभा, दीन) ।

४

[५] अजान , अज्ञान (दीन) । [६] आँवरी , आँविली (दीन) । [८] अगार ; अँगूर (दीन) । [११] यु एक ; युराक (दीन) । [१६] महक्क, नहक्क (दीन) । [१८] सगग , सगग् उडे (सभा) ; सग गरुडे (दीन) । अखतै , अख तै (सभा, दीन) । [२२] अबीह , अभीह (सभा, दीन) ।

पुष्पिका—इति श्रीमन्मानकविवरचिते श्रीराजविलासशास्त्रे सर्व
अष्टविलासवाग वर्णन चतुर्थ विलासः संपूर्णः ॥४॥ (सभा, दीन) ।

५

[३] सुचिद्धि , सचिद्धि (सभा, दीन) । सुमज्जहु , सुमज्जए (सभा, दीन) । [५] सुकोमलं , सकोमलं (सभा, दीन) । [१६] रिधू , रधू (सभा, दीन) । [२१] तित्थ , तिच्छ (सभा, दीन) । अवलोकियत ; अवलोकिया (सभा, दीन) । दोहग दूरहिं ; दोह गरुरहि (दीन) । [२३] सु; सुयस (उदय, सभा, दीन) । [२६] नत्थै , नच्छे (सभा, दीन) । [२७] तित्थ , तिच्छ (सभा, दीन) । [२८] कहियै , कहहिये (दीन) । [३२] खल खंडं , तं सु षल षंड (उदय, सभा, दीन) । रिन रंग , रनरङ्ग (दीन) । [३३] हत्थि; हत्थि (सभा, दीन) । रत्त; रत्त (सभा, दीन) । [३४] रिधू ; रधू (सभा, दीन) । [३६] अण्णई , अक्खई (दीन) । [३७] विसाला; रसाला (सभा) । [४०] नर; दर (दीन) । [४१] रज्जए , रद्यए (दीन) । लज्जए , लद्यए (दीन) । तज्जए; तद्यए; (दीन) । [४४] सुजान सर्व ; सुजा सर्व (सभा) , सु जास सर्व (दीन) । सिखलवै सहासकं , सिख वैस हासकं (दीन) । [४५] बिट्ठियौ ; बिट्ठयो (उदय, सभा, दीन) । ईस ; ईसु (सभा) । [४७] साहसीक संबरं , साहसी कसंबरं (दीन) । [४८] खैग सकरै ; षेगसं करै (दीन) । [४९] छकंपकंति ; धपक्क कंति (दीन) , धपककंति (सभा) । जास ; जाल (दीन) । [५०] दिनेद , दिनिंद (दीन) ।

[५१] भल्लि , भुल्लि (दीन) । [५२] तिग्म ; तिग्ग (दीन) । [५४] मडनं , मंडलं (दीन) । [५९] सरूप ; रूप (उदय, सभा, दीन) । [६२] दूम ; इम (उदय, सभा, दीन) । गब्भ ; गर्भ (उदय, सभा, दीन) । हक्क तव ; हक्कत (सभा, दीन) । [६४] मज्झ ; मष्म (दीन) । [६५] सरिस ; सरस (दीन) । [७७] खग ; बग (दीन) । [७८] कद्धई , चद्धई ; कट्टई , चट्टई (सभा, दीन) । [७९] अत्थि , अत्थि (सभा, दीन) । [८४] भज्जई , तज्जई (दीन) । तेह , नेह (सभा, दीन) । [८५] रज्ज , रद्य (दीन) । पत्थह ; पछह (सभा, दीन) । [८६] गन ; गत (सभा, दीन) । [८९] सुंदरि , सुंदर (दीन) ।

पुष्पिका—इति श्रीमन्मानकविविरचिते राजविलासशास्त्रे राणा श्रीराज-
सिंहजीकस्य पट्टाभिषेकविरुदावलीप्रभृतिवर्णनं नाम पंचमो विलास ॥५॥
(सभा, दीन) ।

६

[२] सेन , सेक (दीन) । सद्धन ; सज्जन (दीन) । [३] बढ्दी ;

बट्टी (सभा, दीन) । [५] सौंडाल ; सो भाल (दीन) । [८] सुनैन ; सनैन (सभा) । [१०] केक लीले पविच ; केकली लेप विच (दीन) । [१६] छाजंत सार , बाजंत सार (सभा, दीन) । सुचार , सचार (सभा, दीन) । [२०] समथ , समच्छ (सभा, दीन) । [२३] कटिद , कटि (सभा, दीन) । [२४] चढिग गैनु , चढि गगेनु (दीन) । [२७] डुल्लिय , डुल्लिय (सभा) । [२८] सु , स (सभा) । [३०] नागर , नाग (सभा) । नैर सहू , नैरस हू (दीन) । सुवटिदउ दंगल , सुवटि उदंगल (उदय, सभा, दीन) । मन्नि , सुन्नि (दीन) । [३१] मोरस , मारस (दीन) । [३५] बिब तिहौ , बिम्बति हौ (दीन) । [३६] इम्भ खजान , इभ षजान (उदय, सभा) , ईषभ जान (दीन) । [३७] ते कर , तो कर (सभा, दीन) । [३६] गट्ट , गट्ट (सभा, दीन) ।

पुष्पिका - इति श्रीमन्मोनकविविरचिते श्रीराजविलासशास्त्रे राणा श्रीराज सिंहजीकस्य दिग्जयवर्णन नाम षष्ठम विलासः संपूर्णः ॥६॥ (सभा, दीन) ।

७

[५] सरूप , स गात (दीन) । [६] श्री राजकुआरी , सु राजकुआरि (सभा) ; सुभ राजकुआरी (दीन) । [७] सुचि , सचि (सभा, दीन) । [६] तपनिय , पतनीय (सभा) , पतनिय (दीन) । [१२] पोति निबौरी , पोतिन बोरी (उदय, दीन) । सु चहियै , सुनि चहियै (उदय) , सुभ चहियै (दीन) । [१८] मज्झै , मग्घे (दीन) । बुज्झै , बुग्घे (दीन) । [२८] हौ नव , होन न (दीन) । [३१] सुंदरि , सुंदर (दीन) । अबल्लै यु , अबनूय (सभा) , अबरूय (दीन) । राखहु , रखहु (उदय, सभा, दीन) । [३४] तूज सही , तूजसही (दीन) । [३५] हठकारक रावन , हठकार करावन (दीन) । [३७] धरी , घरी (दीन) । [४२] व सुनिरु , च सुनिरु (सभा) ; वसु निरु (दीन) । गजत ; गज्जन (सभा, दीन) । बजत , बज्जन (सभा, दीन) ।

[५१] कटि , करि (दीन) । [५२] रात ; एतं (दीन) । [५५] दिनयर ; दिनकरं (दीन) । [५८] हैवर , गैवरं , हैंवरं , गैवरं (सभा, दीन) । [६८] ग्रहन , ग्रहन (उदय, सभा, दीन) । जोति हलाल , जोतिह लाल (दीन) । [७२] आइ , आइय (उदय, सभा दीन) । साखि ; साखिय (उदय, सभा, दीन) । [७४] ग्रहन , ग्रहन (दीन) । दुहुँ , हुन (सभा, दीन) । [७६] चौरी ; चोकी (सभा, दीन) । [८१] डिठ , दिठ (उदय, सभा) ; दिठ (दीन) । [८६] ताम ; साम (सभा) ; सास (दीन) । [८८] घमक ; घनक (सभा, दीन) । [६३] खिजमति ;

खजमति (उदय, सभा, दीन) । [६५] वारै ; चारे (सभा, दीन) । [६६] पहिराय ; महिराय (सभा, दीन) । [६७] रंक ; रंग (सभा) ; रङ्क (दीन) । [१००] कति मधि ; कन्तिमणि (दीन) । [१०२] उमंग ; उतंग (सभा, दीन) ।

पुष्पिका—इति श्रीमन्मौनकविवरचिते श्रीराजविलासशास्त्रे महाराणा श्रीराजसिंहजीकस्य रूपनगरेपाणिगृहणवर्णनं नाम सप्तम विलासः ॥७॥ (सभा, दीन) ।

८

[५] नृपु ; नृप (सभा) । [६] ऐराक ; औराक (सभा) ; एराक (दीन) । [८] धर , घर (दीन) । [१०] धुंघरू निनाद ; धुंघरूनि नाद (दीन) । [१२] चरखी अगगरु ; चरषीरु अगर (उदय, सभा, दीन) । पय भरत इक्क ; पय इक्क भरत (सभा, दीन) । [१३] अरबी ; अर्वा (उदय, सभा, दीन) । [१५] हीर हरि , हरि हीर (सभा, दीन) । [१८] पखरिय, पखर , पखरिय, पखर (उदय, सभा) ; परवरिय, परवर (दीन) । [१९] कवच , कपच (सभा) । [२१] धुंघरनि ; धुंघरनि (दीन) । [२२] धंघ ; वन्ध (दीन) । [३०] जग्गीय ; जगि (सभा) । [३५] भू मियानि ; भू प्रियानि (सभा, दीन) । सुह मेल ; सु हमेल (दीन) । तक्कति ; नक्कति (सभा, दीन) । निसुनि ; निसनि (सभा, दीन) । [३६] कंठीरव जग्गत ; कंठीर वज्ज गत (उदय, सभा, दीन) । चौरै ; चोर (सभा, दीन) । [४१] खंम ; षंत (सभा, दीन) । [४४] कस्तूरी रू , कस्तूरी (उदय, सभा, दीन) । भरि ; भृत (सभा, दीन) । [४७] गृह ; ग्रह (सभा, दीन) । ब चंद्रोपक ; चंद्रोपक (उदय, सभा) ; चन्द्रोपम (दीन) ।

[५६] नत्थन ; नछुन (सभा) । [५७] ग्रहन ; गृहन (सभा, दीन) । [५९] रुखमनि रामा ; रुष मनिरामा (दीन) । [६०] फरी ; परी (दीन) । मह ; मन (दीन) । [६१] प्रनुमि ; प्रनमि (सभा) । अर्चत ; अर्चन (सभा, दीन) । [७१] बुद्धि रहै ; सुद्धि रहे (सभा) ; सुद्धि रेह (दीन) । [७३] सुरभित तुसित ; सुरमि तनु शित (उदय, सभा, दीन) । [७६] रूव ; परू (दीन) । [८४] थाल ; नाल (सभा, दीन) । [८५] हत्थ ; हच्छ (सभा, दीन) । [९५] संभेली ; संभेली (दीन) । [१०४] पिक्खत ; पिरकत (सभा, दीन) । [१११] किनहीं , किनहि (सभा) ; किचहि (दीन) । [१२६] लिलहरित , हिलहरित (सभा, दीन) । [१२६] केई सु , केईस (सभा, दीन) । [१३१] करंत ; प्रजंत (सभा, दीन) । [१३२]

उडंस ; उडंस (सभा) , उज्झंस (दीन) । [१३७] इहिँ ; उहि (दीन) । [१४०] अष्टमी , अष्टमिय (दीन) । [१४१] रूप ; रूव (सभा, दीन) । उंडति , उंभति (दीन) । [१४३] चरस , बरस (दीन) । [१४४] ग्रावा , ग्रापा (दीन) । मंडि , मंभि (दीन) । [१४५] भारनि ; भारति (सभा, दीन) । सु नीयै ; नीये (उदय, सभा, दीन) । [१४६] मजूर तिय , मजूर निय (सभा) । [१४८] गाहत कै ; गाहत के (सभा) ; गाहत केइ (दीन) । [१४९] सलित , सलिल (सभा) ।

[१५१] वृद्धि पालि , वृद्धि पाल (उदय, सभा, दीन) । बलवंती दुर्ग रूप ; बलवंति दुर्गा रूप (सभा, दीन) । [१५२] जानिकि सिखरी , जानि कशी घरी (उदय, सभा, दीन) । कोरन निकरी ; कोर निकरी (उदय) ; कोर नीकरी (सभा) , कोल नीकरी (दीन) । तिहुँ नव चौकिय , तिहुन बचो किय (दीन) । [१५४] दलं ; जलं (सभा) । [१५७] सर ; सुर (सभा, दीन) । [१५८] हजारह करी , हजार करि (उदय, सभा, दीन) । लौँ ; यौँ (दीन) । [१५९] जननी ; जनी (सभा) । [१६०] सारंग , सारस (दीन) । [१६१] व अर्बुद , अर्बुद (उदय, सभा, दीन) । [१६२] जन , जम (सभा) [१६३] नैननि , नैन (उदय, सभा, दीन) । [१६५] मौलसिरी ; बोलसिरी (सभा, दीन) । [१६६] बासर ; वास (सभा) । कहि , ७ (उदय, सभा, दीन) । [१७०] समरागन , समरंगन (उदय, सभा, दीन) । तुव , तुम (सभा) । [१७१] दिवायर , बायर (सभा, दीन) । [१७२] देषिय , देषि (सभा) ।

पुष्पिका — इति श्रीमन्मानकविविरचिते श्रीराजविलासशास्त्रे श्रीराजसमुद्र-वर्णन नाम अष्टम विलास : ॥८॥ (सभा, दीन) ।

६

[४] ए कलह , एक लह (दीन) । [६] बंधव , बंधन (दीन) । [१०] रज्जहिँ , रज्जहि (दीन) । रज्ज , रज्ज (दीन) । [१२] लुत्थि पर लुत्थि , बुथि पर बुत्थि (सभा) ; बुत्थि पर बुत्थि (दीन) । [१५] सहोदर , महोदर (सभा) । [१६] मुहाइ , मुहाइ (सभा, दीन) । [१७] पखर , पखर (सभा) , परवर (दीन) । [१९] जसु ; जसु (सभा, दीन) । भख , भख (सभा) , भख (दीन) । [२२] मज्झ , मुज्झ , मज्झ (दीन) । [२४] बित्थर ; विव्वर (सभा, दीन) । [२५] सेवंतु ; सेवं (सभा) । [२६] पूत ; पत (सभा) । [२७] उधत्त ; उद्धत्त (सभा) ; उधुत्त (दीन) । [२८] पीर ; पीरि (दीन) । [३६]

अखै , अखे (सभा) , अरखे (दीन) । रज्ज , रज (दीन) । हम तौ , हम मो (दीन) । बिचि , विधि (सभा, दीन) । [३६] चढि तीर न , चढती रन (दीन) । [४१] बिनान , बिनाम (सभा, दीन) । [४२] तुरंगम , तुरंग मा (सभा) । [४४] मन्नि , मंति (सभा, दीन) । [४५] पहुँतौ , पतो (सभा) , पहुँचो (दीन) । बृहास , नृहास (सभा, दीन) । [४७] कज्ज , कय (दीन) । [४८] पहुँच्यौ ; पहुँचयो (दीन) । यु साहि , साहि (उदय, सभा, दीन) । [५०] सिरपाव , सरपाव (उदय, सभा, दीन) ।

[५१] सादूल , सातूल (सभा, दीन) । [५३] बाढ्यौ , बढयो (सभा) । राखै ; रखे (सभा) । [५८] जुरि , जरि (सभा) । [६१] बिच बिच ; चिच बिच (सभा, दीन) । बढय अधिक , अधिक बढे (सभा) लोभ लोभ तैं बढय , लोभ बढैं लोभ ते (सभा) । [६२] पल्ल रेहा सु , पल्लरै हासु (उदय, सभा, दीन) । पुनि , मनि , पुन , मन (उदय, सभा, दीन) । कुतबाहि करखहि (दीन) । दुठ , दुठ (सभा) , हुठ (दीन) । [६४] ससकन , ससपति (सभा+) , ससकत (सभा+ , दीन) । [६५] मिथ्यौ , मिथ्यो (सभा) , मिलो (दीन) । [६६] किरनह समान ; किरन हस मान (दीन) । [६७] लग्ग , लगा (दीन) । [६८] अड्डौ ; अज्भौ (दीन) । जड्डौ , जज्भौ (दीन) । [७०] स्वान , स्नान (सभा) ; थान (दीन) । [७३] जाय , जायन (सभा) । [७४] सु अंत , यु अंत (सभा, दीन) । [७५] जल , इल (सभा) । [७७] इती , इनी (सभा, दीन) । [८०] रक्खन ; रक्खन (उदय, सभा, दीन) । [८१] ए ; एह (सभा) । [८५] बिडिग , बिदिग (दीन) बढ्दौ , बढो (सभा, दीन) । कढ्दौ ; कडो (सभा, दीन) । सु खजाना , सुख जन (दीन) । [८६] बिल्युरिय , बिल्युरिय (सभा) , उच्छुरिय (दीन) । [८७] घनु , धनु (सभा, दीन) । सुज्झिय , सुज्झियर (सभा, दीन) । [८८] पल्लखर ; पुरवर (दीन) । कच्छि , कत्थि (सभा, दीन) । [८९] कुत , कत (सभा) । [९१] पहु , यहु (दीन) । [९२] बहु करिग खरिग , करिग षरिग (सभा) ; करि षरिग (उदय, दीन) । यह , इह (सभा) । [९३] घन ; घन (सभा) । [९५] घन हसम , घनह सम (दीन) । [९७] संमूर , संपूर (दीन) । [९८] कमधज्ज , कधज्ज (सभा) । [१००] संड , संढ (उदय, सभा, दीन) । पिखिय , पेखिय (दीन) ।

[१०१] सेन , सेन पर (सभा) , सेन परि (उदय, दीन) । खगौँ ; खगौ (दीन) । [१०२] मिलै जानि गो मंडलं सीह भूखे ; ॐ (सभा+) ।

[१०३] बीरा रसं लगिग , बीरार संलगिग (दीन) । [१०५] धरै परें (सभा) । [१०६] जाड़ै ; जुडे (उदय, दीन) , जड़डे (सभा) । [११२] भुंभर , भुंभरा (दीन) । [११३] मन्नि भीतं , सन्निभीतं (सभा, दीन) । बढी , बढी (सभा, दीन) । [११७] सै अठ्ठ , से अठ (सभा) , सैयद् (दीन) । [१२०] तजै न , न तजै (उदय, सभा, दीन) । [१२३] ए क्रूर , रसा संग (दीन) । रन , रिन (सभा) । [१२६] संधान , सव्वान (सभा) ; संधान (दीन) । [१२८] गरुब , गरु गरु (दीन) । [१३३] कज्जु किन , कद (दीन) । [१३४] रस , रह (दीन) । कौन , क्यो न (दीन) । [१३५] सन्ब ; सच्च (उदय, सभा, दीन) । [१३६] गहंत ; महंत (सभा, दीन) । [१३७] कौ इकलासह , कोइ कलासह (दीन) । [१४२] कटकत , ककत (सभा) , खड़कत , (दीन) । [१४५] गक्खर । गखर (सभा) , गरबर (दीन) । [१४६] मम्भर , तसर (सभा, दीन) , [१४८] जंग ; भंग (दीन) । [१४९] गढ्ढ ; हग (सभा) ; दुर्ग (दीन) ।

[१५१] धरपर , धरपर (सभा, दीन) । ढिग , दिग (दीन) । [१५३] सुहट्ट , सुहट्ट (सभा, दीन) । नंवन , नंचन (सभा, दीन) । [१५५] लुत्थित , लुछित (सभा) , लुच्छित (दीन) । बिभच्छ , विभत्स (सभा, दीन) । [१५६] सूत , मून (सभा, दीन) । [१५७] ससक्कहि , मसक्कहि (सभा, दीन) । [१६२] पारि ढारि , पारीधारि (दीन) । परजारि ; प्रजारि (सभा, दीन) । [१६५] सुथान , संथान (सभा, दीन) । [१६७] कुलक्खन , भुलक्खन (दीन) । [१७१] दुर्गादास सोनिद , दुर्गादास सोनिग देव (उदय, सभा) , दुर्गादास निंगदेव (दीन) । [१७३] कालंकिन , कालंकित (सभा, दीन) । वदंत , वहंत (सभा) । [१७४] अचल , अबल (सभा, दीन) । [१८०] पर्यौ , फिखो (सभा, दीन) । आवहिं , आव (सभा) । हम अब , अब हम (सभा) । सभा की प्रति में १८१ छंद के अंतिम अंश 'आलम तौ बस आनियहिं' से १८२ छंद के 'राजेस राण जगतेस सुअ' तक का पाठ मूल में छूटा है । अन्य लेखनी से पार्श्व पर अंकित है । [१८२] परजारि ; प्रजारि (सभा) । चूकचूरिय , चकन्नरिय (सभा) । खून , धूत (सभा, दीन) । पहु पसाय , पहुप साय (दीन) । [१८५] रायमल , परय मल (दीन) । [१९५] सुलाखन , सुलखन (सभा) । संग हौ , संहरो (दीन) । [१९६] सत्थर ; सथर (सभा) ; सप्थर (दीन) । [१९७] हौं , ७ (सभा) । [१९८] सत्थ

कतेव , सत्थक ते व (दीन) । छार ; ठार (सभा, दीन) । [२०५]
कज्ज , कय (दीन) । [२०६] कज्ज , कय (दीन) ।

पुष्पिका—इति श्रीमन्मानकविवरिचिंते श्रीराजविलासशास्त्रे महाराणा
श्रीराजसिंहजी का शरणागतविजयपंजरविरुद्वर्णनं नाम अनेक सुमति
प्रकाशः नवमो विलासः ॥६॥ (सभा, दीन) ।

१०

[१] बिटुलिय , विटुलिय (सभा, दीन) । राजि , राज (उदय, सभा,
दीन) । [२] मीं डि , मिंफि (दीन) । [६] कज , कय (दीन) । अप्यौ ,
अप्पो (दीन) । [६] कहा , कह (दीन) अज्ज , अय (दीन) । [१०]
सद्यन , सज्जन (सभा) । [११] कर फुरमान , करहु रमान (दीन) ।
[१४] कयहिं , सयहिं , कज्जहि , सज्जहिं (सभा) । देय ; देइ (सभा) ।
[१५] किम ; कि (सभा) , किन (दीन) । [१६] कट्ठि बंक्क , कट्ठि बंध
(सभा) , कट्ठि बंधि (दीन) । [१८] अप्यौ , अप्यौ (दीन) । इह ,
बहु (सभा, दीन) । [२०] यहाँ ; इहा (सभा) सेन धन ; सेन धन
(दीन) । तिहुं तिहुं ; तिहुं तिबेर (उदय, सभा) ; तिहुं तिबेर (दीन) ।
कट्ठौ , कट्ठौ (सभा, दीन) । [२५] बिपल ; वपल (सभा) । [२६]
सेनु , सेन (सभा, दीन) । [३०] अगगग्ग , अगं गग्ग (दीन) । [३१]
जानि , जोति (सभा, दीन) । [३२] उखिल्लै ; उषल्ले (दीन) । [३३]
ऐराक्क , ऐक्क (दीन) । केक्क निल्ला , के कनिल्ला (दीन) । [३४] जा
सिंघाला , औ सिंघाला (दीन) । [३८] केस बालं ; केश वा (सभा) ;
केशवारं (उदय, दीन) । [४०] मताले ; मदाले (उदय, सभा, दीन) ।
[४१] गुंजतै गैन गज्जै , गुंज तेगै गरज्जे (दीन) । [४२] करतै ; रते
(सभा) , रत्ते (दीन) । कृपानंहु दो , कृपानं दुदो (उदय, सभा, दीन) ।
बंधै ; बंधै (दीन) । [४५] जोए , जोरा (दीन) । [४६] आरोह ऐराक्क ,
आरोहए एक्क (दीन) । [४६] कट्ठै , कट्ठै (उदय, सभा, दीन) । [५०]
द्रह ; इह (सभा, दीन) ।

[५१] मज्झ , मझ (सभा) । [५३] उज्जज , उद्यल (दीन) ।
[५४] होत , होइ (उदय, सभा, दीन) । सिंह ; मीह (सभा, दीन) ।
[६४] लज्ज , लय (दीन) । सकज्ज ; सकय (दीन) । [७०] पच्चौए ,
पत्थोए (उदय, सभा, दीन) । तुरंग ; चतुरंग (उदय, सभा, दीन) ।
[७२] बहोरि , बहोर (उदय, सभा, दीन) । [७५] अकतूल ; अकनूल

(सभा, दीन) । [७६] घत्ते ; षत्ते (सभा, दीन) । गिरुअ , गिरिय (उदय) । [७७] अमर , अकर (उदय, दीन) । हठ्यौ ; बढ्यो (सभा, दीन) । धरण ; धारण (दीन) । [७८] रसत , रत्न (सभा) , रतन (उदय, दीन) । मरि है ; मरिहे (सभा, दीन) । इत्थ ; हत्थ (उदय, दीन) । सद्यन , सज्जन (सभा) खलक यौ , खल क्यौ (दीन) । [७९] कज्ज , कय (दीन) । [८२] बंधु महाराय , बंधु के महा (उदय) , बंक महाय (सभा) , बक ये महा (दीन) । नर , बर (उदय, सभा, दीन) । [८३] भाला रु , भाला सु (सभा, दीन) । कर ; बर (सभा, दीन) । [८४] चौडाउत , चौडावत (उदय, सभा, दीन) । चौडाउत उच्चरि ; चौडाउत चच्चरि (सभा) । चौडावत उच्चरि (उदय, दीन) । [९२] दुज्जनहिँ , दुद्यनहि (दीन) । बेधत , बेधन (उदय, सभा, दीन) । [९५] पद , ० (सभा) । [९६] ग्राम , ग्रास (उदय, सभा, दीन) । [९८] पत्त नैनवारा , पत्तनेन बारा (दीन) । [१००] दक्खनहिँ , दखन सु (सभा—), दखन री (सभा+), दखनहि (सभा++) । म हाराय बंधू , महशाय बंधू (दीन) । पीठि महाराय , पीठि महाराय (दीन) दिगपाल , दिग्वाल (दीन) ।

[१०१] सी बान , सीवान (दीन) । हें , कै (दीन) औभक्त ; औभक्त (सभा) , औभेत (दीन) । [१०२] असहेज , अहहेज (दीन) । सुअब , सुभव (दीन) । [१०४] सुकाम , सुकास (दीन) । [१०५] विकट ; निकट (दीन) । [१०७] आवत जिन , अब्ब तज्जिन (दीन) । पिखिब , पिखिन (दीन) पक्खरहु , परखरहु (दीन) । [११०] पीनौ , पीवो (दीन) । लगि , लसि (दीन) । [१११] अगें , अगो (सभा÷) , अयो (सभा+) ; आयो (दीन) । रुहत्थी , सहत्थी (दीन) । पढवहु , पाठवहु (दीन) । [११२] डर ; उर (दीन) । करौ , करहु (सभा) । हरवल...गुर ; हरवल हुसेन अगोर नारि आराब गुर (उदय, सभा, दीन) पत्त ततखन , पत्तन तक्खन (दीन) । [११४] गिरुअ जरित जारी , गेरि अजरि तजरी (दीन) । हट्ट , हट्ट (दीन) । सिंगी , संगी (सभा, दीन) । यल , पल (दीन) । [११५] सु पराव ; पराव (दीन) । [११६] सतकंधह चच्चर , सनकंध हचाचर (दीन) ; सकंधह चच्चर (सभा—) । उँटाल ; अँटाल (दीन) । भूक न परत छिनि ; जक न (जनक÷) परत छिन ('सभा') , जवन परत छिति (दीन) । [११८] राव रटाल , रावर टाल

(दीन) । [११६] पवंग , तुरंग (दीन) । [१२०] मागद ; मागच (दीन) । रज्ज , राघ (दीन) । [१२१] काल , भाला (सभा) ।

पुष्पिका—इति श्रीमन्मानकविविरचिते श्रीराजविलासशास्त्रे महाराणा श्रीराजसिंहजी पातिसाह श्रौरंगसाहि समरसंवादवर्णन नाम दशमो विलासः ॥१०॥ [समर , समं (सभा)] (सभा, दीन) ।

११

[१] घन रलतलै , घनरल तले (दीन) । [२] दुर्घट्ट , पुरघट्ट (दीन) । [४] आवन दुअन , आवनहु अन (उदय ? , दीन) । तब दुहुँ राह कै , तबहु हुहाट के (दीन) । [५] दुहुँ , हहु (दीन) । [६] हिउ , हित (दीन) । पिसुननि , पेशुननि (सभा) , जे सुननि (दीन) । पर पत्ता , परत्ता (दीन) । बसुहब दत्ता , बसुह दित्ता (सभा) , बसुह वदत्ता (दीन) । करबाल रु , करबालऽरु (दीन) । गत्ता , मत्ता (दीन) । [७] उद्धता , उधंता (उदय, दीन) , उधता (सभा) । खुत्ता , खंता (दीन) । बिलवंता , बिलपत्ता (दीन) । [८] काजी , बाजी (सभा) । दंदहु , दंडहु (दीन) । [९] तोब त्रिसुल्ला , तोब त्रिमूल्ला (सभा) ; तोप त्रिमुल्ला (दीन) । जाजुल्ला , जाजल्ला (दीन) । छक ; छक (सभा, दीन) । [१०] हूरा , झूरा (दीन) । [११] अजेज्जा ; अजज्जा (दीन) । रूप , रूव (सभा) । आचिज्जा , आविद्या (दीन) । सरुज्जा ; ससज्जा (दीन) । गिद्धिनि खज्जा ; गिद्धि निषज्जा (दीन) । चुज्जा ; बुद्या (उदय, सभा, दीन) । [१२] मग ; भंग (दीन) । खुट्टा , सुट्टा (दीन) । उदमट्टा , उमट्टा (सभा+ , उरमट्टा (सभा+) । दुपट उपट्टा ; ढपट दपट्टा (दीन) ; दुपट दपट्टा (उदय ?) । भट्टा , कट्टा (उदय, दीन) । उभट्ट , जभट्ट (उदय, दीन) । रिण , रण (दीन) । [१३] खल खंडा ; षग षंडा (सभा) । रिण , रण (दीन) । [१४] सोलंकी ; सोलंषी (सभा) । जुरि ; जुटि (दीन) ।

पुष्पिका—इति श्रीमन्मानकविविरचिते राजविलासशास्त्रे देवसूरी दुर्घाटे रोमीसार्द्धं प्रथम युद्धवर्णन नामैकादशमो विलासः ॥११॥ [देवसूरी , देवसूरी (दीन) । वर्णनं , वर्णन (दीन) । नामैकादशमो ; नाम एकादशो (दीन)] (सभा, दीन) ।

१२

[२] रावत्त , रावार (दीन) । सपण्ण , सपख (सभा) , सपच्छ (उदय, दीन) । समुण्ण ; समच्छ (उदय, दीन) । [७] कुंत , कंत

(सभा) । आदेय , आदेया (सभा, दीन) । [८] चवत , वचन (सभा, दीन) । [१०] डारि , भारि (दीन) । [१२] धुंधरिय , सुंदरिय (सभा, दीन) । उर घा ; ? (उदय) , उर (सभा) , उर उर (दीन) । [१३] रत्त , रत्न (सभा-) । [२३] रुकमागत , रुषमागत (सभा, दीन) ।

पुष्पिका—इति श्रीमन्मानकविवरचिते श्रीराजविलासशास्त्रे उदयपुर स्थान के कुंवर उदयमानकृत द्वितीय युद्धवर्णन नाम द्वादशम विलासः ॥१२॥ [वर्णन नाम द्वादशम , वर्णन नाम द्वादशो (दीन)] ; (सभा, दीन) ।

१३

[५] निसुनि बत्त , निसु निबत्त (दीन) । [६] बेर ; बर (सभा, दीन) । [७] संधुरिय , संघरिय (सभा, दीन) । [८] दुट्ट हट्ट हट , दुठ हट हट (सभा) , दुट्टह ठट्ट ढमुट्ट (दीन) । उड्डिय , उडि डर (सभा) ; उभिभर (उदय ?) ; उडिभय (दीन) । जूह , जह (सभा) ; जहा (उदय ? , दीन) । [९] बिभच्छयं ; बिभत्थयं (सभा, दीन) । [१०] बिभच्छयं , बिभत्सयं (सभा) , बिभत्थयं (दीन) । [११] यह उभत्खर , यहउ भंषर (दीन) । पिच्छयं , पित्थहं (सभा, दीन) । बिभच्छय , बिभत्सयं (सभा) , बिभत्थयं (दीन) । [१२] कच्छ ज्यौ नट , छज्यो नट (सभा) , छज्यो नट इव (उदय ? , दीन) । कच्छयं , कत्थयं (सभा, दीन) । बिभच्छय , बिभत्सयं (सभा) , बिभत्थयं (दीन) । [१३] भुंगल , चुंगल (सभा, दीन) । पारन पच्छय , पारिन पत्थयं (सभा, दीन) । बिभच्छयं ; बिभत्सयं (सभा) , बिभत्थयं (दीन) । [१५] मिच्छि , मित्थि (सभा, दीन) । छोह , छोरे (सभा, दीन) । बिघट , चिघट (सभा) , त्रिघट (दीन) । [१८] धुर , धर (उदय, सभा, दीन) । [२२] जेट , जेठ (सभा, दीन) । धलि , धष (सभा, दीन) । [२३] देखि हिदू सेन दह दिसि ; सेन दह दिशि (सभा) , सेन दह दिशि भर अचल सो (दीन) । भगिय , तगिय (सभा, दीन) । [२४] अठिल्लह , अठिचह (सभा, दीन) । छाठल्ल , छातल्ल (उदय, सभा, दीन) । किल्ल ; किन्न (उदय, सभा, दीन) । सेह ए ; से हए (दीन) । सुरिन ; सुरित (उदय, सभा, दीन) । [२६] सुहनि , सुअनि (सभा, दीन) । महारंभ ; महारान (सभा, दीन) । [२८] आसुर नरनि , आसुर नरनि , आसुरन रनि (दीन) । [३१] बेसु , बेस (सभा, दीन) । [३४] औदरत , आदरत (सभा, दीन) ।

पुष्पिका—इति श्रीमन्मानकविवरचिते श्रीराजविलासशास्त्रे सुलतानमुख-

भंजन गोरीदलगंजनवर्णन नामः त्रयोदशम विलासः ॥१३॥ [नामः , नाम (दीन) । दशम , दशमो (दीन)] , (सभा दीन) ।

१४

[३] गढ़ , गट (दीन) । गये , गह्ये (सभा, दीन) । सुबसु ; सुबस (सभा, दीन) । जीऊँ , जाऊँ (सभा, दीन) । [७] धायौ , धाए (उदय, सभा, दीन) । [८] अंजन , अंजस (दीन) । संग ; अंग (सभा) । चर अग पच्छ , बर अगापच्छ (दीन) । [९] तौन ; तोत (सभा, दीन) । [१०] निचच्छर ; निठवर (सभा) , निठवर (दीन) । अज्ज ; अघ (सभा) , अघ (दीन) । [१७] धाकि लैँ , धा किल्ले (दीन) । [१८] उररि , उरर (उदय, सभा, दीन) । भगौँ , भगो (सभा) ; भग्गे (दीन) । [१९] बिछटैँ , छिट्टे (सभा, दीन) । [२२] डारैँ ; डारे (सभा) , डारे (दीन) । [२३] दुसार , दुमार (सभा, दीन) । [२४] चौसट्टी , चौसठि (उदय, सभा, दीन) । [२५] धप्यैँ , धण्ये (सभा, दीन) । [२६] भरफैँ , भरपे (सभा) ; भरखे (दीन) । [२७] भगौँ , नग्गे (सभा, दीन) । [२८] सौही ; सोई (सभा, दीन) । [३१] अरक उभखरि , अरकउ भंघरि (दीन) । [३२] मडि ; मभि (दीन) । सुहर ; सुहर (उदय, सभा, दीन) । भुक्कत , भज्जकत (दीन) । [३३] घोर ; धोर (सभा, दीन) । [३४] उडि ; उभि (दीन) । गुरु नारि ; गरु भारि (सभा, दीन) । खंग ; शृंग (सभा, दीन) । परिधुंधरि , परिकंधरि (सभा, दीन) । [३५] सिधुर , सिधुर (सभा) । [३६] मुंड , संड (उदय, सभा, दीन) । जड्डह , जभर (सभा, दीन) । पखरनि , परवरनि (दीन) । [३८] नेजा ; नेज (उदय, सभा, दीन) । जित्तेव कलि ; जित्ते बकलि (दीन) ।

पुष्पिका—इति श्रीमन्मानकविवरचिते श्रीराजविलासशास्त्रे श्री सग-
ताउत गंग कुंअरजी केन पातिसाहस्य हस्तीयूथग्रहणवर्णनं नाम चतुर्दशमो-
विलासः ॥१४॥ (सभा, दीन) ।

१५

[२] सुनि , सन (सभा, दीन) । [३] कट्टन ; कट्टन (उदय, सभा, दीन) । [४] भय , मय (सभा, दीन) । [७] गुरु ; गुर (दीन) । [८] मग , पग (दीन) । भरि , भारि (सभा) । [९] ब्रह ; इह (सभा, दीन) । [१०] सून सूरति , मून मूरति (सभा, दीन) ; सून मूरति (उदय) । [१६] खलक , छलक (सभा, दीन) । [१७] विविध ; विधि

(सभा), विविधि (दीन) । [१६] भरुच्छि ; भरुत्थि (उदय, सभा, दीन) । चीर ; वीर (उदय, सभा, दीन) । [२०] श्री साप ; श्री साष (उदय, सभा, दीन) । तार , भार (उदय, सभा, दीन) । [२१] उधरै , उधरे (सभा, दीन) । सुस्वाद , सस्वाद (सभा, दीन) । गरन ; गरज (उदय, सभा, दीन) । [२४] पौनि , पोनि (सभा), योनि (दीन) । [२५] कढ्ढै , कढ्ढे (सभा, दीन) । [२७] सवाइ , सचाइ (दीन) । रूप ; रूव (सभा, दीन) । [२८] कढ्ढनह , कढ्ढनह (सभा, दीन) । [३४] सुप्रचारि ; सुप्रजारि (सभा) । [३७] मरद् , मरद्य (सभा) । नन , तन (सभा, दीन) । पीड़न , पीड़त (सभा, दीन) । [३६] निज गेह , गेह (उदय) ।

पुष्पिका—इति श्रीमन्मानकविवरचिते श्रीराजविलासशास्त्रे श्रीभीमसेन-कुमारेण गुर्जरदेशेद्वंद्वकरण नाम पंचदशमो विलासः ॥१५॥ (सभा, दीन) ।

१६

[४] दीन्हौ , दिन्हो (सभा), दिन्हो (दीन) । [५] धन वन ; गज तन (सभा, दीन) । [६] घोर , घोष (सभा, दीन) । [१०] उडिय , उभिय (दीन) । [११] बिचारिय , बिहारिय (सभा, दीन) । [१२] जोधनि जोध , जोधविजोध (सभा), जोध विजोध (दीन) । [१४] टुटि ; तुटि (उदय, सभा, दीन) । फिर , फिरे (सभा, दीन) । [५] श्रोर , उर (सभा) । [१७] कायर , कायर (दीन) । [१६] नैन रु ; नैन (उदय), नेनन (सभा, दीन) । [२०] टूक कितैइ , टूकनि तेइ (उदय, सभा, दीन) । [२२] चच्चर चोल ; वच्चर बोल (सभा, दीन) ।

पुष्पिका—इति श्रीमन्मानकविवरचिते श्रीराजविलासशास्त्रे सावलदास कमधज्जकृत द्वंद्ववर्णन नाम षोडशमो विलासः ॥१६॥ (सभा, दीन) ।

१७

[२] उत घन , उतपन (सभा, दीन) । तारक रित , तारन रित (उदय, सभा, दीन) । [५] उठी दहक्क ; उठि दहरिक्क (सभा, दीन) । [६] जग्यौ , जग पो (सभा, दीन) । [८] धीगानी , धागानी (उदय, सभा, दीन) । [१२] पाव , पाच (सभा, दीन) । [१३] जिगमिय , जिगमिग (सभा, दीन) । [२१] बिरूर ; बिडूर (उदय, सभा, दीन) । [२५] नैर भयान ; नैरभ यान (दीन) । [२६] भुकि , भुकि (सभा), भुकि (दीन) । [३१] बिलवंत , बिलपंत (दीन) । [३३] पाव ; पाच

(उदय, सभा, दीन) । [३७] वासन , वामन (उदय, सभा, दीन) ।
सहरत , सहरन (उदय) । [३६] बखानी ; बचानी (सभा) । अकुलाय ;
अकलाय (सभा, दीन) ।

पुष्पिका—इति श्रीमन्मानकविविरचिते श्रीराजविलासशास्त्रे साह दयाल
मालपददेशेद्रुद्रकृतं तद्वर्णननाम सप्तदशमो विलासः ॥२७॥ (सभा, दीन) ।

१८

[५] गज्यौ , गज्यो (उदय, सभा) । [६] लाख ; लख (सभा) ।
[८] इम , इत (सभा, दीन) । [१२] सुरज्ज , सुरद्य (दीन) । प्रसादि ,
प्रसाद (सभा, दीन) । [१६] तम , तुम (सभा, दीन) । [१७] जगावै ,
जगाव (सभा) । कह , कहा (सभा) । [१६] लायक ; हम लायक
(सभा) । [२०] मूरन ; मूरत (सभा, दीन) । डारनि ; डरिनि
(उदय) , डिरनि (सभा, दीन) । [२३] सैन बध , नेज बंध (सभा) ।
गहुँ ; गहि (उदय, सभा, दीन) । [२८] सकल ; सबल (दीन) ।
बाज्यो ; बज्यो (सभा) । रूप मय , रूव मय (सभा) । [२६] केहरी सी ,
केहरी (सभा) । [३२] गंग गड धोंकि निसान धों करि भंजज , गगड धोंकि
धोकि निसान धोकरि भ (सभा) ; गंगगड धोंकि निसान धों करि भद्र
(दीन) । जंगी डोल , डोल (सभा, दीन) । फुनि , फुनि फुनि (सभा,
दीन) । [३३] उज्जल , उद्यल (दीन) । सोवन , सो वन (सभा) ,
सो बन (दीन) । [३४] सुंड , संड (सभा, दीन) । दान , दात
(सभा) ; दात (दीन) । [३७] सुवास , सवास (सभा, दीन) । केसु
भरभरै , केसु भरतरे (सभा) , के सुम्भर तरे (दीन) । [३८] मजनस खैंग ;
मजनस सु षेग (सभा, दीन) । [३६] मेर अंबर स ; मेर अंब रस (सभा,
दीन) । [४१] मध्यथनं ; मध्यथलं (सभा, दीन) । मनु ; मन (सभा) ।
[४२] बढि , बडि (सभा, दीन) । क्रूर , क्रर (दीन) । [४३] घन ;
घन (सभा, दीन) । रूवहिँ , रूव (दीन) धुर्य , अधुर्य (सभा, दीन) ।
जोए , जोरा (दीन) । कुंत , कंत (सभा) । [४४] धर तिन , धरनि न
(उदय, सभा, दीन) । कोटनि , कोटति (उदय, सभा, दीन) । [४५]
उज्जल , उद्यल (दीन) । [४६] खल , षग (सभा) । बज्जत , वद्यत
(दीन) । [४७] चटपक् , चटपट (उदय, दीन) । [४८] मुक्ति ; मक्ति
(दीन) । मुक्ति ; मुक्ति (उदय, सभा, दीन) और अटपट ; ऊर उटपट
(सभा) , और ऊटपट (दीन) । उरभंत , उरजंत (सभा, दीन) ।

बराह बर , बराह (सभा) बन पुर , पुर (दीन) । [४६] हेक , हेष (सभा, दीन) । रिपु रिन , रिपु न (सभा) , रिपुन (दीन) । लय लगति , लय गति (उदय) , यल गति (सभा, दीन) ।

[५३] परी ; परि (उदय, सभा, दीन) । भेलन , तेल न (सभा, दीन) । [६१] तिन , तित (सभा, दीन) । [६८] राखी , रखी (सभा) । [७४] ब रहास , बरहास (दीन) । [७७] जुरि , जजरि (सभा) , जरि (दीन) । [७९] बि कैद ; बिकैद (दीन) । ठये , गये (दीन) । [८०] ओर , उर (सभा) । हूदै , रुदै (दीन) । युआन , सुआन (सभा, दीन) । [८२] भारत , भारथ (सभा) । [८३] गक्खरि भक्खरि , गरकरि भरवरि (सभा) बैरि , चेरि (सभा, दीन) । [८६] कंटत धपंत , कटंव धपंत (सभा) ; कटव धयत (दीन) , ? (उदय) । [८७] अनि , अरि (सभा, दीन) । [८८] लुत्थि उलत्थि पलत्थिय , लळि उलळि पलळिय (सभा) ; लच्छि उलच्छि पलच्छिय (दीन) । टुटि टोप...तुटें , ७ (सभा—) । [९१] बरि , बरै (उदय, सभा, दीन) । [९२] प्रमुदित , प्रमुदित (दीन) । अट्ट , अट्ट (दीन) । [९३] खिपतिय , पिपंतिय (सभा) ; बिपंतिय (दीन) । समर , समल (उदय, दीन) । [९४] भग्गै ; भग्गो (सभा, दीन) । [९७] रन , रत (सभा) । नृप नवाव , नृपत बाव (सभा, दीन) । [९८] बहु , पहु (सभा) । [९९] हत्थी , हत्छी (सभा, दीन) । [१००] ग्राम ग्राम , ग्राम ग्रास (सभा) । [१०३] धाक , काध (दीन) । [१०४] मडुवान ; मदवान (दीन) । अत्थि , अत्छि (सभा, दीन) । [१०५] हत्थि , हत्छि (सभा, दीन) । ध्रुव रज्जत जास , ध्रुवर अजास (सभा; दीन) । कहिमान...रक्खंत खिति , ७ (सभा, दीन) ।

पुष्पिका—इति श्रीमन्मानकविवरचित श्रीराजविलासशास्त्रे महाराणा श्रीजयसिधजी कुँआरपदे श्रीचित्रकूटमहादुर्गे पातिखाह औरंगसाहिकस्य साहि-
जादा अकब्बर तदुपरि रतिवाहवर्णन नाम अष्टादसमोविलासः ॥१८॥ इति श्रीराजविलासग्रंथ संपूर्णः श्रीरस्तु ॥ [औरंगसाहिकस्य , औरंगसाहिकथ (दीन) । वर्णन ; वर्णचं (दीन) ।] (सभा, दीन) ।

शुद्धिपः

[वि = विलास । छ = छद । प = पंक्ति ।]

वि।छं।पं	अशुद्ध	शुद्ध	वि।छं।पं	अशुद्ध	शुद्ध
१।१६।३	अथ	अघ	३।२२।१	सुंदरग सरव	सुदरं गसर
१।२६।२	स्वैर	स्वैर		सकज्ज	वस कज्ज
१।३२।६	स धुनि	सु धुनि	३।३०।२	प्रति	प्रीति
१।३५।१	ठाँजें	ठाँजें	३।५७।२	पिखत	पिखर
१।३५।२	हाँजें	हाँजें	३।६५।१	एहौ सुन	एह सुनौ
१।३८।५	सतवि	सुतवि	३।८८।३	प	पै
१।३८।५	कीना	कीनौ	५।४६।१	छकपकति	छकपकति
१।५१।२	ठग	टग	५।८७।१	क्रर	क्रर
१।५६।२	मग्न	मग्ग	७।६२।१	गन	गैँन
१।६५।२	ह	नह	७।६३।२	स्वण	स्वर्ण
१।८५।१	किहि	किहिँ	७।६१।२	खग	खैँग
१।१२३	कवित्त	दोहा	७।६५।१	सोलह	तोलह
१।१२३।२	रिधू	रिधु	८।३३।२	कलख	कलरव
१।१२८।२	घन घन	घन घन	८।६५।४	मरकी	मुरकी
१।१६६।२	मान	गान	८।१४३।३	बहुत	बहुतु
१।२००।१	पिट्ठिय	पिट्ठि	८।१५१।२	कोर न	कोरन
१।२०१।२	पायकह सम	पायक हसम	८।१६६।४	राजसमुह	राजसमुह
१।२०२।३	चढ्यौ	चढ्यो	६।४५।२	सु बधार	सुव धार
१।२०२।५	दिसिवि दिस	दिसि विदिस	६।८५।४	कड्डौ	कड्डौ
१।२०६।२	परवर	पखर	६।६१।२	घन	घन
१।२१२।१	कहैँ	कहैँ	६।६७।२	सपूर	समूर
१।२३१।१	मोरौ	मोरी.	६।११०।१	बत्थ	बत्थैँ
१।२३३।४	हशम	हसम	६।१५६।२	सिधुर	सिधुर
१।२३६।२	बुल्लाय	बुल्लय	६।१८८।४	बग्घेला	बग्घेला
२।१।२	धमण्यौ	खमण्यौ	१०।१।१	सरल	सरन
२।२।२	त्रिपुरसही	त्रिपुरसीह	१०।२।१	तप्पौ	तप्पौ
२।३०।१	राख	राख	१०।२।२	मीँड	मीँडि
२।११३।१	मारू	सारू	१०।६।५	अप्पौ	अप्पौ
२।१५३।२	कहत	कहत	१०।३२।२	गुमतै	धुमतै
२।१५७।२	लंबभुन	लुंबभुन	१०।३४।४	लतगा	उतगा
३।२।१	जितन	जित्तन	१०।४२।३	सवैँ	सवैँ
३।३।२	मत्र	मत्रि	१०।७३।२	प	पै
३।१६।१	जो	जौ	१०।१०४।१	सु कोस	स कोस

वि. क्रं.पं	अशुद्ध	शुद्ध
११।११।१	गोपा	गोपी
१३।६।५	कक	कक
१३।१७।१	घट	थट
१३।२२।२	धुव	धुलै
१३।२४।२	छावल्ल	छाठल्ल
१३।३०।२	रहना न	रहना न
१३।३३।२	घाइ	धाइ
१३।३४।६	अतर	अदर
१४।१०।१	निवच्छर	निचच्छर
१४।२१।२	भिर	भिरै
१४।२५।१	गठ	गठै
१४।३०।४	हुत्थ	हत्थ
१४।४१।२	अनप	अनूप
१५।२०।१	स्त्री	श्री
१५।३७।६	पिरवी	पिखी
१६।१०।२	भानि	भानु
१६।१०।४	क्रर	क्रूर
१६।१०।६	किज्ज	किज्जै
१६।१८।१	धुर	धुरै

वि. क्रं.पं	अशुद्ध	शुद्ध
१७।११।१	भर	भरै
१७।१८।२	गरुडै	गारुडै
१७।३२।४	धन	घन
१७।३४।६	परकूल	पटकूल
१७।३६।४	अन्नचर	अन्नचर
१८।६।३	ठोरी	ढोरी
१८।१३।२	कर	करै
१८।१४।२	नित	रिन
१८।१५।५	सक	सकै
१८।२६।१	प	पै
१८।४२।१	उभरा	उमरा
१८।४८।१	सु कोप	स कोप
१८।४८।६	सकरन	सुकरन
१८।५०।३	भक्तिकि	भलकि
१८।६१।२	पैलै	पेलै
१८।७७।४	बज	बजै
१८।८८।२	बिहास्सिय	बिहस्सिय
१८।९८।१	कुअर	कुअर

